



'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasanturadada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF MARATHI
Report of the Activity - 2024

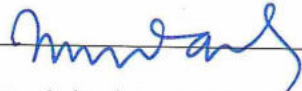
Title	Educational Trip
Day & Date	Friday – Saturday, 16-17 February, 2024
Organizer	DEPARTMENT OF Hindi
Principal	Dr. M.K.Patil. Principal.PVP College, Kavathe Mahankal
Co-ordinator	Dr. Vinayak Shinde Assistant Professor, Dept of Hindi
Background	Students should develop literacy, History, cultural foundation and communication skills in Hindi language, study dialects of Hindi spoken in different regions, practical use of Hindi language in those regions, get familiar with communication in Hindi language spoken in tourist places, develop communicative skills of students, get familiar with richness of Hindi literature. .
Objective	<p>1. Practical knowledge: The theoretical knowledge learned in the classroom can be experienced directly.</p> <p>2. Experiential Learning: Experiencing local places, museums, natural areas etc. broadens students' knowledge.</p> <p>3. Sensitization: Raises awareness of various social, cultural and environmental issues.</p> <p>4. Communication Skills: Working in groups improves students' communication skills and sense of cooperation.</p> <p>Motivation: Excursions increase the desire and enthusiasm of students to learn.</p>
Conclusion	During the educational trip, the students got hands-on experience of theoretical knowledge. Awareness was created about various social, cultural and environmental issues. Students got to see communication skills in Hindi language at various tourist places. It helped to develop personality, self-reliance, self-confidence and decision-making skills. Got a chance.


Dr. V.S. Shinde

Co-Ordinator

हिंदी विभाग

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील
महाविद्यालय, कवठेमहाकाळ


Prof. (Dr.) M. K. Patil

Principal

प्राचार्य

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय,
कवठेमहाकाळ, जि. सांगली.



Permission Letter

Head,
Department of Hindi,
PVP Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist – Sangli
Date – 14 February 2024

To,
Principal,
PVP Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist – Sangli

Subject: Permission Letter for Educational Trip to Kokan

Dear Sir,

I am writing to request your permission to organize an educational tour to Kavathe Mahankal – Radhanagari – Malvan – Sindhudurg – Devgad- Kolhapur – Kavathe Mahankal (Kokan) at 16 – 17 February 2024. I am writing to seek your approval for organizing an educational trip to Kokan for our students. The trip is intended to enhance their knowledge and understanding of the historical and cultural significance of various landmarks in the region. We request you to grant us the necessary permission to organize this educational tour.

Permission granted

Mudal

15/02/2024

PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli

[Signature]
Yours Sincerely,
विभाग प्रमुख

हिंदी विभाग

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील
महाविद्यालय, कवठेमहानगळ



Date: 08/02/2024

नोटीस

बीए भाग 2और 3 हिंदी के छात्रों को सूचित किया जा रहा है कि हिंदी विभाग की ओर से 16एवं 17को यात्रा गमन का आयोजन किया गया है तो यह यात्रा कवठेमहांकाल-राधानगरी-सिंधुदुर्ग-विजयदुर्ग- कुणकेश्वर-कोल्हापूर इस मार्ग जानेवाली है। हिंदी विभाग द्वारा शैक्षिक यात्रा आयोजित की गई है,तो इस यात्रा में सहभागित होनेवाले छात्र 1200 रुपये 13 फरवरी, 2024 प्रा.विनायक शिंदे के पास जमा करे।

संपर्क – प्रा.डॉ. विनायक शिंदे (9960488316)

विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील
महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ

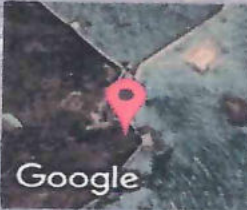


शिक्षण प्रसारक संस्थेचे

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली

हिंदी विभाग

शैक्षणिक सहल अहवाल



Google

GPS Map Camera

Sindhudurg, Maharashtra, India

Sindhudurg Maha Darvaja, Sindhudurg Maha Darvaja, Maharashtra

416606, India

Lat 16.043917°

Long 73.461608°

16/02/24 05:14 PM GMT +05:30



सन - २०२३-२४
राधानगरी-मालवण-सिंधुदुर्ग-कुणकेश्वर-विजयदुर्ग-कोल्हापूर

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ, जि. सांगली

हिंदी विभाग

शैक्षिक यात्रा अहवाल : २०२३-२४

16 फरवरी 2024 महाविद्यालय के प्राचार्य.डॉ.एम.के.पाटील के मार्गदर्शन में यात्रा का आरंभ हुआ। इस यात्रा में हिंदी विभाग के सहायक प्रा.विनायक शिंदे के साथ बीए भाग 2 और बीए भाग 3 के छात्रों को शामिल किया गया था। सहल की बस सुबह दस बजे राधानगरी ढॅम पहुंची। छात्रों ने राजर्षि शाहू महाराज द्वारा निर्मित ढॅम का महत्व देखा। इस क्षेत्र में कुछ लोगों के साथ बातचीत करते समय हिंदी भाषा और प्राकृतिक नजरें की समीक्षा की। क्षेत्रीय भाषा में बातचीत करते समय छात्रों को एक अलग खुशी मिली। 11 बजे हम वहां से निकले। हमें फोंडा घाट के माध्यम से जाने के बाद एक अलग अनुभव मिला। कोल्हापुर के फोंडा घाट की शुरुआत में एक अलग भाषा की बोली जाती है, और घाट के अंत के बाद कोंकणी भाषा बोली जाती है। इसलिए हमें यह देखने को मिला कि यहां का सांस्कृतिक क्षेत्र दो क्षेत्रों के कारण समृद्ध रहा है। फोंडा घाट को पूरा करने के बाद, हम एक मंदिर में भोजन के लिए रुक गए। भोजन के बाद हम आगे मालवन जाने के निकले और हम मालवन को ठीक तरह से प्राकृतिक और समुद्री तट देखने मिला। समुद्र तट के बाद, हमने पहली बार सिंधुदुर्ग किले को देखने का फैसला लिया और नाव से हम सिंधुदुर्ग किले तक पहुंचें। हजारों पर्यटक पूरे साल इस किले में आते-जाते जाते हैं। इसलिए हमने महसूस किया कि लोगों को हिंदी भाषा भी आती है। हिंदी भाषा बोलते समय लोग कोंकणी भाषा का उपयोग कर रहे थे। कोंकणी मराठी भाषा की एक महत्वपूर्ण बोली है। मालवन एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, इसलिए पर्यटकों की एक जगह है। एक विशेष है कि लोग संचार के दौरान हमारे संवाद में विभिन्न भाषाओं का उपयोग करते हैं। सिंधुदुर्ग किले को देखते हुए, हमने ऐतिहासिक शिवाजी महाराज के काल के शिलालेख देखे। छात्रों ने शिलालेखों पढ़ने की कोशिश की। किल्ले के संबंधित सभी जानकारी उस गाइड ने हमें पूरे किल्ले को सूचित किया। किल्ले को देखने के बाद हमने पास रॉक गार्डन का



दौरा किया और शाम को सूर्यास्त के पहले समुद्री नजारा देखने आया। रात होने से हम सभी लोग वही मालवन में रुके और रात में मालवणी खाने का स्वाद लिया।

दूसरे दिन, 17 फरवरी, 2024 को सुबह जल्दी उठकर हम मालवन में प्रसिद्ध मछली नीलामी को देखने गए। मछली नीलामी को देखते हुए, हमें समुद्र में विभिन्न तरीकों के मछलियों की प्रजातियों को पहचाना मिली। मराठी में समुद्री मछली के कई नाम हैं। यहां हमें वहां देखने को मिला। हमने कई मछली पकड़ने के व्यवसायों के साथ बातचीत की और इसके संबंधित जानकारी ली। फिर हम समुद्र तट पर घुमने गए। समुद्र तट तक पहुंचने के बाद, वहां लोगों के साथ संवाद करते समय हमें एक अलग अनुभव प्राप्त हुआ। बातचीत करते समय विभिन्न भाषाओं को संचारित करके लोग संवाद करते हैं। इसके बाद हम कुनकेश्वर मंदिर पहुंचे। यह जगह देवगड के पास है, और एक बहुत ही खूबसूरत समुद्र तट है, कुकेश्वर में महादेव का मंदिर के पास परिसर है। यहां एक सुनहरा समुद्री किनारा और सुंदर बीच है। देवगढ़ में सबसे अच्छी मछली मिलती है। कोंकन में उचित स्थानों को देखने से एक उचित अनुभव मिलता है। हमने दिमागी यात्रा की खुशी का आनंद लिया और विजयदुर्ग के लिए निकले। विजयदुर्ग पहुंचने के बाद हम विजयदुर्ग किल्ले में प्रवेश लिया। विजयदुर्ग किल्ला सिंधुदुर्ग जिले में एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। यह किला मुंबई के दक्षिण में 225 किलोमीटर और गोवा के 150 किमी उत्तर में लगभग 225 किलोमीटर दूर है। यह किला लगभग 17 एकड़ स्थान पर फैला हुआ है। यह किला तीन दीवारें हैं। इसे रणनीतिकार दीवारों कहा जाता है। इसके तीन पक्ष पानी से घिरे हुए हैं। इस किले में दो मेट्रो हैं। एक महल के पूर्व की ओर और दूसरी तरफ। विजयदुर्ग के समुद्र को देखते हुए, हमने डॉल्फिन मछली का भी नजारा देखा। किल्ला देखने के बाद छात्रों को शिवाजी महाराज की युद्ध नीति और कुशल नेतृत्व का ज्ञान प्राप्त हुआ। विजयदुर्ग किल्ला देखने के बाद हम कोल्हापुर जाने के लिए निकले।

कोल्हापुर में सात बजे पहुंचे। हम राजर्षि शाहू पैलेस की रात में नौ बजे वहां गए। 11 बजे हम हमारे महाविद्यालय में पहुंचें। इस तरह अकादमिक यात्रा यथार्थवादी और सार्थक सिद्ध हुई। साथ ही हम छात्रों को इस यात्रा के माध्यम से नया ज्ञान और प्राकृतिक नजारे दिखाने में सफल हुए। छात्रों की तरह से हर साल आयोजित करने की प्रतिक्रिया मिली।

विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग

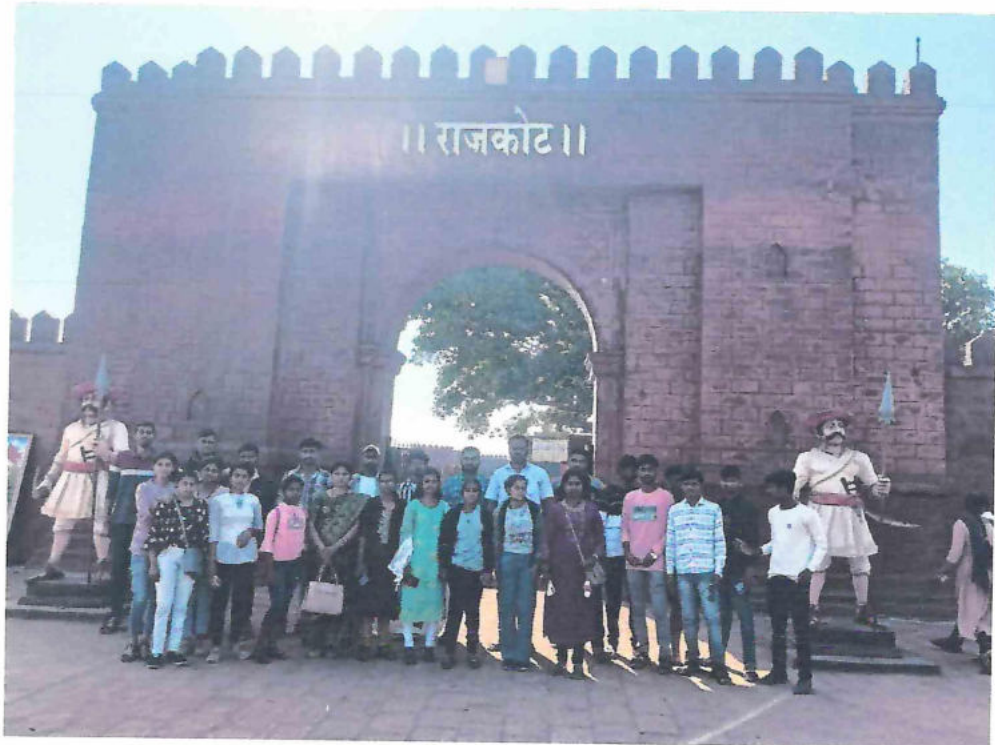
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील
महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ

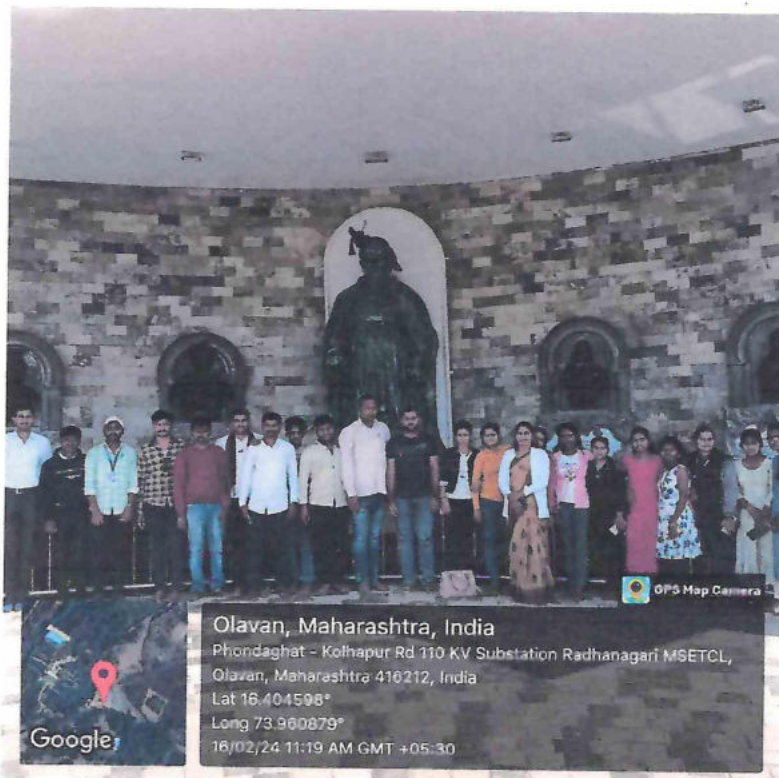


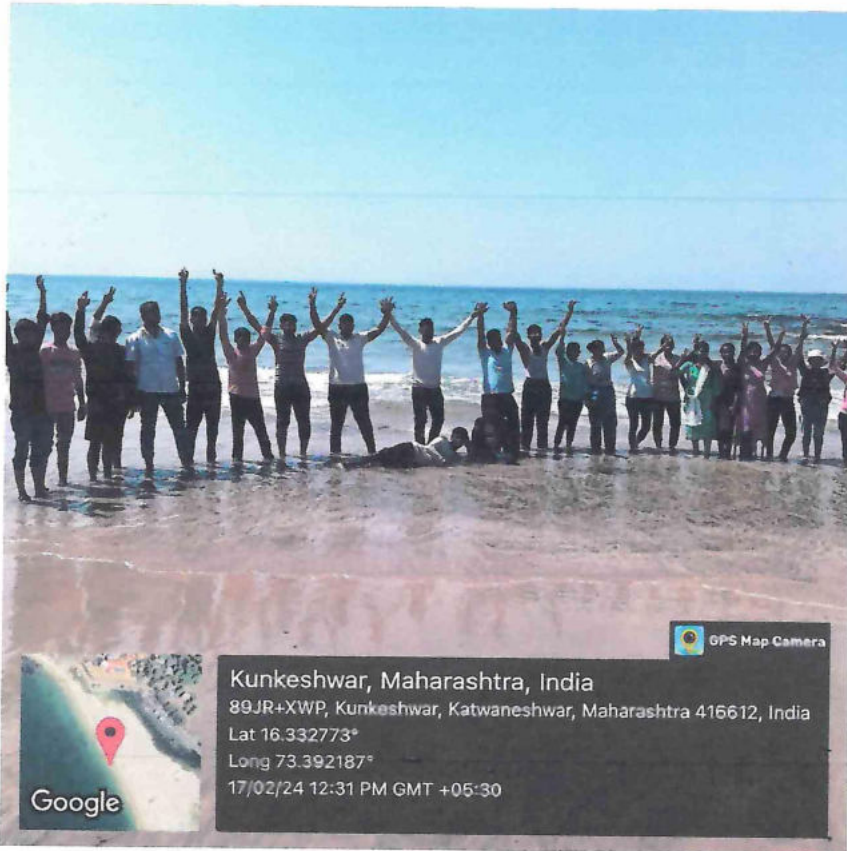
पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ

हिंदी विभाग

शैक्षिक यात्रा 2023-24

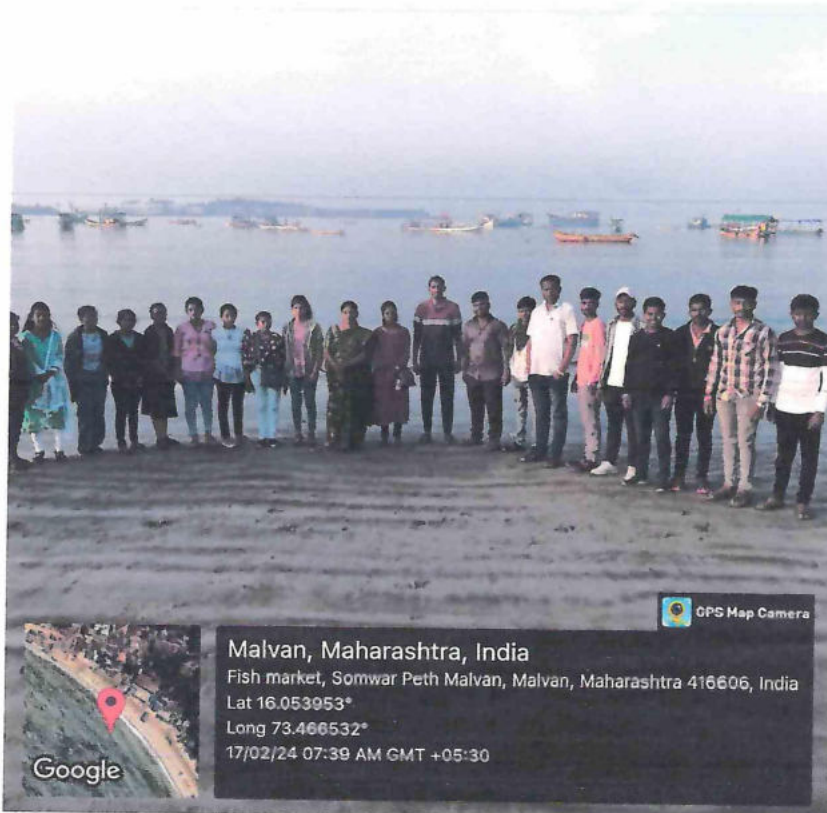






Kunkeshwar, Maharashtra, India
89JR+XWP, Kunkeshwar, Katwaneshwar, Maharashtra 416612, India
Lat 16.332773°
Long 73.392187°
17/02/24 12:31 PM GMT +05:30

GPS Map Camera



Malvan, Maharashtra, India
Fish market, Somwar Peth Malvan, Malvan, Maharashtra 416606, India
Lat 16.053953°
Long 73.466532°
17/02/24 07:39 AM GMT +05:30

GPS Map Camera



'Shikshan Prasarak Sanstha's

Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF Hindi

EDUCATIONAL TRIP -2023-24

ATTENDANCE

Sr. No	Name Of The Student	Class	Sign
1.	Mane Ganesh Tulsiram	B.A.III	<u>Gmane</u>
2.	Kamble Gangadhar Tippanna	B.A.III	<u>Gkamble</u>
3.	Kadam Sanket Ashok	B.A.III	<u>Skadam</u>
4.	Waghamare Diksha Umesh	B.A.III	<u>Wumaghamare</u>
5.	Bisure Rohit Maruti	B.A.III	<u>B Rohit</u>
6.	Khot Kirti Shirang	B.A.II	<u>K.S. Khot</u>
7.	Koli Mayuri Dinkar	B.A.II	<u>Mkoli</u>
8.	Patil Pragati Anil	B.A.II	<u>P.A.patil</u>
9.	Karpe Sanika Shahu	B.A.II	<u>Kaspeess</u>



विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग

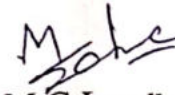
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील
महाविद्यालय, कवठेमहानकाळ


'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF MARATHI

Report of the Activity - 2020-21

Title	Educational Trip
Day & Date	27 January, 2021
Organizer	DEPARTMENT OF MARATHI
Funding	-
Head	Dr. M.G.Londhe , Head, Department of Marathi
Co-ordinator	Mr.R.B.Patil Assistant Professor, Department of Marathi
Background	Students should develop literacy, cultural foundation and communication skills in Marathi language, study dialects of Marathi spoken in different regions, practical use of Marathi language in those regions, get familiar with communication in Marathi language spoken in tourist places, develop communicative skills of students, get familiar with richness of Marathi literature. .
Objective	1. Practical knowledge: The theoretical knowledge learned in the classroom can be experienced directly. 2. Experiential Learning: Experiencing local places, museums, natural areas etc. broadens students' knowledge. 3. Sensitization: Raises awareness of various social, cultural and environmental issues. 4. Communication Skills: Working in groups improves students' communication skills and sense of cooperation. Motivation: Excursions increase the desire and enthusiasm of students to learn.
Conclusion	During the educational trip, the students got hands-on experience of theoretical knowledge. Awareness was created about various social, cultural and environmental issues. Students got to see communication skills in Marathi language at various tourist places. It helped to develop personality, self-reliance, self-confidence and decision-making skills. Got a chance.


Mr. R. B. Patil
Co-Ordinator


Dr. M. G. Londhe
Head
प्रा. डॉ. मोहिम गावेंद लोंडे
एम. ए., एम. फिल, पीएच. डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहानकाळ, जि. सांगली.


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

अर्ज

मराठी विभाग
पी.व्ही.पी.महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.
दि. २५, जानेवारी २०२१.

मा. प्र. प्राचार्य.
डॉ. एम्. के. पाटील.
पी.व्ही.पी.महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.

विषय : - शैक्षणिक सहलीस परवानगी मिळणे बाबत...

महोदय,

आपल्या महाविद्यालयातील मराठी विभागाची शैक्षणिक सहल दि.- २७, जानेवारी २०२१ रोजी. श्री. क्षेत्र नरसिंहवाडी येथे आयोजित करण्यात आली आहे. तसेच मराठी साहित्यिकांना भेटी देणे, त्यांच्याशी साहित्यिक चर्चा करणे. या उद्देशाने सहलीचे आयोजन करण्यात आले आहे. तरी सहलीसाठी आम्हास परवानगी मिळावी ही नम्र विनंती.

कळावे,

आपला विश्वासू.



मराठी विभागप्रमुख.

प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोंढे
एन.ए., एन.सिल, पीएच.डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली

Sanctioned.


२५/०१/२१



'मराठी विभाग, शैक्षणिक सहल' २०२०-२०२१

अहवाल

दि. - 29/01/2021

दिनांक २४, जानेवारी २०२१ रोजी मराठी विभागातील प्राध्यापक व मराठी विभागप्रमुख यांची सहलीच्या नियोजनाची बैठक पार पडली. दिनांक २४, जानेवारी २०२१ रोजी महाविद्यालयाचे प्र. प्राचार्य डॉ. एम्. के. पाटील यांनी सहलीसाठी परवानगी दिली. आणि दिनांक २७, जानेवारी २०२१ रोजी मराठी विभागाची शैक्षणिक सहल श्री. क्षेत्र नरसिंहवाडी येथे आयोजित करण्यात आली. मराठी साहित्यिकांना भेटी देणे, त्यांच्याशी साहित्यिक चर्चा करणे. या उद्देशाने सहलीचे आयोजन करण्यात आले.

दिनांक २७, जानेवारी २०२१ रोजी सकाळी ठीक ९. वाजता प्र. प्राचार्य डॉ. एम्. के. पाटील यांच्या मार्गदर्शनाखाली सहलीची गाडी निघाली. सदर सहलीमध्ये मराठी विभागप्रमुख प्रा.डॉ. मोहन लोंढे, प्रा. रवींद्र पाटील, मराठी विभागातील विद्यार्थी, बी.ए. भाग - दोन मधील मराठी विषयाच्या विद्यार्थिनी यांचा समावेश होता. सकाळी ठीक १०. वाजता मिरज येथील जैन मंदिरात असलेल्या भिमराव धुळबुळू यांच्या क्लासमध्ये पोहोचलो. तेथे कवी व महाराष्ट्र टाईमचे पत्रकार नामदेव भोसले, कवी भिमराव धुळबुळू, प्रसिद्ध व्यंगचित्रकार डॉ. अनिल दबडे या तिन्ही मान्यवरांची भेट झाली. कवी नामदेव भोसले यांनी भीमराव धुळबुळू यांची ओळख करून देताना- त्यांना मिळालेले पुरस्कार, प्रसिद्ध निवेदक, त्यांनी चित्रपटासाठी लिहिलेली गीते व त्यांच्या कवितासंग्रहांचा परिचय करून दिला. अनिल दबडे यांची ओळख करून देताना- त्यांनी लिहिलेल्या ४८. पुस्तके, दैनिकांमधून प्रसिद्ध होणारी व्यंगचित्रे व सदर मासिक 'सारांश'चे संपादक, प्रसिद्ध चित्रकार, त्यांना मिळालेले पुरस्कार, भारत देशाबाहेरील त्यांची भ्रमंती, उत्कृष्ट कलाशिक्षक असा त्यांचा परिचय करून दिला. कवी भीमराव धुळबुळू यांनी आपल्या मनोगतात त्यांच्या बालपणीच्या व शालेय जीवनाच्या आठवणींना उजाळा देत, आपल्या दोन कविताही ऐकवल्या. कवितेविषयी बोलताना ते म्हणाले - "व्यक्तीच्या मनातले भाव टिकतात आले तर कविता सापडते तसेच आपले अनुभव कवितेत पकडता आले पाहिजेत" कवी नामदेव भोसले यांनी पुस्तकाबरोबरच माणसंही वाचता आली पाहिजे असे सांगितले. विद्यार्थिनी तेजस्वी पवार हिने मान्यवरांचे आभार मानले. तेथून आम्ही निघालो. मिरजेतील प्रसिद्ध खरे मुक्त वाचनालयास भेट दिली. पुढे बालगंधर्व नाट्यगृहास भेट दिली. फिरता रंगमंच, पडद्यांची सोय, आसन क्षमता, प्रकाश योजना जाणून घेतली. नाट्यगृहाच्या दुरुस्तीचे काम चालू असल्याने फार वेळ न थांबता मिरजेतील दर्ग्याचे दर्शन घेऊन, श्री. क्षेत्र नरसिंहवाडीला जाण्यासाठी निघालो. कृष्णा नदीकाठी वसलेले नरसिंहवाडी या तीर्थक्षेत्राला भेट देऊन, श्री. दत्ताचे दर्शन घेतले. व तेथून शिरोळच्या श्री. दत्त शेतकरी सह. साखर कारखान्यावर पोहोचलो. तेथील हिरवागार निसर्गरम्य परिसर पाहिला. बगीच्यामध्ये भोजन केले. व तेथून जयसिंगपूर मधील सिद्धिविनायक मंदिरास भेट दिली. तेथील फक्त विटांनी रचलेले आगळी-वेगळी वास्तुकला पाहिली. व तेथून प्रसिद्ध ग्रामीण साहित्यिक व समीक्षक डॉ. मोहन पाटील यांच्या मळ्यात गेलो. तेथे त्यांच्याशी साहित्यिक गप्पा-गोष्टी झाल्या. त्यांनी आपल्या मनोगतात आपल्या बालपणीच्या व शालेय जीवनातील अनुभवांना उजाळा देत, अवांतर वाचनाचे महत्त्व सांगितले. ग्रामीण साहित्याविषयी चर्चा झाली. कथा निर्मिती प्रक्रिया बदल सांगितले. ते म्हणाले "आपल्या अवती-भवती असलेले पात्र, घटना, प्रसंग यातूनच कथा जन्माला येते. फक्त ती शब्दात मांडता आली पाहिजे कविता लगेच लिहून होईल पण कथा कादंबरीसाठी बराच काळ द्यावा लागतो" प्रसिद्ध कन्नड कादंबरीकार भैरप्पा यांच्या 'पर्व' कादंबरीच्या निर्मिती प्रक्रियेविषयी सांगितले. त्याबरोबरच मराठी विषयाच्या रोजगाराच्या संधीबद्दल सांगितले. त्यांच्याशी गप्पा मारताना विद्यार्थी रंगून गेले होते. चहा-पाणी झाल्यानंतर तिथून आम्ही कवठेमहांकाळकडे येण्यासाठी निघालो. आणि ठीक ६.३० वाजता कवठेमहांकाळ मध्ये पोहोचलो.

अशा प्रकारे सदर शैक्षणिक सहल खऱ्या अर्थाने 'शैक्षणिक' ठरली. सहली पाठीमागची उद्दिष्टे व हेतू खऱ्या अर्थाने सफल झाले. अशा प्रकारची सहल प्रत्येक वर्षी आयोजित व्हावी अशी विद्यार्थ्यांकडून प्रतिक्रिया आली.

प्रा. डॉ. मोहन लोंढे
 एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.
 प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
 पद्मभूषण वसंतराव पाटील महाविद्यालय
 कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.



Acting Principal
 Padmabhushan Vasantnada Patil
 Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli



जशसिंहवाडी येथे.

जयसिंगपूर येथील डोळः
साहित्यिक मोहन पाटील
यांच्याशी विद्यार्थ्यांनी
सेवाद साधली.



साहित्यिक नामदेव मोसले,
कवी भिमराव धूलुबुद्धे,
चित्रकार दामाडे यांच्याशी
मुलाखत.



दत्त कारखाना
शिरोछ भेड



दत्त कारखाना शिरोछ

जयसिंगपुर मेडील
बागपती मंदीर



‘Shikshan Prasarak Sanstha’s
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF MARATHI
STUDY TOUR REPORT
ONE PAGE REPORT **Date 2nd April, 2023.**

No	PARTICULARS	DETAILS
1	Name Of The Department	DEPARTMENT OF MARATHI
2	Day & Date	28 March 2023
3	Title of the activity	Study tour (Three day)
4	No. of student enrolled	15
5	Study tour to	Mahabaleshwar, Elephant Point, Panchganga Temple, Pratapgad, Raygad, Gangasagar Talav, Hirkani buruj, Takmak tok, Palkhi, Darwaja, Rajwada, Harihareshwar, Ganpati pule.
6	Arrival and departure	Arrival-5:30 Departure-2:30
7	Background	The Three Day Sstud Ytour Mahabaleshwar, Elephantpoint, Panchganga, Temple, Pratapgad, Raygad, Harihareshwar, Ganpati Pule Was Organized on 28/03/2023 With The Aim of Providing Participants With A Historical And Educational Experience. The Fort Known For It Rich History And Architectural Significance, Offered A Unique Learning Opportunity For The Participants.
8	Objective	Skill development: To enable participants to develop specified skills relevant to their academic or professional goals, such as language proficiency, research techniques, or practical skills. Personal growth: to encourage personal development by challenging participant to step out of their comfort zones, adapt to new environments, and overcome challenges. Field experience: to offer real-world exposure related to the study enabling participants to apply theoretical concepts in practical settings.
9	Key learning	Ginning insight into the cultural and historical signification of Mahabaleshwar, Raygad, Panchgani temple, Partapgad
10	Conclusion	Reflection: participant reflect on their expenses insight gained and lessons learned during the tour Feedback: collecting feedback from participant to understand their perspectives suggestion for improvement and overall satisfaction with the tour In summary, the conclusion of a study tour involves synthesizing the learning experiences evaluating outcome and planning for future educational endeavours based on the insights gained

Prof. Dr. M. G. Londhe
Head

मरा. डॉ. मोहन गोविंद लोंडे
एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेनहांकाळ, जि. सांगली.



Prof. (Dr.) M. K. Patil

Principal
PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोढे
मराठी विभाग,
पी.व्ही.पी. महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ

दि. २४/३/२०२३

प्रति
मा. प्र.प्राचार्य
पी.व्ही.पी. महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ


विषय : शैक्षणिक सहलीस परवानगी मिळणेबाबत

महोदय,

आपल्या वरिष्ठ महाविद्यालयातील मराठी विभागाची शैक्षणिक सहल दि. २८ व २९/३/२०२३ रोजी रत्नागिरी-मालगुड येथे केशवसुतांचे स्मारकास भेट तसेच मराठी साहित्यिकांना भेटी देणे, त्यांच्याशी साहित्यिक चर्चा करणे या उद्देशाने सहलीचे आयोजन करण्यात आले आहे. तरी सदर सहलीसाठी परवानगी मिळावी, ही विनंती.

सोबत - विद्यार्थी व शिक्षकांची यादी

आपला विश्वासू,



प्रभारी प्राचार्य

पद्मगुण बस्तरावदादा फाटील महाविद्यालय
कवठेमहांकाळ जि. सांगली.





You

today at 12:42 pm



पी. व्ही. पी. महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ.

मराठी विभाग

शैक्षणिक सहल - 2022 - 23

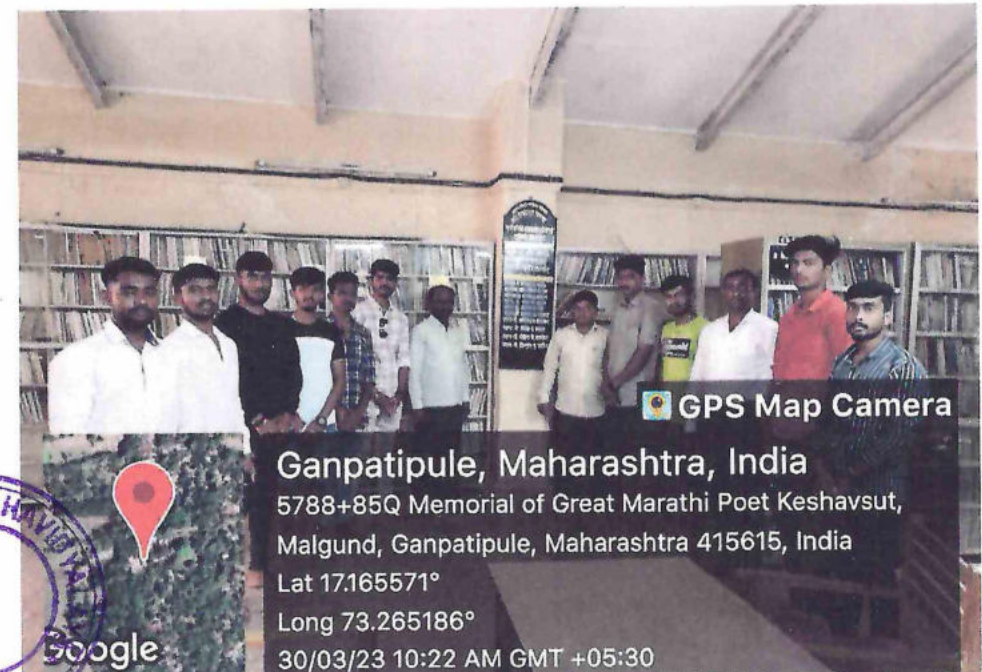
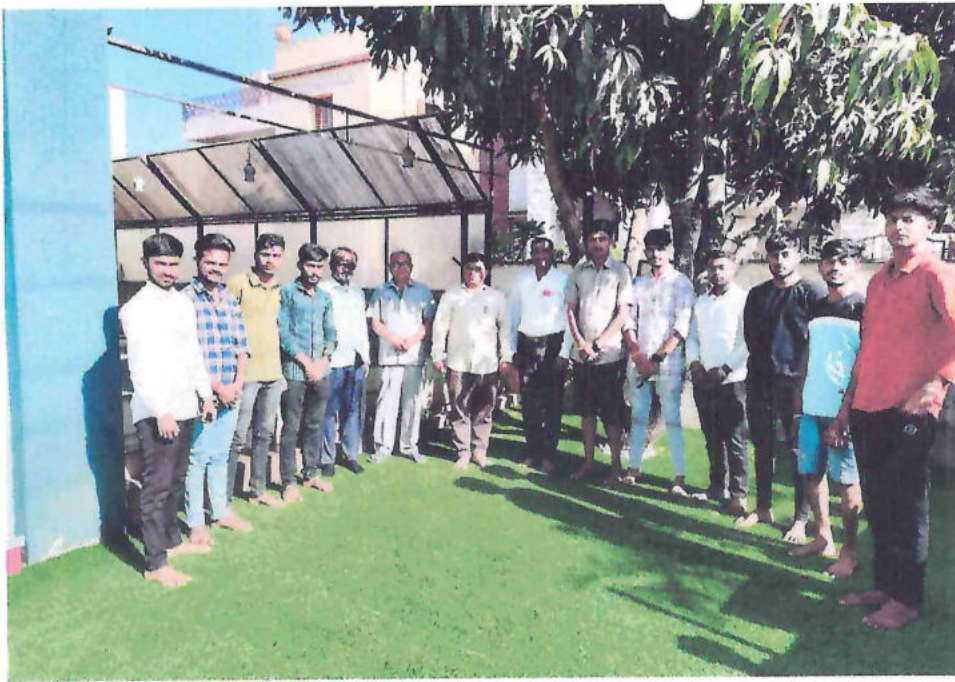
सहभागी विद्यार्थी व शिक्षक

अ.न.	विद्यार्थ्याचे नाव	वर्ग	वय	सही.
१	विशुजीत अर्जुन जाधव	B.A. II	२१	
२	सौरभ सुरेश माने	B.A. II	२१	
३	तुषार सुधीर साळुंखे	B.A. II	२०	
४	दीपक विजय पाटील	B.A. II	२०	
५	महेश सुधाकर कादम	B.A. II	२०	
६	दसा कांबळे	B.A. II	२१	
७	शितोज भंडारे	B.A. II	२१	
८	श्रुतिका रमेश चव्हाण	B.A. II	२१	
९	अनिरुध्द आशोक सुतार	B.com II	२१	
१०	सुभम अनिल पाटील	B.A. II	२०	
११	जयदीप जयवंत भंडारे	B.A. II	२१	
१२	प्रा. (डॉ.) मोहन लोंढे	प्राध्यापक व मराठी विभागप्रमुख	५८	
१३	डॉ. विनायक शिंदे	सहा. प्राध्यापक	३८	
१४	प्रा. लोमेशकुमार कोळेकर	सहा. प्राध्यापक	३६	
१५	प्रा. रवींद्र पाटील	सहा. प्राध्यापक	३७	

Acting Principal

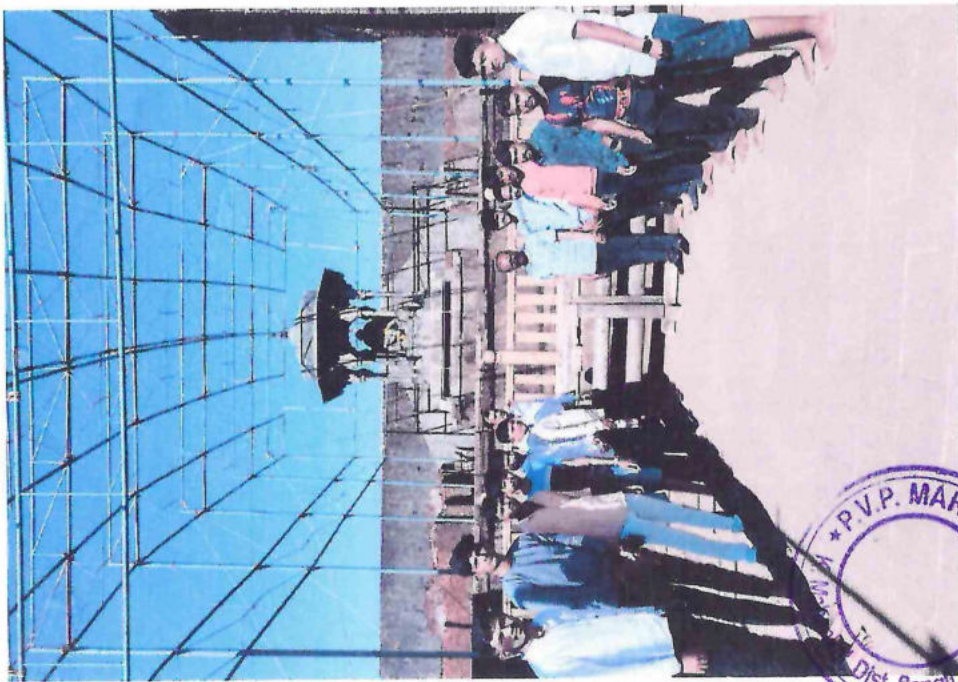
Padmabhushan Vasantnandada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli





GPS Map Camera

Ganpatipule, Maharashtra, India
5788+85Q Memorial of Great Marathi Poet Keshavsut,
Malgund, Ganpatipule, Maharashtra 415615, India
Lat 17.165571°
Long 73.265186°
30/03/23 10:22 AM GMT +05:30



P.V.P. MAHAVIDYALAYA
Dist. Sangli.

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमंकाळ, जि. - सांगली.

मराठी विभाग

अभ्यास सहल - अहवाल

दि.- ३/४/२०२३.

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय कवठेमंकाळ येथील मराठी विभागाच्या सहलीला प्र. प्राचार्य डॉ. एम्. के. पाटील यांनी दि- २७ मार्च २०२३ रोजी परवानगी दिली आणि दि.- २८ मार्च २०२३ रोजी स. ५.३०वा. महाविद्यालयामधून सहलीची गाडी (मिनी बस.) निघाली.

सदर सहलीसाठी मराठी विभागप्रमुख प्रा. डॉ. मोहन लोंढे, प्रा. लोमेशकुमार कोळेकर, प्रा. रवींद्र पाटील यांच्यासह मराठी विभागातील व बी. ए. भाग २ मधील मराठी विषयाचे विद्यार्थी असे एकूण १५ जणांचा समावेश होता. ऐतिहासिक व पर्यटन स्थळांना भेट देणे, आधुनिक कवितेचे जनक कवी केशवसुत यांच्या जन्मस्थानी भेट देणे, ग्रंथालयांना भेट देणे, नामवंत कवी, लेखक यांच्याशी हितगुज साधने या उद्देशाने सहलीचे आयोजन करण्यात आले होते.

दि. २८ मार्च रोजी सकाळी १० च्या सुमारास आम्ही महाबलेश्वर येथे पोहचलो तेथे आम्ही महाबलेश्वर फोटो पॉइंट, एलिफंट पॉइंट, पंचगंगा मंदिर, महाबलेश्वर मंदिर अशी ठिकाणे पहिली. पुढे आम्ही किल्ले प्रतापगड येथे गेलो. गडाच्या पायथ्याशी आम्ही सर्वांनी जेवण केले. जेवण झाल्यानंतर आम्ही किल्ले प्रतापगड चढण्यास सुरुवात केली. छत्रपती शिवाजी महाराज की जय... अशी घोषणा देत आम्ही किल्ले प्रतापगडावर गेलो. पुढे त्याच दिवशी आम्ही किल्ले रायगडाकडे निघालो संध्याकाळी ५ च्या दरम्यान आम्ही राजमाता जिजाऊ आऊसाहेब यांच्या समाधी स्थळी पाचाड या ठिकाणी गेलो. राजमाता जिजाऊसाहेब यांच्या समाधीचे दर्शन घेतले.त्यानंतर किल्ले रायगडच्या पायथ्याशी रात्री विश्रांती घेतली.

दुसऱ्या दिवशी २९ मार्च रोजी आम्ही रायगडावर चढण्यास सुरुवात केली किल्ल्यावर पोहचताच किल्ल्याचा महादरवाजा पाहिला.त्यानंतर गंगासागर तलाव, हिरकणी बुरूज, टकमक टोक, पालखी दरवाजा, राजवाडा, छत्रपती शिवाजी महाराजांचे सिंहासान पाहिले तसेच जगदीश्वर मंदिर, छत्रपती शिवाजी महाराजांची समाधी पहिली. किल्ला बघून झाल्यानंतर आम्ही रायगडावरून खाली येण्यास सुरुवात केली खाली आल्या नंतर आम्ही आमच्या गाडीतून हरिहरेश्वरला निघालो काही तासांनी आम्ही हरिहरेश्वरला पोहचलो. तेथे हरिहरेश्वराचे दर्शन घेतले. नंतर बीच पहिला व आम्ही मुरुड बीच कडे निघालो. संध्याकाळी ५ वाजता आम्ही मुरुड बीच वर पोहचलो. बीचवर बराच वेळ घालवला.त्याच रात्री आम्ही गणपतीपुळ्याला निघालो व पहाटे २.५० वाजता आम्ही गणपतीपुळ्यात पोहचलो तेथे रूम घेऊन विश्रांती घेतली.

तिसऱ्या दिवशी ३०मार्च रोजी सकाळी गणपतीचे दर्शन घेतले व बीच पाहिला .गणपतीपुळे फिरून झाल्यावर आम्ही मालगुंड येथील कवी केशवसुत यांच्या जन्मस्थळी मालगुंड येथे आलो. तेथे आम्ही कवी केशवसुत यांचे राहते घर, ग्रंथालय, आधुनिक मराठी काव्य संपदा इत्यादी पाहिले. कवी केशवसुतांच्या कवितेच्या पाट्या लावण्यात आल्या होत्या त्याचे विद्यार्थ्यांनी वाचन केले. प्रा. डॉ. मोहन लोंढे यांनी कवी केशवसुतांबद्दल व त्यांच्या कवितांबद्दल माहिती दिली. व आम्ही तेथून कोल्हापूर कडे निघालो. कोल्हापूर जवळ एका हॉटेलमध्ये जेवण केले. व तेथून मराठीतील नामवंत लेखक, कादंबरीकार, ज्येष्ठ समीक्षक, ग्रामीण साहित्याचे अभ्यास, शिवाजी विद्यापीठातील मराठी विभागाचे माजी विभागप्रमुख प्रा.डॉ. रवींद्र ठाकूर सर यांच्या घरी गेलो. त्यांच्याशी साहित्यिक चर्चा झाली. त्यांनी विद्यार्थ्यांना त्यांच्या कादंबऱ्या विषयी महात्मा, व्हायरस व इतर समीक्षा ग्रंथाविषयी तसेच ग्रामीण साहित्याविषयी व साहित्य निर्मितीप्रक्रियेविषयी मोलाचे मार्गदर्शन केले. त्यांच्या घरी चहा-पाणी झाल्यानंतर आम्ही कवठेमंकाळकडे येण्यास निघालो. ठीक ६. वाजता कवठेमंकाळ बसस्थानकावर पोहोचलो.


अशा तऱ्हेने मराठी विभागाची सहल ही खऱ्या अर्थाने सफल सहल ठरली. विद्यार्थ्यांनी खूप आनंद घेतला व त्यांच्या ज्ञानातही भर पडली. अशी अभ्यास सहल प्रत्येक वर्षी आयोजित व्हावी अशी विद्यार्थ्यांकडून प्रतिक्रिया आली.

धन्यवाद




'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF MARATHI
Report of the Activity - 2024

Title	Educational Trip
Day & Date	Friday – Saturday, 16-17 February, 2024
Organizer	DEPARTMENT OF MARATHI
Funding	-
Head	Dr. M.G.Londhe. Head, Department of Marathi
Co-ordinator	Mr.A.B.Rathod. Assistant Professor, Department of Marathi
Background	Students should develop literacy, cultural foundation and communication skills in Marathi language, study dialects of Marathi spoken in different regions, practical use of Marathi language in those regions, get familiar with communication in Marathi language spoken in tourist places, develop communicative skills of students, get familiar with richness of Marathi literature. .
Objective	1. Practical knowledge: The theoretical knowledge learned in the classroom can be experienced directly. 2. Experiential Learning: Experiencing local places, museums, natural areas etc. broadens students' knowledge. 3. Sensitization: Raises awareness of various social, cultural and environmental issues. 4. Communication Skills: Working in groups improves students' communication skills and sense of cooperation. Motivation: Excursions increase the desire and enthusiasm of students to learn.
Conclusion	During the educational trip, the students got hands-on experience of theoretical knowledge. Awareness was created about various social, cultural and environmental issues. Students got to see communication skills in Marathi language at various tourist places. It helped to develop personality, self-reliance, self-confidence and decision-making skills. Got a chance.



Mr. A. B. Rathod
Co-Ordinator


Dr. M. G. Londhe
Head


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal
PRINCIPAL

प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोंढे
एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
माध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय
कावठे महाकाळ, जि. सांगली.

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist- Sangli



Date: 08/02/2024


नोटीस

बी ए भाग- २ व ३ मराठी विषयाच्या सर्व विद्यार्थ्यांना सूचित करण्यात येत आहे की, मराठी विभागाच्या वतीने दि.१६-१७ फेब्रुवारी २०२४ दरम्यान शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करण्यात आले आहे. तरी सदर शैक्षणिक सहल कवठेमहांकाळ-राधानगरी-सिंधुदूर्ग-विजयदुर्ग-कुणकेश्वर-कोल्हापूर- कवठेमहांकाळ अशी जाणार असून, सदर सहलीसाठी इच्छुक विद्यार्थ्यांनी १२०० रुपये इतकी फीस दि. १३ फेब्रुवारी २०२४ पर्यंत मराठी विभागामध्ये प्रा. अर्जुन राठोड यांचेकडे जमा करावी.

संपर्क – प्रा.डॉ. मोहन लोंढे (९४२३८२९२३०)

प्रा. अर्जुन राठोड (८३९००६०८६२)

प्रा.डॉ. सरस्वती अंदेलवार (८९९९५१५४००)


प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोंढे
एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.





Permission Letter

Head,
Department of Marathi,
PVP Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist – Sangli
Date – 14 February 2024

To,
Principal,
PVP Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist – Sangli

Subject: Permission Letter for Educational Trip to Kokan

Dear Sir,

I am writing to request your permission to organize an educational tour to Kavathe Mahankal – Radhanagari – Malvan – Sindhudurg – Devgad- Kolhapur – Kavathe Mahankal (Kokan) at 16 – 17 February 2024. I am writing to seek your approval for organizing an educational trip to Kokan for our students. The trip is intended to enhance their knowledge and understanding of the historical and cultural significance of various landmarks in the region. We request you to grant us the necessary permission to organize this educational tour.

Permission granted

Principal
15/02/2024

PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Yours Sincerely,

For @university



शिक्षण प्रसारक संस्थेचे
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली
मराठी विभाग
शैक्षणिक सहल अहवाल



सन - २०२३-२४

राधानगरी-मालवण-सिंधुदुर्ग-कुणकेश्वर-विजयदुर्ग-कोल्हापूर



Moh
प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोंढे
एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ, जि.सांगली

मराठी विभाग

शैक्षणिक सहल अहवाल : २०२३-२४

दिनांक १३ फेब्रुवारी, २०२४ रोजी मराठी विभागातील प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख यांची शैक्षणिक सहलीच्या नियोजनाची बैठक पार पडली. दिनांक १५ फेब्रुवारी २०२४ रोजी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.एम. के. पाटील यांनी सहलीसाठी परवानगी दिली. आणि दिनांक १६ ते १७ फेब्रुवारी २०२४ रोजी मराठी विभागाची शैक्षणिक सहल कवठेमहांकाळ-राधानगरी-सिंधुदुर्ग (मालवण)- विजयदुर्ग- कुणकेश्वर- कोल्हापूर- कवठेमहांकाळ अशी आयोजित करण्यात आली. मराठी विभागातील विद्यार्थ्यांना मराठी भाषेतील साक्षरता, सांस्कृतिक पायाभरणी आणि संप्रेषण क्षमता विकसित करणे, विविध प्रदेशात बोलल्या जाणाऱ्या मराठीच्या बोलींचा अभ्यास व्हावा, त्या प्रदेशात मराठी भाषेचा व्यवहारात होणारा उपयोग, पर्यटनस्थळी बोलल्या जाणाऱ्या मराठी भाषेतील संवादाची ओळख व्हावी, विद्यार्थ्यांचे संवादात्मक कौशल्य विकसित व्हावे, मराठी साहित्यातील समृद्धतेची ओळख व्हावी. असे विविध हेतू घेऊन, ही शैक्षणिक सहल आयोजित करण्यात आली.

दिनांक १६ फेब्रुवारी २०२४ रोजी सकाळी ठीक सहा वाजता प्राचार्य डॉ. एम. के. पाटील यांच्या मार्गदर्शनाखाली सहलीची गाडी निघाली. सदर सहलीमध्ये मराठी विभागातील सहाय्यक प्राध्यापक प्रा. अर्जुन राठोड व मराठी विभागातील बी.ए भाग २ व बी.ए भाग ३ मधील विद्यार्थी, यांचा समावेश होता.

सकाळी ठीक साडेदहा वाजता राधानगरी धरणावर पोहोचलो. राजर्षी शाहू महाराजांनी बांधलेल्या या धरणाचे महत्त्व विद्यार्थ्यांनी जाणून घेतले. या भागातील काही लोकांशी संवाद साधून तिथे मराठी भाषेचा वापर कशा पद्धतीने केला जातो याचा आढावा घेतला. तेथील प्रादेशिक भाषेमध्ये संवाद साधताना विद्यार्थ्यांना एक वेगळाच आनंद मिळाला. ११ वाजता आम्ही तेथून मालवणला जायला निघालो. फोंडा घाट मार्गे आम्ही जात असताना वाटेत आम्हाला एक वेगळाच अनुभव आला. फोंडा घाटाच्या सुरुवातीला कोल्हापुरी मराठी बोलली जाते आणि घाट संपल्यानंतर कोकणी भाषेला सुरुवात होते. म्हणून, हा सांस्कृतिक प्रदेश या दोन प्रादेशिक भाषांमुळे समृद्ध झालेला आहे असे आम्हाला पहावयास मिळाले. फोंडा घाट संपल्यानंतर आम्ही एका मंदिरात जेवणासाठी थांबलो. तेथील लोकांचे सांस्कृतिक जीवन तसेच त्यांच्या व्यवहारातील भाषा हे विद्यार्थ्यांना खूपच आवडले. जेवण झाल्यानंतर आम्ही पुढे मालवणला जाण्यासाठी निघालो आणि ठीक चार वाजता आम्ही मालवणला पोहोचलो. समुद्रकिनारी गेल्यानंतर आम्ही सर्वप्रथम सिंधुदुर्ग किल्ला पाहण्याचा निर्णय घेतला. आणि बोटीतून आम्ही सिंधुदुर्ग किल्ल्यावर पोहोचलो. या किल्ल्याला वर्षभर जगभरातून हजारो पर्यटक भेट देतात. त्यामुळे तेथील लोकांची मराठी भाषा ही विविध भाषेतून निर्माण झाली आहे असे आम्हाला जाणवले. तेथील लोक हे मराठी भाषा बोलताना कोकणी भाषेचा वापर करत होते. कोकणी ही भाषा मराठी भाषेची एक महत्त्वाची बोली आहे. त्या प्रदेशातील लोकांच्या व्यवहारातील बोलल्या जाणाऱ्या भाषेचा आम्ही आढावा घेतला. मालवण हे प्रसिद्ध पर्यटनस्थळ असल्यामुळे तिथे विविध पर्यटकांची रेलचेल असते. तिथे लोक संवाद साधताना विविध भाषेतील शब्द आपल्या संवादात वापरतात हे एक विशेष आहे. सिंधुदुर्ग किल्ला पाहताना तिथे काही




मराठीतील शिलालेख ही आम्हाला पाहायला मिळाले. विद्यार्थ्यांनी ते शिलालेख वाचण्याचे प्रयत्न केले. त्यामुळे शिवकाळातील मराठी भाषेची ओळख आम्हाला तिथे गाईडच्या माध्यमातून झाली. गाईडने आम्हाला संपूर्ण किल्ल्याची माहिती दिली. किल्ला पाहून झाल्यानंतर आम्ही जवळच असलेल्या रॉक गार्डनला भेट दिली आणि सायंकाळी सूर्यास्ताचे विलोभनीय दृश्य पाहण्याचा योग आम्हाला आला. संध्याकाळ झाल्यामुळे आम्ही मालवण मध्येच मुक्कामी थांबलो. दिनांक १७ फेब्रुवारी, २०२४ रोजी सकाळी उठल्यानंतर सर्व आवरावर केली. आणि मालवण मधील प्रसिद्ध मासे लिलाव पाहण्यासाठी आम्ही निघालो. मासे लिलाव पाहताना आम्हाला समुद्रातील विविध माशांच्या प्रजातींची ओळख झाली. समुद्रातील माशांना मराठीत अनेक नावे आहेत. हे आम्हाला तिथे पाहायला मिळाले. आम्ही अनेक मत्स्य व्यवसायिकांशी संवाद साधून तेथील माहिती घेतली. नंतर आम्ही तारकरली या बीचवर जाण्यासाठी निघालो. तारकरली या बीचवर पोहोचल्यानंतर आम्हाला तेथील लोकांशी संवाद साधताना एक वेगळाच अनुभव आला. तिथे लोक संवाद साधताना विविध भाषेची सरमिसळ करून संवाद साधतात. हे तेथील विशेष आहे. म्हणून पर्यटन स्थळी बोलल्या जाणाऱ्या मराठीचे वैशिष्ट्य हे वेगळेच आहे. पुढे आम्ही कुणकेश्वरला पोहोचलो.

कुणकेश्वर हे ठिकाण देवगडच्या जवळ असून फार सुंदर समुद्रकिनारा लाभलेला, कुणकेश्वराच्या मंदिराजवळचा हा परिसर आहे. स्वच्छ, कमी वर्दळ असणारा हा किनारा आहे. कोकणचा आणि समुद्राचा मनसोक्त आनंद या ठिकाणी घेता येतो. खाण्यासाठी कुणकेश्वरचे उकडीचे मोदक चविष्ट आहेत. देवगडला उत्तम माशाचे जेवण मिळते. माफक दरात कोकण या ठिकाणी अनुभवता येतो. तिथे मनसोक्त सहलीचा आनंद आम्ही घेतला. आणि विजयदुर्गसाठी रवाना झालो. विजयदुर्गला पोहोचल्यानंतर आम्ही विजयदुर्ग किल्ल्यावर गेलो. विजयदुर्ग हा सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात असलेला एक जलदुर्ग आहे. हा किल्ला मुंबईच्या दक्षिणेस सुमारे २२५ किलोमीटरवर व गोव्याच्या उत्तरेस १५० किलोमीटरवर आहे. सुमारे १७ एकर जागेत हा किल्ला पसरला आहे. या किल्ल्यास तीन तटबंदी आहेत. त्यास चिलखती तटबंदी असे म्हणतात. याच्या तीन बाजू पाण्याने घेरलेल्या आहेत. या किल्ल्यात दोन भुयारी मार्ग आहेत. एक किल्ल्याच्या पूर्वेकडे तर दुसरा पश्चिमेकडे. विजयदुर्गचा समुद्र पाहताना आम्हाला डॉल्फिन माशाचेही दर्शन झाले. चार वाजता आम्ही कोल्हापूर ला जाण्यासाठी निघालो. कोल्हापूरला आम्ही संध्याकाळी सात वाजता पोहोचलो. तिथे रंकाळा तलाव आणि राजर्षी शाहू पॅलेस पाहून आम्ही नऊ वाजता कवठेमहांकाळच्या दिशेने निघालो. रात्री ११ वाजता आम्ही कवठेमहांकाळ मध्ये पोहोचलो.

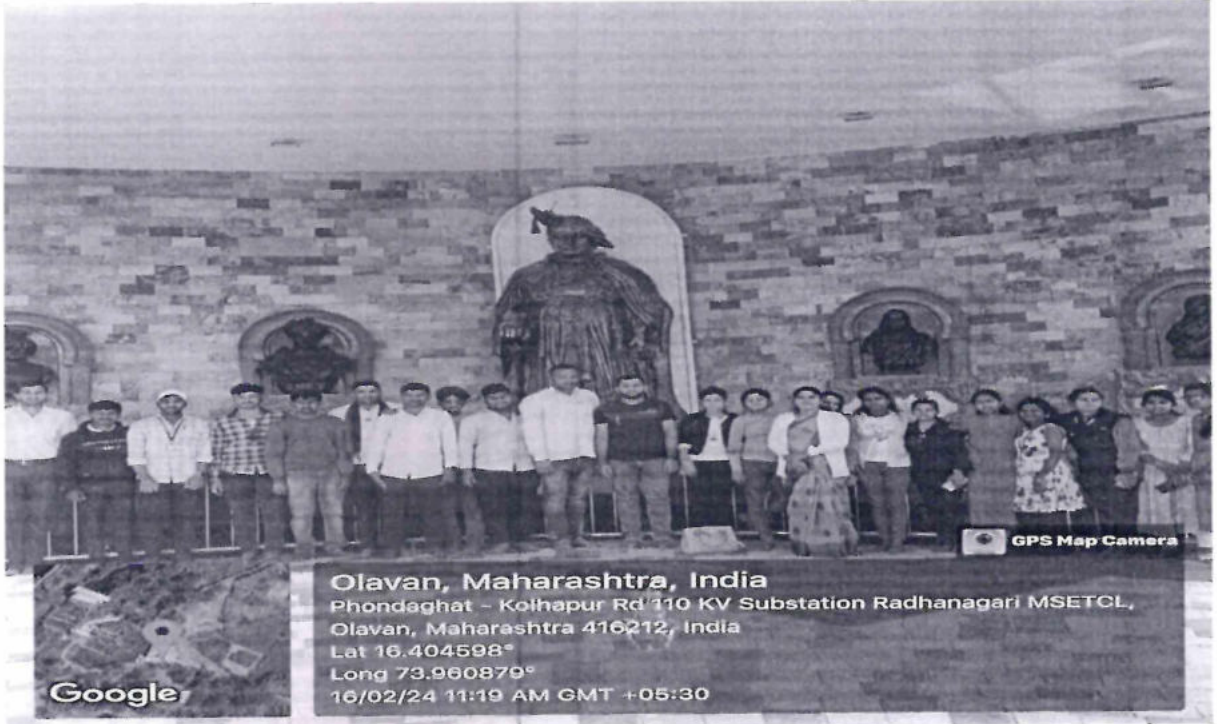
अशाप्रकारे सदर शैक्षणिक सहल खऱ्या अर्थाने सार्थ ठरली. सहली पाठीमागची उद्दिष्टे व हेतू सफल झाले. अशा प्रकारची सहल प्रत्येक वर्षी आयोजित व्हावी अशी विद्यार्थ्यांकडून प्रतिक्रिया मिळाली.




प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोडे
 एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
 प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
 पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
 कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.

मराठी विभाग

शैक्षणिक सहल : २०२३-२४







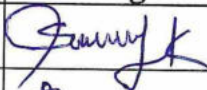
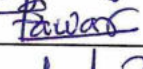
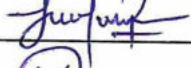
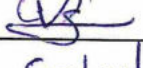
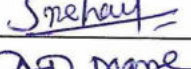
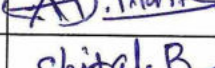
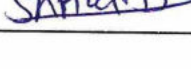
M. Mohale
प्रा. डा. मोहन गावळ लोढे
एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहांकाळ, जि. सांगली.


‘Shikshan Prasarak Sanstha’s
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe
Mahankal

DEPARTMENT OF MARATHI

EDUCATIONAL TRIP -2024

ATTENDANCE

Sr.No.	Name Of The Student	Class	Sign
1.	KAMBALE GURUPAD SHIVAJI	B.A.III	
2.	PAWAR SHIVRAJ SHRIKANT	B.A.III	
3.	LOHAR SHUBHAM PRAKASH	B.A.III	
4.	GORAD VISHWAJIT KISAN	B.A.III	
5.	BHOSALE SNEHAL GANESH	B.A.II	
6.	MANE AVADHUT DHANAJI	B.A.II	
7.	BHANDARE SHITAL AKARAM	B.A.II	


प्रा. डॉ. मोहन गोविंद लोटे
एम.ए., एम.फिल, पीएच.डी.
प्राध्यापक व मराठी विभाग प्रमुख
पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहाकाळ, जि. सांगली.





Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist: Sangli.

Academic Year 2022-23

DEPARTMENT OF HISTORY
Activity under Experiential Learning

STUDY TOUR


- 1. BANURGAD (BHUPALGAD) FORT**
- 2. KOLDURG FORT**
- 3. OLD MAHADEVA'S TEMPLES**
(KUCHI, TISANGI, SHUKACHARI)






DEPARTMENT OF HISTORY
STUDY TOUR REPORT
ONEPAGE REPORT

NO.	PARTICULARS	DETAILS
1	Name of Department	DEPARTMENT OF HISTORY
2	Day & Date	Saturday, 21/01/2023
3	Title of the Activity	STUDY TOUR (ONE DAY)
4	No. of Student Enrolled	15
5	Study Tour to	1. Banurgad (Bhupalgad) 2. Koldurg Fort 3. Old Mahadeva's Temples (Kuchi, Tisangi, Shukachari)
6	Arrival and Departure	Arrival- at 9:00am Departure- 4:00pm
7	Background	The one-day study tour to Banurgad (Bhupalgad) and Koldurg was organized on 21/01/2023 with the aim of providing participants with a historical and educational experience. The fort, known for its rich history and architectural significance, offered a unique learning opportunity for the participants.
8	Objectives	Skill Development: To enable participants to develop specific skills relevant to their academic or professional goals, such as language proficiency, research techniques, or practical skills. Personal Growth: To encourage personal development by challenging participants to step out of their comfort zones, adapt to new environments, and overcome challenges. Field Experience: To offer real-world exposure related to the study area, enabling participants to apply theoretical concepts in practical settings. Team Building: To promote teamwork, communication, and collaboration among participants through shared experiences and activities. Overall, the objectives aim to enrich participants' knowledge, skills, and perspectives through immersive, experiential learning opportunities outside of the traditional classroom setting.
9	Key Learnings	Understanding the strategic importance of forts in historical contexts. Appreciating the architectural marvels and engineering techniques employed in fort construction. Gaining insights into the cultural and historical significance of Banurgad (Bhupalgad) and Koldurg Fort.
10	Conclusion	Reflection: Participants reflect on their experiences, insights gained, and lessons learned during the tour. Evaluation: Assessing the effectiveness of the study tour in achieving its objective such as educational enhancement, cultural exposure, and skill development. Feedback: Collecting feedback from participants to understand their perspectives, suggestions for improvement, and overall satisfaction with the tour. Knowledge Application: Discussing how the knowledge, skills, and experiences gained during the tour can be applied to academic, professional, or personal contexts. In summary, the conclusion of a study tour involves synthesizing the learning experiences, evaluating outcomes, and planning for future educational endeavours based on the insights gained.


HBAD
Department of History
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli


PRINCIPAL
for PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli



दि. 06/01/2023

प्रति,

मा. प्राचार्य,

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय कवठेमहांकाळ, जिल्हा- सांगली.

विषय- एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीसाठी परवानगी मिळणेबाबत.

महोदय,

आपल्या महाविद्यालयातील इतिहास विभागामार्फत इतिहास विषयाच्या अभ्यासक्रमांतर्गत स्थानिक इतिहासाबाबत जागृती निर्माण करण्यासाठी आणि इतिहास विषयांत अभिरुची निर्माण करण्यासाठी ऐतिहासिक स्थळांना भेट देण्याच्या हेतूने एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीचे आयोजन केले आहे. त्याकरिता शनिवार दि. 21/01/2023 रोजी बी. ए. भाग II व III मधील विद्यार्थ्यांना घेऊन जाण्याचे ठरले आहे.

तरी सदर शैक्षणिक सहलीसाठी आपली परवानगी मिळावी ही नम्र विनंती.

शैक्षणिक सहलीच्या भेटीची ठिकाणे

- 1) किल्ले भूपाळगड तथा बाणूरगड, तालुका- खानापूर, जिल्हा- सांगली.
- 2) किल्ले कोळदुर्ग, कुसबावडे, तालुका- खानापूर, जिल्हा - सांगली.
- 3) पुरातन महादेवाची मंदिरे- शुकाचारी, तिसंगी, कुची.

Permission granted

For **PRINCIPAL,**
Padmabhushan Vasantraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist- Sangli

Head
Department of History
P.V.P Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli



शिक्षण प्रसारक संस्थेचे,

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय कवठेमहान्कळ

दि. 10/01/2023

इतिहास विभाग

विद्यार्थ्यांसाठी महत्त्वाची नोटीस

एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीबाबत

बी. ए. भाग II व III मध्ये शिकत असणाऱ्या आणि इतिहास विषयाला प्रवेश घेतलेल्या सर्व विद्यार्थ्यांना सूचित करण्यात येते की, शनिवार दि. 21/01/2023 रोजी सकाळी 8 वाजता एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करण्यात आले आहे. स्थानिक इतिहासाबाबत जागृती निर्माण करणे आणि इतिहास विषयांत अभिरुची निर्माण करणे या हेतूने ऐतिहासिक स्थळांना भेट देण्यासाठी एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीचे आयोजन इतिहास विभागामार्फत करण्यात आलेले आहे.

तरी ज्या विद्यार्थ्यांना या सहलीसाठी येणे शक्य आहे अशा विद्यार्थ्यांनी आपली नावे इतिहास विभागामध्ये दि. 15/01/2023 अखेर संबंधित शिक्षकांकडे नोंदवावीत.

सोबत- एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीची ठिकाणे व नियमावली.

विभागप्रमुख
Head

Department of History
P.V.P Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli



एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीची ठिकाणे-

क्र.	ठिकाण व पत्ता
1	किल्ले भूपालगड तथा बाणूरगड, तालुका- खानापूर
2	किल्ले कोळदुर्ग, कुसबावडे, तालुका- खानापूर
3	पुरातन महादेवाची मंदिरे- कुची, तिसंगी, शुकाचारी.

नियमावली / विद्यार्थ्यांसाठी सूचना

शैक्षणिक सहलीसाठी येणा-या विद्यार्थ्यांनी खालील सूचनांचे पालन करणे बंधनकारक आहे.

1. सदर शैक्षणिक सहलीसाठी सर्व विद्यार्थ्यांनी महाविद्यालयाचा गणवेश परिधान करणे अनिवार्य आहे.
2. सोबत महाविद्यालयाचे ओळखपत्र बाळगणे बंधनकारक आहे.
3. प्रत्येक विद्यार्थ्यास प्रवेश फी 100 रु. राहिल.
4. प्रत्येक विद्यार्थ्याने येताना सोबत पाणी आणि एक वेळचे जेवण आणणे आवश्यक आहे.
5. जे विद्यार्थी येण्यासाठी शारिरीकदृष्ट्या असमर्थ आहेत (उदा. ज्यांची शस्त्रक्रिया वगैरे झालेली आहे) किंवा काही **Medical Issues** असतील तर अशा विद्यार्थ्यांनी तशी पूर्वकल्पना द्यावी.
6. शैक्षणिक सहलीच्या ठिकाणी विद्यार्थ्यांनी आपला समूह सोडून इतर ठिकाणी भटकू नये.
7. क्षेत्रभेटीच्या ठिकाणी आपल्याकडून कोणतेही विघातक कृत्य घडणार नाही याची प्रत्येकाने आवर्जून काळजी घ्यावी.

विभागाप्रमुख
Head

Department of History
P.V.P Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli



विद्यार्थी यादी

अ. क्र.	विद्यार्थ्यांचे नाव	वर्ग
1	माने काजल रघुनाथ	B.A. III
2	पवार प्राजक्ता विजय	B.A. III
3	पवार प्रियांका दिलीप	B.A. III
4	डोंगरे प्रथमेश नारायण	B.A. III
5	पवार रोहित राजकुमार	B.A. III
6	मोर महेश मारुती	B.A. III
7	सूर्यवंशी प्रतीक्षा अर्जुन	B.A. III
8	लोढे श्वेता गंगाधर	B.A. III
9	पारेकर नझिम हिम्मतखान	B.A. III
10	पाटील मृणाली उत्तम	B.A. II
11	पाटील वर्षारानी तानाजी	B.A. II
12	चव्हाण रेश्मा रमेश	B.A. II
13	माळी शंभो दादासो	B.A. II
14	कांबळे शिलयुग राजेंद्र	B.A. II
15	कोष्टी अभिषेक श्रीशैल	B.A. II

विभागाप्रमुख
Head

Department of History
P.V.P Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

हमीपत्र



आम्ही सर्व विद्यार्थी खाली सही करून देतो की, दिनांक 21.01.2023 रोजी आयोजित करण्यात आलेल्या एकदिवसीय शैक्षणिक सहलीसाठी आम्ही सोबत जोडलेल्या नियमावलीतील नियमांच्या अधीन राहून प्रत्यक्ष सहलीसाठी येण्यास तयार आहोत. आमच्याकडून सहलीदरम्यान कोणतेही गैरकृत्य घडणार नाही याची आम्ही हमी देतो. याउपर आमच्याकडून कोणतेही गैरकृत्य घडल्यास महाविद्यालय जी कारवाई करेल ती आम्हाला मान्य असेल. म्हणून खाली सही करून देत आहोत.

विद्यार्थी यादी

अ. क्र.	विद्यार्थ्याचे नाव	वर्ग	सही
1	माने काजल रघुनाथ	B.A. III	Kajal m.
2	पवार प्राजक्ता विजय	B.A. III	P.V.
3	पवार प्रियांका दिलीप	B.A. III	Priyanka.
4	डोंगरे प्रथमेश नारायण	B.A. III	P.N.P.
5	पवार रोहित राजकुमार	B.A. III	Rohit.
6	मौरै महेश मारुती	B.A. III	M.M.
7	सूर्यवंशी प्रतीक्षा अर्जुन	B.A. III	P.Suryawansi
8	लॉडे श्वेता गंगाधर	B.A. III	S.L.
9	पारेकर नझिम हिम्मतरखान	B.A. III	Parekar N.H.
10	पाटील मृणाली उत्तम	B.A. II	M.Patil.
11	पाटील वर्षारानी तानाजी	B.A. II	V.R.
12	चव्हाण रेश्मा रमेश	B.A. II	R.R.C.
13	माळी शंभो दादासो	B.A. II	M.
14	कांबळे शिलयुग राजेंद्र	B.A. II	S.Yug
15	कोष्टी अभिषेक श्रीशैल	B.A. II	H.S. Head

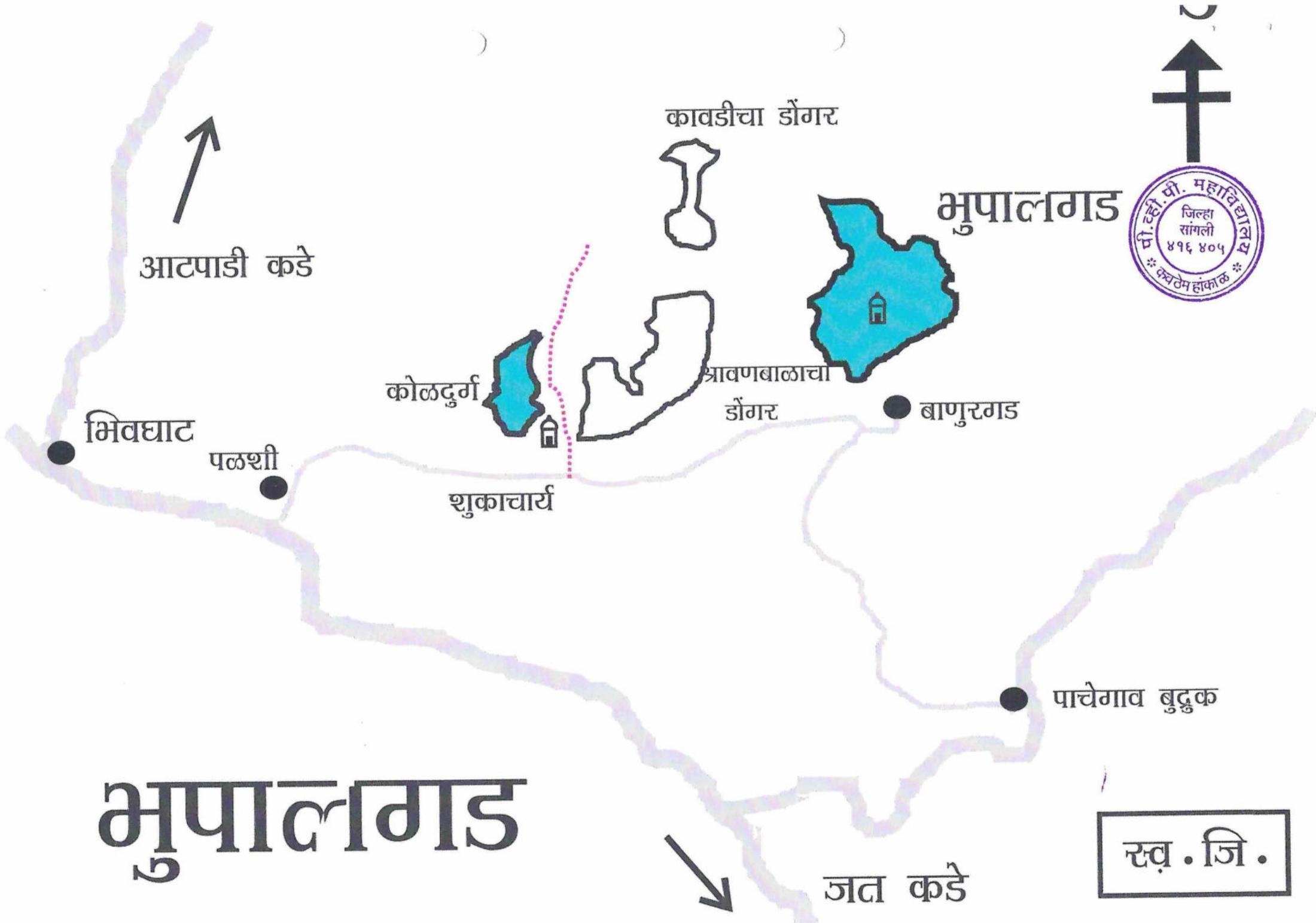
Head
Department of History
P.V.P Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-San

एकदिवसीय शैक्षणिक सहल
हजेरीपत्रक (ATTENDANCE SHEET)



अ. क्र.	विद्यार्थ्याचे नाव	वर्ग	सही
1	माने काजल रघुनाथ	B.A. III	Kajal M.
2	पवार प्राजक्ता विजय	B.A. III	P.P.
3	पवार प्रियांका दिलीप	B.A. III	Priyanka
4	डोंगरे प्रथमेश नारायण	B.A. III	P.N.R.
5	पवार रोहित राजकुमार	B.A. III	Rohit
6	मोर महेश मारुती	B.A. III	M.M.
7	सूर्यवंशी प्रतीक्षा अर्जुन	B.A. III	P.A.Suryawansi
8	लॉडे श्वेता गंगाधर	B.A. III	S.S.
9	पारेकर नझिम हिम्मतखान	B.A. III	Parekar N.
10	पाटील मृणाली उत्तम	B.A. II	M.Patil
11	पाटील वर्षारानी तानाजी	B.A. II	V.Patil
12	चव्हाण रेश्मा रमेश	B.A. II	R.R.C.
13	माळी शंभो दादासो	B.A. II	S.
14	कांबळे शिलयुग राजेंद्र	B.A. II	Shilayug
15	कोष्टी अभिषेक श्रीशैल	B.A. II	A.K.

Head



आटपाडी कडे

कावडीचा डोंगर

भुपालगड



भिवघाट

पलशी

कोलदुर्ग

श्रावणबालाचा डोंगर

बाणुरगड

शुकाचार्य

पाचेगाव बुद्रुक

भुपालगड

जत कडे

स्व. जि.

कराडकडे

विटा

खानापूर

पंढरपूरकडे



शुकाचार्य

ताडाचीवडी

बाणूरगड

पळशी

भिवघाट

नागज फाटा

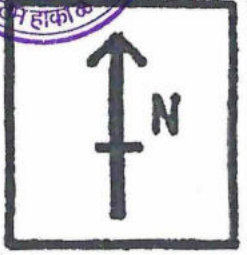
तासगांव

विजापूरकडे

सांगली

भोसे

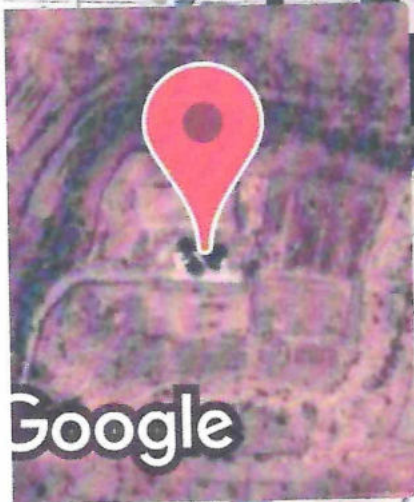
मिरज





वहिर्जी नाईक
समाधी

GPS Map Camera



Banurgad, Maharashtra, India

6VRJ+Q6F, Banurgad, Maharashtra 415307,
India

Lat 17.242017°

Long 74.88068°

21/01/23 11:45 AM GMT +05:30

किल्ले भूपालगड उर्फ बाणूरगड



समुद्र सपाटीपासूनची उंची : सुमारे 3000 फूट

बाणूरगड किंवा भूपालगड हा किल्ला नेहमी भ्रमंती करणाऱ्या लोकांच्या यादीत नसला तरी एक वेळ अवश्य पाहावा असा आहे. सांगली जिल्ह्यातील खानापूर या गावाच्या पूर्वेस २० कि. मी. अंतरावर सांगली व सोलापूर या जिल्ह्यांच्या सरहद्दीवर हा किल्ला आजतागायत तग धरून उभा आहे. येथे जाण्यासाठी आपण गुहागर-विजापूर या रस्त्यावरील पळशी किंवा जरंडीपत्रा येथे जावे. तेथून बाणूरगड ५ कि.मी. अंतरावर आहे व शुक्राचार्य ४ कि. मी. वर आहे.

पाल घराण्यातील भूपाल या राजाने हा किल्ला बांधला म्हणून यास भूपालगड असेही म्हणतात. खानापूर तालुक्यातील 'रेवागिरी' या डोंगरांगेच्या पूर्व टोकावर बाणूरगड हे गाव व किल्ला आहे. समुद्रसपाटीपासून सुमारे ३००० फूट उंचीवर असणाऱ्या या किल्ल्यावर पावसाच्या अभावामुळे फारशी वनराई नाही. बारा वेशी, बारा बुरुज व बारा मारुती हे येथील वैशिष्ट्य आहे. एखाद्या पुष्करणीप्रमाणे असलेला दगडी बांधकामाचा एक सुंदर तलाव या किल्ल्यावर आहे. महादेव मंदिरासमोर शिवाजी महाराजांचे विश्वासू सहकारी बर्हिजी नाईक यांची समाधी आहे. या गडावर विजापूरकरांची राजवट असताना राजांनी बर्हिजींना हेरगिरीसाठी पाठवले होते. बर्हिजी आल्याचे समजताच किल्लेदाराने त्यांच्या मागावर घोडे पाठवले. बर्हिजी दगडी तटबंदीत लपून बसले असता किल्लेदाराने त्यांना भाल्याने जखमी केले व महादेव मंदिरासमोरच त्यांचा शिरच्छेद केला. तेथे बर्हिजी नाईकांची समाधी आहे.

काळा पाषाण व वालुकाश्म खडकात बांधलेल्या या गडास ७० फूट उंचीची तटबंदी असून तटामध्ये दगडी कमानी कोरून केलेल्या १२ वाटा येथे आहेत. त्यातून आपणांस वाकून जावे लागते. भाल्याने किंवा तलवारीने वार करता येण्याजोगी वाट येथे ठेवण्यात आली आहे. या गडास बाणाचा आकार असल्याने तसेच या परिसरात बाणोबाचे मंदिर असल्याने त्यास बाणूरगड म्हणतात, अशी आख्यायिका आहे. या गडाच्या उत्तरेस कावडीच्या आकाराचे डोंगर आहेत. त्यांना कावडीबुवाचा डोंगर असे म्हणतात. जवळच बावदरा नावाची दरी आहे.

या गडावरील मोठ्या बुरुजावर जाण्यासाठी पायऱ्या आहेत. येथून सर्व परिसर न्याहळता येतो. येथे असलेल्या बाणलिंग मंदिराच्या बांधकामासाठी आठ फूट उंचीच्या प्रचंड शिळा वापरल्या आहेत. या प्रत्येक शिळेवर कोरीव काम केलेले आहे. मंदिराबाहेर चबुतरा व तुलसी वृंदावन आहे. दरवर्षी येथे यात्रा भरते. या यात्रेस परिसरातील अनेक भक्तगण येतात. या गडावर एक विहीर असून

काही भागात शेती केलेली दिसून येते. या गडाच्या प्रवेशद्वाराजवळ काही घरे असून त्यामध्ये ग्रामस्थांचे वास्तव्य असते.



आपल्या एक दिवसाच्या सहलीत रेवागिरी डोंगररांग, वालुकाश्म खडकाची तटबंदी, प्राचीन महादेव मंदिर, बर्हिजी नाईकांची समाधी, बाणलिंग मंदिर परिसर व दगडी बांधकामाचा तलाव या गोष्टी पाहून होतात. बाणूरगड व शुकाचार्य ही दोन्ही ठिकाणे एका दिवसात पाहून आपणास सांगली, कोल्हापूर किंवा कराड-सातारा येथे मुक्कामास परतता येते.

किल्ले भुपालगड उर्फ बाणूरगड



Google

GPS Map Camera

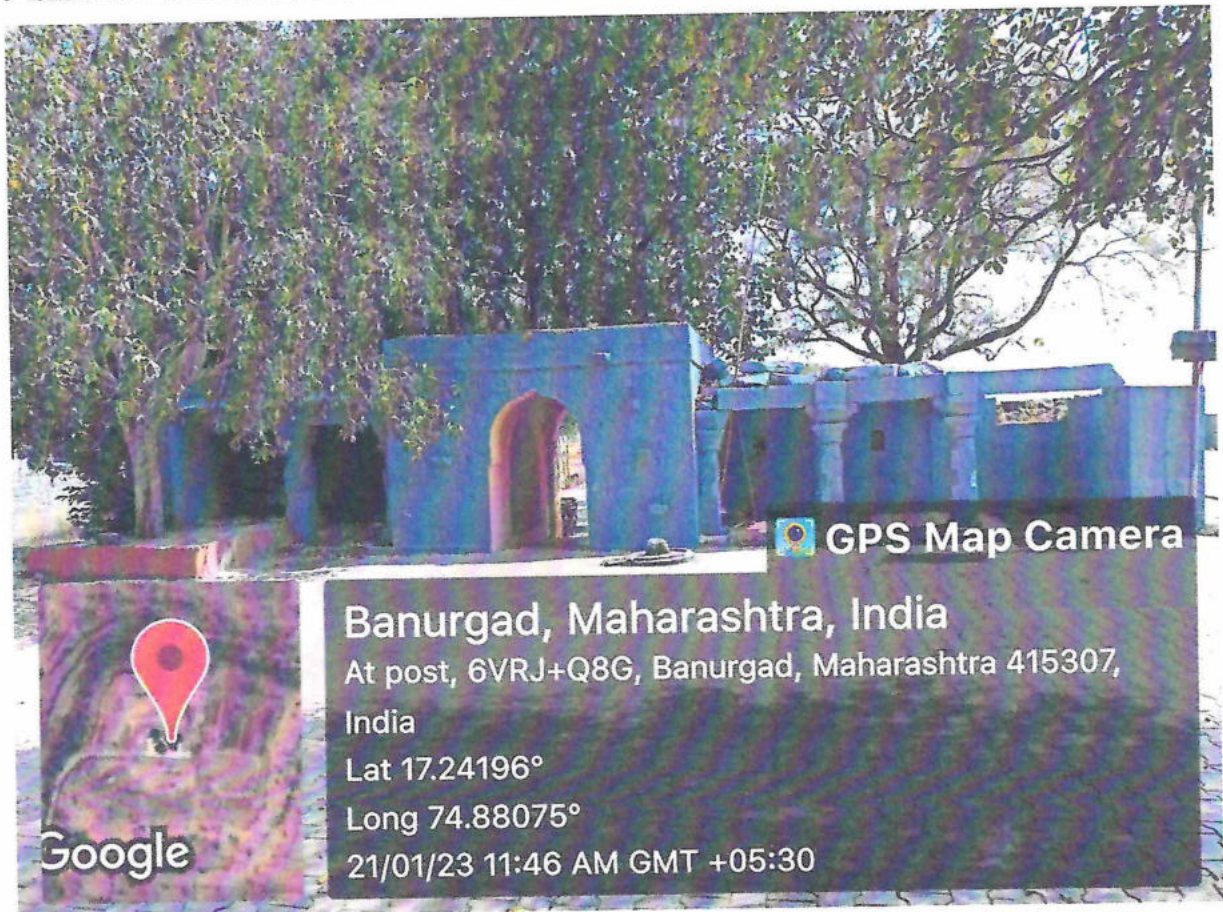
Banurgad, Maharashtra, India

6VRJ+Q6F, Banurgad, Maharashtra 415307, India

Lat 17.241899°

Long 74.880663°

21/01/23 11:46 AM GMT +05:30



Google

GPS Map Camera

Banurgad, Maharashtra, India

At post, 6VRJ+Q8G, Banurgad, Maharashtra 415307, India


Lat 17.24196°

Long 74.88075°

21/01/23 11:46 AM GMT +05:30



महाराष्ट्र शासनाचे प्राधिकाराने,
सांख्यिक मंत्रालयाचे प्राधिकाराने
विशेष प्रावनांचा अन्वये
बहिर्जी नाईक
यांना या जागेवर स्थापित
पिन: 17/00/4011 रोड
- उद्घाटन -
श्री. ना. विठ्ठलजी फडणवीस
राज्य मंत्रालय, मुंबई.
संस्कृतिका - विहित


 GPS Map Camera



Banurgad, Maharashtra, India
6VRJ+Q6F, Banurgad, Maharashtra 415307, India
Lat 17.241874°
Long 74.880324°
21/01/23 11:11 AM GMT +05:30

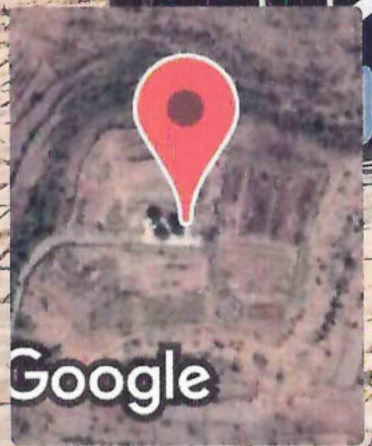


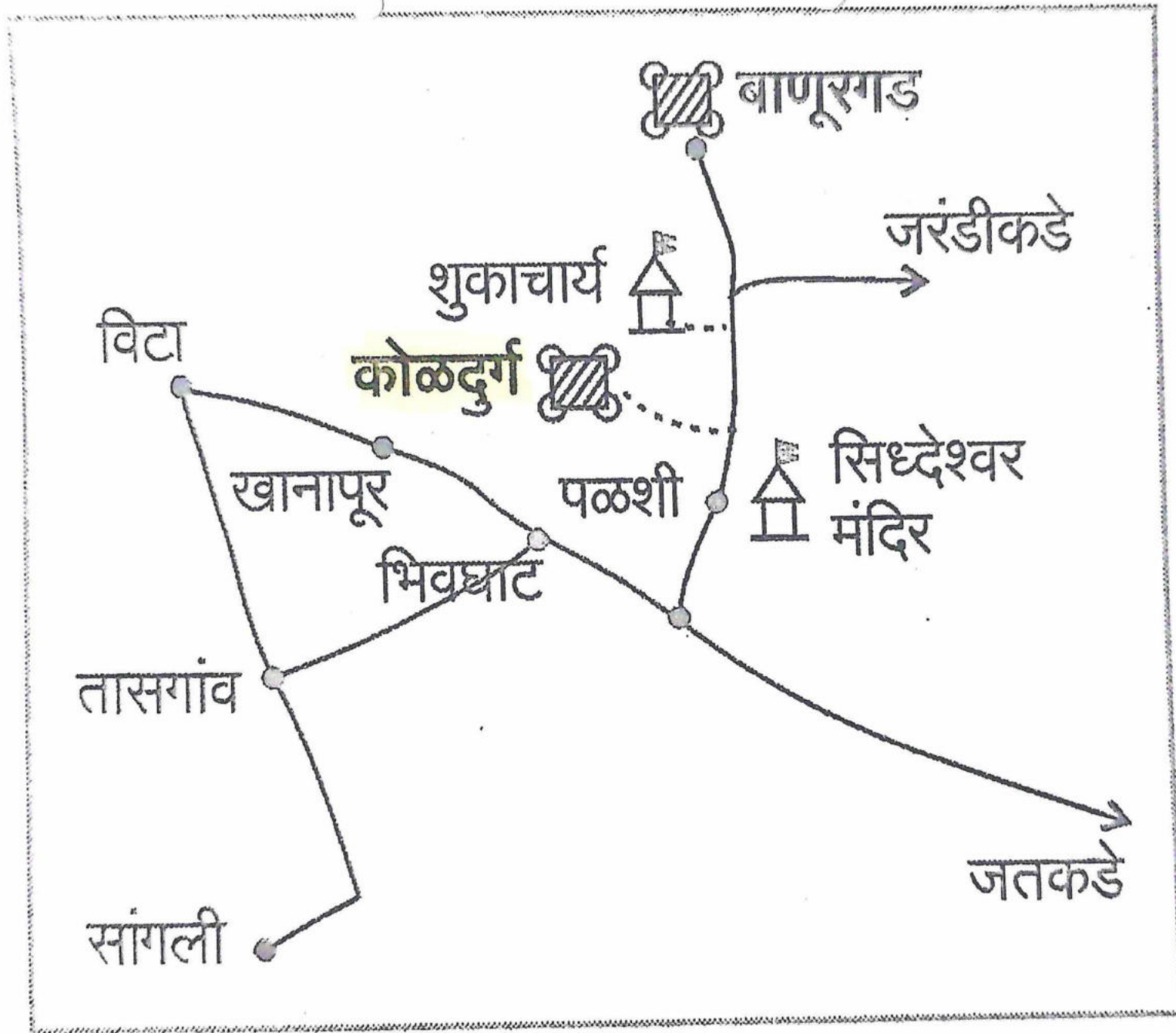


 GPS Map Camera

Banurgad, Maharashtra, India
At post, 6VRJ+Q8G, Banurgad, Maharashtra 415307, India

Lat 17.241943°
Long 74.880864°
21/01/23 11:38 AM GMT +05:30





किल्ले कोळदुर्ग



सांगली जिल्ह्यातील खानापूर तालुक्यात इतिहासाविषयीच्या अज्ञानातून चक्क दुर्गअवशेष उचलून नेऊन उघडा-बोडका बनविलेला एक दुर्दैवी गड आहे, कोळदुर्ग. समुद्रसपाटीपासून ७५० मीटर उंचीवर वसलेल्या कोळदुर्गास भूपाळगड उर्फ बाणूरगडसारखा इतिहासप्रसिद्ध तोला मोलाच्या दुर्गसोबत्याचा शेजार लाभलेला आहे; पण असे असतानासुद्धा बुरुज, तटबंदी, तलाव व हेमाडपंथी मंदिराचे भग्नावशेष आपल्या अंगाखांद्यावर मिरविणारा हा गड त्याच्या शेजारील ग्रामस्थांच्या एका चुकीच्या कृतीने ओस दुर्गा पडलेला आहे. १९७० साली कोळदुर्गावरील महादेव मंदिराचे काळ्या पाषाणातील नक्षीदार पाषाण शेजारील पळशीगावच्या ग्रामस्थांनी एकत्र येऊन बैलगाड्यांच्या मदतीने गडावरून हलवून पळशीगावात परस्पर नेले. त्यांच्या या चुकीच्या कृतीने पळशी गावातील सिद्धनाथ मंदिर उभारले गेले; पण कोळदुर्ग मात्र ऐतिहासिक अवशेषांविना कायमचा सुना-सुना झाला.

कोळदुर्गास भेट देण्यासाठी दोन मार्ग आहेत. पुणे-सातारा या बाजूने येणाऱ्या दुर्गप्रेमींनी कराड-विटा-खानापूरमार्गे तर कोल्हापूर-सांगली या भागातून येणाऱ्या दुर्गप्रेमींनी सांगली-तासगाव- भिवघाटमार्गे कोळदुर्गाशेजारचे पळशी गाव गाठावे. पळशी गावात येण्यासाठी भिवघाटहूनही जीपसारखी खाजगी वाहाने मिळतात. पळशी गावाच्या चौकातच रस्त्याच्या उजव्या हातास सिद्धनाथाचे भव्य मंदिर असून त्याच्या पुढे शिवरायांचा अश्वारूढ पुतळा उभा करण्यात आला आहे. हे सिद्धनाथाचे मंदिर आतूनही खूप मोठे असून गाभाऱ्याच्या एका बाजूला सिद्धनाथाची तर दुसऱ्या बाजूला मारुती व गणपतीबाप्पांची मूर्ती आपणास पाहायला मिळते. हे मंदिर चारही बाजूंनी फिरून पाहिल्यावर त्याच्या भिंतीत आपणास कोळदुर्गावरून आणलेल्या अनेक वीरगळी, तोंडात आग ओकणाऱ्या सिंहाचे, हत्तीचे शिल्प व अनेक नक्षीदार दगड पाहायला मिळतात. हे सर्व नक्षीदार दगड पाहिल्यावर कोळदुर्गावरील महादेवाचे मंदिर किती भव्य असले पाहिजे याची आपणास थोडीशी कल्पना येते.

आपण पळशीचे सिद्धनाथाचे मंदिर पाहून गावातून बाणूरगडाच्या वाटेवरील साधारण ३ कि. मी. अंतरावर असणारा जाधव मळा गाठायचा. या मळ्याच्या बरोबर पुढून डाव्या हाताने जी पायवाट शेतवडीतून जाते ती आपणास कोळदुर्गावर नेते. या पायवाटेने जात असताना वाटेच्या दोन्ही बाजूस जी शेती आहे तिला कुंपण म्हणून कोळदुर्गाच्या तटबंदीचे सुघड पाषाण वापरण्यात आले. आहेत. जाधव मळ्यापासून दहा मिनिटांत आपण



कोळदुर्गासमोर येऊन पोहोचतो. या दुर्गाच्या चारी बाजूनी काळ्या पाषाणाची साधारण १० फूट उंचीची तटबंदी असून त्यात जागोजागी बुरुजही बांधण्यात आले आहेत. आपण भग्न प्रवेशद्वारातून गडप्रवेश केला त्याच्या दोन्ही बाजूचे बुरुज सर्वात उत्तम स्थितीत आहेत.

कोळदुर्गात आत प्रवेश करताच प्रचंड मोठमोठे पाषाण इकडे-तिकडे पडलेला साधारण ११० एकराचा विस्तार असलेला गड आपणास एका दृष्टिक्षेपात दिसतो. या गडावर अलीकडेच (२०१२ साली) एक घर बांधण्यात आले असून या घरासमोरील एका दगडावर मान नसलेल्या पण सालंकृत असलेल्या नंदीचे शिल्प आपणास पाहायला मिळते. गडावर या शिल्पाशिवाय महादेव मंदिराचे अनेक नक्षीदार दगड विखरून पडलेले असून त्यातील सर्वात जास्त दगड गडाच्या शुकाचार्यकडील मागील बाजूच्या बंधान्याजवळ पडलेले आहेत. या बंधान्यापाशी जाण्यासाठी थोडे खाली उतरावे लागते याठिकाणी एक नैसर्गिक झरा असून इकडून अर्ध्या पाऊण तासात खाली उतरून शुकाचार्य हे प्राचीन ठिकाण गाठता येते. जे दुर्गप्रेमी शुकाचार्यकडून इकडे येणार आहेत ते या बंधान्याच्या तटाची भिंत चढून गडावर येऊ शकतात. आपण हा बंधारा पाहून गडाच्या मध्यभागील मोठमोठ्या शिलाखंडाजवळ पोहोचायचे. या शिलाखंडावरून समोरच डाव्या हातास श्रावणबाळाची कावड म्हणून प्रसिद्ध असणारे दोन डोंगर व त्याच्यापुढे बाणूर उर्फ भूपालगड आपणास दिसतो. कोळदुर्गावर वरील अवशेषांशिवाय इतर कोणतेही दुर्ग अवशेष नसून गडाच्या भग्न तटबंदीचे दगड आजूबाजूच्या शेतकऱ्यांनी उचलून नेले आहेत. त्यामुळे कोळदुर्गाची आपली गडफेरी अर्ध्या तासात आटोपते.

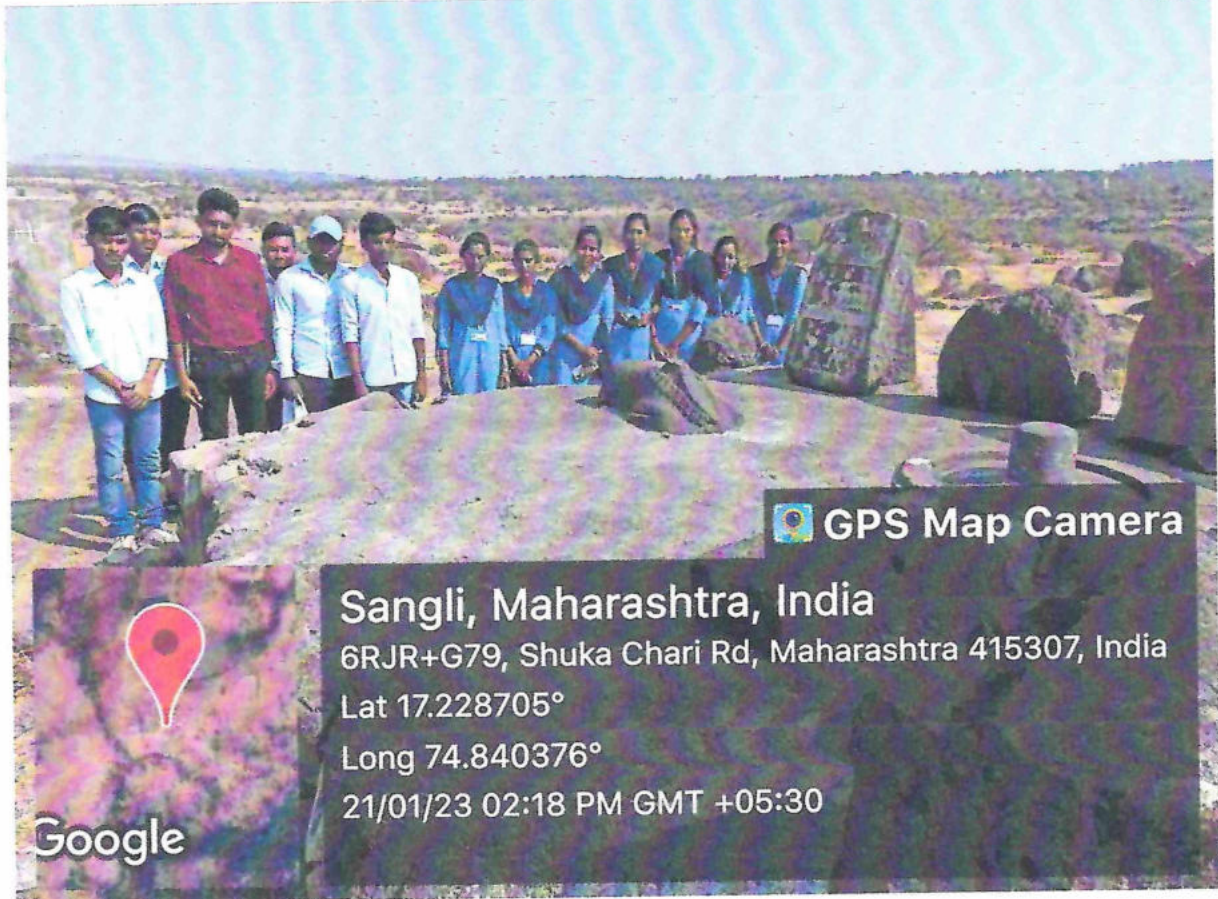
कोळदुर्गाची बांधणी शेजारील बाणूरगडाबरोबर करण्यात आली. कारण या दोन्ही गडांच्या बांधणीत खूप साम्य आहे. हे दोन्ही गड फक्त घडीव दगड रचून बांधण्यात आले आहेत. हा गड कोळीराजाने बांधला असे सांगितले जाते, पण या दंतकथेस कोणताही आधार नाही. शिवकाळात हा गड नक्की नांदता असणार, कारण हा किल्ला बाणूरगडाच्या वाटेवरच असल्याने याचे संरक्षणाच्या दृष्टीने महत्त्व अनन्यसाधारण ठरते; जर हा किल्ला शिवकाळात बेबसाऊ असता तर यावरून तून व नक्कीच बाणूरगडावर मारा करता आला असता. शिवकाळानंतर १८ व्या शतकात हा ओस पडला असण्याची शक्यता जास्त आहे.

कोळदुर्ग पाहून झाल्यावर आपण आल्यावाटेने परत जाधव मळयाजवळ यायचे व तेथून बाणूरगडाच्या मार्गावरील शुकाचार्य हे ठिकाण आपण पायी अर्ध्या-वापरण्यात पाऊण तासात गाठायचे. आपण या वाटेने न जाता कोळदुर्गारील बंधान्याच्या दरीत उतरून तेथूनही तासाभरात शुकाचार्य हे ठिकाण गाठू शकतो. शुकाचार्य हे व्यासमुनींचे चिरंजीव शुकाचार्य, भीष्माचार्य, कार्तिकस्वामी व मारुती या चार ब्रह्मवेत्यांपैकी एक

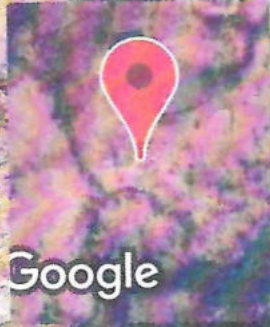
शुकाचार्य ब्रह्मवेत्ता होते. राजा परीक्षित हे पांडवांचे पणतू. त्यांच्या आत्म्यास सद्गती मिळावी म्हणून सात दिवसात श्रीमत् भागवत सांगणाऱ्या शुकाचार्यांची तपोभूमी म्हणून हे ठिकाण ओळखले जाते. या ठिकाणी अखंड चोवीस तास वाहणारा थंडगार पाण्याचा झरा, आश्रमशाळा, शुकाचार्यांचे प्राचीन दगडी मंदिर व गुफा असून या ठिकाणाची नियमित पूजा केली जाते. शुकाचार्यांच्या पुढेच बाणूरगडावर वसलेले बाणूरगड हे गाव असून शिवकालातील हेर खात्याचे प्रमुख बहिर्जी नाईकांची येथे समाधी आहे. स्वतःची गाडी सोबत असल्यास तासगांवचे सुप्रसिद्ध गणपती मंदिर, पळशी, कोळदुर्ग, शुकाचार्य व बाणूरगड ही सर्व ठिकाणे एका दिवसात आरामात पाहून होतात.



किल्ले कोळदुर्ग



GPS Map Camera



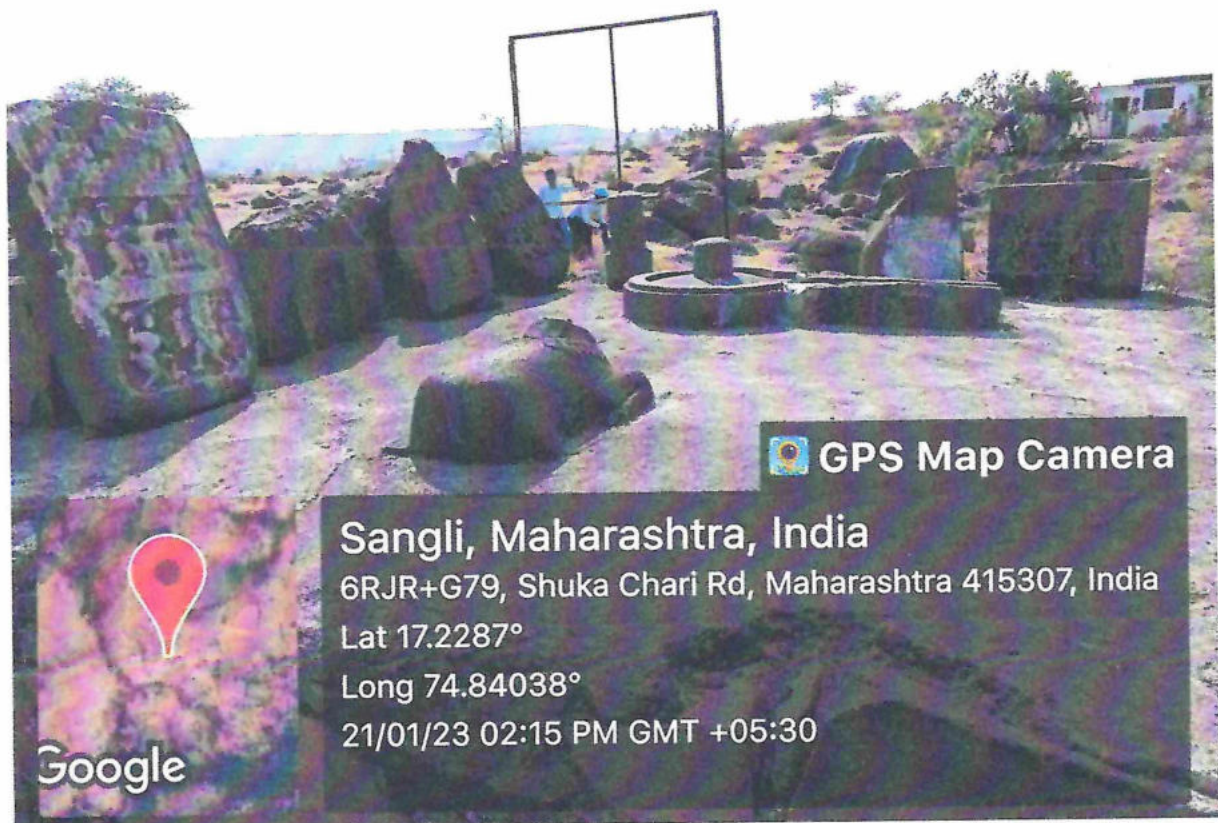
Sangli, Maharashtra, India

6RJR+G79, Shuka Chari Rd, Maharashtra 415307, India

Lat 17.228705°

Long 74.840376°

21/01/23 02:18 PM GMT +05:30



GPS Map Camera



Sangli, Maharashtra, India

6RJR+G79, Shuka Chari Rd, Maharashtra 415307, India

Lat 17.2287°

Long 74.84038°

21/01/23 02:15 PM GMT +05:30

बाणूरगड आणि कोळदुर्ग दुरवस्थेबद्दल...



सांगली जिल्ह्यातील इतिहासप्रसिध्द भूपाळगड म्हणजेच बाणूरगड आणि कुलदुर्ग तथा कोळदुर्ग हे दोन गड सध्या शेवटच्या घटका मोजत आहेत. या गडांच्या ऐतिहासिक वारशाची मोठ्या प्रमाणावर तोडफोड सुरू आहे. या दोन्ही गडांचे अस्तित्वात असलेले बुरुज आणि तटबंदीचे दगड चक्क शेतात ताली आणि बांध घालण्यासाठी वापरले जात आहेत. पुरातत्व विभागाच्या दुर्लक्षामुळेच हे होत असल्याचा आरोप इतिहासप्रेमी करत आहेत.

खानापूर तालुक्याच्या पूर्वेला आणि कवठेमहाकाळ, तासगाव तसेच आटपाडी तालुक्यांच्या सरहद्दीवर बाणूरगड आणि कुलदुर्ग आहेत. भूपाळगड हा शिवाजी महाराजांन विजापूरच्या आदिलशाहीवर लक्ष ठेवण्यासाठी निवडला. तो सांगली आणि सोलापूर जिल्ह्यांच्या सीमेवरील पाच तालुक्यांच्या सरहद्दीवर आहे. किल्ल्याच्या सभोवती तटबंदी, मध्यभागी बालेकिल्ला आणि त्यात शिवमंदिर अशी रचना होती. किल्ल्याचे क्षेत्रफळ सव्वा चौरस किलोमीटर आहे. किल्ल्याच्या दक्षिण बाजूला बाणूर हे गाव आहे.

किल्ल्यात बारा महिने पुरेल अशी पाण्याची व्यवस्था होती. छत्रपती शिवरायांनी पूर्वेकडील प्रदेशावर वचक ठेवण्यासाठी या प्राचीन किल्ल्याचा चांगला उपयोग करून घेतला. शिवशाहीत येथे फिरंगोजी नरसाळा हे किल्लेदार होते. महाराजांच्या गुप्तहेर विभागाचे प्रमुख बहिर्जी नाईक यांची समाधी या किल्ल्यावर आहे. या किल्ल्याच्या परिसरात चिलखत बुरूजाशेजारी चोर दरवाजासह एकूण १२ वाटा होत्या. तसेच लहान मोठे १२ बुरूजही होते. मात्र ते सगळे आता नामशेष होत चालले आहेत. वाटा, पायवाटा, चोरवाटाही मुजल्या आहेत.

या किल्ल्याशेजारीच कुलदुर्ग आहे. या गडावरही चारी बाजूला तटबंदी, पायवाटा होत्या. मात्र आता दगड सर्रास पळवले जात आहेत. काहींनी तटबंदी तोडून शेतीला बांध आणि तालींसाठी ते दगड वापरणे असे उद्योग सुरू केले आहेत. विशेष म्हणजे शेती आणि जलसंधारणाच्या शासकीय योजनांसाठीही या दोन्ही किल्ल्यांवरील दगड आणि माती राजरोसपणे नेली जात आहे.

याबाबत खानापूरच्या ओंकार तोडकर आणि खंडू तोडकर या दोन इतिहास अभ्यासकांनी स्थानिक प्रशासनाकडे लेखी तक्रार केली होती. परंतु त्याकडे दुर्लक्ष केले जात असल्याचा आरोप इतिहास प्रेमींमधून होत आहे.



STUDY TOUR

2022-23

OLD MAHADEVA'S TEMPLE

At

KUCHI

TAL.: KAVATHE MAHANKAL

DIST: SANGLI

महादेव मंदिर, कुची.



कवठेमहांकाळ तालुक्याच्या उत्तरेला पाच किलोमीटर अंतरावर असणाऱ्या कुची या गावामध्ये पुरातन असे महादेवाचे मंदिर आहे. पूर्वेस तोंड करून असणारे हे मंदिर पूर्णतः दगडी बांधकामाचे आहे. मंदिरासमोर प्रशस्त दगडी ओटा असून दोन्ही बाजूला विरगळांच्या शिळा इतस्ततः विखुरलेल्या आहेत. स्थानिकांनी केलेल्या पराक्रमांचा इतिहास पुढच्या पिढ्यांच्या कायम स्मरणात राहावा म्हणून कोरलेल्या विरगळांच्या शिळा शेवटच्या घटका मोजत आहेत. ओटा ओलांडून आत गेल्यानंतर मोठे दगडी खांब, डाव्या आणि उजव्या बाजूला महादेवाच्या पिंडी, आत गाभारा, नक्षीदार खांबांनी तोलून धरलेले छत तत्कालीन बांधकामाच्या कौशल्यांची साक्ष देत आहे. इतर पुरातन स्मारकांप्रमाणे हे मंदिरही आज शेवटच्या घटका मोजत असल्याचे आपल्याला दिसून येते. परंतु अलीकडच्या काळात या मंदिराच्या जीर्णोद्धाराचे काम सुरू झालेले आहे.

स्थानिक इतिहासाविषयी भान येण्यासाठी आणि त्याविषयी जाणीव जागृती निर्माण होण्यासाठी त्याचप्रमाणे आपला समृद्ध सांस्कृतिक वारसा जपून त्याविषयी इतरांच्या मनातही आपण जागृती निर्माण करावी प्राचीन काळातील बांधकामशैलीचा अभ्यास करावा, अवशेषरूपात का असेना पण आपल्या गतकाळातील वारशाचे मोल जाणून तो जतन करावा आणि इतरांनाही त्याबाबत प्रोत्साहन द्यावे, प्राचीन स्थापत्यशास्त्रातील बारकावे अभ्यासावी यासाठी या मंदिराची निवड जाणीवपूर्वक केलेली होती.

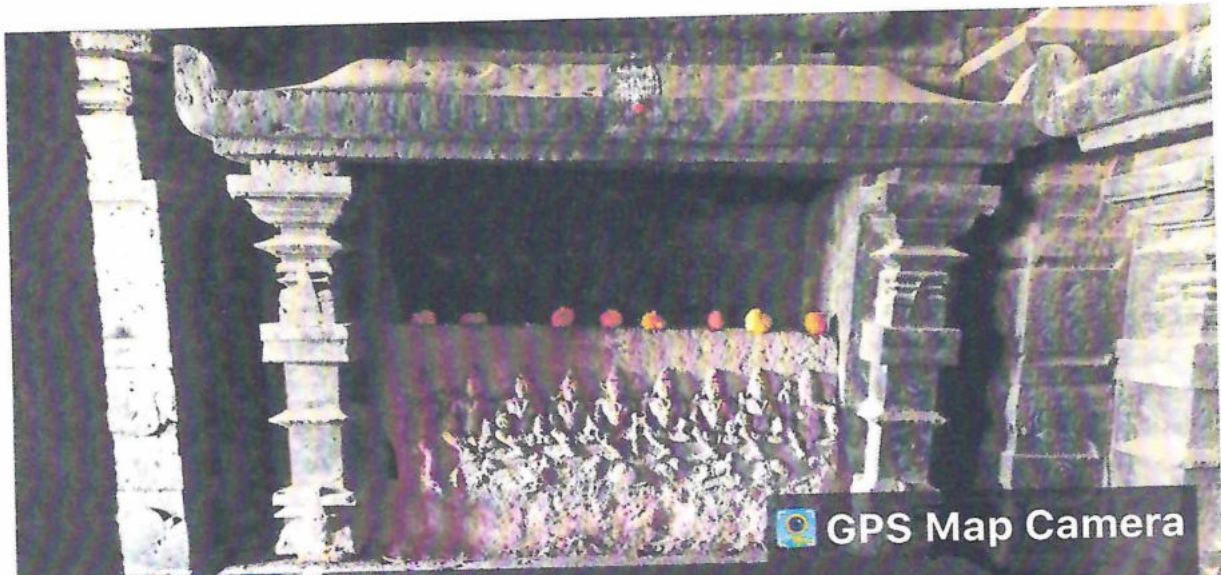
महादेव मंदिर, कुची.



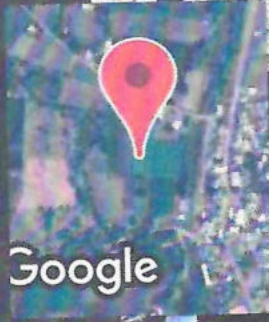
GPS Map Camera



Kuchi, Maharashtra, India
3V67+HWC, Kuchi, Maharashtra 416405, India
Lat 17.061409°
Long 74.864678°
21/01/23 04:10 PM GMT +05:30



GPS Map Camera



Kuchi, Maharashtra, India
Shop No 01 Main Bajarline, Kuchi, near Z P School,
Kuchi, Maharashtra 416405, India
Lat 17.061348°
Long 74.862047°
21/01/23 04:08 PM GMT +05:30

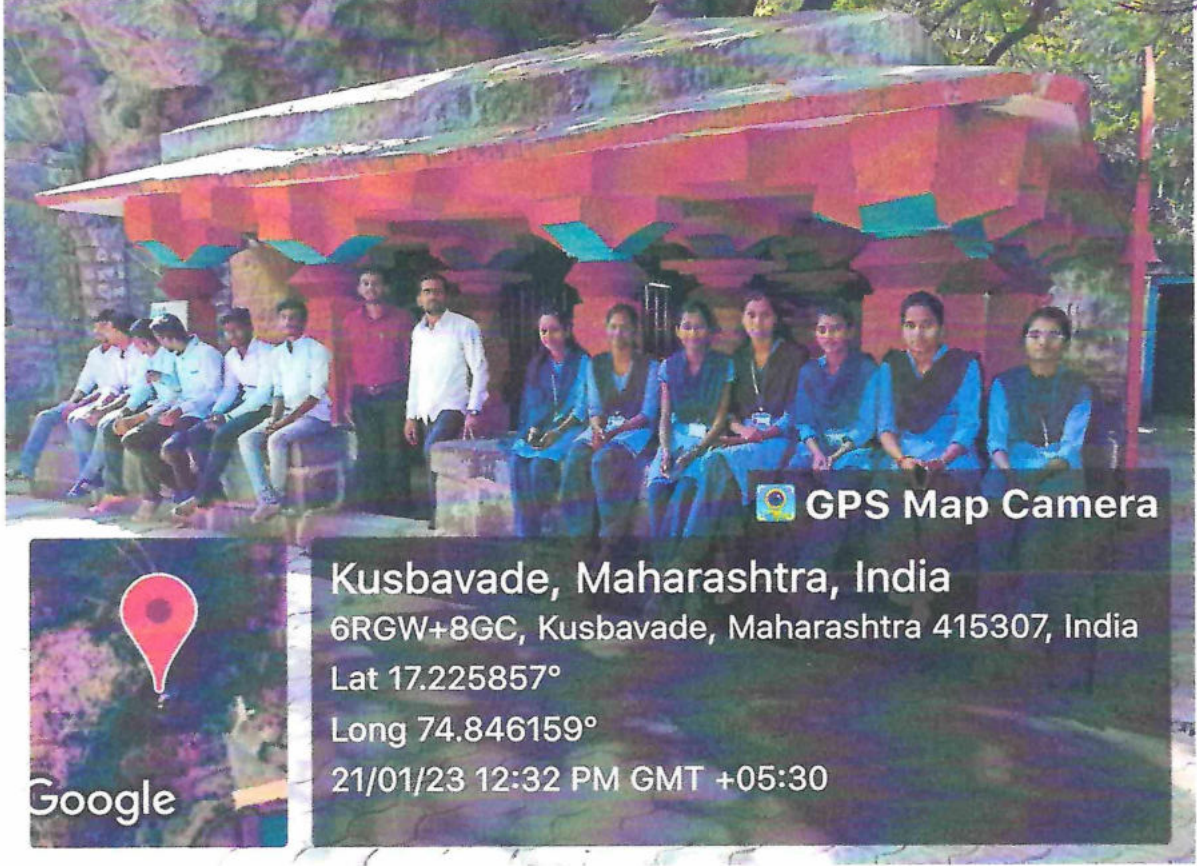
महादेव मंदिर, तिसंगी.



महाराष्ट्रामध्ये जवळपास सर्वच गावांमध्ये हमखास आढळणारे मंदिर म्हणजे महादेवाचे मंदिर. प्राचीन कालखंडात बांधलेली, दगडांचा वैशिष्ट्यपूर्ण वापर करून पाण्याची सुविधा असणाऱ्या ठिकाणी आणि रहदारीच्या ठिकाणापासून दूरवर वसलेली महादेवाची मंदिरे ही जनतेच्या श्रद्धेची प्रतिके आहेत. कवठेमहाकाळ तालुक्यातील तिसंगी या गावी मानवी वस्ती पासून दूर शांत अशा ठिकाणी महादेवाचे पुरातन मंदिर आहे. मोठमोठ्या दगडी शिळांवर कोरीव काम करून मंदिरासह बाजूचा भागही आखीव रेखीव करण्यात आला आहे. मंदिरासमोर असणाऱ्या आवारात नंदीचे शिल्प, गणपतीच्या कोरलेल्या वेगवेगळ्या आकारातील मुद्रांच्या शिळा, वीरगळे, कोरीव काम केलेले दगड आवारात इतस्ततः विखुरलेले आहेत. दोन मोठ्या आकाराच्या प्रचंड अशा दगडी खांबावर कमान तोलून धरलेली आहे, आतमध्ये मोठा वैशिष्ट्यपूर्ण बांधणीचा गाभारा आहे. त्यामध्ये पिंड आणि दगडी मूर्ती स्थापन केलेली आहे. मंदिराच्या चारी बाजूंनी मोठ्या आकाराच्या शिळांना वैशिष्ट्यपूर्णरित्या उभा करून भिंती घेतल्या आहेत. परंतु, अनेक दिवसांचा कालावधी, स्थानिकांचे दुर्लक्ष, अशा ठिकाणाबाबत आपली असणारी अनास्था आदि कारणास्तव हे मंदिर काळाच्या ओघात गडप होत असून फक्त अवशेष रूपात शिल्लक आहे.

आपल्या पुरातन वारशाबद्दल जाणीव-जागृती निर्माण व्हावी यासाठी या ठिकाणाची निवड करून या ठिकाणी भेट दिली.

शुकाचार्य मंदिर



Kusbavade, Maharashtra, India

6RGW+8GC, Kusbavade, Maharashtra 415307, India

Lat 17.225857°

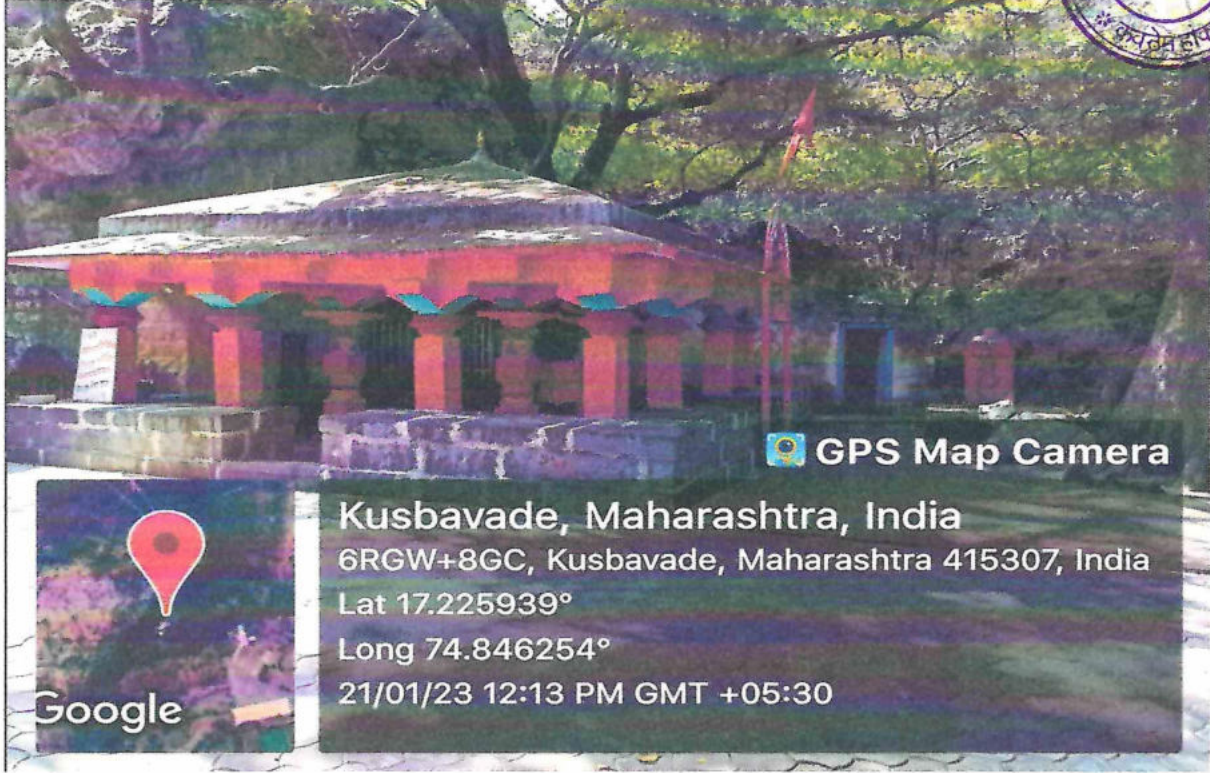
Long 74.846159°

21/01/23 12:32 PM GMT +05:30

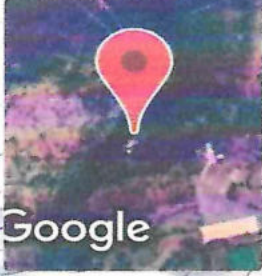
प्राचीन भारतातील स्थापत्यशैलीचा अभ्यास करणे, स्थानिक इतिहास आणि ऐतिहासिक स्थळांबाबत जाणीव जागृती निर्माण करणे, विशिष्ट भौगोलिक पार्श्वभूमीवर मंदिरे-तीर्थक्षेत्रे वसवण्यामागील कारणांचा मागोवा घेणे, ऐतिहासिक स्थळांच्या संवर्धन-संरक्षणाबाबत शालेय महाविद्यालयीन स्तरावर जागृती निर्माण करणे, धार्मिक-सांस्कृतिक बाबींचा डोळसपणे अभ्यास करणे या हेतूने पुरातन काळातील महादेवाच्या मंदिरांना प्रत्यक्ष भेटी देऊन अभ्यास करण्याचे ठरले.

सांगली जिल्ह्यातील खानापूर तालुक्यात छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या काळाचा साक्षीदार असणाऱ्या बाणुरगडाशेजारीच डोंगरामध्ये वसलेल्या पुरातन मंदिर म्हणजे शुकाचार्यांचे मंदिर. व्यास ऋषींचे चिरंजीव आणि शुकाचार्य, भीष्माचार्य, कार्तिकस्वामी व मारुती या चार ब्रह्मवेत्यांपैकी एक शुकाचार्य ब्रह्मवेत्ता होत. निसर्गरम्य अशा डोंगराच्या खोलदरीत गुहेत हे देवस्थान वसलेले आहे. मंदिरात शेजारी बारमाही अखंडपणे वाहणारा झरा आहे. शुकाचार्य मंदिराच्या बाजूलाच कावड्याचा डोंगर, बानुरगड किल्ला आणि कोळदुर्ग किल्ला अशा बेचक्यात हे मंदिर वसलेले आहे. दरवर्षी श्रावण महिन्यातील प्रत्येक सोमवारी या ठिकाणी मोठी यात्रा भरते. सांगली जिल्ह्यातील प्रमुख पर्यटन स्थळांपैकी शुकाचार्य हे एक नावारूपाला आलेले पर्यटन स्थळ आहे.

शुकाचार्य मंदिर



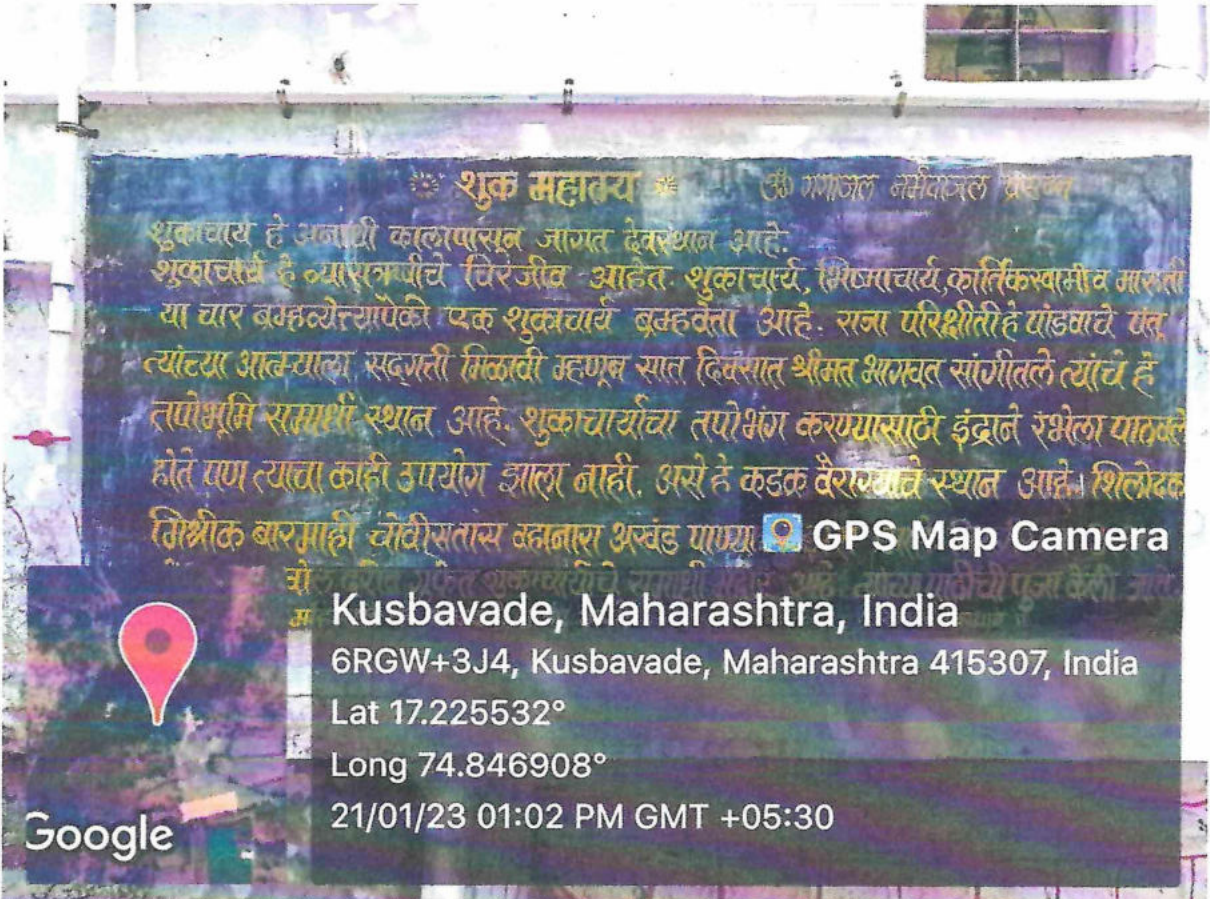
GPS Map Camera



Kusbavade, Maharashtra, India
6RGW+8GC, Kusbavade, Maharashtra 415307, India
Lat 17.225939°
Long 74.846254°
21/01/23 12:13 PM GMT +05:30

Google

शुक महात्म्य



GPS Map Camera



Kusbavade, Maharashtra, India
6RGW+3J4, Kusbavade, Maharashtra 415307, India
Lat 17.225532°
Long 74.846908°
21/01/23 01:02 PM GMT +05:30

Google

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

NOTICE

Date- 10 January 2020

All the students of B. A.-III (Special Geography) are hereby informed that Department of Geography, Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal is going to Study Tour at 24-25 January 2020 as per university academic. All student must participate in this study tour.



A handwritten signature in blue ink, appearing to read "T. E. Kumbhar".

Dr. T. E. Kumbhar
Head,

Department of Geography



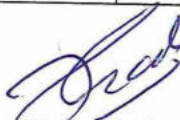
Date: 28/01/2020


'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal


DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

Report of the Activity

Title	Study Tour
Day & Date	Friday- Saturday, 24-25 January 2020
Organizer	DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Funding	-
Head	Dr. T. E. Kumbhar. Head, Department of Geography
Co-ordinator	Dr. D.A. Gade Assistant Professor, Department of Geography
Background	The study tour aims to provide students with practical insights into geographical concepts and foster an appreciation for the intricate relationship between humans and their natural surroundings. Participants are encouraged to actively engage in discussions, document observations, and contribute to a comprehensive report on the geographical aspects of the region.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. Explore and analyse diverse geological formations and natural landscapes to deepen understanding of Earth's physical features.2. Investigate the impact of human activities on local ecosystems3. Examine the interplay between physical geography and human settlements, focusing on urbanization patterns and land-use planning.4. Gain practical insights into river dynamics, coastal processes, and mountainous terrains to comprehend natural systems and their importance.
Conclusion	The study tour aims to provide participants with hands-on experience in diverse geographical settings, fostering a comprehensive understanding of Earth's physical features, the impact of human activities on the environment, and the intricate relationships between physical geography and human settlements. Through direct observation and analysis, the tour seeks to enhance students' practical knowledge and analytical skills in the field of geography.


Dr. D. A. Gade
Co-Ordinator


Dr. T. E. Kumbhar
Head


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal
Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli



Date: 28/01/2020

'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY


Report of the Study Tour

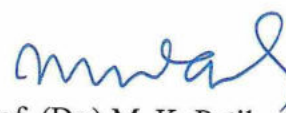
Our two-day academic excursion to the enchanting Konkan region, nestled along the western coastal part of Maharashtra, proved to be an insightful and invigorating experience. The primary objectives of this geography study tour were to explore the unique geological features of the coastal area, understand the dynamics of coastal processes, and gain firsthand knowledge about the environmental significance of this region.

As we embarked on our journey, the coastal landscape unfolded before us, offering a rich tapestry of natural wonders. The visit to [Specific Location] provided a firsthand look at coastal formations and erosion processes, reinforcing classroom learning with tangible examples. Additionally, our exploration of the local ecosystems allowed us to witness the delicate balance between human activities and the environment. The study tour provided a platform for engaging discussions on sustainable practices for coastal management and the conservation of biodiversity in the face of increasing anthropogenic pressures.

In conclusion, the study tour to Konkan not only deepened our understanding of geographical concepts but also instilled a profound appreciation for the interconnectedness of Earth's systems. The practical experiences gained during the tour, from studying coastal geography to observing local land-use patterns, will undoubtedly enhance our academic knowledge and analytical skills. This immersive learning opportunity serves as a testament to the invaluable insights that can be gained outside the traditional classroom setting, underscoring the importance of experiential learning in the field of geography.


Dr. D. A. Gade
Co-Ordinator


Dr. T.E. Kumbhar
Head


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal
Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist-Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
ATTENDANCE SHEET

Name of Activity: Study Tour

Day & Date: Friday-Saturday, 24-25 January 2020

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
1	MANE SHRADDHA DILIP	B A III	D.S. Mane
2	HOVAL MAHADEV TANAJI	B A III	TM HOVAL
3	GHUNAKE SHUBHANGI BABAN	B A III	B.S.G
4	KADAM SHUBHAM DHONDIRAM	B A III	D.S. Kadam
5	MALI ASHUTOSH AKARAM	B A III	A.A. Mali
6	BABAR SUNIL ABASAHEB	B A III	A.S. Babar
7	TOKALE ABHIJIT MAHADEV	B A III	M.A. Tokale
8	MALI SUSHANT SHIVAJI	B A III	S.S. Mali
9	HANKARE KISHORI SHIVAJI	B A III	K. Hankare
10	SHINDE POOJA PANDIT	B A III	P.P. Shinde
11	KOLEKAR HARSHADA BALASAHEB	B A III	
12	KANAP YOGESH MAHADEV	B A III	M.Y. Kanap
13	MALI KAJAL PANDURANG	B A III	P.K. Mali
14	SURYAWANSHI POPAT NARAYAN	B A III	N.P. Suryawanshi
15	ZURE MAYURI DATTATRAY	B A III	D.M. Zure
16	MAHAJAN SAYALI SURESH	B A III	
17	SHINGADE ASHVINI SHAMARAO	B A III	S.A. Shingade
18	MARATHE MANISHA BHARAT	B A III	B.M. Marathe
19	KOLI SHUBHAM SAMBHAJI	B A III	S.S. Koli
20	VAJRAWAD SAMEER KAMALSAB	B A III	K.S. Vajrawad
21	KOLEKAR SAGAR GANAPAIT	B A III	G.S. Kolekar

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
22	* SADAMATE SNEHAL SACHIN	B A III	S. S. Sadamate.
23	* SABALE KOMAL ARVIND	B A III	A. K. Sabale.
24	BHOSALE SAYAJI SAMBHAJI	B A III	S. S. Bhosale.
25	SURYAWANSHI ABHIJEET DHANAJI	B A III	D. A. Suryawanshi
26	GHERADE PRASHANT RAJARAM	B A III	R. P. Gh.
27	PANDHARE SUJIT TANAJI	B A III	T. S. P.
28	KAMBLE MAHESHWAR BALASO	B A III	B. M. Kamble
29	AUNDHAKAR SHUBHAM SAMBHAJI	B A III	.
30	NAGANE MAHADEV PANDURANG	B A III	P. M. Nagade
31	WAVARE NITIN DILIP	B A III	D. W.
32	TOKALE SHIVRAJ KIRAN	B A III	K. S. Tokale
33	KOLI SATYAM SHIVAJI	B A III	S. S. Koli
34	CHOUGULE SHAMRAO SUKHDEV	B A III	S. S. Chougule.
35	BANDGAR SANTOSH SAHEBRAO	B A III	S. S. Bandgar
36	PATIL AKSHAY MAHADEV	B A III	M. A. Patil.
37	BAJABALE SUYASH SAMBHAJI	B A III	S. S. Bajabale
38	SHINDE RUTIK RAJU	B A III	R. R. Shinde
39	MANE AKSHAY SADASHIV	B A III	S. A. Mane
40	KAMBLE OMKAR VISHWANATH	B A III	.
41	PATIL MARUTI TUKARAM	B A III	T. M. Patil.
42	HUBALE DHANAJI BAJARANG	B A III	B. D. H.
43	KHANDEKAR DATTATRAY PANDURANG	B A III	P. D. Khandekar
44	KUTE MAHADEV ANANDA	B A III	A. M. Kute




 Acting Principal
 Padmabhushan Vasantnandada Patil
 Mahavidyalaya, Kavathe Mahanagar, Dist. Sangli.

PHOTO'S OF THE STUDY TOUR 2019-20



mudra
Acting Principal
Padmahushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahabai

पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ
भूगोल विभाग
अभ्यास सहल अहवाल



सन २०१९-२०

मार्लेश्वर, गणपतीपुळे, पावस, कुणकेश्वर, सिंधुदुर्ग

Shikshan Prasarak Sanstha's

Padmabhushan Vasantodada Patil

Mahavidyalaya, Kavathemahankal,

Dist- Sangli

Department of Geography

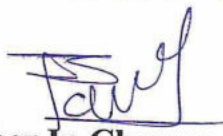
Certificate


This is to certify that Shri /Miss *Sath. A. Ashutai. Mahadev*

Class- B.A. III Roll No. . .

His satisfactorily Completed the required Tour Report in
Geography as prescribed by the Shivaji University, Kolhapur
during the academic year 2019-20

Date – *03/03/2020*


Teacher In Charge

Examined

Examiner


Head of Department

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	सूची	पृष्ठ क्रमांक
1.	मनोगत	४
2.	प्रस्तावना	५
3.	सहलीचा मार्ग	७
4.	अभ्यास सहलीचा हेतू	९
5.	प्राकृतिक रचना	१०
6.	जलप्रणाली	१३
7.	हवामान	१४
8.	जमीन प्रकार	१६
9.	नैसर्गिक वनस्पती	१८
10.	पिके / कृषी उत्पादने	१९
11.	उद्योगधंदे	२०
12.	भेटी दिलेली प्रमुख ठिकाणे	२२
13.	निष्कर्ष	३०

Paid & 100000

मनोगत

शिवाजी विद्यापीठाच्या अभ्यासक्रमातून बी.ए. भाग ३ (भूगोल) वर्गाची सहल भौगोलिक घटकांनी परिपूर्ण असलेल्या मार्लेश्वर, गणपतीपुळे, पावस, कुणकेश्वर, सिंधुदुर्ग येथे आयोजित केली होती.

या सहलीत नद्या, खोरी, पर्वत, पठारे, पिके, बदलते मृदा प्रकार, खडक इत्यादी प्राकृतिक घटकांच्या तर ऐतिहासिक कलात्मक राजवाडे, धार्मिक मंदिरे, उद्याने, प्राणी संग्राहालये, वस्तूसंग्राहालये वसाहतीचे विविध प्रकार रसते, रेलवेमार्ग इत्यादी सांस्कृतिक घटकांची जवळून पाहणी करण्यात आली. सहलीच्या आयोजनात मनोरंजनामुळे आनंदप्राप्ती झाल्याने आम्हाला भौगोलिक दृष्टीकोन प्राप्त झाला.

आमच्या महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. अशोक बाबर यांनी सहलीसाठी आवश्यक तांत्रिक, शैक्षणिक, सुविधा पुरविल्याबद्दल आम्ही त्यांचे अभार मानतो.

सदर अभ्यास सहलीस आमच्या भूगोल विषयाचे प्रा. डॉ. डी. ए. गाडे, यांनी सहल मार्गदर्शक म्हणून बहूमोल सहकार्य केल्याबद्दल त्यांचे मनःपूर्वक अभार मानतो. तसेच यांनीही सहल आयोजनामध्ये विशेष ज्ञात अज्ञात व्यक्तीनी जे सहकार्य केलेबद्दल आम्ही त्यांचेही ऋणी आहोत.

सदर अहवालामध्ये जर काही चूका झाल्या असतील तर त्या माझ्या नजर चूकीने झाल्या असतील असे मी जाहीर करतो/करते. शेवटी सहलीमध्ये माझ्या वर्ग मित्र-मैत्रिणीनी मला संपूर्ण सहकार्य देवून मनोरंजक वातावरणनिर्मिती केली त्याबद्दल त्यांचेही मनःपूर्वक अभार.

आपला अज्ञाधारक

संपूर्ण नाव - Satho Ashatai Mahadev

प्रस्तावना

व्यक्तीच्या सर्वांगीण विकासाशी शिक्षणाचा संबंध येतो. या अर्थाने व्यक्तिमत्त्व-विकास हे सर्व प्रकारच्या शिक्षणाचे ध्येय असते. आपल्याला हे लोक फक्त चांगले काम करणारेच नकोत, तर त्यांच्याजवळ विशिष्ट बौद्धिक क्षमता असणे आवश्यक आहे, त्यामुळे ते समस्या निकरणाचे काम करू शकतात. त्यांच्याकडे विशिष्ट सकारात्मक वृत्ती व सद्गुणांचा साठा असणे आवश्यक आहे. यामुळे आपल्याला अपेक्षित असणाऱ्या सामाजाच्या विकासासाठी त्यांचा हातभार लागेल. शैक्षणिक क्षेत्रातील किंवा परिस्थिती मधील वर्तनाचे शास्त्र विकसित करण्याच्या हेतुने किंवा समस्या सोडविण्याच्या दृष्टीने वैज्ञानिक विचार पध्दतीनेच केलेले उपयोजन म्हणजे शैक्षणिक संशोधन होय.

असे शिक्षण फक्त पुस्तकातून मिळत नसून त्यासाठी क्रमिक पुस्तकातून मिळालेल्या ज्ञानाचा वास्तव परिस्थितीशी सागड घालून घेतलेल्या ज्ञानाची परिचीती प्राप्त करणे आवश्यक असते. त्यासाठी भूगोलात अभ्यासलेले पर्वत पठारे, नद्या, नद्यांना मिळणारे पाणी, समुद्र, खाडी अशा अनेक संकल्पना आपणास पुस्तकातून प्राप्त होतात अशा संकल्पना आपण जेव्हा प्रत्यक्ष पहातो तेव्हा त्या समजतात. यासाठी भूगोल विषयात अभ्यास सहलीस फार महत्त्व आहे. पुस्तकी ज्ञानाला वास्तव ज्ञानाची सागड घालण्यासाठी क्षेत्र भेटीची आवश्यकता असते.

क्षेत्र अभ्यास हा प्रात्यक्षिक भूगोलाचा महत्त्वपूर्ण भाग मानला जातो. निसर्गामध्ये फिरून केलेल्या अभ्यासाला निश्चतता असते आणि तो अभ्यास संयुक्त ठरतो. यामुळे भूगोलाच्या विकासाचा आढावा घेत असताना जर्मनी, फ्रान्स, ब्रिटन व आरबानी दीर्घकाळ प्रावास करून माहिती गोळा केली. त्यांच्या प्रावास वर्णनाच्या आधारे भौगोलिक भांडार समृद्ध होत गेले.

अलेकझांडर, हंबोल्ट, कार्ल रिटर, रॅड्जेल या भूवैज्ञानिकानी प्राधान्याने भूगोलाच्या अभ्यासामध्ये प्रावासाचे महत्त्व पटवून देण्याचे प्रयत्न केले आहे. रॅटझोल यांनी तर याचे

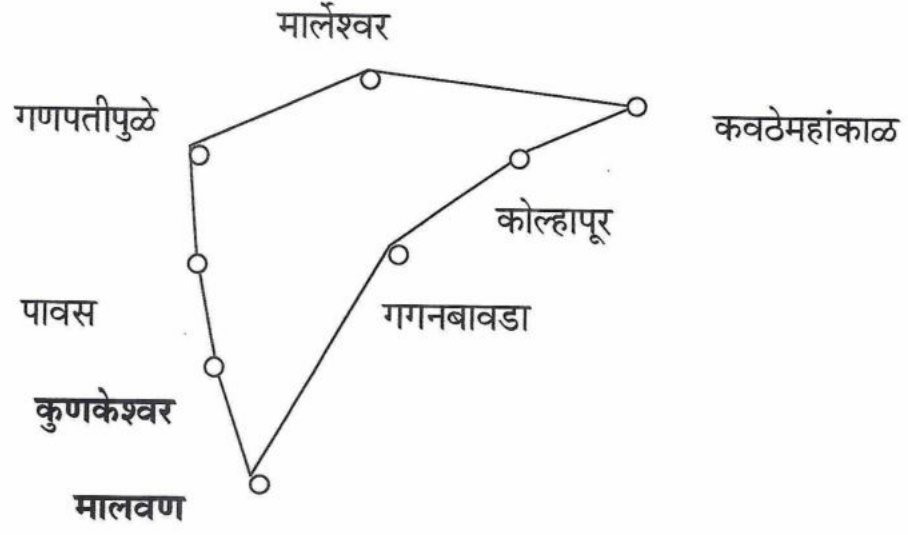
महत्त्व विषद करताना असे म्हटले आहे की, I traveled, I sketched and I described मी प्रवास केला त्याचे रेखाटन करून वर्णन केले. या शिवाय रिटरच्या म्हणण्यानुसार भूगोल हे अनुभवजन्य शास्त्र आहे तसेच ते क्षेत्रीय पाहणीशिवाय पूर्ण होवू शकत नाही आणि क्षेत्रीय पाहणीचा हा पाया मानला जातो.

पृथ्वीच्या विविध भागांमध्ये नैसर्गिक आणि मानवनिर्मित अशा दोन्ही घटकांचा एकत्रितरीत्या अभ्यास भूगोलकाराला करावा लागतो. आणि अभ्यास सहलीच्या माध्यमातून भौगोलिक आणि मानवनिर्मित घटकांतील परस्पर संबंधाची माहिती आपल्याला मिळू शकते. यामध्ये प्राधान्याने प्राकृतिक रचना, हवामान, वनस्पती, जमिन, आर्थिक-सामाजिक आणि सांस्कृतिक घटक इत्यादींचा समावेश होतो.

सहलीचा मार्ग

1. कवठेमहांकाळ — मिरज- जयसिंगपूर- मलकापूर- मार्लेश्वर
2. मार्लेश्वर- गणपतीपुळे
3. गणपतीपुळे- पावस
4. पावस- कुणकेश्वर
5. कुणकेश्वर - मालवण (सिंधुदुर्ग)
6. मालवण - गगणबावडा — कोल्हापूर- कवठेमहांकाळ
या प्रावास मार्गाने सहल पूर्ण केली.

सहल मार्ग कच्चा आराखडा



अभ्यास सहलीचा हेतू

1. पृथ्वीच्या पृष्ठभागाचे प्रत्यक्ष निरीक्षण करणे यामध्ये मुख्यता भूपृष्ठाचे स्वरूप, भूरूपे, जलप्रणाली, मृदा, हवामान, वनस्पती इत्यादी घटकांचा समावेश होतो.
2. भौगोलिक घटक आणि प्रदेशाचा विकास यांच्यातील परस्पर संबंधातील निरीक्षण करणे अनुकूल परिस्थिती उपलब्ध असलेल्या विभागामध्ये आर्थिक विकास होत असतो, परंतु प्रतिकूल विभागामध्ये मर्यादा पडलेल्या आढळतात.
3. भेटी दिलेल्या विभागामध्ये वसाहतीच्या प्रारूपामध्ये होणारा बदल, त्यांची वैशिष्ट्ये आणि समस्या जाणून घेणे.
4. भौगोलिक परिस्थिती आणि पिके संरचना, जलसिंचनाच्या योजना, वनस्पती आणि प्राणीसंपदा, इतर संपत्ती साधनांची उपलब्धता इत्यादी गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमधील काही महत्त्वाच्या गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमधील काही महत्त्वाच्या गोष्टींच्या सहभागाची नोंद घेणे. यामध्ये विशेषतः उद्योगधंदे, वाहतुक, काही पर्यावरणीय घटकांचा समावेश होतो.
5. अभ्यास सहलीच्या निमित्ताने भेटी दिलेल्या विभागातील समस्यांची माहिती करून घेणे आणि अभ्यासातील त्या समस्यांवरीती शक्य असे उपाय सुचविणे.
6. वर उल्लेख केलेले हेतू मनात ठवून आमच्या विभागाने मार्लेश्वर, गणपतीपुळे, पावस, कुणकेश्वर, मालवण अशी अभ्यास सहल शुक्रवार दिनांक २४ जानेवारी ते शनिवार दिनांक २५ जानेवारी २०२० या दरम्यान आयोजित केली होती. या प्रवास मार्गामध्ये आम्ही सांगली, कोल्हापूर सिंधुदुर्ग या जिल्ह्यांमधून प्रवास केलेला आहे.

Page 11

प्राकृतिक रचना

देशाच्या पश्चिम व मध्य भागात वसलेल्या महाराष्ट्राला अरबी समुद्राची 720 किमी लांबीची समुद्र किनारपट्टी व सातपडा या पर्वतरांगांची नैसर्गिक तटबंदी लाभली आहे .

राज्याच्यावायव्येस गुजरात, उत्तरेस मध्य प्रदेश, पूर्वेस छत्तीसगड, आग्नेयेस तेलंगणा, दिक्षणेस कर्नाटक व नैऋत्येस गोवा आहे .

शासकीय सोयीसाठी राज्याची विभागणी 36 जिल्हे व 6 महसूल विभागांत कोकण), पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, अमरावती आणि नागपूर .करण्यात आली आहे (2011 च्या जनगणनेनुसार 11.24 कोटी लोकसंख्या असलेले महाराष्ट्र राज्य लोकसंख्येनुसार देशात दुसऱ्या क्रमांकाचे तर क्षेत्रफळानुसार 3.08 लाख चौरस किमी भौगोलिक क्षेत्रफळासह तिसऱ्या क्रमांकाचे राज्य आहे .

राज्याचे मोठ्या प्रमाणात शहरीकरण झाले असून 45.2 टक्के जनता शहरात राहते. राज्याचे हवामान उष्ण किटबंधीय मोसमी आहे माचर्पासून सुरु होणाऱ्या व .अंगाची काहिली करणाऱ्या उन्हाळ्या पाठोपाठ जूनच्या सुरुवातीला पाऊस येतो .महाराष्ट्राला लाभलेला निसर्गाचा वरदहस्त हा त्याच्या घनदाट व संपन्न जंगलांमध्ये दिसून येतो आणि राज्यात 6 मुख्य व्यग्र प्रकल्प व 6 राष्ट्रीय उद्याने आहेत.

हवामानातील बदल व वैश्विक तापमानवाढ हे जगासमोर व राज्यासमोर उभे ठाकलेले मोठे संकट आहेहे लक्षात घेऊन . पाच लाख विद्युत वाहनांची निर्मती व वापर करण्याच्या उद्देशाने तयार करण्यात आलेले विद्युत वाहन धोरण जाहीर करणारे महाराष्ट्र हे पहिले राज्य आहे .शाश्वत व्यवस्थेत प्रोत्साहन देऊन राज्याने पर्यावरण पूरक इंधन आणि वैश्विक तापमानवाढीच्या प्रश्नास हाताळणे याबाबत आपली बांधिलकी दर्शिविली आहे.

महाराष्ट्र ही फक्त एक भौगोलिक संज्ञा नसून लोकांच्या एकतेने व कष्टाने उभे राहिलेले एक राज्य आहे. विविध चालीरीतींचे व परंपरांचे लोक गुण्यागोविंदाने राहतात. आपल्या समृद्ध संगीत व नृत्य परंपरेसाठी राज्याचे नाव देशात आदराने घेतले जाते. पोवाडा, भारुड, गोंधळ आणि लावणी लोककलेमध्ये केलेल्या भरीव योगदानासाठी राज्य जाणले जाते. सर्व जाती व पंथांचे सणसमारंभ उत्साहाने व एकत्रितपणे साजरे केले जातात. देशाच्या सामाजिक व राजकीय प्रगतिमध्ये राज्याचा बहुमोल वाटा आहे.

अजंठा, वेरूळ व घारापुरी लेण्या, गेट वे ऑफ इंडिया आणि चैत्य व विहार सारखी वास्तुकलेचा उत्तम नमुना असलेली स्थळे कायमच जगभरातील पर्यटकांच्या आकर्षणाचा केंद्र बिंदु आहेत व बहुतांश काळ पर्यटकांच्या गदीने फुललेली असतात. राज्याने साहित्य, कला, क्रिड व सामाजिक सेवा यांमध्ये आपला स्वतःचा ठसा उमटवला आहे. सिने जगतात जागतिक स्तरावर नावारूपाला आलेले व आता आंतरराष्ट्रीय मंचावर भारताची ओळख व ताकद बनलेले, बॉलीवूड हे देखील राज्याचाच एक हिस्सा आहे.

महाराष्ट्राच्या प्राकृतिक रचनेचे तीन विभाग

1. कोकण किनारपट्टी
2. सह्याद्री पर्वत / पश्चिम घाट
3. महाराष्ट्र पठार/ दख्खन पठारी /

1. कोकण किनारपट्टी

- **स्थान:** महाराष्ट्र अरबी समुद्र व सह्याद्री पर्वत यांच्या दरम्यान दक्षिणोत्तर लांब पट्ट्यास 'कोकण' म्हणतात.
- **विस्तार:** उत्तरेस — दमानगंगा नदीपासून दक्षिणेस — तेरेखोल खाडीपर्यंत. कोकण किनारपट्टी 'रिया' प्रकारची आहे.
- **लांबी:** दक्षिणोत्तर = 720 किमी, रुंदी = सरासरी 30 ते 60 किमी. उत्तर भागात ही रुंदी 90 ते 95 किमी. तर दक्षिण भागात ही रुंदी 40 ते 45 किमी.

- क्षेत्रफळ: 30,394 चौ.किमी.

2. सह्याद्रि पर्वत /पश्चिम घाट

स्थान: दख्खनच्या पठाराचा पश्चिमेकडील न खचलेला भाग म्हणजेच सह्याद्रि होय.

- यामुळे सह्याद्रि पश्चिमेकडून अत्यंत उंच व सरल भिंतीसारखा दिसतो.
- पठाराकडून मात्र अत्यंत मंद उताराचा दिसतो.सह्याद्रि पर्वत हा प्राचीन असून या पर्वताची बऱ्याच ठिकाणी झीज झाल्याने कमी – अधिक उंचीची ठिकाणे तयार झाली आहेत. उदा. शिखरे, घाट, डोंगर, उंचीवरील सपाट प्रदेश इ.

3. महाराष्ट्र पठार / दख्खन पठार / देश :

- स्थान: महाराष्ट्र राज्यांपैकी एकूण क्षेत्रफळापैकी 90% क्षेत्र महाराष्ट्र पठाराने व्यापले आहे.
- लांबी-रुंदी: पूर्व- पश्चिम – 750km. उत्तर- दक्षिण – 700km.
- उंची: 450 मीटर— या पठाराची उंची पश्चिमेस (600 मी) जास्त व पूर्वेस (300 मी) कमी आहे.
- महाराष्ट्र पठार डोंगर रांगा व नद्या खोऱ्यांनी व्यापले आहे.

नद्यांची खोरी –

उत्तरेकडील वारणा नदीपासून दक्षिणेकडे घटप्रभानदीपर्यंतचा भाग यामध्ये समाविष्ट होतो. कोल्हापूर जिल्ह्यातील नदी खोऱ्यांचा विभाग सुपीक अशा मातीने समृद्ध असून या विभागामध्ये लोक संख्या केंद्रित झालेली आढळते. या जिल्ह्यामध्ये कृष्णा, वारणा, पंचगंगा या प्रमुख नदी खोऱ्यांचा समावेश होतो.

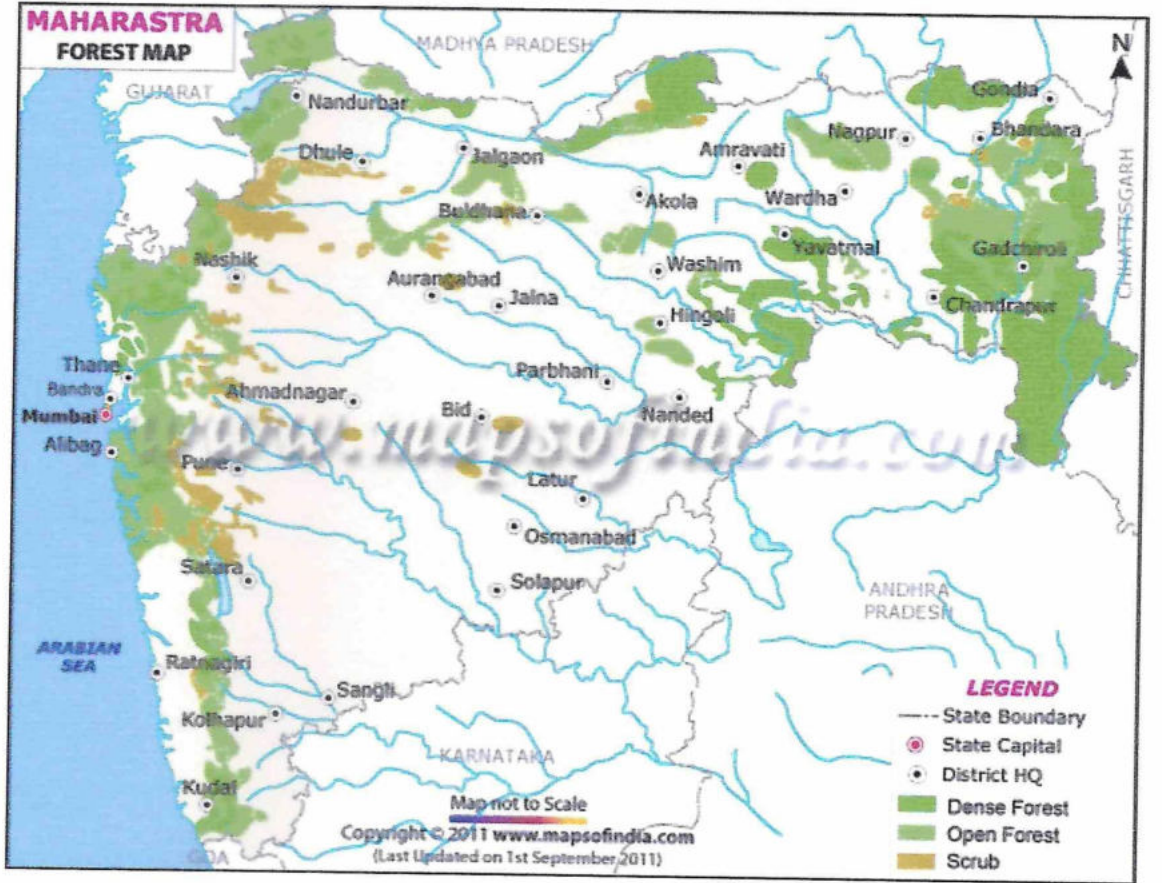
रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्यांचा भाग सह्याद्रीच्या पश्चिमेस अरबी समुद्र व सह्याद्री पर्वत यांच्यादरम्यान किनारपट्टीची लांबी ५६० कि.मी. असून उत्तरेकडे हा भाग अधिक रुंद असून दक्षिणेकडे रुंदी कमी होत जाते.

साधरणता ४५ ते ७५ कि.मी. इतकी रुंदी या विभागाला लाभलेली आहे. या प्रदेशात सह्याद्री पर्वताच्या उपशाखा व सुळके सर्वत्र विखुरलेले आढळतात. रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग प्रदेशाच्या किनारयाला लागुनच अत्यंत चिंचोळी अशी गाळाची मैदाने आहेत. या किनारपट्टीची उंची पूर्वेकडे वाढत गेलेली दिसते. या विभागाची कमीतकमी उंची ८५ मी. तर जास्तीत जास्त उंची ३०० मी. आढळते.

रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्यांमध्ये काजवी, मुचकुंदी, शुक, तेरेखोल इत्यादी नद्यांमुळे प्रदेशाची मोठ्या प्रमाणात झीज झालेली आढळते. किनारी विभागामध्ये सागरी लाटांच्या खणन व संचयन कार्यामुळे पुळणे व वाळुचे दांडे इत्यादी भूरुपे किनारी विभागामध्ये तयार झालेली दिसून येतात. आम्ही भेट दिलेले जिल्हे दक्षिण कोकण या विभागामध्ये येतात. प्राकृतिक रचनेच्या दृष्टिने याचे पुढीलप्रमाणे तीन विभाग पाडले जातात. ही विभागणी पश्चिम पूर्व यामध्ये करण्यात येते.

1. समुद्र किनारयाजवळ सखल किनारपट्टी ही कमी उंचीची असते. (खलाटी)
2. पश्चिमेला त्याला लागून असलेला डोंगराळ भाग (वलाटी)
3. सह्याद्री पर्वतांचा पश्चिम उताराचा घाट

महाराष्ट्र नदी प्रणाली



हवामान

महाराष्ट्राच्या हवामानाचे उन्हाळा, पावसाळा, हिवाळा असे तीन भाग पडतात. वास्तविक उन्हाळ्याचा कालावधी म्हणजे जून ते सप्टेंबर या कालावधीत ८० टक्के पर्जन्य मिळते, म्हणून महाराष्ट्रामध्ये पावसाळा हा स्वतंत्र ऋतू मानला जातो. महाराष्ट्रातमध्ये नैऋत्य मान्सून वार्यापासून पाऊस मिळतो तर मार्च ते मे या महिन्यात तीव्र उन्हाळा असून नोव्हेंबर ते फेब्रुवारी या कालावधीमध्ये हिवाळा ऋतू असतो.

कोल्हापूर जिल्ह्याचे सर्वसाधारण हवामान समशितोष्ण मानले जाते. कोल्हापूर जिल्ह्याचा पश्चिम भाग पूर्व भागाच्या तुलनेत थंड हवामानाचा आढळतो. कारण समुद्र किनारपट्टीपासून उंचीचा प्रभाव तेथील तापमानावरीत झालेला आहे. एप्रिल आणि मे या उन्हाळ्याच्या कालावधीमध्ये कोल्हापूर जिल्ह्याच्या विभागामध्ये उष्ण वारे वाहत असतात. त्यामुळे मार्च ते मे या कालावधीमध्ये उष्ण हवामान, जून ते ऑक्टोबर पर्जन्याचे महिने, तर नोव्हेंबर ते फेब्रुवारी थंड हवामानाचा कालावधी म्हणून ओळखला जातो. या जिल्ह्याला मुख्यतः नैऋत्य मौसमी वारयापासून पर्जन्य अधिक मिळते. जिल्ह्यात मान्सूनपूर्व कालावधीमध्ये म्हणजे मार्च ते एप्रिल महिन्यामध्ये वळीव प्रकारचा पाऊससुद्धा पडतो. या जिल्ह्यातील पर्जन्य वितरणाचा कल पश्चिमेकडून पूर्व बाजूला घटलेला दिसतो. उदा. पश्चिमेकडील बावड्याला ६००० मि.मी. पर्जन्य तर पूर्वेकडे शिरोळ या ठिकाणी ६०० मिमी पर्जन्य मिळते.

या विभागाचे किमान तापमान १४° ते १६° से.ग्रे. च्या दरम्यान तर कमाल तापमान ३८ ° से.ग्रे. आढळते, म्हणजेच तापमान कक्षा अधिक असलेली दिसते.

सांगली जिल्ह्यातील सर्वसाधारण तापमान नैऋत्य मान्सून वारयाचा कालखंड सोडता कोरडे आहे. या जिल्ह्यामध्येसुद्धा जिल्ह्याच्या पश्चिम भागाकडून पूर्व भागाकडे तापमानामध्ये वाढ होत गेलेली आढळते. या जिल्ह्यामध्येही कोल्हापूर

प्रमाणेच उष्ण हवामान, थंड हवामान आणि पर्जन्याचा कालावधी येतो. या जिल्ह्याला सरासरी ७०० मि.मि. इतका पाऊस पडतो. पर्जन्य वितरण पश्चिमेकडून पूर्वेकडे घटत जाते. जिल्ह्याच्या पश्चिम भागामध्ये २००० मि.मि. तर पूर्व भागामध्ये ९०० मि.मि. इतके पर्जन्य आढळते. एप्रिल व मे महिन्यामध्ये वादळी पर्जन्य किंवा वळीव पाऊस अपेक्षित असतो. या जिल्ह्याच्या परिसरामध्ये कमाल ४२° से. तर किमान १५° से. तापमान आढळते. म्हणजेच जिल्ह्यातील तापमान कक्षा अधिक आहे.

वरील विभाग व्यतिरिक्त रत्नागिरी, सिधुदुर्ग जिल्ह्याला भेटी दिलेल्या आहेत. जिल्ह्यामध्ये सह्याद्री पर्वताचा पश्चिम उतार आणि कोकण विभागाचा समावेश होतो. कोकणच्या पश्चिमेला अरबी समुद्र तर पूर्वेला सह्याद्री पर्वत अशी प्राकृतिक रचना लाभलेला हा भाग असल्याने नैऋत्य मान्सून वारयाच्या कालावधीमध्ये सह्याद्रीच्या पश्चिम उतारावर २०० से.मी पेक्षा जास्त पाऊस पडतो तर सह्याद्रीतील आंबोली या ठिकाणी ७५० से.मी. पावसाची नोंद होते. अनिवृष्टी आणि अरबी समुद्राचे सान्निध्य या दोन कारणांमुळे कोकणचे हवामान वैशिष्ट्यपूर्ण तयार झालेले आहे. साधारणतः कोकणचे हवामान उष्ण व दमट मानले जाते. सागर सान्निध्य लाभले असल्याने कमाल तापमान ३३° सें. पर्यंतच वाढते तर किमान तापमान २२° से. इतके घटते. म्हणजेच या विभागात तापमान कक्षा अल्प असल्याने कोकण विभागाचे हवामान सम आहे. सागर जवळ असल्याने तेथील हवेमध्ये सापेक्ष आर्द्रतेचे प्रमाण नेहमी ८० ते ९० टक्के असते. त्यामुळे हवा नेहमी दमट असते.

Paid for coffee

जमिनेचे प्रकार

पृथ्वी खडबडीत, मध्यम आणि पृष्ठभाग वर दंड जैविक आणि अजैविक संमिश्र कण माती (माती / माती) म्हटले जाते. अनेकदा वरील पृष्ठभाग (माती काढून रॉक शेल) आढळले आहे. कधीकधी थोडासा खोल खडक सापडतो. 'मृदाशास्त्र' (Pedology) भौतिक भूगोल जमिनीचा निर्मिती, त्याची वैशिष्ट्ये आणि जमिनीवर वितरण शास्त्रीय अभ्यास आहे एक प्रमुख शाखा आहे. पृथ्वीच्या वरच्या पृष्ठभागाच्या फक्त कणांना (लहान किंवा मोठे) माती म्हणतात.

नद्यांच्या काठावर आणि पाण्याच्या प्रवाहाने आणलेली माती, ज्याला 'कचरा माती' म्हणतात, खणून खडक पडत नाही. पाण्याचे स्रोत तेथील खालच्या पातळीवर आढळतात. सर्व मातीचा उगम खडकापासून झाला आहे. जेथे निसर्गाने मातीमध्ये बदल घडवून आणला नाही आणि हवामानाचा फारसा परिणाम झाला नाही, तेथे आम्ही खाली खडकांच्या वरील मातीची जोडणी स्थापित करू शकतो. जरी वरच्या पृष्ठभागाच्या मातीचा खाली दगडाकडे वेगळा देखावा आहे, तरी दोघांचे रासायनिक संबंध आहेत आणि जर माती दुसऱ्या साइटवरून नैसर्गिक क्रियेद्वारे, म्हणजेच पाण्याद्वारे किंवा वायु वाहून नेली गेली नसेल. , मग हे नाते पूर्णपणे स्थापित केले जाऊ शकते. खडकाच्या वरचा एक थर देखील सापडतो जो खडकापासून तयार झाला आहे आणि नैसर्गिक कृतीतून अद्याप तो पूर्णपणे मातीत आला नाही, फक्त खडकाचे जाड तुकडे तयार झाले आहेत, ज्याला ना माती किंवा खडक म्हणता येईल. मातीची रचना त्यांच्या वरच्या पृष्ठभागावर आढळते. मातीच्या या पातळीवर, आम्हाला खालील खडकाच्या रासायनिक आणि भौतिक गुणधर्मांचे संग्रहण आढळू शकते. जर रॉक स्फटिकासारखे असेल तर त्याची शक्यता 100 टक्के आहे. खाली दगडाच्या अगदी निकटचा, बाजूकडील भाग खडकात समान रासायनिक आणि भौतिक गुणधर्म असू शकतो. जसजसे अंतर वरच्या दिशेने वाढत जाईल तसतसे खडकांची रूपरेषा देखील बदलू शकते. शेवटी, आम्हाला माती सापडली, जी शेतीसाठी अतिशय अनुकूल सिद्ध झाली आहे आणि ज्यावर शेती सुरुवातीपासूनच चालू आहे, आणि मनुष्य पिके काढत आहे. काही माती नैसर्गिक कारणांमुळे इतर ठिकाणच्या खडकांमधून तयार होते. अशा ठिकाणी, वरील मातीचे भौतिक आणि रासायनिक संबंध तळाशी जमा होण्याद्वारे स्थापित केले जाण्याची शक्यता नाही, परंतु हे निश्चित आहे की मातीची उत्पत्ती खडकांमधून झाली आहे. शेतातील मातीमध्ये, खडकांच्या खनिजांसह, झाडाच्या झाडाची कुजूनही सेंद्रिय पदार्थ आढळतात.

सूक्ष्म आणि रासायनिक विश्लेषणनिसर्गात सापडलेल्या रासायनिक पदार्थांच्या प्रभावामुळे खडकांचे अश्रू हळूहळू होत असल्याचे दर्शवितो. खडकांचे रासायनिक घटक बदलतात आणि मातीची रूपरेषा अगदी वेगळी दिसते. जर मातीच्या निर्मितीमध्ये खडकाचे

तण काढणे ही प्रमुख क्रिया होती तर आज आपल्याला वाढणार्या रोपांना उपयुक्त असलेल्या शेतांची माती सापडत नाही. बारीक दगड असलेल्या पीसीशी मातीची तुलना केली जाऊ शकत नाही. जरी खडकांचे खनिजे जमिनीच्या वरच्या भागात खूप आढळतात आणि त्यांचे तुकडे देखील मोठ्या प्रमाणात आढळतात, तरीही मातीतील जीवजंतू कृषी क्षेत्रासाठी महत्त्वपूर्ण आहेत. प्राणी आणि त्यांच्याशी संबंधित पदार्थ जसे की वनस्पती आणि कुजलेल्या प्राण्यांच्या कुजलेल्या वस्तू, परिणामी, अंकुर राज्यात प्राप्त झालेल्या खडकांचे लहान कण प्रतिक्रिया देतात आणि मातीचा रंग बदलतात. हा फॉर्म फक्त खडकांचा कण नाही तर माती पृथ्वीच्या नवीन प्रणालीने सुसज्ज आहे. जर आपण सूक्ष्मदर्शकासह मातीचा तुकडा तपासला आणि नंतर त्याच खडकातील या खडकांचे कण तपासले तर आपल्याला त्या दोन मधील फरक सापडेल. हा फरक प्राणी आणि वनस्पतींमधून प्राप्त झालेल्या अजैविक पदार्थांच्या संयोजनामुळे होतो.

1. लव्हारसाची काळी मृदा (Black Soil)- क्षेत्राच्या दृष्टीने काळी माती भारतात दुसऱ्या स्थानावर आहे. भारतात सर्वात काळी माती महाराष्ट्र आणि दुसऱ्या ठिकाणी गुजरात प्रांत होता. काळा चिखल बांधकाम ज्वालामुखीच्या पुरळणे झाल्याने एक प्रकारचा खडक रॉक इमारत आहे. बेसाल्टच्या विघटनामुळे काळ्या मातीची निर्मिती होते. दक्षिण भारतातील काळ्या मातीला 'रेगुर' (रेगुड) म्हणतात. केरळमधील काळ्या मातीला 'शाली' म्हणतात. काळी माती उत्तर भारतात 'केवल' म्हणून ओळखली जाते.

काळी मातीमध्ये नायट्रोजन आणि फॉस्फरसचे प्रमाणही कमी असते. यात लोह, चुना, मॅग्नेशियम आणि अल्युमिनाचे प्रमाण जास्त आहे. काळ्या मातीत पोटॅशचे प्रमाण देखील पुरेसे आहे.

कापूस उत्पादनासाठी काळी माती उत्तम मानली जाते. याशिवाय काळ्या मातीत तांदळाची लागवडही चांगली आहे. काळी मातीमध्ये मसूर, हरभरा आणि खेसडीचे उत्पादनदेखील चांगले आहे.

काळ्या मातीत लोहाचे प्रमाण जास्त असल्याने त्याचा रंग काळा आहे. काळ्या मातीत पाणी लवकर कोरडे होत नाही, याचा अर्थ असा होतो की त्याद्वारे विचलित होणारे पाणी जास्त काळ टिकते, ज्यामुळे या मातीतील धान्याचे उत्पादन जास्त आहे. कोरडे असताना काळी माती फारच कठोर होते आणि ओले झाल्यावर लगेच चिकट होते. भारतात काळ्या मातीचा विस्तार सुमारे 5.4 लाख चौरस किलोमीटर आहे.

२) जांभा मृदा —

रत्नगिरी, सिधूदुर्ग या जिल्ह्यांमध्ये व कोल्हापूरमधील शाहुवाडी, गडहिंग्लज इत्यादी तालुक्यांमध्ये जांभा जमिन आढळून येते. सह्याद्रीच्या माध्यावरील ही जमिन अग्निजन्य

खडकाची आहे. जास्त पावसामुळे बरीचशी द्रव्ये उतारावरून आणि जमिनी पाझारून जमिनी नाहीशा होतात त्यामुळे जमिनीमध्ये क्षारांचे प्रमाण अल्प असते. शेतीच्या दृष्टीने ही निकृष्ट प्रकारी जमिन आहे.

३) भाबर मृदा —

रत्नागिरी व सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील काजवी नदी ते तेरेखोल नदीपर्यंत गाळाच्या संचयनातून नदीच्या खोरयांमध्ये खाडीमध्ये ही जमिन आढळते. या जमिनीमध्ये वाळू मिश्रित लहान रेती असते त्यामुळे पाणीधारक बरयापैकी असते या जमिनीत भात, नारळ, आंबा, फणस, काजू, सुपारी इत्यादी पिके घेतली जातात.

नैसर्गिक वनस्पती

भारतीय वन राज्य अहवालात (आयएसएफआर) 2019 मध्ये सांगितले गेले आहे की महाराष्ट्राचे वनक्षेत्र 50,777.6 चौ.कि.मी. होते, जे राज्याच्या भौगोलिक क्षेत्राच्या (जीए) लाख चौरस किलोमीटर क्षेत्राच्या 16.% आहे. मागील आयएसएफआर -2017 नुसार त्याचे वनक्षेत्र 50,682 चौरस किमी होते.

नैसर्गिक वनस्पती मानवाला मिळालेली देणगी आहे. वनस्पतीवरती जीवसृष्टी अवलंबून महाराष्ट्रात २१ टक्के भागावरती वनस्पतीचे आच्छादन आढळते. नैसर्गिक या अनेक घटकांवरती आधारित तापमान व पर्जन्य या गोष्टी मूलभूत आहेत. भूपृष्ठरचनेचासुद्धा वनस्पती आच्छादनावरती प्रभाव पडत असतो. आम्ही आयोजित केलेल्या सहलीच्या विभागामध्ये पुढील वनस्पती प्रकार आढळतात.

१. सदाहरित जंगले — ही जंगले साधारणतः १४०० मी. उंचीच्या प्रदेशामध्ये व ३५० ते ६०० सें.मी. वार्षिक पर्जन्य मिळणार्या रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या भागामध्ये आढळतात. याची वैशिष्ट्ये म्हणजे ती सलग नसून तुरळक स्वरूपात आढळतात. आर्थिकदृष्ट्या जांभूळ, हिरडा, अंजिर, देवदार हे महत्त्वाचे घटक आढळतात. नैसर्गिकदृष्टीनेसुद्धा ही वने महत्त्वाची आहेत.
२. निमसदाहरित वने- 200 ते ३५० सेंमी पर्यंत पाऊस पडणार्या सदाहरित जंगलाच्या खालच्या बाजूस रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग व कोल्हापूरच्या पश्चिम भागामध्ये आढळतात. या जंगलामधील उंच वृक्ष पानझाडीचे असतात. मध्यम आकाराची झाडे सदाहरित असतात. यामध्ये बेहडा, जांभूळ, अंजन इ. वृक्ष आढळतात.
३. शुष्क प्रदेशातील काटेरी वने — ५० सेमी पर्जन्य असणारया प्रदेशामध्ये या प्रकारची जंगले कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्यातील काही भागात आढळतात. यामध्ये मध्यम उंचीचे

वृक्ष, झुडपे, काटेरी वने आढळतात. झुडपाची उंची कमी, मुळे खोल व फाद्यावर काटे ही वैशिष्ट्ये आहे. बोर, खैर, चिंच, निवडूंग, कोरफड, शिंदी इ. वनस्पती आढळतात. सांगली जिल्ह्यातील जत तालुक्यामध्ये या प्रकारची जंगले पाहवयास मिळतात.

पिके/कृषी उत्पादने

महाराष्ट्राच्या उत्पादनामध्ये कृषी उत्पादनाचा वाटा महत्त्वपूर्ण आहे. ८० टक्के लोक शेतीवर अवलंबून आहेत. महाराष्ट्रातील शेती पर्जन्य वितरणाशी निगडित आहे. १९६० नंतर खर्चा अर्थाने महाराष्ट्रात शेती विकासाला सुरवात झाली आजसुद्धा पारंपारिक शेती पहावयास मिळते. सहलीच्या निमित्तने भेटी दिलेल्या विभागातील शेतीची परिस्थिती विशद करीत असताना शेतीच्या दृष्टीने कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्याचा दक्षिण-पश्चिम भाग हा अंत्यत समृद्ध दिसतो. या परिसरामध्ये पंचगंगा आणि तिच्या उपनद्या कोल्हापूरमधील भोगावती, कोसारी, वारणा या नदीचे विभाग आणि सांगलीमधील कृष्णा, येरळा, वारणा या नदीखोरांचा प्रदेश येतो. जलसिंचनाच्या दृष्टीने हा भाग अंत्यत विकसित झालेला दिसतो. कोल्हापूर, सांगली जिल्ह्यामध्ये सहकारच्या माध्यमातून कृषी आधारित विविध उद्योगांची स्थापना करण्यात आली आहे. या विभागामध्ये सहकारी तत्त्वावर उपसा जलसिंचन प्रकल्प राबविण्यात आले आहेत. त्यामुळे येथील बरेच क्षेत्र ओलिताखाली आले आहे. कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्यात राधानगरी प्रकल्प, कळमवाडी, चांदोली यासारखी मोठी धरणे बांधण्यात आली असून त्यामधून जलसिंचनाचा विकास झालेला दिसून येतो. सांगली जिल्ह्यात ऊस हे प्रमुख पिक घेतले जाते. याचबरोबर भुईमूग, सोयाबीन, करडई तर अन्नधान्याच्या पिकांमध्ये कोल्हापूरमध्ये तांदूळ हे प्रमुख पिक तर ज्वारी, गहू, बाजरी इ. अन्य पिके घेतली जातात. कोल्हापूर परिसर भागात रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये काजू, आंबा लागवड मोठ्या प्रमाणात झालेली आढळते. कोल्हापूर, साताराच्या दक्षिण भागात पायरया पायरयांची शेती केलेली दिसून येते.

उद्योग धंदे

औद्योगिकीकरण आजच्या तसेच पुढील पपढीचा विकास घडिवण्यास सहायभत्तू ठरते. मानवी भांडवलाची गुंतवणूक असणे, अनावयक नियमन कमी करणे, स्पर्धात्मकता वाढिवणे आणि प्रोत्साहन देणे या सारख्या उचित धोरणांची आखणी केल्याने औद्योगिक विकास सातत्यपूर्ण राखण्यास मदत होते. राज्यात औष्णिक विकासासाठी अनकुल वातावरण निर्मती करण्याच्या दृष्टीने शासन सतत विवध उपाययोजना अंमलात आणत आहे आणि यामुळे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थेत राज्य औद्योगिक केंद्र म्हणून कार्यरत राहिल. राज्याने केलेल्या या उपाययोजना मुळे राज्य हे नेहमीच देशी व परदेशी गुंतवणूकदारांचे प्रथम पसंतीचे राज्य राहिले आहे.

महाराष्ट्र हे कृषिप्रधान राज्य असल्यामुळे औद्योगिक विकास बराच झालेला आहे. उद्योगांना शेतीइतकेच महत्त्व दिले जाते म्हणून महाराष्ट्रातील एकूण औद्योगिक उत्पादनापैकी २० टक्के उत्पन्न महाराष्ट्रात होते.

अभ्यास सहलीच्या निमित्तने आम्ही भेटी दिलेल्या जिल्ह्यांमध्ये प्रामुख्याने साखर उद्योग कापड उद्योग या दोन उद्योगांचा विकास झालेला आढळतो. सांगली जिल्ह्यात माधवनगर, वाळवा, शिराळा, कवठेमहांकाळ, जत, आटपाडी, नागेवाडी इत्यादी ठिकाणी एकूण ११ साखर कारखाने असून पैकी कवठेमहांकाळ, जत, आटपाडी हे कायमस्वरूपी दुष्काळी तालुके आहेत. कोल्हापूरमध्ये कसबा, बावडा, शाहूनगर, बिद्री, इचलकरंजी, गांधीनगर, गडहिंग्लज, हुपरी, शिरोळ इ. ठिकाणी एकूण १२ साखर कारखाने आहेत. कोल्हापूर जिल्ह्यात पंचगंगा, दुधगंगा, वेदगंगा नद्यांमुळे ऊसाची मोठ्या प्रमाणात लागवड होते. वाहतूक सोयी, मजुरांचा पुरवठा सहकारी तत्त्वांचा अवलंब यामुळे या ठिकाणी साखर उद्योगाचा विकास झालेला आहे. रत्नागिरी जिल्ह्यामध्ये पडावी या ठिकाणी साखर उद्योगाचा विकास झालेला आहे.

सुती वस्त्र उद्योगांमध्ये महाराष्ट्राचा भारतामध्ये प्रथम क्रमांक लागतो. देशाच्या ३५ टक्के उत्पादन महाराष्ट्रातून होते. सुती वस्त्र उद्योगाच्या महत्त्वाच्या केंद्रांपैकी आम्ही भेटी दिलेल्या कोल्हापूर, सांगली जिल्ह्यामध्ये या व्यवसायाचा विकास झालेला आढळतो. पूर्वी सांगली जिल्ह्यामध्ये माधवनगर येथे असलेली सुती कापड गिरणी व्यवस्थापन व अन्य समस्यांमुळे सध्या बंद झालेली आहे. अलीकडे मिरज माधवनगर, विटा या परिसरामध्ये हा व्यवसाय केंद्रित होवू लागला आहे. या व्यतिरिक्त ७ ते ८ गिरण्या उभारण्याच्या अवस्थेत आहेत. कोल्हापूरमध्ये इचलकरंजी हे महत्त्वाचे कापड उद्योगाचे केंद्र मानले जाते. याला दक्षिण महाराष्ट्राचे मॅचेस्टर म्हणतात.

सांगली, कोल्हापूर, मिरज, पलुस इत्यादी तालुक्यातच्या काही ठिकाणी महाराष्ट्र विकास औद्योगिक मंडळामार्फत औद्योगिक क्षेत्र विकसित करण्यात आले असून या

उद्योगांमध्ये एम.आय.डी.सी. क्षेत्राचीही भर पडलेली दिसून येते. कोल्हापूरमध्ये शिरोली फॉन्ट्री व्यवसायासाठी प्रसिध्द असून कोल्हापूरमध्ये हा व्यवसाय मोठ्या प्रमाणात चालतो. या प्रमुख उद्योगाव्यतिरिक्त संबंधित असणारे दुय्यम स्वरुपाचे उद्योगदेखील येथे प्रस्थापिकत झालेले आहेत.

रत्नागिरी, सिंधुदुर्गमध्ये आंबा, काजू उत्पादनाशी निगडीत आंब्याचा रस हवाबंद डब्यात पॅक करणे, लोणची तयार करणे, काजूवर आधारित व्यवसायाची येथे पहावयास मिळतात. राजापूरच्या परिसरामध्ये जंगलातील खैरापासून व हिरड्यापासून कात तयार करण्याचा व्यवसाय करण्यात येतो तसेच मासेमारीसाठी होड्या तयार करण्याचा व्यवसायही तेथे मोठ्या प्रमाणात आहे.

सहलीतील प्रमुख ठिकाणे

मार्लेश्वरमंदिर



महाराष्ट्रराज्यातील, रत्नागिरी जिल्ह्यात संगमेश्वर नावाचा एक छोटासा तालुका आहे. त्याच तालुक्यात देवरुख ह्या गावापासून १६ किमी अंतरावर मार्लेश्वर हे शिवाचे प्रसिद्ध ठिकाण आहे. हे शिवस्थान डोंगरावरील गुहेत आहे. ह्या गुहेत दोन शिवपिंडी आहेत, त्यातील एक मल्लिकार्जुन तर दुसरी मार्लेश्वर ह्या नावाने ओळखल्या जातात. असे सांगण्यात येते की, हे दोघे भाऊ असून मल्लिकार्जुन हा मोठा भाऊ आहे. जेव्हा हे स्थान निर्माण झाले तेव्हा येथे पार्वती नव्हती. आणि म्हणूनच ह्या देवस्थानाची अशी पद्धत आहे की येथे दर मकरसंक्रांतीला शिव-पार्वतीचे लग्न लावले जाते. मार्लेश्वर हा वर तर साखरपा ह्या गावाची भवानी मंदिर (गिरिजादेवी) ही वधू समजून लग्न लावले जाते. हा लग्न सोहळा लिंगायत पद्धतीने लावला जातो. ह्या शिवपिंडी स्वयंभू आहेत.

गावापासून दूर असलेल्या छोट्याश्या गुहेत असलेले हे ठिकाण निसर्गरम्य व हिरव्यागार वनराईने नटलेले आहे. ह्या स्थानाचे एक आकर्षण म्हणजे येथे वाहणारा धबधबा. सुमारे २०० फूट उंची वरून पडणारा हा धबधबा धारेश्वर ह्या नावाने ओळखला जातो. सह्याद्रीच्या कड्यावरून हा धबधबा पुढे बावनदी म्हणून वाहू लागतो. माघ महिन्यात ह्या धबधब्याखाली आंघोळ करणे हे खूप पवित्र समजले जाते.

मार्ग:- कवठेमहांकाळ पासून मार्लेश्वर १६० किमी अंतरावर आहे.

गणपतीपुळे



हे मंदिरसमुद्र किनाऱ्यावर आहे. ते पश्चिमाभिमुख आहे. मंदिर स्वयंभू आहे व पाठीमागे टेकडी आहे. तिच्यावरूनच प्रदक्षिणा घ्यावी लागते. भरतीच्यावेळी मंदिराच्या भिंतीपर्यंत पाणी येते. मंदिरासमोर १२ किमी लांबीचा समुद्रकिनारा आहे. तेथील रुपेरी व मौवाळूत फिरतांना एक नावच अनुभव व आनंद मिळतो. फेब्रुवारी, नोव्हेंबर महिन्यात सायंकाळी सूर्याची किरणे मूर्तीवर पडतात. हे स्थळ रत्नागिरी पासून ५० मैलांवर आहे. हे ४०० वर्षापूर्वीचे मंदिर आहे. हे प्रथम झोपडीवजा मंदिर होते. शिवाजीमहाराजांनी पक्के बांधकाम करून घेतले नंतर पेशव्यांनी बरीच सुधारणा केली. लोभासुर नावाच्या राक्षसाचा वध करण्यासाठी हा अवतार झाला होता असे म्हणतात. येथे रत्नागिरीहून एस.टी.ची सुविधा आहे. गावात फार तुरळक हॉटेल आहेत. येथील अनेक कुटुंबात एक दिवस राहण्याची सोय व जेवणाची घरगुती अशी सोय आहे. आता विविध हॉटेल राहण्यासाठी उपलब्ध आहेत. ट्रस्टचे मोठे भक्त निवास उपलब्ध आहे. अतिशय अल्प दरात राहण्याची व जेवण नाष्ट्याची सोय आहे.

मार्ग:- कवठेमहांकाळ पासून गणपतीपुळे २३० किमी अंतरावर आहे. तसेच मार्लेश्वर पासून गणपतीपुळे ७५ किमी आहे.

पावस, रत्नागिरी

रत्नागिरी शहरापासून २० कि.मी. अंतरावर पावस हे स्थान आहे, जिथे स्वरूपानंद स्वामींनी त्यांची समाधी घेतली. प्रेमाने "अप्पा" किंवा "रामभाऊ" म्हणून ओळखले जाणारे स्वामींचे मूळ नाव रामचंद्र होते. 15 डिसेंबर 1903 रोजी जन्मलेल्या स्वामींनी पावस येथे आत्महत्या केली आणि त्यापूर्वी त्यांनी 40 वर्षे येथे वास्तव्य केले.

पावसात विष्णुपंत आणि रखमाबाई गोडबोले या जोडप्याकडे जन्मलेल्या स्वामीजींचे व्यवस्थित स्मारक आहे आणि आत्मदाह करण्यापूर्वी त्यांचे निवासस्थान होते.



स्वामीजींनी प्राथमिक शिक्षण गावातच पूर्ण केले, त्यानंतर त्यांनी रत्नागिरीतील उच्च वर्ग आणि मुंबईतील उच्च माध्यमिक वर्ग आर्यन एज्युकेशन सोसायटीच्या हायस्कूलमध्ये शिकले. या शाळेतच त्यांची प्रथम धार्मिक आणि आध्यात्मिक ग्रंथांशी ओळख झाली. 18 व्या वर्षी ते महात्मा गांधींच्या स्वातंत्र्य चळवळीकडे आकर्षित झाले. वयाच्या 20 व्या वर्षी पुण्याच्या सद्गुरु बाबामहाराज वैद्य यांच्याकडून दीक्षा घेतल्यावर त्यांचे आयुष्य एक कठोर वळण घेतलं. त्यानंतर त्याने त्याचा आध्यात्मिक जे सुरु केला

Paid & V-verified

कुणकेश्वर मंदिर



श्री क्षेत्रकुणकेश्वर.... कोकणातील एक पवित्र तिर्थक्षेत्र...अती प्राचीन काळा पासुन येथील कणकेच्या राई मध्ये वास्तव्य करुन असलेल्या शंभुमहादेवाची ही भुमी... कणकेच्या बनात असलेला ईश्वर म्हणजेच कुणकेश्वर... देवा वरुन गावाचे नाव सुद्धा कुणकेश्वर असेच प्रचलीत झाले. सुमारे ११०० व्या शतकापासुन प्रसिद्धीला आलेले हे स्थान म्हणजे कोकणातील धार्मीक व ऐतिहासीक सौंदर्याचा मुकुटमणीच म्हणावा लागेल. कुणकेश्वर मंदिराइतके प्राचीन भव्य देवालय कोकणात इतरत्र कुठेच नाही. पुणे, मुंबई, कोल्हापुर या शहरांशी देवगडहुन अवघ्या १८ कि.मी. अंतरावर कुणकेश्वर हे गाव आहे. एस टी थांबते तेथून अवघ्या ५-७ मिनिटांच्या अंतरावर असणार्या मंदिराचा कळस लक्ष वेधून घेतो. ऐन किनार्याशी असणार्या उंचवटया वर उभारलेल्या या मंदिरचा सागरतटाकडील भाग भक्कम बांधीव तटाने सुरक्षित राखला आहे. ८-९ मीटर उंचीच्या या तटावर असणार्या सपाट जागेवर मंदिर आहे. मंदिराचा परिसर २२-२४ मीटर उंचीच मंदिर आहे. मंदिराचा परिसर तटाने परिवेष्टित तर आहेच, पण खाली जांभ्या दगडांची फरशी ही आहे. अशा या

कुणकेश्वर मंदीराचा इतिहास सुद्धा तितकाच प्राचीन, रोमांचकारी आणि रहस्यमय असा आहे.

मार्ग:- गणपतीपुळे पासून कुणकेश्वर 118 किमी अंतरावर आहे.



सिंधुदुर्ग

सिंधुदुर्ग किल्ला देवस्थानच्या परिसरात समुद्र किनारी काही शिवलिंग आहेत. त्यापैकी २१ शिवलिंग आपणास पाहावयास मिळतात. या शिवलिंगामागील इतिहास असा आहे की, गेली कित्येक वर्षे समुद्राच्या पाण्यामध्ये असणारीही शिवलिंग झिज होत असतानासुद्धा ती पुर्ववत प्रमाणे आहेत अशी निदर्शनास येतात. इतका काळ लोटला तरी त्यांची म्हणावी तितकी झिज झालेली नाही. गेले कित्येक वर्षे यात्रेकरुया शिवलिंगाचे दर्शन घेत आहेत. ही शिवलिंग पांडवांनी घडवलेली आहेत अशी श्रद्धा आहे. याची साद देणारी पांडवलेणी आजही येथे आहेत.



शिवाजी महाराजांच्या आरमारात या किल्ल्याला फार महत्त्व होते. किल्ल्याचे क्षेत्र कुरटे बेटावर ४८ एकरावर पसरलेले आहे. तटबंदीची लांबी साधारण तीन किलोमीटर आहे. बुरुजांची संख्या ५२ असून ४५ दगडी जिने आहेत. ह्याकिल्ल्यावर शिवाजी महाराजांच्या काळातील गोड्या पाण्याच्या दगडी विहीरी आहेत. त्यांची

नावे दूध विहीर, साखर विहीर व दही विहीर अशी आहेत. या किल्ल्याच्या तटबंदीच्या भिंतीमध्ये छत्रपती शिवाजी महाराजांनी त्या काळी तीस ते चाळीस शौचालयाची निर्मिती केली आहे. या किल्ल्या मध्ये शिवाजी महाराजांचे शंकराच्या रूपातील एक मंदिर आहे. हे मंदिर इ.स. १६९५ मध्ये शिवाजीमहाराजांचे पुत्र राजाराममहाराज यांनी बांधले.

छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या आरमारी दलाचे आद्यस्थान मालवण येथील जंजिरा म्हणजे हा सिंधुदुर्ग किल्ला होय. महाराजांकडे ३६२ किल्ले होते. या सर्व किल्ल्यांचा पूर्वेस विजापूर, दक्षिणेस हुबळी, पश्चिमेस अरबीसमुद्र आणि उत्तरेस खानदेश-वऱ्हाड या देशापर्यंतचा विस्तार होता. भुईकोट आणि डोंगरी किल्ल्यांच्या बरोबरीने सागरी मार्गावरील शत्रूंची स्वारी परतून लावण्यासाठी जलदुर्गाची निर्मिती महत्त्वाची आहे, हे ओळखून शिवाजी महाराजांनी सागरी किल्ले निर्माण केले. चांगल्या, भक्कम आणि सुरक्षित स्थळांचा शोध घेऊन समुद्रकिनाऱ्याची पाहणी झाली. इ.स. १६६४ साली मालवण जवळील कुरटे नावाचे काळाक भिन्न खडक असलेले बेट किल्ल्यासाठी निवडले. महाराजांच्या हस्ते किल्ल्यांच्या तटांची पायाभरणी झाली. आजमोरयाचा दगडयानावानेही जागाप्रसिद्ध आहे. एका खडकावर गणेशमूर्ती, एकीकडे सूर्याकृती आणि दुसरीकडे चंद्राकृती कोरून त्या जागी महाराजांनी पूजा केली.

असं म्हणतातकी, किल्लाबांधण्यासाठी एक कोटी होन खर्ची पडले. उभारणीसाठी तीन वर्षांचाकालावधी लागला. ज्या चार कोळी लोकांनी सिंधुदुर्गबांधण्यासाठी योग्य स्थळ शोधले, त्यांना गावे इनामे देण्यात आली. ऐतिहासिक सौंदर्य लाभलेला सिंधुदुर्ग हा किल्ला ज्या कुरटे खडकावर तीन शतके उभा आहे, तो शुद्ध काळाकभिन्न खडक मालवणपासून सुमारे अर्धा मैल समुद्रात आहे. या खडकावर समुद्रमार्गानी व्यापलेले क्षेत्र सुमारे ४८ एकर आहे. त्यांचा तट २ मैल इतका आहे. तटाची उंची ३० फूट असून रुंदी १२ फूट आहे. तटा सठिक ठिकाणी भक्कम असे एकंदर २२ बुरुज आहेत. बुरुजाभोवती धारदार खडक आहे. पश्चिमेस आणि दक्षिणेस अथांग सागर पसरला आहे. पश्चिमेकडे आणि दक्षिणेकडे तटाच्या पायात ५०० खंडी शिसे घातले असून यातटाच्या बांधणीस ८० हजार होन खर्ची पडले.

शिवकालीन चित्रगुप्त यानेलिहिलेल्या बखरीत याबाबतपुढीलमजकूरनमूदकेलाआहे

:

“ 'चौऱ्या ऐंशी बंदरात हा जंजिरा अठरा टोपीकरांचे उरावर शिवलंका, ”

अजिंक्य जागा निर्माण केला।

सिंधुदुर्ग जंजिरा, जगी अस्मानतारा।

जैसे मंदिराचेमंडन,श्रीतुलसीवृंदावन, राज्याचाभूषणअलंकार।

चतुर्दशमहारत्नापैकीचपंधरावेरत्न, महाराजांसंप्राप्तजाहले।



सिंधुदुर्ग आणि समुद्र

सिंधुदुर्गचे प्रवेशद्वार पूर्वेस आहे. या जागी प्रवेशद्वार आहे हे लक्षात येत नाही. पाण्यातून मनुष्य तटाजवळ उतरलाकी उत्तराभिमुख एक खिंड दिसते. या खिंडीतून आत गेले की दुर्गाचा दरवाजा लागतो. हा दरवाजा भक्कम अशा उंबराच्या फळ्यांपासून केला आहे. उंबराचे लाकूड दीर्घकाळ टिकते. त्याला सागाच्यालाकडाची जोड दिली आहे. आत गेल्यानंतर मारुतीचे छोटेखानी मंदिर आहे. तेथूनच बुरुजावर जाण्यासाठी मार्ग आहे. बुरुजावर गेल्यानंतर आजूबाजूचा १५ मैलांचा प्रदेश सहज दिसतो. पश्चिमेकडे जरी मरीचे देऊळ लागते. आजही तेथे लोक वस्ती करून राहतात. श्री शिवराजेश्वरांचे देवालय व मंडपात महाराजांची अन्यत्रकुठल्याही किल्ल्यावरन दिसणारी बैठी प्रतिमा फक्त येथे दिसते. सिंधुदुर्ग किल्ल्याचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे या किल्ल्यात आजही दरबारावर्षानी रामेश्वराची पालखी शिवराजेश्वर येथे येते. इंग्रजांनी हा किल्ला ताब्यात घेतल्यानंतर काही प्रमाणात तो उद्ध्वस्त करून टाकला. किल्ल्यांच्या बांधणीसाठी वापरण्यात आलेला चुना आजही दिसतो. मराठ्यांचा भगवाध्वज आणि त्यांचा ध्वजस्तंभ २२८ फूट उंच होता. त्यामुळे समुद्रातून दूरवर तो ध्वज सहज दृष्टीस पडत होता. ध्वजाला पाहून मच्छिमार खडकापासून लांब राहत असत. हा भगवा ध्वज इ.स.१८१२ पर्यंत फडकत होता.

गडावर ठिकठिकाणी तोफा ठेवण्याच्या जागा आहेत. बंदुका रोखण्यासाठी तटाला भोके ठेवली आहे. सैनिकांसाठी पायखाने आहेत. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी ३०० वर्षांपासून सार्वजनिक स्वच्छतेचा संदेश यातून दाखविला आहे, हे विशेष होय. कोकणातील सिंधुदुर्ग किल्ल्याची उभारणी ही छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या दृष्टीने अत्यंत महत्त्वाची मानली जाते. सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचा स्मृतिमय इतिहास म्हणजे हा किल्ला आहे. असंख्य मावळ्यांच्या साक्षीने आणि परिश्रमाने समुद्रात हा किल्ला उभा केला तो आजहीपर्यटकांना विशेष आकर्षित करतो.

१९६१ साली तत्कालीन मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांनी तटाची दुरुस्ती केली.

विषेश म्हणजे या किल्ल्यामध्ये एका नारळाच्या झाडाला दोन फांद्या (वाय) आकाराच्या होत्या, अलीकडे त्यातील एक फांदी जोराच्या वीज पडल्यामुळे मोडली आहे.



मि.मि. इतके पर्जन्य वितरण आढळते. हा पाऊस मुख्यतः नैऋत्य मान्सून कालखंडात मिळतो.

7. आम्ही भेटी दिलेल्या परिसरात सह्याद्रीच्या उतारावरती सदाहरीत व निमसदाहरीत पूर्वेकडील पर्वत पायथ्यांच्या उतारावरती पानझाड वृक्षांची तर अतिपूर्वेकडच्या विभागात शुष्क, काटेरी वनस्पतींची जंगले आणि सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी किनारी भागात खाड्याच्या परिसरात मॅग्नो प्रकारची पोफळीचे वृक्ष आढळतात.
8. कोल्हापूर आणि सांगली जिल्ह्यातील नदीखोऱ्यांचे विभाग म्हणजे पश्चिम महाराष्ट्रातील शेती विकासाच्या दृष्टीने प्रगत अवस्थेमध्ये असणारा विभाग म्हणून नावारुपाला आलेला आहे. या ठिकाणी आधुनिक प्रकारची शेती केली जाते.
9. या विभागातील शेतीमधून ऊस, तंबाखू, द्राक्षे, आंबा, काजू, बोर, डाळी, इत्यादी नगदी पिके सोयाबिन, भुईमुग ही तेलबियांची पिके तर ज्वारी, बाजरी, भात गहू इ. अन्नधान्याची पिके घेतली जातात.
10. कोल्हापूरचे शाहू मार्केट गुळासाठी, सांगलीचे मार्केट हळद व मिरचीसाठी तासगांव द्राक्षे व बेदाण्यसासाठी तर देवगड, रत्नागिरी हापूस आंब्यासाठी प्रसिध्द असलेले दिसून येते.
11. नद्याखोऱ्यांच्या विभागामध्ये ऊस उत्पादन जलसिंचनाच्या सहाय्याने केले जात असल्याने दक्षिण महाराष्ट्रात साखर कारखान्याची दाटी सांगली व कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये प्रस्थापित झालेली आढळते. याशिवाय रत्नागिरीमध्ये पडावे या ठिकाणीसुध्दा एक साखर कारखाना आहे. या विभागामध्ये कृषी आधारित उद्योगांचा विकास झालेला आहे. प्रामुख्याने साखर कारखाने आणि सुती वस्त्रद्योगांचा यामध्ये समावेश होतो. याचबरोबर दुग्धव्यवसायाच्या अनुषंगाने काही प्रकल्प उदा. वारणा, गोकुळ, चितळे डेअरी या विभागामध्ये कार्यान्वित आहेत तर काजू उत्पादनावर आधारित देवगड, रत्नागिरी परिसरात काही प्रकल्प सुरु आहेत.
12. महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळातर्फे मिरज, सांगली, पलूस, शिरगांव, शिरोली इत्यादी ठिकाणी औद्योगिक क्षेत्रे विकसित करण्यात आलेली

- आहेत. यामध्ये कोल्हापूरचा फॉन्ड्री उद्योग विशेष महत्त्वाचा मानला जातो. तर इचलकरंजी हे ठिकाण दक्षिण महाराष्ट्राचे मॅचेस्टर म्हणून ओळखले जाते.
13. गणपतीपुळे, पावस, सदेवगड, रत्नागिरी, विजयदुर्ग, कुणकेश्वर, मालवण ही ठिकाणे महाराष्ट्रातील पर्यटन स्थळे म्हणून विकसित होत आहेत.
 14. अपारंपारिक उर्जास्रोतांपैकी वारयाच उपयोग करून देवगड येथे असलेला वीजनिर्मिती प्रकल्प हा सह्याद्री पर्वताच्या इतर भागातील योग्य ठिकाणी उभा करण्यासाठी आदर्शयुक्त प्रकल्प ठरलेला आहे.
 15. सागर किनारयाच्या विभागामध्ये रत्नागिरी व देवगड परिसरामध्ये मासेमारीची मत्स्यकेंद्रे विकसित झाली असून त्या माध्यमातून स्थानिक लोकांना व्यवसाय व रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होत आहेत.
 16. कुणकेश्वर –पावस मार्गावर जैतापूर येथे अणूऊर्जा प्रकल्प उभारला जात आहे.

संदर्भ

- महाराष्ट्राचा भूगोल, प्रा. के. ए. खतीब, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, १९९७
- पर्यटन भूगोल, प्रा. के. ए. खतीब, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, २००६
- महाराष्ट्राचा भूगोल, प्रा. टी. पी. पाटील, पिपळापुरे अँड के. पब्लिशर्स, १९९७
- पर्यटन भूगोल, डॉ. विठ्ठल घारपुरे, पिपळापुरे अँड के. पब्लिशर्स, २००१
- साद सागराची, पराग पिंपळे
- District census Handbook Maharashtra Cansus of India, Sangli, Kolhapur, Ratnagri
- Gazetteer of Maharashtra, Sangli, Kolhapur, Ratnagiri, District

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

NOTICE

Date- 2 May 2022

All the students of B. A.-III (Special Geography) are hereby informed that Department of Geography, Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal is going to Study Tour at 30-31 May 2022 as per university academic. All student must participate in this study tour.



A handwritten signature in blue ink, appearing to read "T. E. Kumbhar".

Dr. T. E. Kumbhar
Head,
Department of Geography

Date: 01/06/2022

'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY


Report of the Activity

Title	Study Tour
Day & Date	Monday-Tuesday, 30-31 May 2022
Organizer	DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Funding	-
Head	Dr. T. E. Kumbhar. Head, Department of Geography
Co-ordinator	Dr. D.A. Gade Assistant Professor, Department of Geography
Background	The study tour aims to provide students with practical insights into geographical concepts and foster an appreciation for the intricate relationship between humans and their natural surroundings. Participants are encouraged to actively engage in discussions, document observations, and contribute to a comprehensive report on the geographical aspects of the region.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. Explore and analyse diverse geological formations and natural landscapes to deepen understanding of Earth's physical features.2. Investigate the impact of human activities on local ecosystems3. Examine the interplay between physical geography and human settlements, focusing on urbanization patterns and land-use planning.4. Gain practical insights into river dynamics, coastal processes, and mountainous terrains to comprehend natural systems and their importance.
Conclusion	The geographical study tour along the western coast of Maharashtra in May proved to be a captivating and enriching experience. Exploring the coastal landscapes. This two-day journey not only deepened our understanding of coastal geography but also emphasized the real-world applications of classroom knowledge. Overall, the trip was a pivotal moment in enhancing our appreciation for the dynamic relationship between geography and the environment.


Dr. D. A. Gade
Co-Ordinator




Dr. T.E. Kumbhar
Head


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Acting Principal
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

Date: 01/06/2022

'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Report of the Study Tour

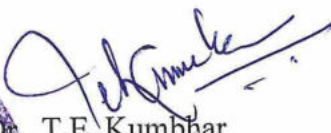
Our geographical study tour along the western coast of Maharashtra in May took us on a fascinating journey through the cultural and spiritual tapestry of Konkan. Visiting coastal temples like Kunkeshwar, Marleshwar, and Ganpatipule provided a unique lens through which to explore the region's religious heritage. These sacred sites not only showcased the architectural marvels but also offered insights into the local communities' deep connection with the coastal landscape, blending geographical and cultural dimensions.


The coastal stretch of Konkan unfolded before us like a picturesque canvas, adorned with pristine beaches and lush greenery. Ganpatipule, with its golden sands and clear blue waters, presented an idyllic setting for studying coastal formations and erosion processes. The serene ambiance allowed for a reflective examination of the delicate balance between natural beauty and the impact of tourism. Exploring these beaches provided not only visual delight but also served as a practical field for understanding the geographical dynamics of coastal regions.

The verdant landscapes of Konkan, teeming with rich biodiversity, were a highlight of our study tour. As we traversed through the lush greenery, we encountered diverse flora and fauna endemic to the region. The varied topography, from rolling hills to dense forests, underscored the geographical diversity of Konkan. This aspect of the tour facilitated discussions on the role of ecosystems in geographical studies, emphasizing the importance of preserving these natural habitats for the overall health of the environment. The study tour, thus, seamlessly integrated cultural, spiritual, and geographical elements, providing a holistic understanding of the western coast of Maharashtra.


Dr. D. A. Gade
Co-Ordinator




T.E. Kumbhar
Head


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal
Acting Principal
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal**

**DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
ATTENDANCE SHEET**

Name of Activity: Study Tour

Day & Date: Monday- Tuesday, 30-31 May 2022

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
1	* LONDHE KOMAL MANIK	B A III	K.M.LONDHE.
2	PATIL AJITRAO SHAHAJI	B A III	APATIL
3	* SADAMATE RESHMA SARJERAO	B A III	RSB
4	* RUPNAR PRATHAMESH BIRU	B A III	PRB
5	BANSODE ANIL RAJESH	B A III	A.R.BANSODE
6	SAYYAD RAIS SULTAN	B A III	RSB
7	LONDHE SACHIN SHARAD	B A III	SLONDHE
8	SHEJUL ARJUN RAVASO	B A III	A.R.shejul
9	* CHOUGULE AMRUTA NANDKUMAR	B A III	ANC
10	* BALLARI VAISHALI NARSIMA	B A III	VNB
11	HUBALE DATTATRAYA ASHOK	B A III	D.A.HUBALE
12	THORAT PRADIP BALU	B A III	PBT
13	* KAMBLE DEVYANI SANJAY	B A III	DKAMBLE
14	* KUNURE RUTUJA CHANDRAKANT	B A III	RCKUNURE
15	* MUJAWAR SUHANA HANIF	B A III	SMUJAWAR
16	* NARALE ASHWINI SAWANTA	B A III	A.S.N.
17	BHOSALE SHIVARAJ SURESH	B A III	BSB
18	PATIL SHRIKRUSHNA CHANDAR	B A III	SPATIL
19	KHANDEKAR KASHILING KAKA	B A III	BKK
20	KHARAT ANKUSH PRAKASH	B A III	AKKHARAT
21	PATIL PRASHANT SAMBHAJI	B A III	PS PATIL

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
22	BANDGAR ASHATAI SAHEBRAO	B A III	<u>ASB</u>
23	DESAI NETAJI UTTAM	B A III	<u>NDesai</u>
24	EDAKE VAISHALI DATTATRAY	B A III	<u>VDE</u>
25	OLEKAR ASHISH BAJIRAV	B A III	<u>A.B.OLEKAR</u>
26	LONDHE PRACHI MACCHINDRA	B A III	<u>PLONDHE</u>
27	HAKKE DHANSHRI ANKUSH	B A III	<u>DAH</u>
28	TOKALE SACHIN SUBHASH	B A III	<u>STSE</u>
29	KHOT CHHAYA SHANKAR	B A III	<u>CKhot</u>
30	SATHE ASHATAI MAHADEV	B A III	<u>AMS</u>
31	GEND AKASH BALASO	B A III	<u>ABG</u>
32	KHOT MANISHA SHAMRAO	B A III	<u>M.S.KHOT</u>
33	VAVARE NILAM DHULA	B A III	<u>NDV</u>
34	BANDGAR SUJIT KHANDU	B A III	<u>SRBANDGAR</u>
35	MALI SAVITA VISHWANATH	B A III	<u>S.V.Mali</u>
36	PINJARI ASMA SHAUKAT	B A III	<u>ASP</u>
37	MANER SANA MUBARAK	B A III	<u>S.M.MANER.</u>
38	GHERADE PRIYANKA SHANKAR	B A III	<u>P.SG</u>
39	GHERADE DNYANESHWAR SHANKAR	B A III	<u>DEG</u>
40	MANE AJIT BALASAHEB	B A III	<u>AMANE</u>
41	PATIL KARISHMA UTTAM	B A III	<u>KPATIL</u>



mwang
Acting Principal
 Padmabhushan Vasantnandada Patil
 Mahavidyalaya, Kavathe Mahantur, Dist-Sangli

PHOTO'S OF THE STUDY TOUR 2021-22



mvda
Acting Principal
Padmabhusan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's


Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal Dist – Sangli


Department Of Geography

Certificate

This is to certify that Shri./Miss. Vaasha Pandurang Patil
Class B.A. –III Roll No. 42806 has satisfactorily completed the
required Study tour Report in Geography as prescribed by the
Shivaji University, Kolhapur during the academic year 2021-2022.

Date :- 9/1/2022


Teacher Incharge


Examiner


Head of Department

ओळख व कार्यपद्धती

अ.क्र	सूची
१.१	संनोमत
१.२	प्रस्तावना
१.३	सहलीचा मार्ग
१.४	आभ्यास सहलीचा हेतू
१.५	पाकृतीक स्वता
१.६	जलप्रणाली
१.७	हवामान
१.८	जमीन प्रकार
१.९	नैसर्गिक वनस्पती
१.१०	पिके आणि कृषी उत्पादने
१.११	उद्योगांचे
१.१२	भेटी दिलेली प्रमुख ठिकाणे
१.१३	निष्कर्ष

मनोगत

शिवाजी विद्यापिठाच्या अभ्यासक्रमामातून बी. ए. भाग ३ भूगोल वर्गाची सहल भौगोलिक घटकांनी परिपूर्ण असणाऱ्या सांगली, मिरज, तासगाव, विश्रामबाग, नृसिंहवाडी, हरिपूर येथे आयोजित केली आहे.

या सहलीत नद्या, खोरी, पर्वते, पिके, लढलते मृदा प्रकार खडक इत्यादी प्राकृतिक घटकांचा तर ऐतिहासिक कलात्मक, राजवाडे, दार्मिक मंदिरे, उद्याने, प्राणी संग्राहलये वसाहतीचे विविध प्रकार, रस्ते, रेल्वेमार्ग इ. सांस्कृतिक घटकांची जवळून पाहणी केली.

आमच्या महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. अशोक वाढर यांनी सहलीसाठी आवश्यक तांत्रिक शैक्षणिक सुविद्या पुरवल्याबद्दल आम्ही त्यांचे आभार मानतो.

सदर अभ्यास सहलीचा आमच्या भूगोल विषयाचे विभाग प्रमुख प्रा. डॉ. नरस. नरस कोटावळे सर यांचे सहकार्य आहे. प्रा. भार. जी चव्हाण सर व प्रा. डॉ. नरस नरस जोळ सर यांनी सहल मार्गदर्शक म्हणून बहुमोल सहकार्य केल्याबद्दल त्यांचे मनपूर्वक आभार मानतो. तसेच आमच्या विभागातील प्रा. डॉ. टी. ई. कुंभार सर व प्रा. गाडे. टी. ए. सर यांनीही सहल आयोजनात सहकार्य केल्याबद्दल आम्ही त्यांचे

प्रस्तावना

प्राचीन मानवाला पृथ्वी विषयीचे ज्ञान अत्यंत अपुरे होते. निर्संगातील घडणाऱ्या अनेक चमत्काराविषयी त्यांच्या मनामध्ये उत्सुकता होती आणि यथावकाश मानवाने या चमत्कारांच्या पाठीमागील कृह अलघडल्याचा प्रयत्न केलेला दिसून येतो. हे करीत असताना मानवाने केलेले निरीक्षण आणि चिंतन या गोष्टी महत्वाच्या झरतात. त्याचबरोबर निर्संगातील नेमकी परिस्थिती जाणून घेऊन त्याचा आपल्या प्रगतीसाठी कसा वापर केला जातो, यासाठी निर्संगातील विविध अंगांचे ज्ञान मिळवण्यासाठी प्राचीन काळापासून मानवाच्या प्रवास, भटकंती, प्रभावी मध्यम ठरलेले आहे.

भूगोलाचा अभ्यास साद्यावणता खालील दोन गटात विभागता येईल. एक म्हणजे लेखी पुसरा प्रात्यक्षिक. काही भौगोलिक माहिती स्तकामधून ग्रंथामधून व व्याख्यानामधून मिळवली जाते. आणि प्राचबरोबर वरी चक्षी माहिती क्षेत्र अभ्यासातून मिळवली जाते. न अभ्यासासाठी हा प्रवास अरळ असतो. भूगोलाचा अभ्यास र भिंतीचा आत करणे म्हणजे केवळ पुस्तकी ज्ञान घेणे वळ्यफुवता भयदीत असतो. हे जाणून घेण्यासाठी मात्र क्षेत्र अभ्यासाची आवश्यकता असते.

क्षेत्र आभ्यास हा प्रात्यक्षिक भूगोलाचा महत्वपूर्ण
भाग मानला जातो. निसर्गामध्ये फिरवून केलेल्या आभ्यासाला
श्रेयिता असेते आणि तो आभ्यास संयुक्त ठरतो. यामुळे
भूगोलाचा विकासाचा आढाव होत असतांना जर्मन, फ्रान्स,
ब्रेटीश किंवा अरब भूवैज्ञानीकांनी दिर्घकाल प्रवास करून
गहीती गोळा केली आणि प्रवास वृत्तांचा आधारे भौगोलीक
भंडार विकसीत होत गेले.

ऋणां आहेत.

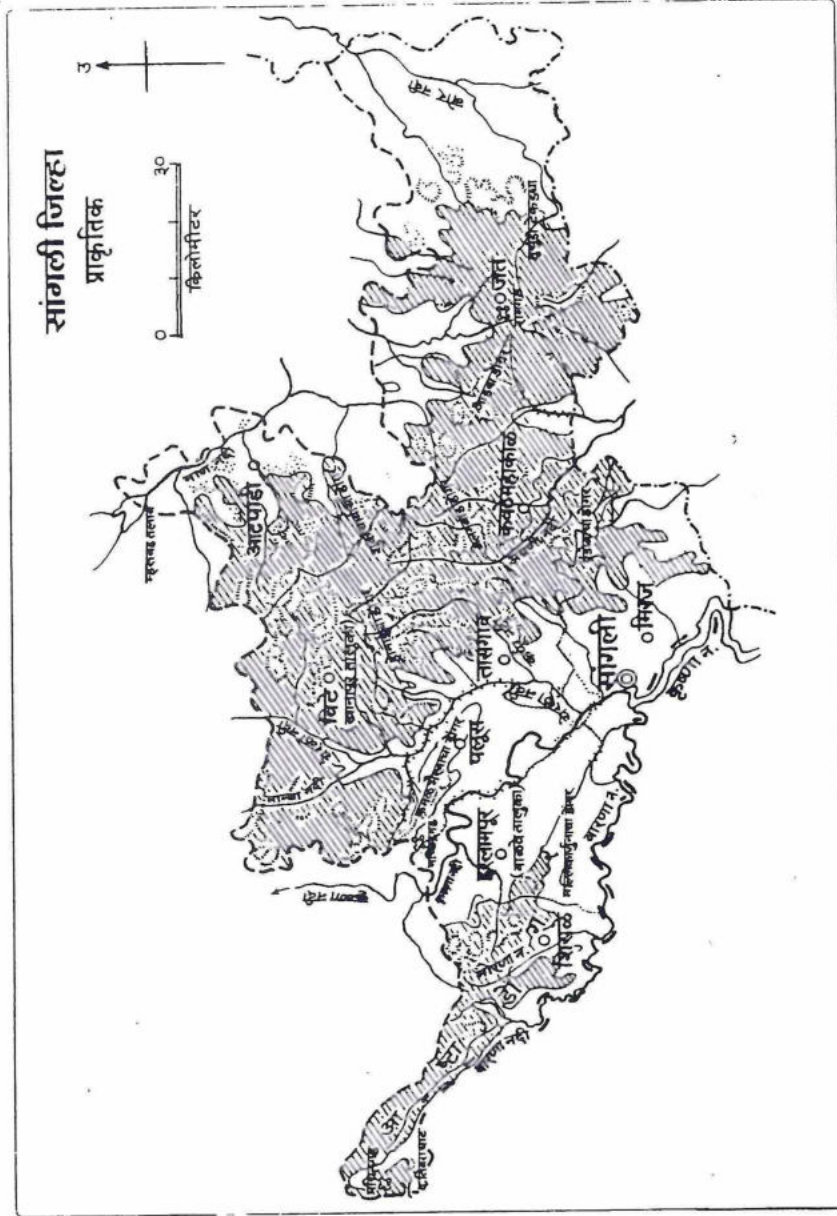
संदर्भ अहवालामध्ये जर काही चुका झाल्या असल्या तर त्या माझ्या नजबचुकीने झाल्या असतील असे मी जाहीर करतो/करते. शेवटी सहलीमध्ये माझ्या वर्ग-मित्र मैत्रीणींमधील मला अपूर्ण सहकार्य देवून मतोरंजक वातावरण निर्मिती केली त्याबद्दल त्यांचे मनपूर्वक आभार.

आपला आभारकारक
विद्यार्थी/विद्यार्थिनी

साहलीचा मार्ग

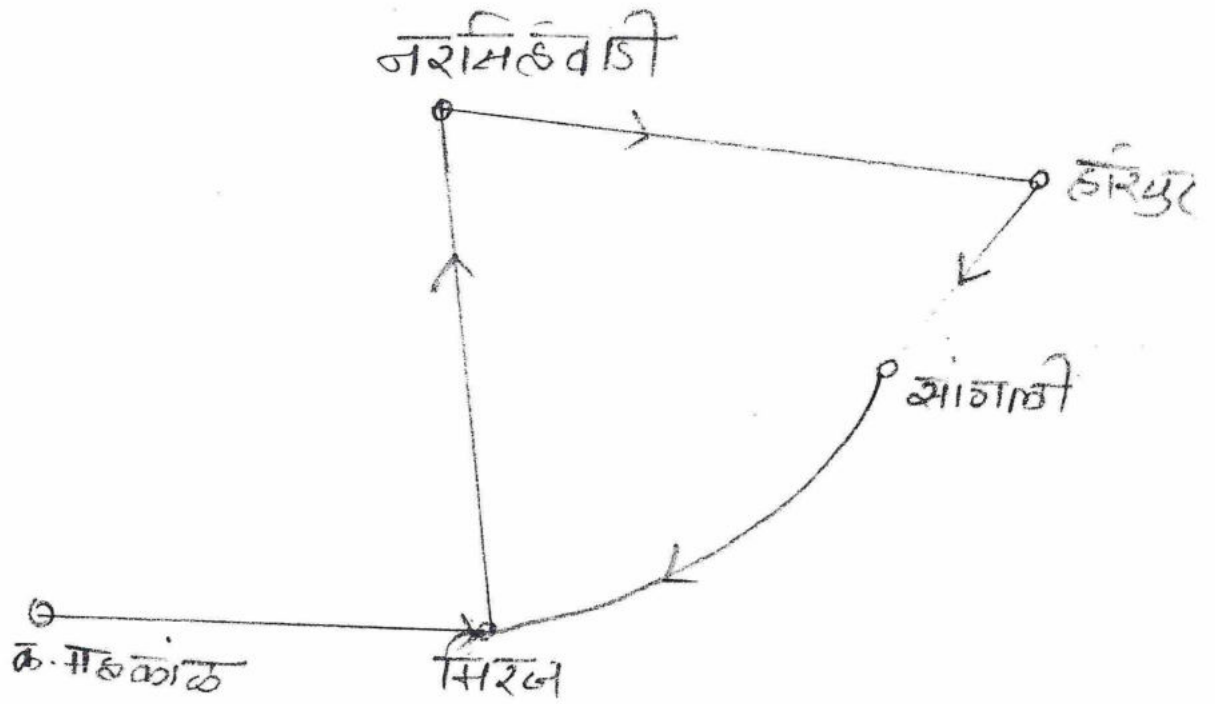
- १) कवेठमहकाळ ते शिरहोण
- २) शिरहोण - मिरज
- ३) मिरज - नरसोबची वाडी
- ४) नरसोबची वाडी - हरिपूर
- ५) हरिपूर - विश्रामवाडा
- ६) विश्रामवाडा - कवेठमहकाळ

प्राकृतिक रचना



सहज मार्ग कुच्छा

आराखडा



1/10 Scale

// अग्र्यास सहभागाचे क्षेत्र //

- ① भूगोल विषयात अग्र्यास सहभागाच्या निमित्ताने वेळी दिलेल्या क्षेत्रातील / विभागातील समस्यांची सविस्तर माहिती करून घेणे. आणि अग्र्यासातील त्या समस्यांवरती शक्य असे उपाय सुचविणे.
- ② पृथ्वीच्या पृष्ठभागाचे प्रत्यक्ष निरीक्षण करणे यामध्ये मुख्यता भूपृष्ठाचे स्वरूप, भूरूपे, जलप्रवाही, मृदा, हवामान, वनस्पती इत्यादी घटकांचा समावेश घेणे.
- ③ भौगोलिक घटक आणि प्रदेशाचा विकास यांच्यातील परस्पर संबंधातील निरीक्षण करणे अनुकूल परिस्थिती उपलब्ध असलेल्या विभागांमध्ये आर्थिक विकास होत असतो, परंतु प्रतिकूल विभागांमध्ये मर्यादा पडलेल्या आढळतात.
- ④ जेथे दिलेल्या विभागांमध्ये किंवा क्षेत्रांमध्ये वसाहतीच्या प्रादुर्भावामध्ये घेणारा बदल, त्याची वैशिष्ट्ये आणि समस्या जाणून घेणे.
- ⑤ भौगोलिक परिस्थिती आणि पिके बांधणी, जलसिंचनाच्या योजना, वनस्पती आणि प्राणिसंपदा इतर संपत्तीसाधनांची उपलब्धता इत्यादी गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमध्ये काही महत्त्वाच्या गोष्टींच्या सहभागाची नोंद घेणे. यामध्ये विशेषतः उद्योगधंदे, महत्त्वाचे काही पर्यावरणीय घटकांचा समावेश घेणे.

प्राकृतिक रचना

आमची अभ्यास सहल मधराष्ट्रातील सांगली जिल्ह्यात मर्यादित । हराविक क्षेत्राशी - स्वभांशी जायजिल केला घेतो. मधराष्ट्र हे भारतातील एक प्रगत राज्य म्हणून ओळखले जाते. भारतात 10% लोकसंख्या विसावलेली असून 40% इतकी लोकसंख्या नागरी झुगोलामध्ये वास्तव करील आहे. या राज्याची वैशिष्ट्ये म्हणजे दरमागसी उत्पन्नापेकी 40% आहे. या राज्याची वैशिष्ट्ये ही वेगवेगळी आहेत. इतके उत्पन्न द्वितीयक आणि तृतीयक क्षेत्रातून मिळते. मधराष्ट्र हे अन्नधान्य उत्पादनाच्या बाबतील पूर्णपणे स्वयंपूर्ण झालेले नसले तरी व्यापारी पिके घेण्याकडे शेतकऱ्यांचा कल आहे. आणि केवळ चामुळेच कृषी आधारित उद्योग वा: साखर कारखानदारी, कापड उद्योग, पुढे आजी उद्योग इत्यादींचा विकास राज्यामध्ये प्रचंड झालेला दिसतो. म्हणजेच मधराष्ट्र राज्य कृषी औद्योगिक वाहतूक इ. क्षेत्रांमध्ये आघाडीवर आहे. मराठी ही राज्याची राज्यभाषा असून राज्यतिरिक्त हिंदी उर्दू, गुजराती इ. भाषा बोलणारे लोकही येथे आहेत.

मधराष्ट्राची विभागणी पंच प्रादेशिक विभागांमध्ये खालीलप्रमाणे केलेली आहे.

I मुंबई II पश्चिम मधराष्ट्र III मराठवाडा

IV विदर्भ V कोकण.

या वरील सर्व विभागांना ऐतिहासिकदृष्ट्या सामाजिक आणि सांस्कृतिक वैशिष्ट्यांचे वास्तव लागलेला असतो.

कृष्णा नदी

कृष्णा ही जिल्हातील प्रमुख नदी असून तिच्या उगम सातारा जिल्हात महालक्ष्मेश्वर पठारावर होतो तिच्या जिल्हातील प्रवास वाळवे तासगाव व मिरज या तालुक्यातून होतो. वाळवे या वायव्येकडून अग्नेयेकडे अशा होतो सांगली हे जिल्हाचे मुख्य ठिकाण कृष्णाकाठी वसले आहे. वारणा व येरळा या कृष्णेच्या जिल्हातून वाहणाऱ्या उपनद्या आहेत. वारणा नदी जिल्हाच्या दक्षिण किंबहुना नैऋत्य सीमेवरून वाहते. सांगलीजवळ हरिपूर येथे ती कृष्णा नदीस मिळते. येरळा नदीच्या जिल्हातील प्रवास श्वानापुर तालुक्याच्या दक्षिण व नैऋत्य सीमेवरून व तसेच तासगाव तालुक्यातून होतो. तीही पुढे कृष्णा नदीस तिच्या डाव्या काठावर सांगलीपासून थोड्या अंतरावर ब्रह्मनाळजवळ येतून मिळते. मान, बोर, अग्रणी या जिल्हातील इतर प्रमुख नद्या आहेत. बोर नदीच्या जिल्हातील प्रवास जत जिल्ह्यातून नैऋत्य ईशान्य व वायव्य अशा होतो. मान किंवा मानगंगा नदी आटपाडी नदीतून वाहते. अग्रणी नदीच्या बहुतांश प्रवास कवठेमहाकाळ तालुक्यातून होतो.

प्रमुख नद्या -

कृष्णा ही सर्वात प्रमुख नदी बहुतेक नद्या पूर्व व पश्चिम वा दक्षिण वा उत्तर दिशेस वाहतात. मानगंगा (उत्तर-पूर्व सीमेवर) वारणा (जिल्हाची पश्चिम व दक्षिण सीमा. येरळा अग्रणी इ.

धरणे -

वारणा नदीवर शिराळा तालुक्यात
चांदेली येथे अग्रणी नदीवर तासगाव
व कवठेमहाकाळ तालुक्याच्या सीमेवर
वज्रचौडे येथे येरळा नदीवर बलवडी
येथे धरणे आहेत याशिवाय आटपाडी
तालुक्यात आटपाडी येथे वाळवा तालुक्यात
रेठरे येथे कवठेमहाकाळ तालुक्यात लांडगे-
वाडी आणि कुची येथे तासगाव तालु-
क्यात अंजनी येथे मीरज तालुक्यात
अ खंडेशपुरी येथे व जून तालुक्यात
कोसारी येथे तलाव आहे. सातारा
जिल्हात कृष्णा नदीवर बांधण्यात
आलेल्या शंजेवाडी तलावाच्या व श्वोडशी
येथील धरणान्या तसेच त्याच जिल्हात
मानगंगा नदीवर बांधण्यात आलेल्या
शंजेवाडी तलावाच्या लाभ ही सांगलीला
होती.

जिल्हात मोठ्या प्रमाणावर बांध-
ण्यात आलेले पाझर तलावात त्याच ऊपसा
जलसिंचन योजना ही मोठ्या प्रमाणावर
शकवण्यात आल्या असून त्याच्या फायदा
सांगली जिल्ह्याला होत असलेला दिसून
येतो.

वेगवेगळ्या पिकांची तसेच या
पाण्यामुळे मोठ्या प्रमाणात रब्बी तसेच
श्वरीब पीक घेता येते. आणि मोठ्या
प्रमाणात फळ्यांची लागवड होत असलेली
दिसून येते.

हवामान

जिल्हातील हवामान बहुतांशी कोरडे असून उष्णकाळी सौम्य असतो. जिल्हाच्या पश्चिमेकडेन पावसाचे प्रमाण आधिक असून पूर्वेकडे ते कमी-कमी होत गेले आहे. सुकटनकट समीतीच्या शिफारसीनुसार जल, आटपाडी, श्वानापुर मिश्र कवठेमहांकाळ व तासगाव या तालुक्यांना केवळ शासनाने निश्चित केलेले अवघठाप्रवण क्षेत्रात सामावेश होतो. तालुक्यात 1974-75 पासून अवघठाप्रवण क्षेत्रविकास कार्यक्रम शरविला जात आहे.

तापमान

महिला जा फे मा ए मे जु जु ऑ स ऑ नो डि

कमाल 31 33 36 38 37 31 28 28 30 32 30 30

किमान 12 15 18 21 22 22 21 21 20 19 16 13

जमिनीचा

प्रकार

मृदा -

संगली जिल्हात पिवळसर, तांबूस लफकिरी, करडी, काळी, कसदार, आशा विविध प्रकारची मृदा आढळते. करड्या रंगाची मृदा वाळवे मीरज, तासगाव परिसरातील काही भागात आढळत जिल्हाच्या पश्चिम भागात विशेषतः शिराळा तालुक्यात पिवळसर तांबूस व लफकीरी मृदा आढळते.

कृषा, वारणा व येरवा या ठिकाणांच्या शेतातील मृदा काळी कसदार आहे.

* नैसर्गिक वनस्पती .

जिल्ह्याच्या भौगोलिक क्षेत्राच्या अवस्था सहा टक्के क्षेत्रावर वने आहेत. पर्यावरण संकुलनाच्या दृष्टीकोनातून रकूठा ऋ-क्षेत्राच्या एक वृत्तीयांश क्षेत्रावर वने असणे आवश्यक आहे. हे लक्षात घेता जिल्ह्यातील वनांचे प्रमाण खूपच आहे. जिल्ह्यातील एक चतुर्थांश वनक्षेत्र शिंदे नालुक्यात एकवटले आहे. पश्चिमेकडील सह्याद्रीच्या डोंगराळ भागात सदाहरित वने आढळतात. अन्यत्र वरुळक पानझडी वृक्ष आढळून येतात. कडेगाव तालुक्यात देवराष्ट्रे येथे सागरेश्वर हे अभयारण्य. विकसित करण्यात आले आहे हे प्रसिद्ध आहे. सुमारे तीनशे चौ. कि. विस्तृत असलेले हे अभयारण्य जिल्ह्याच्या सीमा ओलांडून कोल्हापूर, सातारा व रत्नागिरी या जिल्ह्यांमध्येही पसरले आहे. या अभयारण्यास आता राष्ट्रीय उद्यानाचा दर्जा देण्यात आला आहे. जिल्ह्यात सांगली येथे तसेच दंडीवाच्या डोंगरावर वनीद्याने आहेत.

पिके / कृषी व्यवसाय

रब्बी ज्वारी, गहू व हरभरा ही जिल्ह्यातील प्रमुख अन्नधान्य पिके होत. रब्बी ज्वारीला या जिल्ह्यात भाकू म्हणून ओळखले जाते. मालदांडी ही भाकूची जात विशिष्ट प्रचलित आहे. तसेच या जिल्ह्यामध्ये वेगवेगळ्या प्रकारची मिश्र पिके घेतली जाते. जत, आटपाडी व कवठेमहांकाळ या तालुक्यात रब्बी ज्वारी विशेषतः प्रसिद्ध आहे. कृष्णाकाठच्या जखल व सुपिक प्रदेशात गहू पिकवला जातो. भासाचे किंवा तांदळाचे आर्थिक उत्पादन शिराळे तालुक्यात घेतले जाते.

हळदीच्या उत्पादनासाठी सांगली जिल्हा पूर्वा-पार प्रसिद्ध आहे. सांगलीची हळद व सांगलीचा हळदबाजार देशात प्रसिद्ध आहे. ऊस हे जिल्ह्यातील प्रमुख बागायती पिक असून ताळेवे, ताळेगाव, मिरज

हे तालुकें असाच्या उत्पादनात अग्रसेर आहेत.
अलीकडील काळात हा जिल्हा प्राक्षीत्यादनासाठी
प्रसिद्धीस आला असून तासगाव तालुका प्राक्षी-
त्यादनात जिल्ह्यात अग्रसेर आहे याशिवाय कृष्णा
नदीकाठचा प्रदेशात विशेषतः मिरज, तासगाव व वाडवे
या तालुक्यांच्या काही भागांत तंत्राखुचे उत्पादन
घेतले जाते.

उद्योगादी

सांग सांगत्या मिरज, इस्व्यापूर येथे औद्योगिक वसाहती आहेत. किर्लोस्करवाडी येथे किर्लोस्कर उद्योगसमूहाचा शेतीची अवजार तयार करण्याचा कारखाना आहे.

सांगत्या - स्वातंत्र्य-संग्रामातही हा जिल्हा अग्रेसर होता. सन 1950-52 मधील सर्वेक्षण कार्यक्रमानुसार चळवळीतील शिराळा तालुक्यातील बिल्लेशाच्या मर्यादांची भरताच्या स्वातंत्र्ययुद्धात मोठे साक्षी आहे. येथे वसतदादा पार्ले शेतकरी सहकारी साखर कारखाना, वाळवे, तालुक्यात राजारामनगर (साखराल) येथे राजारामबापू पार्ले सहकारी साखर कारखाना; शिराळे तालुक्यात यशवंतनगर चिखली येथे विश्वास सहकारी साखर कारखाना; कवठे-महाकाल तालुक्यात राजारामबापू नगर येथे श्रीमहाकाय सहकारी साखर कारखाना; वाळवे तालुक्यात वाळवे येथे हुतात्मा किसन झोहर सहकारी साखर कारखाना, भाटपाडी तालुक्यात सोनार सिध्दनगर (भाटपाडी) येथे मानगंगा सहकारी साखर कारखाना, खानापूर तालुक्यात खानापूर येथे यशवंत सहकारी साखर कारखाना; तासगाव तालुक्यात तुरथी येथे तासगाव तालुका सहकारी साखर कारखाना; जत तालुक्यात जत येथे शेतकरी सहकारी साखर कारखाना हे सहकारी तत्वावरून साखर कारखाने जिल्हात कार्यरत आहेत. सांगत्या येथील वसतदादा पार्ले शेतकरी सहकारी साखर कारखाना 'हा भारीयातील सर्वात मोठा सहकारी साखर कारखाना असून देशातील सर्वाधिक दैनिक गाळपक्षमतेचा साखर कारखाना म्हणूनही तो ओळखला जातो. जिल्ह्यात विटे, माहुली व नेमकरजी येथे हिच्याचा पैलू पाडव्याचे उद्योग आहेत. 'बागणी हे गाव मंडळीत तयार करण्याच्या परंपरागत उद्योगासाठी प्रसिद्ध असून तासगाव येथे दाक्षापासून मनुका तयार करण्याचा उद्योग नव्याने विकसित होत आहे. जिल्ह्यात माहुलीनगर व मिरज येथे कापड गिरव्या असून सांगत्या येथे सूत गिरणी आहे.

मोठे दिलेची प्रमुख स्थळे

सांगली :- सांगली शहर कवणेच्या काठी बसवे असून ते जिल्ह्याचे मुख्य ठिकाण आहे. हे शहर हळद, गूळ व शिंगा यांच्या महत्वाच्या बाजारपेठे आहे. गावात मध्यभागी गणेशदुर्ग हा किल्ला असून येथील गणेशमंदिर प्रसिद्ध आहे. सांगली येथे अनेक शैक्षणिक संस्था आहेत. सहकारी साखर कारखाना, औद्योगिक वसाहत कापडागिरव्या, सूत गिरणी व आकारावणी केंद्रे ही तेथे आहेत. सांगली शहर हे सहकारी चळवळीचे एक महत्वाचे केंद्र मानले जाते.

मिरज :- हे एक महत्वाचे रेल्वे जंक्शन असून येथील मुडकोट किल्ला व मीरासाहेब अवाय्याचा हंग प्रसिद्ध आहे. तेथे औद्योगिक वसाहत असून कापड गिरणीही आहे. तंतुवाद्यनिर्मितीच्या परंपरागत उद्योगासाठीही मिरज प्रसिद्ध आहे. मिरजेचे स्वामान रुग्ण कोरडे व आरोग्यदायी मानले जाते.

सध्याच्या सांगली-सातारा या जिल्ह्यांच्या ग्रामांमार्फत प्रतिसरकारची स्थापना करणारे खांतीसिंह नांना पाटिल सांगली जिल्ह्यातीलच या जिल्ह्यातील बहे-बोरगाव हे त्यांचे जन्मस्थान तासगाव :- तासगाव ताळुक्याचे मुख्य ठिकाण

द्राक्षोत्पादनासाठी प्रसिद्ध येथे द्राक्षापातून मंजुळे तयार करण्याचा उद्योग विकसित झाला आहे. हे स्थळ मंजुळे उत्पादनात अग्रेसर आहे. याशिवाय विटे खानापूर ताळुक्यातील मुख्य ठिकाण; आरपाडी (आरपाडी ताळुक्यातील मुख्य ठिकाण; जत (जत ताळुक्याचे मुख्य ठिकाण पूर्वच्या जत संस्थांनी राजधानी); सोडर (ही हताहत्याचे हता हि जिल्ह्यातील प्रमुख गावे होत

/// जिल्ह्याचे ///

आम्ही जेव्हा दिवल्या ठिकाणाचे आता परिसराचे एक
प्लॅगलाचे अभ्यासक म्हणून निरीक्षण केल्यानंतर पुढील निष्कर्ष
काढता येतील.

① सांगली जिल्ह्याच्या पश्चिम भागाचे हवामान हे साधारणतः

समशितोष्ण असून सांगली जिल्ह्याच्या पूर्व भागाचे हवामान उष्ण
व कोरडे आहे.

संदर्भ

1) "महाराष्ट्राचा भूगोल प्रा. के सागर,
के सागर पब्लिकेशन, 1999.

2) साधू सागरची, पराग पिंपळे

3) "Gazetteer of Maharashtra" sangli districts.

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

NOTICE

Date- 15 Feb 2023

All the students of B. A.-III (Special Geography) are hereby informed that Department of Geography, Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal is going to Study Tour at 02-04 March 2023 as per university academic. All student must participate in this study tour.



A handwritten signature in blue ink, appearing to read "T. E. Kumbhar".

Dr. T. E. Kumbhar
Head,
Department of Geography

Date: 05/03/2023

'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Report of the Activity

Title	Study Tour
Day & Date	Thursday-Saturday, 02-04 March 2023
Organizer	DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Funding	-
Head	Dr. T. E. Kumbhar. Head, Department of Geography
Co-ordinator	Mr. A.A. Mali Assistant Professor, Department of Geography
Background	The study tour aims to provide students with practical insights into geographical concepts and foster an appreciation for the intricate relationship between humans and their natural surroundings. Participants are encouraged to actively engage in discussions, document observations, and contribute to a comprehensive report on the geographical aspects of the region.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. Explore and analyse diverse geological formations and natural landscapes to deepen understanding of Earth's physical features.2. Investigate the impact of human activities on local ecosystems3. Examine the interplay between physical geography and human settlements, focusing on urbanization patterns and land-use planning.4. Gain practical insights into river dynamics, coastal processes, and mountainous terrains to comprehend natural systems and their importance.
Conclusion	The geographical study tour along the western coast of Maharashtra in May proved to be a captivating and enriching experience. Exploring the coastal landscapes. This two-day journey not only deepened our understanding of coastal geography but also emphasized the real-world applications of classroom knowledge. Overall, the trip was a pivotal moment in enhancing our appreciation for the dynamic relationship between geography and the environment.

Amali
Mr. A. A. Mali
Co-Ordinator



T.E. Kumbhar
Dr. T.E. Kumbhar
Head

M.K. Patil
Prof. (Dr.) M. K. Patil
Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

Date: 05/03/2023

'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantaoada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

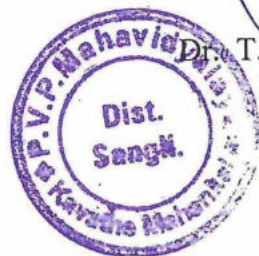
Report of the Study Tour

Our geographical study tour along the western coast of Maharashtra in May took us on a fascinating journey through the cultural and spiritual tapestry of Konkan. Visiting coastal temples like Kurkeshwar, Marleshwar, and Ganpatipule provided a unique lens through which to explore the region's religious heritage. These sacred sites not only showcased the architectural marvels but also offered insights into the local communities' deep connection with the coastal landscape, blending geographical and cultural dimensions.

The coastal stretch of Konkan unfolded before us like a picturesque canvas, adorned with pristine beaches and lush greenery. Ganpatipule, with its golden sands and clear blue waters, presented an idyllic setting for studying coastal formations and erosion processes. The serene ambiance allowed for a reflective examination of the delicate balance between natural beauty and the impact of tourism. Exploring these beaches provided not only visual delight but also served as a practical field for understanding the geographical dynamics of coastal regions.

The verdant landscapes of Konkan, teeming with rich biodiversity, were a highlight of our study tour. As we traversed through the lush greenery, we encountered diverse flora and fauna endemic to the region. The varied topography, from rolling hills to dense forests, underscored the geographical diversity of Konkan. This aspect of the tour facilitated discussions on the role of ecosystems in geographical studies, emphasizing the importance of preserving these natural habitats for the overall health of the environment. The study tour, thus, seamlessly integrated cultural, spiritual, and geographical elements, providing a holistic understanding of the western coast of Maharashtra.

Ammali
Mr. A. A. Mali
Co-Ordinator



T.E. Kumbhar
Dr. T.E. Kumbhar
Head

M.K. Patil
Prof. (Dr.) M. K. Patil
Acting Principal
Padmabhushan Vasantaoada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
ATTENDANCE SHEET

Name of Activity: Study Tour

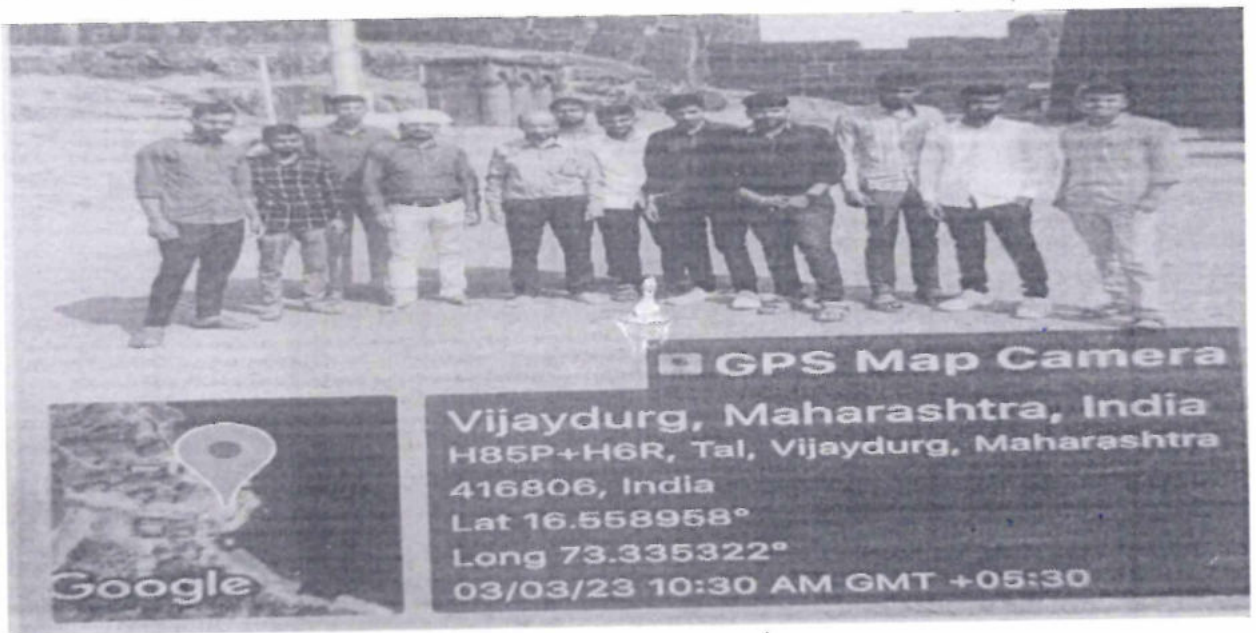
Day & Date: Thursday-Saturday, 02-04 March 2023

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
1	DUDHAL SWAPNIL TUKARAM	B A III	Dudhal
2	OLEKAR BIRUDEV MARUTI	B A III	B.M. Olekar
3	* SWAMI SHWETA SHIRISHKUMAR	B A III	Swami
4	KAVATHEKAR UMESH VASANT	B A III	U.Kavathekar
5	CHAVAN GANESH MARUTI	B A III	Chavan
6	KADAM RUSHIKESH TUKARAM	B A III	Kadam
7	SARGAR AMOL POPAT	B A III	Sargar
8	DUDHAL SANTOSH MAHADEV	B A III	S.M. Dudhal
9	SURYAWANSHI PRATIK RAMESH	B A III	Suryawanshi
10	PATIL PRATHAMESH RAJARAM	B A III	Patil
11	MORE ROHIT SHAHAJI	B A III	More
12	PAWAR GANESH POPAT	B A III	Pawar
13	PATIL SUNIL NAMDEV	B A III	Patil
14	PATIL VIRAJ NANDU	B A III	Patil
15	* VAVARE VAISHALI DHULA	B A III	Vavare
16	GHAGARE SANDESH ARVIND	B A III	Ghagare
17	DHERE PANKAJ SAHEBRAO	B A III	Dhere
18	BHOSALE SAURABH ABASAHEB	B A III	Bhosale
19	SHIROLE SANTOSH SAMBHAJI	B A III	Shirole
20	JANKAR SHUBHAM SUBHASH	B A III	Jankar
21	NAIK ABHIJIT NARAYAN	B A III	A.N. Nalk.
22	RAUT DNYANDIP SHIVALING	B A III	Raut
23	KALE GANESH MAHADEV	B A III	Kale
24	WAGHMODE SANGRAM DHANAJI	B A III	Waghmode
25	PATIL PRAJWAL PRAVIN	B A III	Patil
26	BHOSALE SWAPNIL SAMPAT	B A III	Bhosale
27	VAVARE SANTOSH DHULA	B A III	Vavare

Acting Principal

Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal Dist-Sangli

PHOTO'S OF THE STUDY TOUR 2022-23



Murari
Acting Principal
Padmabhushan Vasantaoada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankari, Dist. Sangli

पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ
भूगोल विभाग

अभ्यास सहल अहवाल



GPS Map Camera



Vijaydurg, Maharashtra, India

H85P+H6R, Tal, Vijaydurg, Maharashtra

416806, India

Lat 16.558958°

Long 73.335322°

03/03/23 10:30 AM GMT +05:30

सन २०२२-२३

मार्लेश्वर, गणपतीपुळे, पावस, कुणकेश्वर, विजयदुर्ग, सिंधुदुर्ग

Shikshan Prasarak Sanstha's

**Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathemahankal,**

Dist- Sangli


Department of Geography

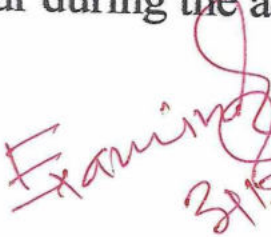
Certificate

This is to certify that Shri/Miss Ajitkumar Shahaji
Patil.....Class- B.A. III Roll No. 41217

His satisfactorily completed that required Tour
Report in Geography as prescribed by the Shivaji
University, Kolhapur during the academic year 2022-23

Date – 14/05/2023


Teacher in Charge


Examiner


Head of Department

मनोगत

शिवाजी विद्यापीठाच्या अभ्यासक्रमातून बी.ए. भाग ३ (भूगोलशास्त्रा) वर्गाची शैक्षणिक अभ्यास सहल भौगोलिक घटकांनी परिपूर्ण असलेल्या मार्लेश्वर, गणपतीपुळे, पावस, कुणकेश्वर, विजयदुर्ग, सिंधुदुर्ग येथे आयोजित केली होती.

या सहलीत नद्या, खोरी, पर्वत, पठारे, पिके, बदलते मृदा प्रकार, खडक इत्यादी प्राकृतिक घटकांच्या तर ऐतिहासिक कलात्मक राजवाडे, धार्मिक मंदिरे, उद्याने, प्राणी संग्राहालये, वस्तूसंग्राहालये वसाहतीचे विविध प्रकार रस्ते, रेलवेमार्ग इत्यादी सांस्कृतिक घटकांची जवळून पाहणी करण्यात आली. सहलीच्या आयोजनात मनोरंजनामुळे आनंदप्राप्ती झाल्याने आम्हाला भौगोलिक दृष्टीकोन प्राप्त झाला.

आमच्या महाविद्यालयाचे प्रभारी प्राचार्य प्रा. डॉ. एम. के. पाटील सर यांनी सहलीसाठी आवश्यक तांत्रिक, शैक्षणिक, सुविधा पुरविल्याबद्दल आम्ही त्यांचे अभार मानतो.

सदर अभ्यास सहलीस आमच्या भूगोल विषयाचे विभाग प्रमुख डॉ. टी. ई. कुंभार सर, प्रा. डॉ. नेताजीराव पोळ सर, प्रा.श्री अनिल माळी सर यांनी सहल मार्गदर्शक म्हणून बहूमोल सहकार्य केल्याबद्दल त्यांचे मनःपूर्वक अभार मानतो. तसेच प्रा. डॉ. गाडे डी. ए. सर, प्रा. वैशाली जाधव, प्रा. सुर्वाना माने यांनीही सहल आयोजनामध्ये सहकार्य केले. त्याचबरोबर विशेष ज्ञात अज्ञात व्यक्तीनी जे सहकार्य केलेबद्दल आम्ही त्यांचेही ऋणी आहोत.

सदर अहवालामध्ये जर काही चूका झाल्या असतील तर त्या माझ्या नजर चूकीने झाल्या असतील असे मी जाहीर करतो/करते. शेवटी सहलीमध्ये माझ्या वर्ग मित्र-मैत्रिणीनी मला संपूर्ण सहकार्य देवून मनोरंजक वातावरणनिर्मिती केली त्याबद्दल त्यांचेही मनःपूर्वक अभार.

आपला अज्ञाधारक

संपूर्ण नाव —

बी. ए. भाग — ३

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	सूची	पृष्ठ क्रमांक
1.	मनोगत	४
2.	प्रस्तावना	५
3.	सहलीचा मार्ग	७
4.	अभ्यास सहलीचा हेतू	९
5.	प्राकृतिक रचना	१०
6.	जलप्रणाली	१३
7.	हवामान	१४
8.	जमीन प्रकार	१६
9.	नैसर्गिक वनस्पती	१८
10.	पिके / कृषी उत्पादने	१९
11.	उद्योगधंदे	२०
12.	भेटी दिलेली प्रमुख ठिकाणे	२२
13.	निष्कर्ष	३५
14.	संदर्भ ग्रंथ सूची	39

प्रस्तावना

व्यक्तीच्या सर्वांगीण विकासाशी शिक्षणाचा संबंध येतो. या अर्थाने व्यक्तिमत्त्व-विकास हे सर्व प्रकारच्या शिक्षणाचे ध्येय असते. आपल्याला हे लोक फक्त चांगले काम करणारेच नकोत, तर त्यांच्याजवळ विशिष्ट बौद्धिक क्षमता असणे आवश्यक आहे, त्यामुळे ते समस्या निराकरणाचे काम करू शकतात. त्यांच्याकडे विशिष्ट सकारात्मक वृत्ती व सद्गुणांचा साठा असणे आवश्यक आहे. यामुळे आपल्याला अपेक्षित असणाऱ्या सामाजाच्या विकासासाठी त्यांचा हातभार लागेल. शैक्षणिक क्षेत्रातील किंवा परिस्थिती मधील वर्तनाचे शास्त्र विकसित करण्याच्या हेतुने किंवा समस्या सोडविण्याच्या दृष्टीने वैज्ञानिक विचार पध्दतीनेच केलेले उपयोजन म्हणजे शैक्षणिक संशोधन होय.

असे शिक्षण फक्त पुस्तकातून मिळत नसून त्यासाठी क्रमिक पुस्तकातून मिळालेल्या ज्ञानाचा वास्तव परिस्थितीशी सागड घालून घेतलेल्या ज्ञानाची परिचीती प्राप्त करणे आवश्यक असते. त्यासाठी भूगोलाशास्त्रात अभ्यासलेले पर्वत पठारे, नद्या, नद्यांना मिळणारे पाणी, समुद्र, खाडी अशा अनेक संकल्पना आपणास पुस्तकातून प्राप्त होतात अशा संकल्पना आपण जेव्हा प्रत्यक्ष पहातो तेव्हा त्या समजतात. यासाठी भूगोल विषयात अभ्यास सहलीस फार महत्त्व आहे. पुस्तकी ज्ञानाला वास्तव ज्ञानाची सागड घालण्यासाठी क्षेत्र भेटीची आवश्यकता असते.

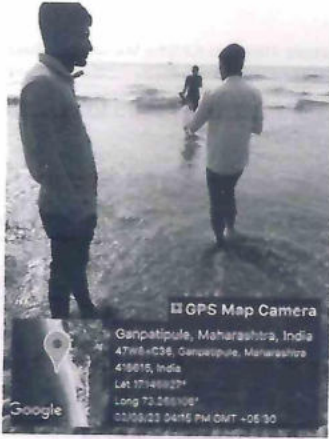
क्षेत्र अभ्यास हा प्रात्यक्षिक भूगोलाचा महत्त्वपूर्ण भाग मानला जातो. निसर्गामध्ये फिरून केलेल्या अभ्यासाला निश्चिंतता असते आणि तो अभ्यास संयुक्त ठरतो. यामुळे भूगोलाच्या विकासाचा आढावा घेत असताना जर्मनी, फ्रान्स, ब्रिटन व आरबानी दीर्घकाळ प्रावास करून माहिती गोळा केली. त्यांच्या प्रावास वर्णनाच्या आधारे भौगोलिक भांडार समृद्ध होत गेले.

अलेकझांडर, हंबोल्ट, कार्ल रिटर, रॅड्जेल या भूवैज्ञानिकानी प्राधान्याने भूगोलाच्या अभ्यासामध्ये प्रावासाचे महत्त्व पटवून देण्याचे प्रयत्न केले आहे. रॅड्जेल यांनी तर याचे महत्त्व विषद करताना असे म्हटले आहे की, I traveled, I sketched and I described मी प्रवास केला त्याचे रेखटन करुन वर्णन केले. या शिवाय रिटरच्या म्हणण्यानुसार भूगोल हे अनुभवजन्य शास्त्र आहे तसेच ते क्षेत्रीय पाहणीशिवाय पूर्ण होवू शकत नाही आणि क्षेत्रीय पाहणीचा हा पाया मानला जातो.

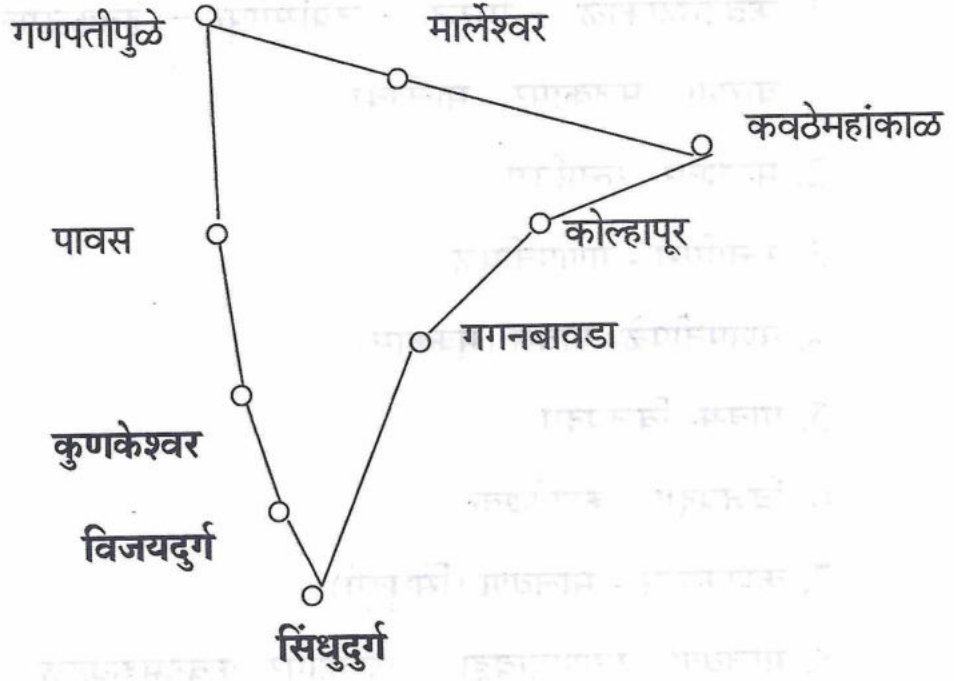
पृथ्वीच्या विविध भागांमध्ये नैसर्गिक आणि मानवनिर्मित अशा दोन्ही घटकांचा एकत्रितरीत्या अभ्यास भूगोलकाराला करावा लागतो. आणि अभ्यास सहलीच्या माध्यमातून भौगोलिक आणि मानवनिर्मित घटकांतील परस्पर संबंधाची माहिती आपल्याला मिळू शकते. यामध्ये प्राधान्याने प्राकृतिक रचना, हवामान, वनस्पती, जमिन, आर्थिक-सामाजिक आणि सांस्कृतिक घटक इत्यादींचा समावेश होतो.

सहलीचा मार्ग

1. कवठेमहांकाळ — मिरज — जयसिंगपूर — हतकळगले — वडगाव — वारणा - मलकापूर - मार्लेश्वर
 2. मार्लेश्वर- रत्नागिरी
 3. रत्नागिरी - गणपतीपुळे
 4. गणपतीपुळे- पावस (मुक्काम)
 5. पावस- विजयदुर्ग
 6. विजयदुर्ग - कुणकेश्वर
 7. कुणकेश्वर - मालवण (सिंधुदुर्ग)
 8. मालवण - गगणबावडा — कोल्हापूर- कवठेमहांकाळ
- या प्रावास मार्गाने सहल पूर्ण केली.



सहल मार्ग कच्चा आराखडा



Google map

3/6/23, 8:13 PM

Kavathe Mahankal, Maharashtra 416405 to Kavathe Mahankal, Maharashtra 416405 - Google Maps

Google Maps

Kavathe Mahankal, Maharashtra 416405 to Kavathe Mahankal, Maharashtra 416405

Walk 622 km, 128 hr



अभ्यास सहलीचा हेतू

1. पृथ्वीच्या पृष्ठभागाचे प्रत्यक्ष निरीक्षण करणे यामध्ये मुख्यता भूपृष्ठाचे स्वरूप, भूरूपे, जलप्रणाली, मृदा, हवामान, वनस्पती इत्यादी घटकांचा समावेश होतो.
2. भौगोलिक घटक आणि प्रदेशाचा विकास यांच्यातील परस्पर संबंधातील निरीक्षण करणे अनुकूल परिस्थिती उपलब्ध असलेल्या विभागामध्ये आर्थिक विकास होत असतो, परंतु प्रतिकूल विभागामध्ये मर्यादा पडलेल्या आढळतात.
3. भेटी दिलेल्या विभागामध्ये वसाहतीच्या प्रारूपामध्ये होणारा बदल, त्यांची वैशिष्ट्ये आणि समस्या जाणून घेणे.
4. भौगोलिक परिस्थिती आणि पिके संरचना, जलसिंचनाच्या योजना, वनस्पती आणि प्राणीसंपदा, इतर संपत्ती साधनांची उपलब्धता इत्यादी गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमधील काही महत्त्वाच्या गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमधील काही महत्त्वाच्या गोष्टींच्या सहभागाची नोंद घेणे. यामध्ये विशेषतः उद्योगधंदे, वाहतुक, काही पर्यावरणीय घटकांचा समावेश होतो.
5. अभ्यास सहलीच्या निमित्ताने भेटी दिलेल्या विभागातील समस्यांची माहिती करून घेणे आणि अभ्यासातील त्या समस्यांवरीती शक्य असे उपाय सुचविणे.
6. वर उल्लेख केलेले हेतू मनात ठवून आमच्या विभागाने मार्लेश्वर, गणपतीपुळे, पावस, कुणकेश्वर, मालवण अशी अभ्यास सहल गुरुवार दिनांक २ मार्च ते शनिवार दिनांक ४ मार्च २०२३ या दरम्यान आयोजित

केली होती. या प्रावास मार्गामध्ये आम्ही सांगली, कोल्हापूर सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी या जिल्ह्यांमधून प्रवास केलेला आहे.

प्राकृतिक रचना

देशाच्या पश्चिम व मध्य भागात वसलेल्या महाराष्ट्राला अरबी समुद्राची 720 किमी लांबीची समुद्र किनारपट्टी व सह्याद्री पर्वतरांगांची नैसर्गिक तटबंदी लाभली आहे राज्याच्या वायव्येस गुजरात, उत्तरेस मध्य प्रदेश, पूर्वेस छत्तीसगड, आग्नेयेस तेलंगणा, दिक्षिणेस कर्नाटक व नैऋत्येस गोवा आहे .

शासकीय सोयीसाठी राज्याची विभागणी 3७ जिल्हे व 6 महसूल विभागांत कोकण), पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, अमरावती आणि नागपूरकरण्यात आली (.आहे2011 च्या जनगणनेनुसार 11.24 कोटी लोकसंख्या असलेले महाराष्ट्र राज्य लोकसंख्येनुसार देशात दुसऱ्या क्रमांकाचे तर क्षेत्रफळानुसार 3.08 लाख चौरस किमी भौगोलिक क्षेत्रफळासह तिसऱ्या क्रमांकाचे राज्य आहे .

राज्याचे मोठ्या प्रमाणात शहरीकरण झाले असून 45.2 टक्के जनता शहरात राहते. राज्याचे हवामान उष्ण किटबंधीय मोसमी आहे मार्चासून सुरु होणाऱ्या व अंगाची काहिली करणाऱ्या उन्हाळ्या पाठोपाठ जूनच्या सुरुवातीला पाऊस येतो . महाराष्ट्राला लाभलेला निसर्गाचा वरदहस्त हा त्याच्या घनदाट व संपन्न जंगलांमध्ये दिसून येतो आणि राज्यात 6 मुख्य व्यग्र प्रकल्प व 6 राष्ट्रीय उद्याने आहेत.

हवामानातील बदल व वैश्विक तापमानवाढ हे जगासमोर व राज्यासमोर उभे ठाकलेले मोठे संकट आहेहे लक्षात घेऊन . पाच लाख विद्युत वाहनांची निर्मिती व वापर करण्याच्या उद्देशाने तयार करण्यात आलेले विद्युत वाहन धोरण जाहीर करणारे महाराष्ट्र हे पहिले राज्य आहे .शाश्वत व्यवस्थेत प्रोत्साहन देऊन राज्याने पर्यावरण

पूरक इंधन आणि वैश्विक तापमानवाढीच्या प्रश्नास हाताळणे याबाबत आपली बांधिलकी दर्शिविली आहे.

महाराष्ट्र ही फक्त एक भौगोलिक संज्ञा नसून लोकांच्या एकतेने व कष्टाने उभे राहिलेले एक राज्य आहे. विविध चालीरीतींचे व परंपरांचे लोक गुण्यागोविंदाने राहतात. आपल्या समृद्ध संगीत व नृत्य परंपरेसाठी राज्याचे नाव देशात आदराने घेतले जाते. पोवाडा, भारुड, गोंधळ आणि लावणी लोककलेमध्ये केलेल्या भरीव योगदानासाठी राज्य जाणले जाते. सर्व जाती व पंथांचे सणसमारंभ उत्साहाने व एकत्रितपणे साजरे केले जातात. देशाच्या सामाजिक व राजकीय प्रगतिमध्ये राज्याचा बहुमोल वाटा आहे.

अजंठा, वेरूळ व घारापुरी लेण्या, गेट वे ऑफ इंडिया आणि चैत्य व विहार सारखी वास्तुकलेचा उत्तम नमुना असलेली स्थळे कायमच जगभरातील पर्यटकांच्या आकर्षणाचा केंद्र बिंदू आहेत व बहुतांश काळ पर्यटकांच्या गदीने फुललेली असतात. राज्याने साहित्य, कला, क्रिड व सामाजिक सेवा यांमध्ये आपला स्वतःचा ठसा उमटवला आहे. सिने जगतात जागृतक स्थावर नावारूपाला आलेले व आता आंतरराष्ट्रीय मंचावर भारताची ओळख व ताकद बनलेले, बॉलीवूड हे देखील राज्याचाच एक हिस्सा आहे.

महाराष्ट्राच्या प्राकृतिक रचनेचे तीन विभाग

1. कोकण किनारपट्टी
2. सह्याद्री पर्वत / पश्चिम घाट
3. महाराष्ट्र पठार / दख्खन पठारी /

1. कोकण किनारपट्टी

- **स्थान:** महाराष्ट्र अरबी समुद्र व सह्याद्रि पर्वत यांच्या दरम्यान दक्षिणोत्तर लांब पट्ट्यास 'कोकण' म्हणतात.
- **विस्तार:** उत्तरेस – दमानगंगा नदीपासून दक्षिणेस – तेरेखोल खाडीपर्यंत. कोकण किनारपट्टी 'रिया' प्रकारची आहे.
- **लांबी:** दक्षिणोत्तर = 720 किमी, रुंदी = सरासरी 30 ते 60 किमी. उत्तर भागात ही रुंदी 90 ते 95 किमी. तर दक्षिण भागात ही रुंदी 40 ते 45 किमी.
- **क्षेत्रफळ:** 30,394 चौ.किमी.

2. सह्याद्रि पर्वत /पश्चिम घाट

स्थान: दख्खनच्या पठाराचा पश्चिमेकडील न खचलेला भाग म्हणजेच सह्याद्रि होय.

- यामुळे सह्याद्रि पश्चिमेकडून अत्यंत उंच व सरल भिंतीसारखा दिसतो.
- पठाराकडून मात्र अत्यंत मंद उताराचा दिसतो.सह्याद्रि पर्वत हा प्राचीन असून या पर्वताची बऱ्याच ठिकाणी झीज झाल्याने कमी – अधिक उंचीची ठिकाणे तयार झाली आहेत. उदा. शिखरे, घाट, डोंगर, उंचीवरील सपाट प्रदेश इ.

3. महाराष्ट्र पठार / दख्खन पठार / देश :

- **स्थान:** महाराष्ट्र राज्यांपैकी एकूण क्षेत्रफळापैकी 90% क्षेत्र महाराष्ट्र पठाराणे व्यापले आहे.
- **लांबी-रुंदी:** पूर्व-पश्चिम – 750km. उत्तर-दक्षिण – 700km.
- **ऊंची:** 450 मीटर— या पठाराची ऊंची पश्चिमेस (600 मी) जास्त व पूर्वेस (300 मी) कमी आहे.
- महाराष्ट्र पठार डोंगर रांगा व नद्या खोऱ्यांनी व्यापले आहे.

नद्यांची खोरी –

उत्तरेकडील वारणा नदीपासून दक्षिणेकडे घटप्रभानदीपर्यंतचा भाग यामध्ये समाविष्ट होतो. कोल्हापूर जिल्ह्यातील नदी खोऱ्यांचा विभाग सुपीक अशा मातीने समृद्ध असून या विभागामध्ये लोक संख्या केंद्रित झालेली आढळते. या जिल्ह्यामध्ये कृष्णा, वारणा, पंचगंगा या प्रमुख नदी खोऱ्यांचा समावेश होतो.

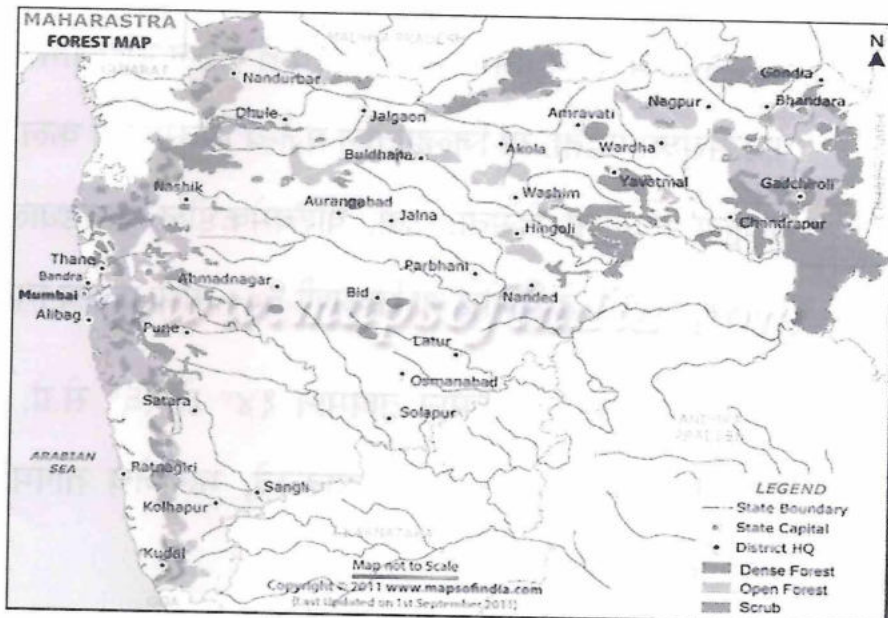
रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्यांचा भाग सह्याद्रीच्या पश्चिमेस अरबी समुद्र व सह्याद्री पर्वत यांच्यादरम्यान किनारपट्टीची लांबी ५६० कि.मी. असून उत्तरेकडे हा भाग अधिक रुंद असून दक्षिणेकडे रुंदी कमी होत जाते.

साधरणता ४५ ते ७५ कि.मी. इतकी रुंदी या विभागाला लाभलेली आहे. या प्रदेशात सह्याद्री पर्वताच्या उपशाखा व सुळके सर्वत्र विखुरलेले आढळतात. रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग प्रदेशाच्या किनारयाला लागुनच अत्यंत चिंचोळी अशी गाळाची मैदाने आहेत. या किनारपट्टीची उंची पूर्वेकडे वाढत गेलेली दिसते. या विभागाची कमीतकमी उंची ८५ मी. तर जास्तीत जास्त उंची ३०० मी. आढळते.

रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्यांमध्ये काजवी, मुचकुंदी, शुक, तेरेखोल इत्यादी नद्यांमुळे प्रदेशाची मोठ्या प्रमाणात झीज झालेली आढळते. किनारी विभागामध्ये सागरी लाटांच्या खणन व संचयन कार्यामुळे पुळणे व वाळुचे दांडे इत्यादी भूरूपे किनारी विभागामध्ये तयार झालेली दिसून येतात. आम्ही भेट दिलेले जिल्हे दक्षिण कोकण या विभागामध्ये येतात. प्राकृतिक रचनेच्या दृष्टिने याचे पुढीलप्रमाणे तीन विभाग पाडले जातात. ही विभागणी पश्चिम पूर्व यामध्ये करण्यात येते.

1. समुद्र किनारयाजवळ सखल किनारपट्टी ही कमी उंचीची असते. (खलाटी)
2. पश्चिमेला त्याला लागुन असलेला डोंगराळ भाग (वलाटी)
3. सह्याद्री पर्वतांचा पश्चिम उताराचा घाट

महाराष्ट्र नदी प्रणाली



हवामान

महाराष्ट्राच्या हवामानाचे उन्हाळा, पावसाळा, हिवाळा असे तीन भाग पडतात. वास्तविक उन्हाळ्याचा कालावधी म्हणजे जून ते सप्टेंबर या कालावधीत ८० टक्के पर्जन्य मिळते, म्हणून महाराष्ट्रामध्ये पावसाळा हा स्वतंत्र ऋतू मानला जातो. महाराष्ट्रातमध्ये नैऋत्य मान्सून वार्यापासून पाऊस मिळतो तर मार्च ते मे या महिन्यात तीव्र उन्हाळा असून नोव्हेंबर ते फेब्रुवारी या कालावधीमध्ये हिवाळा ऋतू असतो.

कोल्हापूर जिल्ह्याचे सर्वसाधारण हवामान समशितोष्ण मानले जाते. कोल्हापूर जिल्ह्याचा पश्चिम भाग पूर्व भागाच्या तुलनेत थंड हवामानाचा आढळतो. कारण समुद्र किनारपट्टीपासून उंचीचा प्रभाव तेथील तापमानावरीत झालेला आहे. एप्रिल आणि मे या उन्हाळ्याच्या कालावधीमध्ये कोल्हापूर जिल्ह्याच्या विभागामध्ये उष्ण वारे वाहत असतात. त्यामुळे मार्च ते मे या कालावधीमध्ये उष्ण हवामान, जून ते ऑक्टोबर पर्जन्याचे महिने, तर नोव्हेंबर ते फेब्रुवारी थंड हवामानाचा कालावधी म्हणून ओळखला जातो. या जिल्ह्याला मुख्यतः नैऋत्य मौसमी वारयापासून पर्जन्य अधिक मिळते. जिल्ह्यात मान्सूनपूर्व कालावधीमध्ये म्हणजे मार्च ते एप्रिल महिन्यामध्ये वळीव प्रकारचा पाऊससुद्धा पडतो. या जिल्ह्यातील पर्जन्य वितरणाचा कल पश्चिमेकडून पूर्व बाजूला घटलेला दिसतो. उदा. पश्चिमेकडील बावड्याला ६००० मि.मी. पर्जन्य तर पूर्वेकडे शिरोळ या ठिकाणी ६०० मिमी पर्जन्य मिळते.

या विभागाचे किमान तापमान १४° ते १६° से.ग्रे. च्या दरम्यान तर कमाल तापमान ३८° से.ग्रे. आढळते, म्हणजेच तापमान कक्षा अधिक असलेली दिसते.

सांगली जिल्ह्यातील सर्वसाधारण तापमान नैऋत्य मान्सून वारयाचा कालखंड सोडता कोरडे आहे. या जिल्ह्यामध्येसुद्धा जिल्ह्याच्या पश्चिम भागाकडून पूर्व भागाकडे तापमानामध्ये वाढ होत गेलेली आढळते. या जिल्ह्यामध्येही कोल्हापूर प्रमाणेच उष्ण हवामान, थंड हवामान आणि पर्जन्याचा कालावधी येतो. या जिल्ह्याला सरासरी ७०० मि.मि. इतका पाऊस पडतो. पर्जन्य वितरण पश्चिमेकडून पूर्वेकडे घटत जाते. जिल्ह्याच्या पश्चिम भागामध्ये २००० मि.मि. तर पूर्व भागामध्ये ९०० मि.मि. इतके पर्जन्य आढळते. एप्रिल व मे महिन्यामध्ये वादळी पर्जन्य किंवा वळीव पाऊस अपेक्षित असतो. या जिल्ह्याच्या परिसरामध्ये कमाल ४२° से. तर किमान १५° से. तापमान आढळते. म्हणजेच जिल्ह्यातील तापमान कक्षा अधिक आहे.

वरील विभाग व्यतिरिक्त रत्नागिरी, सिधुदुर्ग जिल्ह्याला भेटी दिलेल्या आहेत. जिल्ह्यामध्ये सह्याद्री पर्वताचा पश्चिम उतार आणि कोकण विभागाचा समावेश होतो. कोकणच्या पश्चिमेला अरबी समुद्र तर पूर्वेला सह्याद्री पर्वत अशी प्राकृतिक रचना लाभलेला हा भाग असल्याने नैऋत्य मान्सून वारयाच्या कालावधीमध्ये सह्याद्रीच्या पश्चिम उतारावर २०० से.मी पेक्षा जास्त पाऊस पडतो तर सह्याद्रीतील आंबोली या ठिकाणी ७५० से.मी. पावसाची नोंद होते. अनिवृष्टी आणि अरबी समुद्राचे सान्निध्य या दोन कारणांमुळे कोकणचे हवामान वैशिष्ट्यपूर्ण तयार झालेले आहे. साधारणतः कोकणचे हवामान उष्ण व दमट मानले जाते. सागर सान्निध्य लाभले असल्याने कमाल तापमान ३३° से. पर्यंतच वाढते तर किमान तापमान २२° से. इतके घटते. म्हणजेच या विभागात तापमान कक्षा अल्प असल्याने कोकण विभागाचे हवामान सम

आहे. सागर जवळ असल्याने तेथील हवेमध्ये सापेक्ष आर्द्रतेचे प्रमाण नेहमी ८० ते ९० टक्के असते. त्यामुळे हवा नेहमी दमट असते.

जमिनेचे प्रकार

पृथ्वी खडबडीत, मध्यम आणि पृष्ठभाग वर दंड जैविक आणि अजैविक संमिश्र कण माती (माती / माती) म्हटले जाते. अनेकदा वरील पृष्ठभाग (माती काढून रॉक शेल) आढळले आहे. कधीकधी थोडासा खोल खडक सापडतो. 'मृदाशास्त्र' (Pedology) भौतिक भूगोल जमिनीचा निर्मिती, त्याची वैशिष्ट्ये आणि जमिनीवर वितरण शास्त्रीय अभ्यास आहे एक प्रमुख शाखा आहे. पृथ्वीच्या वरच्या पृष्ठभागाच्या फक्त कणांना (लहान किंवा मोठे) माती म्हणतात.

नद्यांच्या काठावर आणि पाण्याच्या प्रवाहाने आणलेली माती, ज्याला 'कचरा माती' म्हणतात, खणून खडक पडत नाही. पाण्याचे स्रोत तेथील खालच्या पातळीवर आढळतात. सर्व मातीचा उगम खडकापासून झाला आहे. जेथे निसर्गाने मातीमध्ये बदल घडवून आणला नाही आणि हवामानाचा फारसा परिणाम झाला नाही, तेथे आम्ही खाली खडकांच्या वरील मातीची जोडणी स्थापित करू शकतो. जरी वरच्या पृष्ठभागाच्या मातीचा खाली दगडाकडे वेगळा देखावा आहे, तरी दोघांचे रासायनिक संबंध आहेत आणि जर माती दुसऱ्या साइटवरून नैसर्गिक क्रियेद्वारे, म्हणजेच पाण्याद्वारे किंवा वायु वाहून नेली गेली नसेल. , मग हे नाते पूर्णपणे स्थापित केले जाऊ शकते. खडकाच्या वरचा एक थर देखील सापडतो जो खडकापासून तयार झाला आहे आणि नैसर्गिक कृतीतून अद्याप तो पूर्णपणे मातीत आला नाही, फक्त खडकाचे जाड तुकडे तयार झाले आहेत, ज्याला ना माती किंवा खडक म्हणता येईल. मातीची रचना त्यांच्या वरच्या पृष्ठभागावर आढळते. मातीच्या या पातळीवर, आम्हाला खालील खडकाच्या रासायनिक आणि भौतिक गुणधर्मांचे संग्रहण आढळू शकते. जर रॉक स्फटिकासारखे असेल तर त्याची शक्यता 100 टक्के आहे. खाली दगडाच्या अगदी निकटचा, बाजूकडील भाग खडकात समान रासायनिक आणि भौतिक गुणधर्म असू शकतो. जसजसे अंतर वरच्या दिशेने वाढत जाईल तसतसे खडकांची रूपरेषा देखील बदलू शकते. शेवटी, आम्हाला माती सापडली, जी शेतीसाठी अतिशय अनुकूल सिद्ध झाली आहे आणि ज्यावर शेती सुरुवातीपासूनच चालू आहे, आणि मनुष्य पिके काढत आहे. काही माती नैसर्गिक कारणांमुळे इतर ठिकाणच्या खडकांमधून तयार होते. अशा ठिकाणी, वरील मातीचे भौतिक आणि रासायनिक संबंध तळाशी जमा होण्याद्वारे स्थापित केले जाण्याची शक्यता नाही, परंतु

हे निश्चित आहे की मातीची उत्पत्ती खडकांमधून झाली आहे. शेतातील मातीमध्ये, खडकांच्या खनिजांसह, झाडाच्या झाडाची कुजूनही सेंद्रिय पदार्थ आढळतात.

सूक्ष्म आणि रासायनिक विश्लेषणानिर्गतात सापडलेल्या रासायनिक पदार्थांच्या प्रभावामुळे खडकांचे अश्रू हळूहळू होत असल्याचे दर्शवितो. खडकांचे रासायनिक घटक बदलतात आणि मातीची रूपरेषा अगदी वेगळी दिसते. जर मातीच्या निर्मितीमध्ये खडकाचे तण काढणे ही प्रमुख क्रिया होती तर आज आपल्याला वाढणार्या रोपांना उपयुक्त असलेल्या शेतांची माती सापडत नाही. बारीक दगड असलेल्या पीसीशी मातीची तुलना केली जाऊ शकत नाही. जरी खडकांचे खनिजे जमिनीच्या वरच्या भागात खूप आढळतात आणि त्यांचे तुकडे देखील मोठ्या प्रमाणात आढळतात, तरीही मातीतील जीवजंतू कृषी क्षेत्रासाठी महत्त्वपूर्ण आहेत. प्राणी आणि त्यांच्याशी संबंधित पदार्थ जसे की वनस्पती आणि कुजलेल्या प्राण्यांच्या कुजलेल्या वस्तू, परिणामी, अंकुर राज्यात प्राप्त झालेल्या खडकांचे लहान कण प्रतिक्रिया देतात आणि मातीचा रंग बदलतात. हा फॉर्म फक्त खडकांचा कण नाही तर माती पृथ्वीच्या नवीन प्रणालीने सुसज्ज आहे. जर आपण सूक्ष्मदर्शकासह मातीचा तुकडा तपासला आणि नंतर त्याच खडकातील या खडकांचे कण तपासले तर आपल्याला त्या दोन मधील फरक सापडेल. हा फरक प्राणी आणि वनस्पतींमधून प्राप्त झालेल्या अजैविक पदार्थांच्या संयोजनामुळे होतो.

1. **लव्हारसाची काळी मृदा (Black Soil)**- क्षेत्राच्या दृष्टीने काळी माती भारतात दुसऱ्या स्थानावर आहे. भारतात सर्वात काळी माती महाराष्ट्र आणि दुसऱ्या ठिकाणी गुजरात प्रांत होता. काळा चिखल बांधकाम ज्वालामुखीच्या पुरळणे झाल्याने एक प्रकारचा खडक रॉक इमारत आहे. बेसाल्टच्या विघटनामुळे काळ्या मातीची निर्मिती होते. दक्षिण भारतातील काळ्या मातीला 'रेगुर' (रेगुड) म्हणतात. केरळमधील काळ्या मातीला 'शाली' म्हणतात. काळी माती उत्तर भारतात 'केवल' म्हणून ओळखली जाते.

काळी मातीमध्ये नायट्रोजन आणि फॉस्फरसचे प्रमाणही कमी असते. यात लोह, चुना, मॅग्नेशियम आणि अल्युमिनाचे प्रमाण जास्त आहे. काळ्या मातीत पोटॅशचे प्रमाण देखील पुरेसे आहे.

कापूस उत्पादनासाठी काळी माती उत्तम मानली जाते. याशिवाय काळ्या मातीत तांदळाची लागवडही चांगली आहे. काळी मातीमध्ये मसूर, हरभरा आणि खेसडीचे उत्पादनदेखील चांगले आहे.

काळ्या मातीत लोहाचे प्रमाण जास्त असल्याने त्याचा रंग काळा आहे. काळ्या मातीत पाणी लवकर कोरडे होत नाही, याचा अर्थ असा होतो की

त्याद्वारे विचलित होणारे पाणी जास्त काळ टिकते, ज्यामुळे या मातीतील धान्याचे उत्पादन जास्त आहे. कोरडे असताना काळी माती फारच कठोर होते आणि ओले झाल्यावर लगेच चिकट होते. भारतात काळ्या मातीचा विस्तार सुमारे 5.4 लाख चौरस किलोमीटर आहे.

२) जांभा मृदा —

रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग या जिल्ह्यांमध्ये व कोल्हापूरमधील शाहुवाडी, गडहिंगलज इत्यादी तालुक्यांमध्ये जांभा जमिन आढळून येते. सह्याद्रीच्या माध्यावरील ही जमिन अग्निजन्य खडकाची आहे. जास्त पावसामुळे बरीचशी द्रव्ये उतारावरून आणि जमिनी पाझारून जमिनी नाहीशा होतात त्यामुळे जमिनीमध्ये क्षारांचे प्रमाण अल्प असते. शेतीच्या दृष्टीने ही निकृष्ट प्रकारी जमिन आहे.

३) भाबर मृदा —

रत्नागिरी व सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील काजवी नदी ते तेरेखोल नदीपर्यंत गाळाच्या संचयनातून नदीच्या खोर्यांमध्ये खाडीमध्ये ही जमिन आढळते. या जमिनीमध्ये वाळू मिश्रित लहान रेती असते त्यामुळे पाणीधारक बरयापैकी असते या जमिनीत भात, नारळ, आंबा, फणस, काजू, सुपारी इत्यादी पिके घेतली जातात.

नैसर्गिक वनस्पती

भारतीय वन राज्य अहवालात (आयएसएफआर) 2019 मध्ये सांगितले गेले आहे की महाराष्ट्राचे वनक्षेत्र 50,777.6 चौ.कि.मी. होते, जे राज्याच्या भौगोलिक क्षेत्राच्या (जीए) लाख चौरस किलोमीटर क्षेत्राच्या 16.% आहे. मागील आयएसएफआर -2017 नुसार त्याचे वनक्षेत्र 50,682 चौरस किमी होते.

नैसर्गिक वनस्पती मानवाला मिळालेली देणगी आहे. वनस्पतीवरती जीवसृष्टी अवलंबून महाराष्ट्रात २१ टक्के भागावरती वनस्पतीचे आच्छादन आढळते. नैसर्गिक या अनेक घटकांवरती आधारित तापमान व पर्जन्य या गोष्टी मूलभूत आहेत. भूपृष्ठरचनेचासुद्धा वनस्पती आच्छादनावरती प्रभाव पडत असतो. आम्ही आयोजित केलेल्या सहलीच्या विभागामध्ये पुढील वनस्पती प्रकार आढळतात.

१. सदाहरित जंगले — ही जंगले साधारणतः १४०० मी. उंचीच्या प्रदेशामध्ये व ३५० ते ६०० सें.मी. वार्षिक पर्जन्य मिळणार्या रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या भागामध्ये आढळतात. याची वैशिष्ट्ये म्हणजे ती सलग नसून तुरळक स्वरूपात

आढळतात. आर्थिकदृष्ट्या जांभूळ, हिरडा, अंजिर, देवदार हे महत्त्वाचे घटक आढळतात. नैसर्गिकदृष्टीनेसुद्धा ही वने महत्त्वाची आहेत.

२. निमसदाहरित वने- 200 ते 350 सेंमी पर्यंत पाऊस पडणार्या सदाहरित जंगलाच्या खालच्या बाजूस रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग व कोल्हापूरच्या पश्चिम भागामध्ये आढळतात. या जंगलामधील उंच वृक्ष पानझाडीचे असतात. मध्यम आकाराची झाडे सदाहरित असतात. यामध्ये बेहडा, जांभूळ, अंजन इ. वृक्ष आढळतात.
३. शुष्क प्रदेशातील काटेरी वने – ५० सेमी पर्जन्य असणारया प्रदेशामध्ये या प्रकारची जंगले कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्यातील काही भागात आढळतात. यामध्ये मध्यम उंचीचे वृक्ष, झुडपे, काटेरी वने आढळतात. झुडपाची उंची कमी, मुळे खोल व फाद्यावर काटे ही वैशिष्ट्ये आहे. बोर, खैर, चिंच, निवडूंग, कोरफड, शिंदी इ. वनस्पती आढळतात. सांगली जिल्ह्यातील जत तालुक्यामध्ये या प्रकारची जंगले पाहवयास मिळतात.

पिके/कृषी उत्पादने

महाराष्ट्राच्या उत्पादनामध्ये कृषी उत्पादनाचा वाटा महत्त्वपूर्ण आहे. ८० टक्के लोक शेतीवर अवलंबून आहेत. महाराष्ट्रातील शेती पर्जन्य वितरणाशी निगडित आहे. १९६० नंतर खर्चा अर्थाने महाराष्ट्रात शेती विकासाला सुरवात झाली आजसुद्धा पारंपारिक शेती पहावयास मिळते. सहलीच्या निमित्तने भेटी दिलेल्या विभागातील शेतीची परिस्थिती विशद करीत असताना शेतीच्या दृष्टीने कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्याचा दक्षिण-पश्चिम भाग हा अंत्यत समृद्ध दिसतो. या परिसरामध्ये पंचगंगा आणि तिच्या उपनद्या कोल्हापूरमधील भोगावती, कोसारी, वारणा या नदीचे विभाग आणि सांगलीमधील कृष्णा, येरळा, वारणा या नदीखोरयांचा प्रदेश येतो. जलसिंचनाच्या दृष्टीने हा भाग अंत्यत विकसित झालेला दिसतो. कोल्हापूर, सांगली जिल्ह्यामध्ये सहकारच्या माध्यमातून कृषी आधारित विविध उद्योगांची स्थापना करण्यात आली आहे. या विभागामध्ये सहकारी तत्त्वावर उपसा जलसिंचन प्रकल्प राबविण्यात आले आहेत. त्यामुळे येथील बरेच क्षेत्र ओलिताखाली आले आहे. कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्यात राधानगरी प्रकल्प, कळमवाडी, चांदोली यासारखी मोठी धरणे बांधण्यात आली असून त्यामधून जलसिंचनाचा विकास झालेला दिसून येतो. सांगली जिल्ह्यात ऊस हे प्रमुख पिक घेतले जाते. याचबरोबर भुईमूग, सोयाबीन, करडई तर अन्नधान्याच्या पिकांमध्ये कोल्हापूरमध्ये तांदूळ हे प्रमुख पिक तर ज्वारी, गहू, बाजरी इ. अन्य

पिके घेतली जातात. कोल्हापूर परिसर भागात रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये काजू, आंबा लागवड मोठ्या प्रमाणात झालेली आढळते. कोल्हापूर, साताराच्या दक्षिण भागात पायऱ्या पायऱ्याची शेती केलेली दिसून येते.

उद्योग धंदे

औद्योगिकीकरण आजच्या तसेच पुढील पपढीचा विकास घडवण्यास सहायभूत ठरते. मानवी भांडवलाची गुंतवणूक असणे, अनावयक नियमन कमी करणे, स्पर्धात्मकता वाढवणे आणि प्रोत्साहन देणे या सारख्या उचित धोरणांची आखणी केल्याने औद्योगिक विकास सातत्यपूर्ण राखण्यास मदत होते. राज्यात औष्णिक विकासासाठी अनकुल वातावरण निर्मती करण्याच्या दृष्टीने शासन सतत विविध उपाययोजना अंमलात आणत आहे आणि यामुळे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थेत राज्य औद्योगिक केंद्र म्हणून कार्यरत राहिल. राज्याने केलेल्या या उपाययोजना मुळे राज्य हे नेहमीच देशी व परदेशी गुंतवणूकदारांचे प्रथम पसंतीचे राज्य राहिले आहे.

महाराष्ट्र हे कृषिप्रधान राज्य असल्यामुळे औद्योगिक विकास बराच झालेला आहे. उद्योगांना शेतीइतकेच महत्त्व दिले जाते म्हणून महाराष्ट्रातील एकूण औद्योगिक उत्पादनापैकी २० टक्के उत्पन्न महाराष्ट्रात होते.

अभ्यास सहलीच्या निमित्तने आम्ही भेटी दिलेल्या जिल्ह्यांमध्ये प्रामुख्याने साखर उद्योग कापड उद्योग या दोन उद्योगांचा विकास झालेला आढळतो. सांगली जिल्ह्यात माधवनगर, वाळवा, शिराळा, कवठेमहांकाळ, जत, आटपाडी, नागेवाडी इत्यादी ठिकाणी एकूण ११ साखर कारखाने असून पैकी कवठेमहांकाळ, जत, आटपाडी हे कायमस्वरूपी दुष्काळी तालुके आहेत. कोल्हापूरमध्ये कसबा, बावडा, शाहूनगर, बिद्री, इचलकरंजी, गांधीनगर, गडहिंग्लज, हुपरी, शिरोळ इ. ठिकाणी एकूण १२ साखर कारखाने आहेत. कोल्हापूर जिल्ह्यात पंचगंगा, दुधगंगा, वेदगंगा नद्यांमुळे ऊसाची मोठ्या प्रमाणात लागवड होते. वाहतूक सोयी, मजूरांचा पुरवठा सहकारी तत्वांचा अवलंब यामुळे या ठिकाणी साखर उद्योगाचा विकास झालेला आहे. रत्नागिरी जिल्ह्यामध्ये पडावी या ठिकाणी साखर उद्योगाचा विकास झालेला आहे.

सुती वस्त्र उद्योगांमध्ये महाराष्ट्राचा भारतामध्ये प्रथम क्रमांक लागतो. देशाच्या ३५ टक्के उत्पादन महाराष्ट्रातून होते. सुती वस्त्र उद्योगाच्या महत्त्वाच्या केंद्रांपैकी आम्ही भेटी दिलेल्या कोल्हापूर, सांगली जिल्ह्यामध्ये या व्यवसायाचा विकास झालेला आढळतो. पूर्वी सांगली जिल्ह्यामध्ये माधवनगर येथे असलेली सुती

कापड गिरणी व्यवस्थापन व अन्य समस्यांमुळे सध्या बंद झालेली आहे. अलीकडे मिरज माधवनगर, विटा या परिसरामध्ये हा व्यवसाय केंद्रित होवू लागला आहे. या व्यतिरिक्त ७ ते ८ गिरण्या उभारण्याच्या अवस्थेत आहेत. कोल्हापूरमध्ये इचलकरंजी हे महत्त्वाचे कापड उद्योगाचे केंद्र मानले जाते. याला दक्षिण महाराष्ट्राचे मॅचेस्टर म्हणतात.

सांगली, कोल्हापूर, मिरज, पलुस इत्यादी तालुक्यातच्या काही ठिकाणी महाराष्ट्र विकास औद्योगिक मंडळामार्फत औद्योगिक क्षेत्र विकसित करण्यात आले असून या उद्योगांमध्ये एम.आय.डी.सी. क्षेत्राचीही भर पडलेली दिसून येते. कोल्हापूरमध्ये शिरोली फॉन्ड्री व्यवसायासाठी प्रसिध्द असून कोल्हापूरमध्ये हा व्यवसाय मोठ्या प्रमाणात चालतो. या प्रमुख उद्योगाव्यतिरिक्त संबंधित असणारे दुय्यम स्वरूपाचे उद्योगदेखील येथे प्रस्थापिकत झालेले आहेत.

रत्नागिरी, सिंधुदुर्गमध्ये आंबा, काजू उत्पादनाशी निगडीत आंब्याचा रस हवाबंद डब्यात पॅक करणे, लोणची तयार करणे, काजूवर आधारित व्यवसायाची येथे पहावयास मिळतात. राजापूरच्या परिसरामध्ये जंगलातील खैरापासून व हिरड्यापासून कात तयार करण्याचा व्यवसाय करण्यात येतो तसेच मासेमारीसाठी होड्या तयार करण्याचा व्यवसायही तेथे मोठ्या प्रमाणात आहे.

सहलीतील प्रमुख ठिकाणे

मार्लेश्वरमंदिर



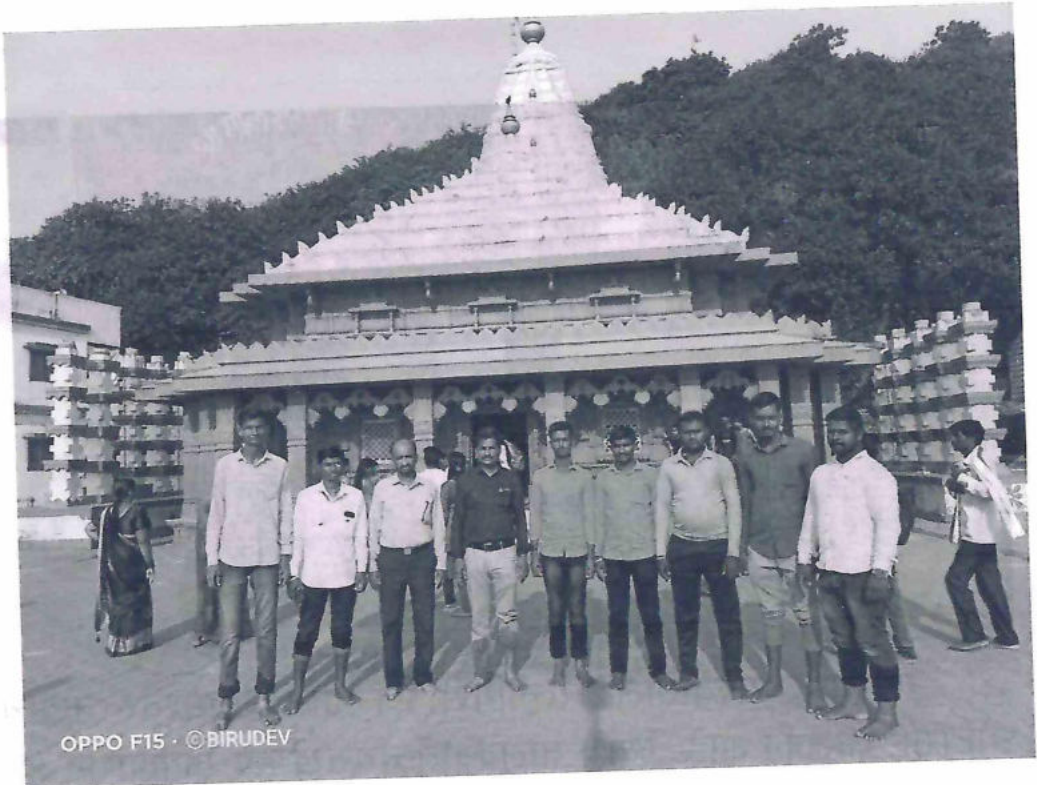
महाराष्ट्र राज्यातील, रत्नागिरी जिल्ह्यात संगमेश्वर नावाचा एक छोटासा तालुका आहे. त्याच तालुक्यात देवरुख ह्या गावापासून १६ किमी

अंतरावर मार्लेश्वर हे शिवाचे प्रसिद्ध ठिकाण आहे. हे शिवस्थान डोंगरावरील गुहेत आहे. ह्या गुहेत दोन शिवपिंडी आहेत, ह्या शिवपिंडी स्वयंभू आहेत. त्यातील एक मल्लिकार्जुन तर दुसरी मार्लेश्वर ह्या नावाने ओळखल्या जातात. असे सांगण्यात येते की, हे दोघे भाऊ असून मल्लिकार्जुन हा मोठा भाऊ आहे. जेव्हा हे स्थान निर्माण झाले तेव्हा येथे पार्वती नव्हती. आणि म्हणूनच ह्या देवस्थानाची अशी पद्धत आहे की येथे दर मकरसंक्रांतीला शिव-पार्वतीचे लग्न लावले जाते. मार्लेश्वर हा वर तर साखरपा ह्या गावाची भवानी मंदिर (गिरिजादेवी) ही वधू समजून लग्न लावले जाते. हा लग्न सोहळा लिंगायत पद्धतीने लावला जातो.

गावापासून दूर असलेल्या छोट्याश्या गुहेत असलेले हे ठिकाण निसर्गरम्य व हिरव्यागार वनराईने नटलेले आहे. ह्या स्थानाचे एक आकर्षण म्हणजे येथे वाहणारा धबधबा. सुमारे २०० फूट उंची वरून पडणारा हा धबधबा धारेश्वर ह्या नावाने ओळखला जातो. सह्याद्रीच्या कड्यावरून हा धबधबा पुढे बावनदी म्हणून वाहू लागतो. माघ महिन्यात ह्या धबधब्याखाली आंघोळ करणे हे खूप पवित्र समजले जाते.

मार्ग:- कवठेमहांकाळ पासून मार्लेश्वर १६० किमी अंतरावर आहे.

गणपतीपुळे



OPPO F15 · ©BIRUDEV



हे मंदिरसमुद्र किनाऱ्यावर आहे. ते पश्चिमाभिमुख आहे. मंदिर स्वयंभू आहे व पाठीमागे टेकडी आहे. तिच्यावरूनच प्रदक्षिणा घ्यावी लागते. भरतीच्यावेळी मंदिराच्या भिंतीपर्यंत पाणी येते. मंदिरासमोर १२ किमी लांबीचा समुद्रकिनारा आहे. तेथील रुपेरी व मौवाळूत फिरतांना एक नावच अनुभव व आनंद मिळतो. फेब्रुवारी, नोव्हेंबर महिन्यात सायंकाळी सूर्याची किरणे मूर्तीवर पडतात. हे स्थळ रत्नागिरी पासून ५० मैलांवर आहे. हे ४०० वर्षापूर्वीचे मंदिर आहे. हे प्रथम झोपडीवजा मंदिर होते. शिवाजीमहाराजांनी पक्के बांधकाम करून घेतले नंतर पेशव्यांनी बरीच सुधारणा केली. लोभासुर नावाच्या राक्षसाचा वध करण्यासाठी हा अवतार झाला होता असे म्हणतात. येथे रत्नागिरीहून एस.टी.ची सुविधा आहे. गावात फार तुरळक हॉटेल आहेत. येथील अनेक कुटुंबात एक दिवस राहण्याची सोय व जेवणाची घरगुती अशी सोय आहे. आता विविध हॉटेल राहण्यासाठी उपलब्ध आहेत. ट्रस्टचे मोठे भक्त निवास उपलब्ध आहे. अतिशय अल्प दरात राहण्याची व जेवण नाष्ट्याची सोय आहे.



मार्ग:- कवठेमहांकाळ पासून गणपतीपुळे २३० किमी अंतरावर आहे. तसेच मार्लेश्वर पासून गणपतपुळे ७५ किमी आहे.

पावस, रत्नागिरी

रत्नागिरी शहरापासून २० कि.मी. अंतरावर पावस हे स्थान आहे, जिथे स्वरूपानंद स्वामींनी त्यांची समाधी घेतली. प्रेमाने "अप्पा" किंवा "रामभाऊ" म्हणून ओळखले जाणारे स्वामींचे मूळ नाव रामचंद्र होते. १५ डिसेंबर १९०३ रोजी जन्मलेल्या स्वामींनी पावस येथे आत्महत्या केली आणि त्यापूर्वी त्यांनी ४० वर्षे येथे वास्तव्य केले.

पावसात विष्णुपंत आणि रखमाबाई गोडबोले या जोडप्याकडे जन्मलेल्या स्वामीजींचे व्यवस्थित स्मारक आहे आणि आत्मदाह करण्यापूर्वी त्यांचे निवासस्थान होते.

स्वामीजींनी प्राथमिक शिक्षण गावातच पूर्ण केले, त्यानंतर त्यांनी रत्नागिरीतील उच्च वर्ग आणि मुंबईतील उच्च माध्यमिक वर्ग आर्यन

एज्युकेशन सोसायटीच्या हायस्कूलमध्ये शिकले. या शाळेतच त्याची प्रथम धार्मिक आणि आध्यात्मिक ग्रंथांशी ओळख झाली. 18 व्या वर्षी ते महात्मा गांधींच्या स्वातंत्र्य चळवळीकडे आकर्षित झाले. वयाच्या 20 व्या वर्षी पुण्याच्या सद्गुरु बाबामहाराज वैद्य यांच्याकडून दीक्षा घेतल्यावर त्यांचे आयुष्य एक कठोर वळण घेतलं. त्यानंतर त्याने त्याचा आध्यात्मिक जे सुरू केला.



कुणकेश्वर मंदिर

श्री क्षेत्रकुणकेश्वर.... कोकणातील एक पवित्र तिर्थक्षेत्र...अती प्राचीन काळा पासुन येथील कणकेच्या राई मध्ये वास्तव्य करुन असलेल्या शंभुमहादेवाची ही भुमी... कणकेच्या बनात असलेला ईश्वर म्हणजेच कुणकेश्वर... देवा वरुन गावाचे नाव सुद्धा कुणकेश्वर असेच प्रचलीत झाले. सुमारे ११०० व्या शतकापासुन प्रसिद्धीला आलेले हे स्थान म्हणजे कोकणातील धार्मीक व ऐतिहासीक सौंदर्याचा मुकुटमणीच म्हणावा लागेल. कुणकेश्वर मंदिराइतके प्राचीन भव्य देवालय कोकणात इतरत्र कुठेच नाही. पुणे, मुंबई, कोल्हापुर या शहरांशी देवगडहुन अवघ्या १८ कि.मी. अंतरावर कुणकेश्वर हे गाव आहे. एस टी थांबते तेथून अवघ्या ५-७ मिनिटांच्या

अंतरावर असणार्या मंदिराचा कळस लक्ष वेधून घेतो. ऐन किनार्याशी असणार्या उंचवटया वर उभारलेल्या या मंदिराचा सागरतटाकडील भाग भक्कम बांधीव तटाने सुरक्षित राखला आहे. ८-९ मीटर उंचीच्या या तटावर असणार्या सपाट जागेवर मंदिर आहे. मंदिराचा परिसर २२-२४ मीटर उंचीच मंदिर आहे. मंदिराचा परिसर तटाने परिवेष्टित तर आहेच, पण खाली जांभ्या दगडांची फरशी ही आहे. अशा या कुणकेश्वर मंदिराचा इतिहास सुद्धा तितकाच प्राचीन, रोमांचकारी आणि रहस्यमय असा आहे.

मार्ग:- गणपतीपुळे पासून कुणकेश्वर ११८ किमी अंतरावर आहे.



GPS Map Camera

Kunkeshwar, Maharashtra, India
89MR+FRW, Kunkeshwar, Maharashtra
416612, India
Lat 16.333565°
Long 73.392286°
03/03/23 12:15 PM GMT +05:30

Google



विजयदुर्ग

विजयदुर्ग किंवा घेरिया हा भारताच्या महाराष्ट्र राज्यातील एक किल्ला आहे.

विजयदुर्ग हा सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात असलेला एक जलदुर्ग आहे. हा किल्ला मुंबईच्या दक्षिणेस सुमारे २२५ किलोमीटरवर व गोव्याच्या उत्तरेस १५० किलोमीटरवर आहे. सुमारे १७ एकर जागेत हा किल्ला पसरला आहे. या किल्ल्यास तीन तटबंदी आहेत. त्यास चिलखती तटबंदी असे म्हणतात. याच्या तीन बाजू पाण्याने घेरलेल्या आहेत. या किल्ल्यात दोन भुयारी मार्ग आहेत. एक किल्ल्याच्या पूर्वेकडे तर दुसरा पश्चिमेकडे.

इतिहास

विजयदुर्ग हा किल्ला ११ व्या शतकाच्या अखेरीस शिलाहार घराण्यातील राजा भोजने बांधला. पुढे तो बहामनी व नंतर आदिलशाहीच्या ताब्यात होता. टॅक्वेरनिअर याने इ.स. १६५० मध्ये या किल्ल्याला भेट दिली होती. तेव्हा त्याने त्याचे वर्णन 'विजापूरकरांचा अभेद्य किल्ला' असे करून ठेवले आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी १६६४ च्या ऑक्टोबर-नोव्हेंबरमध्ये विजयदुर्ग किल्ला जिंकला.^[१] कान्होजी आंग्रे आणि त्यांचे पुत्र संभाजी आंग्रे व तुळोजी आंग्रे यांच्या ताब्यात हा किल्ला इ.स.

१७५६पर्यंत होता. पेशवे व इंग्रज यांच्या संयुक्त सैन्याने १३ फेब्रुवारी १७५६ रोजी तुळाजी आंग्रे यांच्या सैन्याचा पराभव करून विजयदुर्ग ताब्यात घेतला. यामुळे मराठ्यांचे सागरावरील वर्चस्व संपले. इंग्रज-पेशवे करारानुसार विजयदुर्ग पेशव्यांना देण्याचे ठरले होते परंतु इंग्रज सहजासहजी त्याला तयार झाले नाहीत. अखेर बाणकोट किल्ला व त्या जवळील सात गावे पेशव्यांकडून घेऊन इंग्रजांनी विजयदुर्ग आठ महिन्यांनंतर पेशव्यांना दिला. पेशव्यांनी विजयदुर्गाचा प्रांत व सुभेदारी आनंदराव धुळप यांना दिली. १६६४ ते १८१८ पर्यंत या किल्ल्यावर मराठी अंमल होता. त्यानंतर हा किल्ला इंग्रजांनी ताब्यात घेतला.

विजयदुर्गला पूर्वेकडील जिब्राल्टर असेही म्हणत कारण हा एक अजिंक्य किल्ला होता. ४० किलोमीटर लांब असलेली वाघोटन खाडी हे या किल्ल्याचे बलस्थान आहे. कारण मोठी जहाजे खाडीच्या उथळ पाण्यात येऊ शकत नसत आणि मराठी आरमारातील छोटी जहाजे या खाडीत नांगरून ठेवली जात, पण ती समुद्रावरून दिसत नसत.

हवामान

पावसाळ्यात येथे भरपूर प्रमाणात पाऊस पडतो आणि हवामान समशीतोष्ण राहते. हिवाळ्यात येथील हवामान थंड असते व सकाळी धुके पडते. उन्हाळ्यात हवामान उष्ण असते. पावसाळ्यात येथे भातशेती केली जाते.

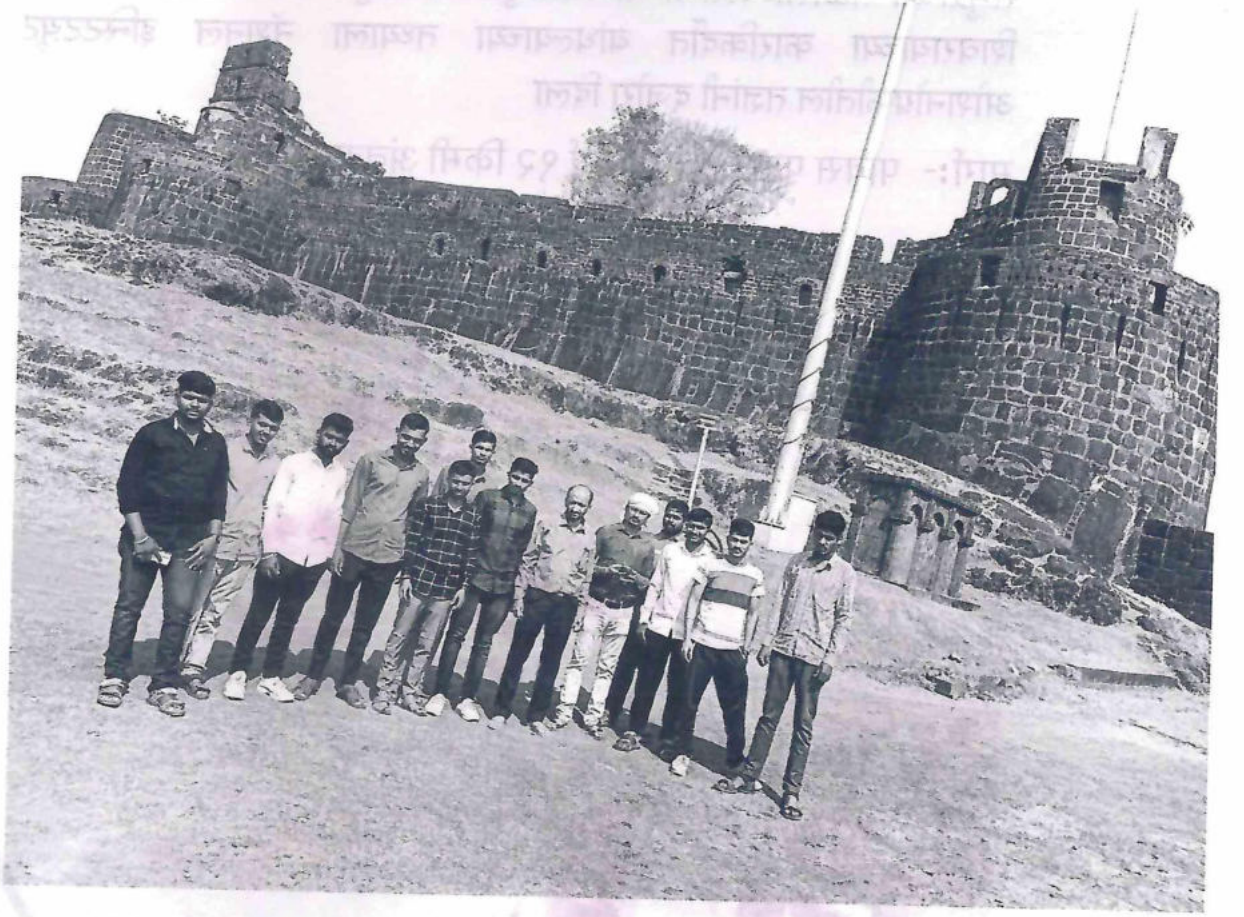
नागरी सुविधा

येथे राष्ट्रीयीकृत बँक ऑफ इंडियाची शाखा आहे. शेती, दुग्धव्यवसाय, विहीर खोदणे, शेळ्यामॅढ्यापालन, किराणा दुकान, इतर सेवा व्यवसाय इत्यादीसाठी बँक वित्त पुरवठा करते.

विजयदुर्गला पोहचण्याचे कसे:

विजयदुर्ग हे मुंबई पासून ४८५ किमी अंतरावर आहे तर पुण्यापासून ४५५ किमी अंतरावर आहे

आम्ही पावस पासून विजयदुर्गला गेलो . पावस पासून विजयदुर्ग ९२ किमी अंतरावर आहे.



राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक

या किल्ल्याला महाराष्ट्रातील राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक म्हणून दिनांक १३ डिसेंबर, इ.स. १९१६ या दिवशी घोषित करण्यात आलेले आहे.

विजयदुर्गाचे रहस्य

एकदा इंग्रजांनी विजयदुर्ग जिंकण्यासाठी तीन युद्धनौका आणि सैन्य घेऊन स्वारी केली. जलदुर्ग जिंकायचा म्हणजे त्यावर आधी तोफांचा भडिमार करून मग किल्ल्यावर चढाई करायची. त्या अनुषंगाने सगळ्या युद्धनौका किल्ल्याजवळ न्यायाचा त्यांचा मनसुबा होता पण, एकेक करून तीनही युद्धनौका बुडाल्या. याच कारण विजयदुर्गाच्या सभोवताली असणारी जाडजूड भिंत ही भिंत शिवरायांनी बांधून घेतली किल्ल्याचं शत्रूंकडून संरक्षण करण्यासाठी. ही भिंत इतकी खोल आहे की ती ओहोटीतही पाण्याच्या वर दिसत नाही. स्वराज्याच्या आरमाराची जहाजं गलबतं-मचवे वगैरे ह्या भिंती वरून सहज ये-जा करत. कारण त्यांचे तळ, उथळ आणि सपाट होते. याविरुद्ध इंग्रजांच्या जहाजाचे तळ निमुळते आणि खोल असत. म्हणूनच पाश्चात्यांची जहाजं गडाजवळ येऊन या भिंतीला धडकून पाण्यात बुडून जातं. या

समुद्राच्या तळाशी असणाऱ्या भिंतीमुळं विजयदुर्ग अभेद्य राहिला. सदर भिंत ही शिवरायांच्या कारकिर्दीत बांधल्याच्या तथ्याला नॅशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ ओशनोग्रफीतील तज्ञांनी दुजोरा दिला

मार्ग:- पावस पासून विजयदुर्ग ९२ किमी अंतरावर आहे.



सिंधुदुर्ग

सिंधुदुर्ग किल्ला देवस्थानच्या परिसरात समुद्र किनारी काही शिवलिंग आहेत. त्यापैकी २१ शिवलिंग आपणास पाहावयास मिळतात. या शिवलिंगामागील इतिहास असा आहे की, गेली कित्येक वर्षे समुद्राच्या पाण्यामध्ये असणारीही शिवलिंग झिज होत असतानासुद्धा ती पुर्ववत प्रमाणे आहेत अशी निदर्शनास येतात. इतका काळ लोटला तरी त्यांची म्हणावी तितकी झिज झालेली नाही. गेले कित्येक वर्षे यात्रेकरुया शिवलिंगाचे दर्शन

घेत आहेत. ही शिवलिंग पांडवांनी घडवलेली आहेत अशी श्रद्धा आहे. याची साद देणारी पांडवलेणी आजही येथे आहेत.



शिवाजी महाराजांच्या आरमारात या किल्ल्याला फार महत्त्व होते. किल्ल्याचे क्षेत्र कुरटे बेटावर ४८ एकरावर पसरलेले आहे. तटबंदीची लांबी साधारण तीन किलोमीटर आहे. बुरुजांची संख्या ५२ असून ४५ दगडी जिने आहेत. ह्याकिल्ल्यावर शिवाजी महाराजांच्या काळातील गोड्या पाण्याच्या दगडी विहीरी आहेत. त्यांची नावे दूध विहीर, साखर विहीर व दही विहीर अशी आहेत. या किल्ल्याच्या तटबंदीच्या भिंतीमध्ये छत्रपती शिवाजी महाराजांनी त्या काळी तीस ते चाळीस शौचालयाची निर्मिती केली आहे. या किल्ल्या मध्ये शिवाजी महाराजांचे शंकराच्या रूपातील एक मंदिर आहे. हे मंदिर इ.स. १६९५ मध्ये शिवाजीमहाराजांचे पुत्र राजाराममहाराज यांनी बांधले.

छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या आरमारी दलाचे आद्यस्थान मालवण येथील जंजिरा म्हणजे हा सिंधुदुर्ग किल्ला होय. महाराजांकडे ३६२ किल्ले होते. या सर्व किल्ल्यांचा पूर्वेस विजापूर, दक्षिणेस हुबळी, पश्चिमेस अरबीसमुद्र आणि उत्तरेस खानदेश-वन्हाड या देशापर्यंतचा विस्तार होता. भुईकोट आणि डोंगरी किल्ल्यांच्या बरोबरीने सागरी मार्गावरील शत्रूंची स्वारी परतून लावण्यासाठी जलदुर्गाची निर्मिती महत्त्वाची आहे, हे ओळखून शिवाजी महाराजांनी सागरी किल्ले निर्माण केले. चांगल्या, भक्कम आणि सुरक्षित स्थळांचा शोध घेऊन समुद्रकिनाऱ्याची पाहणी झाली. इ.स. १६६४ साली मालवण जवळील कुरटे नावाचे काळाक भिन्न खडक असलेले बेट

किल्ल्यासाठी निवडले. महाराजांच्या हस्ते किल्ल्यांच्या तटांची पायाभरणी झाली. आजमोरयाचा दगडयानावानेही जागाप्रसिद्ध आहे. एका खडकावर गणेशमूर्ती, एकीकडे सूर्याकृती आणि दुसरीकडे चंद्राकृती कोरून त्या जागी महाराजांनी पूजा केली.

असं म्हणतातकी, किल्लाबांधण्यासाठी एक कोटी होन खर्ची पडले. उभारणीसाठी तीन वर्षांचाकालावधी लागला. ज्या चार कोळी लोकांनी सिंधुदुर्गबांधण्यासाठी योग्य स्थळ शोधले, त्यांना गावे इनामे देण्यात आली. ऐतिहासिक सौंदर्य लाभलेला सिंधुदुर्ग हा किल्ला ज्या कुरटे खडकावर तीन शतके उभा आहे, तो शुद्ध काळाकभिन्न खडक मालवणपासून सुमारे अर्धा मैल समुद्रात आहे. या खडकावर समुद्रमार्गानी व्यापलेले क्षेत्र सुमारे ४८ एकर आहे. त्यांचा तट २ मैल इतका आहे. तटाची उंची ३० फूट असून रूंदी १२ फूट आहे. तटा सठिक ठिकाणी भक्कम असे एकंदर २२ बुरुज आहेत. बुरुजाभोवती धारदार खडक आहे. पश्चिमेस आणि दक्षिणेस अथांग सागर पसरला आहे. पश्चिमेकडे आणि दक्षिणेकडे तटाच्या पायात ५०० खंडी शिसे घातले असून यातटाच्या बांधणीस ८० हजार होन खर्ची पडले.

शिवकालीन चित्रगुप्त याने लिहिलेल्या बखरीत याबाबत पुढील मजकूर नमूद केला आहे :

“ 'चौऱ्या ऐंशी बंदरात हा जंजिरा अठरा टोपीकरांचे उरावर शिवलंका, अजिंक्य जागा निर्माण केला।

सिंधुदुर्ग जंजिरा, जगी अस्मानतारा।

जैसे मंदिराचेमंडन, श्रीतुलसीवृंदावन, राज्याचाभूषणअलंकार।

चतुर्दशमहारत्नापैकीचपंधरावेरत्न, महाराजांसंप्राप्तजाहले। ”



सिंधुदुर्ग आणि अरबी मुद्र

सिंधुदुर्गचे प्रवेशद्वार पूर्वेस आहे. या जागी प्रवेशद्वार आहे हे लक्षात येत नाही. पाण्यातून मनुष्य तटाजवळ उतरलाकी उत्तराभिमुख एक खिंड दिसते. या खिंडीतून आत गेले की दुर्गाचा दरवाजा लागतो. हा दरवाजा भक्कम अशा उंबराच्या फळ्यांपासून केला आहे. उंबराचे लाकूड दीर्घकाळ टिकते. त्याला सागाच्यालाकडाची जोड दिली आहे. आत गेल्यानंतर मारुतीचे छोटेखानी मंदिर आहे. तेथूनच बुरुजावर जाण्यासाठी मार्ग आहे. बुरुजावर गेल्यानंतर आजूबाजूचा १५ मैलांचा प्रदेश सहज दिसतो. पश्चिमेकडे जरी मरीचे देऊळ लागते. आजही तेथे लोक वस्ती करून राहतात. श्री शिवराजेश्वरांचे देवालय व मंडपात महाराजांची अन्यत्रकुठल्याही किल्ल्यावरन दिसणारी बैठी प्रतिमा फक्त येथे दिसते. सिंधुदुर्ग किल्ल्याचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे या किल्ल्यात आजही दरबारावर्षानी रामेश्वराची पालखी शिवराजेश्वर येथे येते. इंग्रजांनी हा किल्ला ताब्यात घेतल्यानंतर काही प्रमाणात तो उद्ध्वस्त करून टाकला. किल्ल्यांच्या बांधणीसाठी वापरण्यात आलेला चुना आजही दिसतो. मराठ्यांचा भगवाध्वज आणि त्यांचा ध्वजस्तंभ २२८ फूट उंच होता. त्यामुळे समुद्रातून दूरवर तो ध्वज सहज दृष्टीस पडत होता. ध्वजाला पाहून मच्छिमार खडकापासून लांब राहत असत. हा भगवा ध्वज इ.स.१८१२ पर्यंत फडकत होता.

गडावर ठिकठिकाणी तोफा ठेवण्याच्या जागा आहेत. बंदुका रोखण्यासाठी तटाला भोके ठेवली आहे. सैनिकांसाठी पायखाने आहेत. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी ३०० वर्षांपासून सार्वजनिक स्वच्छतेचा संदेश यातून दाखविला आहे, हे विशेष होय. कोकणातील सिंधुदुर्ग किल्ल्याची उभारणी ही छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या दृष्टीने अत्यंत महत्त्वाची मानली जाते. सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचा स्मृतिमय इतिहास म्हणजे हा किल्ला आहे. असंख्य मावळ्यांच्या साक्षीने आणि परिश्रमाने समुद्रात हा किल्ला उभा केला तो आजहीपर्यटकांना विशेष आकर्षित करतो.

१९६१ साली तत्कालीन मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांनी तटाची दुरुस्ती केली.

विषेश म्हणजे या किल्यामध्ये एका नारळाच्या झाडाला दोन फांद्या (वाय) आकाराच्या होत्या, अलीकडे त्यातील एक फांदी जोराच्या वीज पडल्यामुळे मोडली आहे.



निष्कर्ष

आम्ही भेटी दिलेल्या ठिकाणचे आणि परिसराचे एक भूगोलाचे अभ्यासक म्हणून निरीक्षण केल्यानंतर पुढील निष्कर्ष काढता येतील.

1. सांगली, कोल्हापूर, सातारा, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग या भागांचा प्राकृतिक परिस्थिती विषयी बोलत असताना असे म्हणत येईल की, सह्याद्री पर्वताचा जास्त उंचीचा विभाग आणि पठारी विभागामध्ये पूर्वेकडे असलेल्या सह्याद्री पर्वताच्या रांगा यांचा समावेश होतो. या विभागाचा समावेश जास्त पर्वतीय विभागामध्ये करता येईल व या विभागाची उंची ७०० ते ११०० मी. इतकी असून त्याखालोखाल सांगली आणि कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये पठारी भाग येतो.
2. सांगली आणि कोल्हापूर जिल्ह्यातील पठारी विभागामध्ये पूर्व दिशेने सरकलेल्या सह्याद्रीच्या रांगांची जलविभाजक भूमी साकारलेली असल्यामुळे पठारी भागावरील प्रमुख नद्यांची खोरी एकमेकांपासून विलग झालेली दिसतात. उदा. माण आणि कृष्णा नदीचे खोरे
3. सातारा आणि सांगली जिल्ह्यात कृष्णा, पंचगंगा, आणि त्यांच्य उपनद्या तसेच कोल्हापूरमधील दुधगंगा, वारणा, वेदगंगा, कासारी, हरण्यकेशी या प्रमुख नदीप्रणाली आहेत. रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्गमध्ये काजवी आणि तेरेखोल या प्रमुख नदीप्रणाली आहेत. पैकी रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग मधील नद्या पश्चिमवाहिनी असून बाकीच्या सर्व नद्या पूर्ववाहिनी आहेत.
4. सांगली जिल्ह्याच्या पश्चिम भागाचे आणि कोल्हापूरचे हवामान साधारणतः समशितोष्ण असून सांगली जिल्ह्याच्या पूर्व भागाचे हवामान उष्ण व कोरडे आहे. तर सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी येथील हवामान उष्ण व दमट प्रकारामध्ये मोडते.
5. कोल्हापूर, सांगली आणि सातारा जिल्ह्याचा भाग खंडातर्गत असल्यामुळे याठिकाणी तापमान कक्षा अधिक तर सिंधुदुर्ग, रत्नागिरीच्या भागाला समुद्रसान्निध्य लाभले असल्याने येथे तापमान कक्षा कमी आढळते.
6. सांगली जिल्ह्याच्या पूर्व भाग, कोल्हापूर जिल्ह्यातील हातकणंगले व शिरोळ या भागात सरासरी ५०० मि.मि. पर्जन्य मिळते. सांगली जिल्ह्यातील शिराळा तालुका, कोल्हापूर जिल्ह्याच्या पश्चिमेकडील सर्व

तालुके रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या सह्याद्री पर्वतांचा पश्चिम उताराचा भाग या ठिकाणी ६०० ते ७५० मि.मि. इतके पर्जन्य वितरण आढळते. हा पाऊस मुख्यतः नैऋत्य मान्सून कालखंडात मिळतो.

7. आम्ही भेटी दिलेल्या परिसरात सह्याद्रीच्या उतारावरती सदाहरीत व निमसदाहरीत पूर्वेकडील पर्वत पायथ्यांच्या उतारावरती पानझाड वृक्षांची तर अतिपूर्वेकडच्या विभागात शुष्क, काटेरी वनस्पतींची जंगले आणि सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी किनारी भागात खाड्याच्या परिसरात मॅग्नो प्रकारची पोफळीचे वृक्ष आढळतात.
8. कोल्हापूर आणि सांगली जिल्ह्यातील नदीखोऱ्यांचे विभाग म्हणजे पश्चिम महाराष्ट्रातील शेती विकासाच्या दृष्टीने प्रगत अवस्थेमध्ये असणारा विभाग म्हणून नावारुपाला आलेला आहे. या ठिकाणी आधुनिक प्रकारची शेती केली जाते.
9. या विभागातील शेतीमधून ऊस, तंबाखू, द्राक्षे, आंबा, काजू, बोर, डाळी, इत्यादी नगदी पिके सोयाबिन, भुईमुग ही तेलबियांची पिके तर ज्वारी, बाजरी, भात गहू इ. अन्नधान्याची पिके घेतली जातात.
10. कोल्हापूरचे शाहू मार्केट गुळासाठी, सांगलीचे मार्केट हळद व मिरचीसाठी तासगांव द्राक्षे व बेदाण्यसासाठी तर देवगड, रत्नागिरी हापूस आंब्यासाठी प्रसिद्ध असलेले दिसून येते.
11. नद्याखोरांच्या विभागामध्ये ऊस उत्पादन जलसिंचनाच्या सहाय्याने केले जात असल्याने दक्षिण महाराष्ट्रात साखर कारखान्याची दाटी सांगली व कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये प्रस्थापित झालेली आढळते. याशिवाय रत्नागिरीमध्ये पडावे या ठिकाणीसुद्धा एक साखर कारखाना आहे. या विभागामध्ये कृषी आधारित उद्योगांचा विकास झालेला आहे. प्रामुख्याने साखर कारखाने आणि सुती वस्त्रद्योगांचा यामध्ये समावेश होतो. याचबरोबर दुग्धव्यवसायाच्या अनुषंगाने काही प्रकल्प उदा. वारणा, गोकुळ, चितळे डेअरी या विभागामध्ये कार्यान्वित आहेत तर काजू उत्पादनावर आधारित देवगड, रत्नागिरी परिसरात काही प्रकल्प सुरु आहेत.

12. महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळातर्फे मिरज, सांगली, पलूस, शिरगांव, शिरोली इत्यादी ठिकाणी औद्योगिक क्षेत्रे विकसित करण्यात आलेली आहेत. यामध्ये कोल्हापूरचा फॉन्ड्री उद्योग विशेष महत्त्वाचा मानला जातो. तर इचलकरंजी हे ठिकाण दक्षिण महाराष्ट्राचे मॅचेस्टर म्हणून ओळखले जाते.
13. गणपतीपुळे, पावस, देवगड, रत्नागिरी, विजयदुर्ग, कुणकेश्वर, मालवण ही ठिकाणे महाराष्ट्रातील पर्यटन स्थळे म्हणून विकसित होत आहेत.
14. अपारंपारिक उर्जास्रोतांपैकी वान्याचा उपयोग करून देवगड येथे असलेला वीजनिर्मिती प्रकल्प हा सह्याद्री पर्वताच्या इतर भागातील योग्य ठिकाणी उभा करण्यासाठी आदर्शयुक्त प्रकल्प ठरलेला आहे.
15. सागर किनाऱ्याच्या विभागामध्ये रत्नागिरी व देवगड परिसरामध्ये मासेमारीची मत्स्यकेंद्रे विकसित झाली असून त्या माध्यमातून स्थानिक लोकांना व्यवसाय व रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होत आहेत.
16. कुणकेश्वर - पावस मार्गावर जैतापूर येथे अणूऊर्जा प्रकल्प उभारला जात आहे.



संदर्भग्रंथ सूची

1. महाराष्ट्राचा भूगोल, प्रा. के. ए. खतीब, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, १९९७
2. पर्यटन भूगोल, प्रा. के. ए. खतीब, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, २००६
3. महाराष्ट्राचा भूगोल, प्रा. टी. पी. पाटील, पिपळापुरे अँड के. पब्लिशर्स, १९९७
4. पर्यटन भूगोल, डॉ. विठ्ठल घारपुरे, पिपळापुरे अँड के. पब्लिशर्स, २००१
5. साद सागराची, पराग पिंपळे
6. District census Handbook Maharashtra Cansus of India, Sangli, Kolhapur, Ratnagiri
7. Gazetteer of Maharashtra, Sangli, Kolhapur, Ratnagiri, District



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

NOTICE

Date- 01 Feb 2024

All the students of B. A.-III (Special Geography) are hereby informed that Department of Geography, Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal is going to Study Tour at 16-17 February 2024 as per university academic. All student must participate in this study tour.



A handwritten signature in black ink, appearing to read "Dr. D. A. Gade".

Dr. D. A. Gade
Head,
Department of Geography


H.O.D.
Department of Geography
P. V. P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Dist- Sangli - 416 405.

Date: 19/02/2024

'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Report of the Activity

Title	Study Tour
Day & Date	Friday-Saturday, 16-17 February 2024
Organizer	DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
Funding	-
Head	Dr. D. A. Gade. Head, Department of Geography
Co-ordinator	Mr. D. M. Godase Assistant Professor, Department of Geography
Background	The study tour aims to provide students with practical insights into geographical concepts and foster an appreciation for the intricate relationship between humans and their natural surroundings. Participants are encouraged to actively engage in discussions, document observations, and contribute to a comprehensive report on the geographical aspects of the region.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. Explore and analyse diverse geological formations and natural landscapes to deepen understanding of Earth's physical features.2. Investigate the impact of human activities on local ecosystems3. Examine the interplay between physical geography and human settlements, focusing on urbanization patterns and land-use planning.4. Gain practical insights into river dynamics, coastal processes, and mountainous terrains to comprehend natural systems and their importance.
Conclusion	The study tour was a resounding success, offering students an enriching blend of history, culture, and natural beauty. It provided a practical supplement to their classroom learning, igniting a passion for field studies and historical exploration. The diverse experiences gained from this tour will undoubtedly enhance their academic pursuits and personal growth. It reflects our commitment to holistic education through experiential learning.


Mr. D. M. Godase
Co-Ordinator


Dr. D. A. Gade,
Head,
Department of Geography


Prof. (Dr.) M. K. Patil
PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli



Date: 19/02/2024


'Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

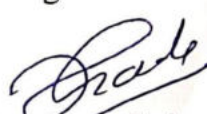
Report of the Study Tour

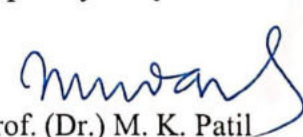
A two-day study tour was organized for senior college students to explore the rich cultural and natural heritage of the western coast of Maharashtra. The itinerary included visits to Radha Nagari, Malvan, Kunkeshwar, Vijaydurg, and Kolhapur. This tour aimed to provide students with an immersive educational experience, fostering a deeper understanding of the region's biodiversity, history, and architectural marvels.

Our journey began with a visit to the Radhanagari Wildlife Sanctuary, known for its diverse flora and fauna. Students were briefed on the conservation efforts and the ecological significance of the sanctuary. The sanctuary, home to the Indian bison (gaur) and various bird species, offered an excellent opportunity for wildlife observation and environmental studies. In the afternoon, we proceeded to Malvan, renowned for its pristine beaches and the historic Sindhudurg Fort. Students explored the fort, built by Chhatrapati Shivaji Maharaj, learning about its strategic importance and unique architectural features. The snorkelling activity near the fort allowed students to witness marine life, enhancing their understanding of coastal ecosystems.

The second day commenced with a visit to the Kunkeshwar Temple, an ancient Shiva temple located on the shores of the Arabian Sea. Students admired the temple's intricate carvings and its serene coastal backdrop, gaining insights into the region's religious and cultural history. Next, we visited Vijaydurg Fort, another masterpiece of Maratha architecture. The students were engaged in a guided tour, learning about the fort's construction, historical battles, and its role in maritime defense. The panoramic views from the fort provided a vivid illustration of its strategic location. Our final destination was Kolhapur, where we visited the famous Mahalaxmi Temple and the historical New Palace Museum. The temple visit allowed students to observe ongoing religious practices, while the museum tour offered a glimpse into the royal heritage and artifacts of the Kolhapur dynasty.


Mr. D. M. Godase
Co-Ordinator


Dr. D. A. Gade


Prof. (Dr.) M. K. Patil



HOD
Department of Geography
V. P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Dist- Sangli - 416 405

PRINCIPAL
Padmabhushan Vasantraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist- Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY
ATTENDANCE SHEET

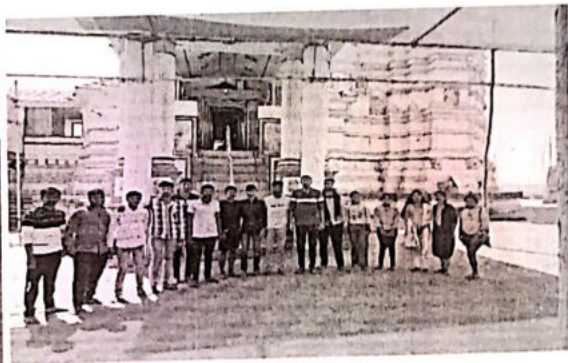
Name of Activity: Study Tour

Day & Date: Friday-Saturday, 16-17 February 2024

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
1	YAMGAR SIDDHANT SHIVAJI	B A III	Ss Yamgar
2	JADHAV AVADHUT POPAT	B A III	P. Jadhav
3	BUVA NAKUSA NARAYAN	B A III	NN Buva
4	BORADE POOJA SUNIL	B A III	P. Borade
5	PATIL RAVINA TANAJI	B A III	R. Patil
6	KAMBLE YOGESH JAYKUMAR	B A III	Y. Kamble
7	CHAVAN VISHAL SHAHAJI	B A III	V. Chavan
8	BANDGAR SAGAR GOVIND	B A III	S.S. Bandgar
9	WAGH SOURABH RAMCHANDRA	B A III	W. Wagh
10	BHANGARE TEJASVINI HAUSHIRAM	B A III	T. Bhangare
11	MANE SURAJ SARJERAO	B A III	S. Mane
12	PATIL PRANAV SHIVAJI	B A III	P. Patil
13	LONDHE SAGAR SHIVAJI	B A III	S. Londhe
14	MIRAJE SAURABH SUDHAKAR	B A III	S. Miraje
15	PATIL DHANASHREE MANESHWAR	B A III	D. Patil
16	PAWAR SHIVRAJ SRIKANT	B A III	P. Pawar
17	KAMBALE GURUPAD SHIVAJI	B A III	G. Kamble
18	SAYYAD NAWAJ AHEMAD	B A III	N.A. Sayyad
19	KOLI MAYURI DINKAR	B A II	M. Koli
20	PATIL PRAGATI ANIL	B A II	P. A. Patil
21	KHOT KIRTI SRIRANG	B A II	K. Khot
22	PATIL ARATI SARJERAV	B A III	A. S. Patil
23	KARPE ARATI SHAHU	B A III	Karpe A.S.
24	KAMBALE GANGADHAR TIPANNA	B A III	G.T. Kamble
25	MANE GANESH TULSHIRAM	B A III	M. Mane



PHOTO'S OF THE STUDY TOUR 2023-24



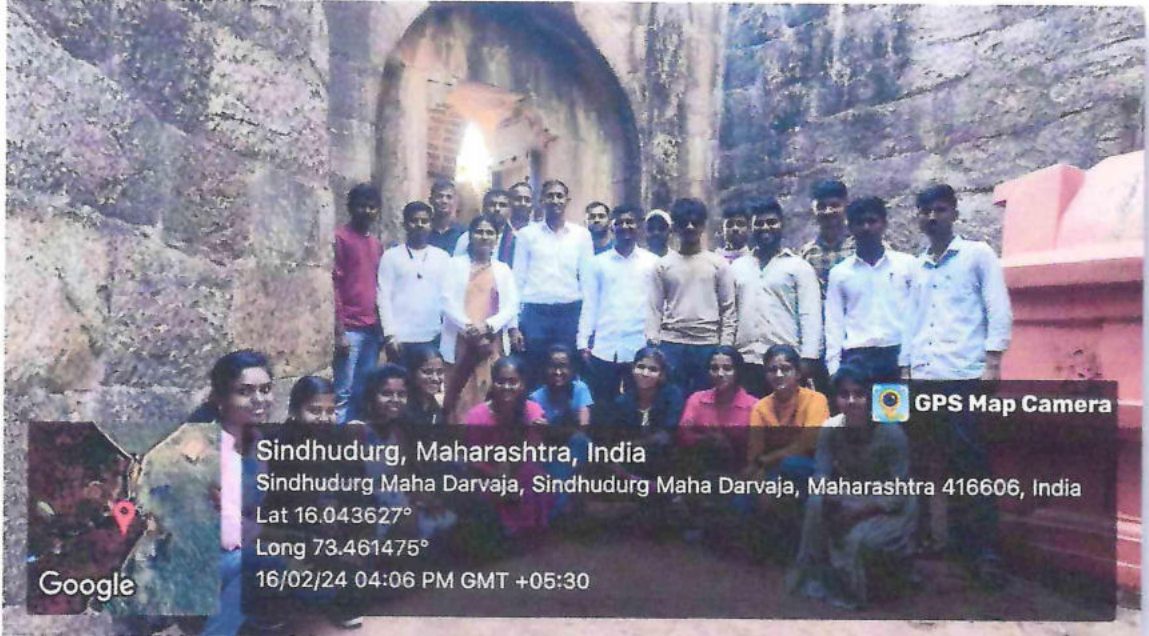
Murthy
PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

शिक्षण प्रसारक संस्थेचे

पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय,
कवठेमहांकाळ

भूगोल विभाग

अभ्यास सहल अहवाल



सन २०२३-२०२४

राधानगरी, मालवण, सिंधुदुर्ग, कुणकेश्वर, विजयदुर्ग.

Shikshan Prasarak Sanstha's

**Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathemahankal,
Tal.Kavathemahankal, Dist – Sangli**

Department of Geography

Certificate

This is to certify that Shri/Miss Akash Dadaso
uttare Class - B.A.III Roll No. 8651


His satisfactorily Completed the required Tour Report in
Geography as prescribed by the Shivaji University, Kolhapur
during the academic year 2023-2024.

Date :

Examiner
B.P.R.10/1
13/3


Teacher In Charge

Examiner


Head of Department

अनुक्रमाणिका

अ.क्र.	सूची	पृष्ठ क्रमांक
१.	मनोगत	
२.	प्रस्तावना	
३.	सहलीचा मार्ग	
४.	अभ्यास सहलीचा हेतू	
५.	प्राकृतीक रचना	
६.	जलप्रणाली	
७.	हवामान	
८.	जमीन प्रकार	
९.	नैसर्गिक वनस्पती	
१०.	पिके / कृषी उत्पादने	
११.	उद्योगधंदे	
१२.	भेटी दिलेली प्रमुख ठिकाणे	
१३.	निष्कर्ष	

मनोगत

शिवाजी विद्यापीठाच्या अभ्यासक्रमानुसार बी.ए. भाग ३ या वर्गाची भूगोल विषयाची सहल भौगोलिक आणि सांस्कृतिक घटकांनी परिपूर्ण असलेल्या राधानगरी, सिंधुदुर्ग, कुणकेश्वर, विजयदुर्ग येथे आयोजित केली होती.

या सहलीत नद्या, खारी, पर्वत, पठारे, पिके बदलते मृदा प्रकार, खडक इ. प्राकृतिक घटकांचा तर एतिहासिक कलात्मक राजवाडे, धार्मिक मंदिरे, उद्याने, प्राणी संग्रहालये, वसाहतीचे विविध प्रकार, रस्ते, रेल्वेमार्ग इ. सांस्कृतिक घटकांची जवळून पाहणी करण्यात आली. सहलीच्या आयोजनात मनोरंजनामुळे आनंद प्राप्ती झाल्याने आम्हास भौगोलिक दृष्टीकोन प्राप्त झाला.

आमच्या महाविद्यालयाचे प्राचार्य मा. डॉ. एम. के. पाटील यांनी सहलीसाठी आवश्यक तांत्रिक, शैक्षणिक सुविधा पुरविल्यामुळे आम्ही त्यांचे आभार मानतो.

सदर अभ्यास सहलीस आमच्या भूगोल विषयाचे विभाग प्रमुख प्रा. डॉ. डी. ए. गाडे, प्रा. डॉ. एन. एस. पोळ, प्रा. डी. एस. गोडसे, सौ. वैशाली घाटगे, प्रा. कु. सुवर्णा माने यांनी सहल मार्गदर्शन म्हणून बहुमोल सहकार्य केल्याबद्दल त्यांचे मनःपूर्वक आभार मानतो. तसेच यांनीही आयोजनामध्ये विशेष ज्ञात अज्ञात व्यक्तींनी जे सहकार्य केलेबद्दल आम्ही त्यांचेही ऋणी आहोत.

सदर अहवालामध्ये जर काही चुका झाल्या असतील तर त्या माझ्या नजरचुकीमुळे झाल्या असतील असे मी जाहीर करतो/करते. शेवटी सहलीमध्ये माझ्या वर्ग मित्र व मैत्रीणींनी मला संपूर्ण सहकार्य देवून मनोरंजक वातावरण निर्मिती केली. त्याबद्दल त्यांचेही मनःपूर्वक आभार मानतो.

आपला आज्ञाधारक

संपूर्ण नावः

प्रस्तावना

व्यक्तीच्या सर्वांगीण विकासाशी शिक्षणाचा संबध येतो. या अर्थाने व्यक्तिमत्व-विकास हे सर्व प्रकारच्या शिक्षणाचे ध्येय असते. आपल्याला हे लोक फक्त चांगले काम करणारेच नकोत, तर त्यांच्याजवळ विशिष्ट बौद्धिक क्षमता असणे आवश्यक आहे, त्यामुळे ते समस्या निराकरणाचे काम करू शकतात. त्यांच्याकडे विशिष्ट सकारात्मक वृत्ती व सद्गुणांचा साठा असणे आवश्यक आहे, यामुळे आपल्याला अपेक्षित असणाऱ्या समाजाच्या विकासासाठी त्यांचा हातभार लागेल. शैक्षणिक क्षेत्रातील किंवा परिस्थिती मधील वर्तनाचे शास्त्र विकसित करण्याच्या हेतुने किंवा समस्या सोडविण्याच्या दृष्टीने वैज्ञानिक विचार पध्दतीनेच केलेले उपयोजन म्हणजेच शैक्षणिक संशोधन होय.

असे शिक्षण फक्त पुस्तकातून मिळत नसुन त्यासाठी क्रमिक पुस्तकातून मिळालेल्या ज्ञानाचा वास्तव परिस्थितीशी सांगड घालुन घेतलेल्या ज्ञानाची परिचीती प्राप्त करणे आवश्यक असते. त्यासाठी भूगोलात अभ्यासलेले पर्वत पठारे, नद्या, नद्यांना मिळणारे पाणी, समुद्र, खाडी अशा अनेक संकल्पना आपणास पुस्तकातून प्राप्त होतात अशा संकल्पना आपण जेव्हा प्रत्यक्ष पहातो तेव्हा त्या समजतात. यासाठी भूगोल विषयात अभ्यास सहलीस फार महत्व आहे. पुस्तकी ज्ञानाला सांगड घालण्यासाठी क्षेत्र भेटीची आवश्यकता असते.

क्षेत्र अभ्यास हा प्रात्यक्षिक भूगोलाचा महत्त्वपूर्ण भाग मानला जातो. निसर्गामध्ये फिरुन केलेल्या अभ्यासाला निश्चितता असते आणि तो अभ्यास संयुक्त ठरतो. यामुळे भूगोलाच्या विकासाचा आढावा घेत असताना जर्मनी, फ्रान्स, ब्रिटन व आरबानी दीर्घकाळ प्रवास करुन माहिती गोळा केली. त्यांच्या प्रवास वर्णनाच्या आधारे भौगोलिक भांडार समृद्ध होत गेले.

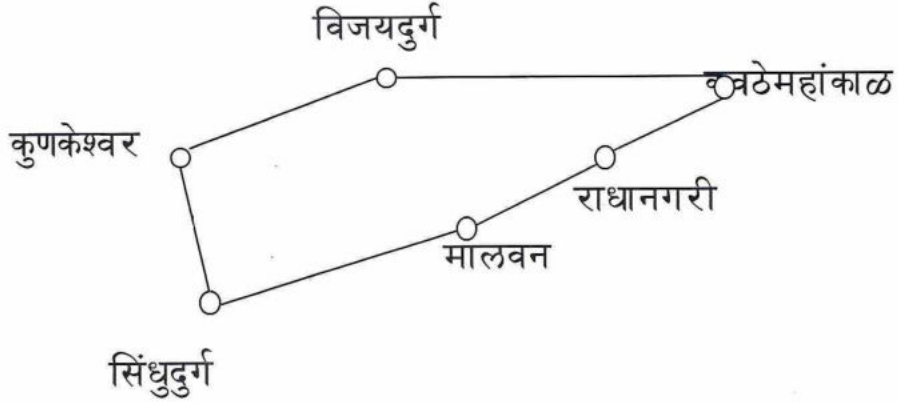
अलेक्झांडर, हंबोल्ट, कार्ल रिटर, रॅझेल या भूवैज्ञानिकांनी प्राधान्याने भूगोलाच्या अभ्यासामध्ये प्रवासाचे महत्व पटवून देण्याचे प्रयत्न केले आहे. रॅटझेल यांनी तर याचे महत्व विषद करताना असे म्हटले आहे की, I traveled, I sketches and I described मी प्रवास केला त्याचे रेखटन करुन वर्णन केले. या शिवाय रिटरच्या म्हणण्यानुसार भूगोल हे अनुभवजन्य शास्त्र आहे तसेच ते क्षेत्रीय पाहणीशिवाय पूर्ण होवू शकत नाही आणि क्षेत्रीय पाहणीचा हा पाया मानला जातो.

पृथ्वीच्या विविध भागांमध्ये नैसर्गिक आणि मानवनिर्मित अशा दोन्ही घटकांचा एकत्रितरीत्या अभ्यास भूगोलकाराला करावा लागतो आणि अभ्यास सहलीच्या माध्यमातून भौगोलिक आणि मानवनिर्मित घटकांतील परस्पर संबंधाची माहिती आपल्याला मिळू शकते. यामध्ये प्राधान्याने प्राकृतीक रचना, हवामान, वनस्पती, जमिन, आर्थिक-सामाजिक आणि सांस्कृतीक घटक इत्यादींचा समावेश होतो.

सहलीचा मार्ग

१. कवठेमहांकाळ - मिरज - जयसिंगपूर - राधानगरी - मालवन -
सिंधुदुर्ग - विजयदुर्ग - कूणकेश्वर - कोल्हापूर - कवठेमहांकाळ.
या प्रवास मार्गाने सहल पूर्ण केली.

सहल मार्ग कच्चा आराखडा



अभ्यास सहलीचा हेतू

- १) पृथ्वीच्या पृष्ठभागाचे प्रत्यक्ष निरीक्षण करणे यामध्ये मुख्यता भूपृष्ठाचे स्वरूप, भूरूपे, जलप्रणाली, मृदा, हवामान, वनस्पती इत्यादी घटकांचा समावेश होतो.
- २) भौगोलिक घटक आणि प्रदेशाचा विकास यांच्यातील परस्पर संबंधातील निरीक्षण करणे अनुकूल परिस्थिती उपलब्ध असलेल्या विभागामध्ये आर्थिक विकास होत असतो, परंतु प्रतिकूल विभागामध्ये मर्यादा पडलेल्या आढळतात.
- ३) भेटी दिलेल्या विभागामध्ये वसाहतीच्या प्रारूपामध्ये होणारा बदल, त्यांची वैशिष्ट्ये आणि समस्या जाणून घेणे.
- ४) भौगोलिक परिस्थिती आणि पिके संरचना, जलसिंचनाच्या योजना, वनस्पती आणि प्राणीसंपदा, इतर संपत्ती साधनांची उपलब्धता इत्यादी गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमधील काही महत्वाच्या गोष्टींचे निरीक्षण करणे. प्रादेशिक अर्थव्यवस्थेमधील काही महत्वाच्या गोष्टींच्या सहभागाची नोंद घेणे. यामध्ये विशेषतः उद्योगधंदे, वाहतुक, काही पर्यावरणीय घटकांचा समावेश होतो.
- ५) अभ्यास सहलीच्या निमित्ताने भेटी दिलेल्या विभागातील समस्यांची माहिती करून घेणे आणि अभ्यासातील त्या समस्यांवरती शक्य असे उपाय सुचविणे.
- ६) वर उल्लेख केलेले हेतू मनात ठेवून आमच्या विभागाने राधानगरी, सिंधुदुर्ग, कुणकेश्वर, विजयदुर्ग अशी अभ्यास सहल शुक्रवार दिनांक १६ मे २०२३ ते शनिवार दिनांक १७ मे २०२३ या दरम्यान आयोजित केली होती. या प्रवास मार्गामध्ये आम्ही सांगली, कोल्हापूर, सिंधुदुर्ग या जिल्ह्यांमधून प्रवास केलेला आहे.

प्राकृतीक रचना

देशाच्या पश्चिम व मध्य भागात वसलेल्या महाराष्ट्राला अरबी समुद्राची ७२० किमी लांबीची समुद्र किनारपट्टी व सातपुडा या पर्वतरांगांची नैसर्गिक तटबंदी लाभली आहे. राज्याच्या वायव्येस गुजरात, उत्तरेस मध्य प्रदेश, पूर्वेस छत्तीसगढ, आग्नेयेस तेलंगणा, दक्षिणेस कर्नाटक व नैऋत्येस गोवा आहे.

शासकीय सोयीसाठी राज्याची विभागणी ३६ जिल्हे व ६ महसूल विभागांत कोकण, पुणे, नाशिक, औरंगाबाद, अमरावती आणि नागपूर करण्यात आली आहे. (२०११ च्या जनगणनेनुसार ११.२४ कोटी लोकसंख्या असलेले महाराष्ट्र राज्य लोकसंख्येनुसार देशात दुसऱ्या क्रमांकाचे तर क्षेत्रफळानुसार ३.०८ लाख चौरस किमी भौगोलिक क्षेत्रफळासह तिसऱ्या क्रमांकाचे राज्य आहे.)

राज्याचे मोठ्या प्रमाणात शहरीकरण झाले असून ४५.२ टक्के जनता शहरात राहते. राज्याचे हवामान उष्ण कटिबंधीय मोसमी आहे. मार्चपासून सुरु होणाऱ्या व अंगाची काहिली करणाऱ्या उन्हाळ्यापाठोपाठ जूनच्या सुरवातीला पाऊस येतो. महाराष्ट्राला लाभलेला निसर्गाचा वरदहस्त हा त्याच्या घनदाट व संपन्न जंगलांमध्ये दिसून येतो आणि राज्यात ६ मुख्य व्याघ्र प्रकल्प व ६ राष्ट्रीय उद्याने आहेत.

हवामानातील बदल वैश्विक तापमानवाढ हे जगासमोर व राज्यासमोर उभे ठाकलेले मोठे संकट आहे हे लक्षात घेऊन पाच लाख विद्युत वाहनांची निर्मिती व वापर करण्याच्या उद्देशाने तयार करण्यात आलेले विद्युत वाहन धोरण जाहीर करणारे महाराष्ट्र हे पहिले राज्य आहे. शाश्वत व्यवस्थेत प्रोत्साहन देऊन राज्याने पर्यावरण पूरक इंधन आणि वैश्विक तापमानवाढीच्या प्रश्नास हाताळणे याबाबत आपली बांधीलकी दर्शविली आहे.

महाराष्ट्र ही फक्त एक भौगोलिक संज्ञा नसून लोकांच्या एकतेने व कष्टाने उभे राहिलेले एक राज्य आहे राज्यात विविध चालीरीतींचे व परंपरांचे लोक गुण्यागोविंदाने राहतात. आपल्या समृद्ध संगीत व नृत्य परंपरेसाठी राज्याचे नाव देशात आदराने घेतले जाते. पोवाडा, भारुड, गोंधळ आणि लावणी लोककलेमध्ये

केलेल्या भरीव योगदानासाठी राज्य जाणले जाते राज्यात सर्व जाती व पंथांचे सणसमारंभ उत्साहाने व एकत्रितपणे साजरे केले जातात. देशाच्या सामाजिक व राजकीय प्रगतिमध्ये राज्याचा बहुमोल वाटा आहे.

अजंठा, वेरुळ व घारापुरी लेण्या, गेट वे ऑफ इंडीया आणि चैत्य व विहार सारखी वास्तुकलेचा उत्तम नमुना असलेली स्थळे कायमच जगभरातील पर्यटकांच्या आकर्षणाचा केंद्र बिंदू आहे व बहुतांश काळ ही पर्यटकांच्या गर्दीने फुललेली असतात. राज्याने साहित्य, कला, क्रीडा व सामाजिक सेवा यांमध्ये आपला स्वतःचा ठसा उमटवला आहे. सिने जगतात जागतिक स्थरावर नावारुपाला आलेले व आता आता आंतरराष्ट्रीय मंचावर भारताची ओळख व ताकद बनलेले, बॉलीवूड हे देखील राज्याचाच एक हिस्सा आहे.

महाराष्ट्राच्या प्राकृतीक रचनेचे तीन विभाग

१. कोकण किनारपट्टी
२. सह्याद्री पर्वत / पश्चिम घाट
३. महाराष्ट्र पठार / दख्खन पठार

१. कोकण किनारपट्टी

- **स्थान:** महाराष्ट्र अरबी समुद्र व सह्याद्री पर्वत यांच्या दरम्यान दक्षिणोत्तर लांब पट्ट्यास कोकण म्हणतात.
- **विस्तार:** उत्तरेस - दमानगंगा नदीपासून दक्षिणेस - तेरेखोल खाडीपर्यंत. कोकण किनारपट्टी रिया प्रकारची आहे.
- **लांबी:** दक्षिणोत्तर: ७२० किमी, रुंदी: सरासरी ३० ते ६० किमी. उत्तर भागात ही रुंदी ९० ते ९५ किमी. तर दक्षिण भागात ही रुंदी ४० ते ४५ किमी.
- **क्षेत्रफळ:** ३०, ३९४ चौ. किमी.

२. सह्याद्री पर्वत / पश्चिम घाट स्थान:

- दख्खनच्या पठाराचा पश्चिमेकडील न खचलेला भाग म्हणजेच सह्याद्री होय.
- यामुळे सह्याद्री पश्चिमेकडून अत्यंत उंच व सरल भिंतीसारखा दिसतो.
- पठाराकडून मात्र अत्यंत मंद उताराचा दिसतो. सह्याद्री पर्वत हा प्राचीन असून या पर्वताची बऱ्याच ठिकाणी झीज झाल्याने कमी - अधिक उंचीची ठिकाणे तयार झाली आहेत. उदा. शिखरे, घाट, डोंगर, उंचीवरील सपाट प्रदेश इ.

३. महाराष्ट्र पठार / दख्खन पठार / देश :

- स्थान: महाराष्ट्र राज्यापैकी एकूण क्षेत्रफळापैकी ९०% क्षेत्र महाराष्ट्र पठाराने व्यापले आहे.
- लांबी-रुंदी: पूर्व-पश्चिम - ७५० Km. उत्तर-दक्षिण - ७०० Km.
- उंची: ४५० मीटर या पठाराची उंची पश्चिमेस (६०० मी) जास्त व पूर्वेस (३०० मी) कमी आहे.
- महाराष्ट्र पठार डोंगर रांगा व नद्या खोऱ्यांनी व्यापले आहे.

नद्यांची खोरी :

उत्तरेकडील वारणा नदीपासून दक्षिणेकडील घटप्रभानदीपर्यंतचा भाग यामध्ये समाविष्ट होतो. कोल्हापूर जिल्ह्यातील नदी खोऱ्यांचा विभाग सुपीक अशा मातीने समृद्ध असून या विभागामध्ये लोक संख्या केंद्रित झालेली आढळते. या जिल्ह्यामध्ये कृष्णा, वारणा, पंचगंगा या प्रमुख नदी खोऱ्यांचा समावेश होतो. रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्ह्यांचा भाग सह्याद्रीच्या पश्चिमेस अरबी समुद्र व सह्याद्री पर्वत यांच्या दरम्यान किनारपट्टीची लांबी ५६० कि.मी. असून उत्तरेकडे हा भाग अधिक रुंद असून दक्षिणेकडे रुंदी कमी होत जाते. साधारणता ४५ ते ७५ कि.मी. इतकी रुंदी या विभागाला लाभलेली आहे. या प्रदेशात सह्याद्री पर्वताच्या उपशाखा व सुळके सर्वत्र विखुरलेले आढळतात. रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग प्रदेशाच्या किनाऱ्याला लागूनच अत्यंत चिंचोळी अशी गाळाची मैदाने आहेत. या किनारपट्टीची उंची पूर्वेकडे वाढत गेलेली दिसते. या विभागाची कमीतकमी उंची ८५ मी. तर जास्तीत जास्त उंची ३०० मी. आढळते.

रत्नागिरी आणि सिंधुदुर्ग जिल्हयांमध्ये काजवी, मुचकुंदी, शुक, तेरेखोल इत्यादी नद्यांमुळे प्रदेशाची मोठ्या प्रमाणात झीज झालेली आढळते. किनारी विभागामध्ये सागरी लाटांच्या खणन व संचयन कार्यामुळे पुळणे व वाळुचे दांडे इत्यादी भूरुपे किनारी विभागामध्ये तयार झालेली दिसून येतात. आम्ही भेट दिलेले जिल्हे दक्षिण कोकण या विभागामध्ये येतात. प्राकृतीक रचनेच्या दृष्टिने याचे पुढीलप्रमाणे तीन विभाग पाडले जातात. ही विभागणी पश्चिम पूर्व यामध्ये करण्यात येते.

१. समुद्र किनाऱ्याजवळ सखल किनारपट्टी ही कमी उंचीची असते. (खलाटी)
२. पश्चिमेला तयाला लागून असलेला डोंगराळ भाग (वलाटी)
३. सह्याद्री पर्वतांचा पश्चिम उताराचा घाट.

महाराष्ट्र नदी प्रणाली



हवामान

महाराष्ट्राच्या हवामानाचे उन्हाळा, पावसाळा, हिवाळा असे तीन भाग पडतात. वास्तविक उन्हाळ्याचा कालावधी म्हणजे जुन ते सप्टेंबर या कालावधीत ८० टक्के पर्जन्य मिळते, म्हणून महाराष्ट्रामध्ये पावसाळा हा स्वतंत्र ऋतू मानला जातो. महाराष्ट्रामध्ये नैऋत्य मान्सून वाऱ्यापासून पाऊस मिळतो तर मार्च ते मे या महिन्यात तीव्र उन्हाळा असून नोव्हेंबर ते फेब्रुवारी या कालावधीमध्ये हिवाळा ऋतू असतो.

कोल्हापूर जिल्ह्याचे सर्वसाधारण हवामान समशितोष्ण मानले जाते. कोल्हापूर जिल्ह्याचा पश्चिम भाग पूर्व भागाच्या तुलनेत थंड हवामान आढळतो. कारण समुद्र किनारपट्टीपासून उंचीच प्रभाव तेथील तापमानावर झालेला आहे. एप्रिल आणि मे या उन्हाळ्याच्या कालावधीमध्ये कोल्हापूर जिल्ह्याच्या विभागामध्ये उष्ण वारे वाहत असतात. त्यामुळे मार्च ते मे या कालावधीमध्ये उष्ण हवामान, जुन ते ऑक्टोबर पर्जन्याचे महिने, तर नोव्हेंबर ते फेब्रुवारी थंड हवामानाचा कालावधी म्हणून ओळखला जातो. या जिल्ह्याला मुख्यतः नैऋत्य मौसमी वाऱ्यापासून पर्जन्य अधिक मिळते. जिल्ह्यात मान्सूनपूर्व कालावधीमध्ये म्हणजेच मार्च ते एप्रिल महिन्यामध्ये वळीव प्रकारचा पाऊससुध्दा पडतो. या जिल्ह्यातील पर्जन्य वितरणाचा कल पश्चिमेकडून पूर्व बाजूला घटलेला दिसतो. उदा.पश्चिमेकडील बावड्याला ६००० मि.मी. पर्जन्य तर पूर्वेकडे शिरोळ या ठिकाणी ६०० मिमी पर्जन्य मिळते.

या विभागाचे किमान तापमान १४° ते १६° से.ग्रे. च्या दरम्यान तर कमाल तापमान ३८० से.ग्रे. आढळते, म्हणजेच तापमान कक्षा अधिक असलेली दिसते.

सांगली जिल्ह्यातील सर्वसाधारण तापमान नैऋत्य मान्सून वाऱ्याचा कालखंड सोडता कोरडे आहे. या जिल्ह्यामध्येसुद्धा जिल्ह्याच्या पश्चिम भागाकडून पूर्व भागाकडे तापमानामध्ये वाढ होत गेलेली आढळते. या जिल्ह्यामध्येही कोल्हापूर प्रमाणेच उष्ण हवामान, थंड हवामान आणि पर्जन्याचा कालावधी येतो. या जिल्ह्याला सरासरी ७०० मि.मि. इतका पाऊस पडतो. पर्जन्य वितरण पश्चिमेकडून पूर्वेकडे घटत जाते. जिल्ह्याच्या पश्चिम भागामध्ये २००० मि.मि. तर पूर्व भागामध्ये ९०० मि.मि. इतके पर्जन्य आढळते. एप्रिल व मे महिन्यामध्ये वादळी पर्जन्य किंवा वळीव पाऊस अपेक्षित असतो. या जिल्ह्याच्या परिसरामध्ये कमाल ४२° से.तर किमान १५° से.तापमान आढळते. म्हणजेच जिल्ह्यातील तापमान कक्षा अधिक आहे.

वरील विभाग व्यतिरिक्त सिंधुदुर्ग जिल्ह्याला भेटी दिलेल्या आहेत. जिल्ह्यामध्ये सह्याद्री पर्वताचा पश्चिम उतार आणि कोकण विभागाचा समावेश होतो. कोकणच्या पश्चिमेला अरबी समुद्र तर पूर्वेला सह्याद्री पर्वत अशी प्राकृतिक रचना लाभलेला हा भाग असल्याने नैऋत्य मान्सून वाऱ्याच्या कालावधीमध्ये सह्याद्रीच्या पश्चिम उतारावर २०० से.मी.पेक्षा जास्त पाऊस पडतो तर सह्याद्रीतील आंबोली या ठिकाणी ७५० से.मी. पावसाची नोंद होते. अतिवृष्टी आणि अरबी समुद्राचे सान्निध्य या दोन कारणांमुळे कोकणचे हवामान वैशिट्यपूर्ण तयार झालेले आहे. साधारणतः कोकणचे हवामान उष्ण व दमट मानले जाते. सागर सान्निध्य लाभले असल्याने कमाल तापमान ३३० सें.पर्यंतच वाढते तर किमान तापमान २२० से.इतके घटते. म्हणजेच या विभागात तापमान कक्षा अल्प असल्याने कोकण विभागाचे हवामान सम आहे. सागर जवळ असल्याने तेथील हवेमध्ये सापेक्ष आर्द्रतेचे प्रमाण नेहमी ८० ते ९० टक्के असते. त्यामुळे हवा नेहमी दमट असते.

जमिनीचे प्रकार

पृथ्वी खडबडीत, मध्यम आणि पृष्ठभाग वर दंड जैविक आणि अजैविक संमिश्र कण माती म्हटले जाते. अनेकदा वरील पृष्ठभाग (माती काढून रॉक शेल) आढळले आहे. कधीकधी थोडासा खोल खडक सापडतो. मृदाशास्त्र (Pedology) भौतिक भूगोल जमिनीची निर्मिती, त्याची वैशिष्ट्ये आणि जमिनीवर वितरण शास्त्रीय अभ्यास आहे, एक प्रमुख शाखा आहे. पृथ्वीच्या वरच्या पृष्ठभागाच्या फक्त कणांना लहान किंवा मोठी माती म्हणतात.

नद्यांच्या काठावर आणि पाण्याच्या प्रवाहाने आणलेली माती, ज्याला कचरा माती म्हणतात. खणून खडक पडत नाही. पाण्याचे स्रोत तेथील खालच्या पातळीवर आढळतात. सर्व मातीचा उगम खडकापासून झाला आहे. जेथे निसर्गाने मातीमध्ये बदल घडवून आणला नाही आणि हवामानाचा फारसा परिणाम झाला नाही, तिथे आम्ही खाली खडकांच्या वरील मातीची जोडणी स्थापित करू शकतो. जरी वरच्या पृष्ठभागाच्या मातीच्या खाली दगडाकडे वेगळा देखावा आहे, तरी दोघांचे रासायनिक संबंध आहेत आणि जर माती दुसऱ्या साइटवरून नैसर्गिक क्रियेद्वारे, म्हणजेच पाण्याद्वारे किंवा वायु वाहून नेली गेली नसेल. मग हे नाते पूर्णपणे स्थापित केले जाऊ शकते. खडकाच्या वरचा एक थर देखील सापडतो जो खडकापासून तयार झाला आहे आणि नैसर्गिक कृतीतून अद्याप तो पूर्णपणे मातीत आला नाही, फक्त खडकाचे जाड तुकडे तयार झाले आहेत, ज्याला ना माती किंवा खडक म्हणता येईल, मातीची रचना त्यांच्या वरच्या पृष्ठभागावर आढळते. मातीच्या या पातळीवर, आम्हाला खालील खडकाच्या रासायनिक आणि भौतिक गुणधर्मांचे संग्रहण आढळू शकते. जर रॉक स्फटिकासारखे असेल तर त्याची शक्यता १०० टक्के आहे. खाली दगडाच्या अगदी निकटचा, बाजुकडील भाग खडकात समान रासायनिक आणि भौतिक गुणधर्म असू शकतो. जसजसे अंतर

वरच्या दिशेने वाढत जाईल तसतसे खडकांची रुपरेषा देखील बदलू शकते. शेवटी, आम्हाला माती सापडली, जी शेतीसाठी अतिशय अनुकूल सिध्द झाली आहे आणि ज्यावर शेती सुरवातीपासूनच चालू आहे, आणि मनुष्य पिके काढत आहे. काही माती नैसर्गिक कारणांमुळे इतर ठिकाणच्या खडकांमधून तयार होते. अशा ठिकाणी, वरील मातीचे भौतिक आणि रासायनिक संबध तळाशी जमा होण्याद्वारे स्थापित केले जाण्याची शक्यता नाही, परंतु हे निश्चित आहे की मातीची उत्पत्ती खडकांमधून झाली आहे. शेतातील मातीमध्ये, खडकांच्या खनिजांसह, झाडाच्या झाडाची कुजूनही सेंद्रिय पदार्थ आढळतात.

सुक्ष्म आणि रासायनिक विश्लेषण निसर्गात सापडलेल्या रासायनिक पदार्थांच्या प्रभावामुळे खडकांचे अश्रू हळुहळू होत असल्याचे दर्शवितो. खडकांचे रासायनिक घटक बदलतात आणि मातीची रुपरेषा अगदी वेगळी दिसते. जर मातीच्या निर्मितीमध्ये खडकाचे तण काढणे ही प्रमुख क्रिया होती तर आज आपल्याला वाढणाऱ्या रोपांना उपयुक्त असलेल्या शेतांची माती सापडत नाही. बारीक दगड असलेल्या पीसीशी मातीची तुलना केली जाऊ शकत नाही. जरी खडकांचे खनिजे जमिनीच्या वरच्या भागात खुप आढळतात आणि त्यांचे तुकडे देखील मोठ्या प्रमाणात आढळतात, तरीही मातीतील जीवजंतू कृषी क्षेत्रासाठी महत्वपूर्ण आहेत. प्राणी आणि त्यांच्याशी संबधित पदार्थ जसे की वनस्पती आणि कुजलेल्या प्राण्यांच्या कुजलेल्या वस्तु, परिणामी, अंकुर राज्यात प्राप्त झालेल्या खडकांचे लहान कण प्रतिक्रिया देतात आणि मातीचार रंग बदलतात. हा फॉर्म फक्त खडकांचा कण नाही तर माती पृथ्वीच्या नवीन प्रणालीने सुसज्ज आहे. जर आपण सुक्ष्मदर्शकासह मातीचा तुकडा तपासला आणि नंतर त्याच खडकांतील या खडकांचे कण तपासले तर आपल्याला त्या दोन मधील फरक सापडेल. हा फरक प्राणी आणि वनस्पतींमधून प्राप्त झालेल्या अजैविक पदार्थांच्या संयोजनामुळे होतो.

१) लव्हारसाची काळी मृदा (Black Soil) - क्षेत्राच्या दृष्टीने काळी माती भारतात दुसऱ्या स्थानावर आहे. भारतात सर्वात काळी माती महाराष्ट्र आणि दुसऱ्या ठिकाणी गुजरात प्रांत होता. काळा चिखल बांधकाम ज्वालामुखीच्या पुरळणे झाल्याने एक प्रकारचा खडक रॉक इमारत आहे. बेसाल्टच्या विघटनामुळे काळ्या मातीची निर्मिती होते. दक्षिण भारतातील काळ्या मातीला रेगुर (रेगुड) म्हणतात. काळी मातीमध्ये नायट्रोजन आणि फॉस्फरसचे प्रमाणही कमी असते. यात लोह, चुना, मॅग्नेशियम आणि अॅल्युमिनाचे प्रमाण जास्त आहे. काळी मातीमध्ये मसूर, हरभरा आणि खेसडीचे उत्पादनदेखील चांगले आहे.

कापूस उत्पादनासाठी काळी माती उत्तम मानली जाते. याशिवाय काळ्या मातीत तांदळाची लागवडही चांगली आहे. काळी मातीमध्ये मसूर, हरभरा आणि खेसडीचे उत्पादनदेखील चांगले आहे.

काळ्या मातीत लोहाचे प्रमाण जास्त असल्याने त्याचा रंग काळा आहे. काळ्या मातीत पाणी लवकर कोरडे होत नाही, याचा अर्थ असा होतो की त्याद्वारे विचलित होणारे पाणी जास्त काळ टिकते, ज्यामुळे या मातीतील धान्याचे उत्पादन जास्त आहे. कोरडे असताना काळी माती फारच कठोर होते आणि ओले झाल्यावर लगेच चिकट होते. भारतात काळ्या मातीचा विस्तार सुमारे ५.४ लाख चौरस मिलोमीटर आहे.

२) जांभा मृदा - सिंधुदुर्ग या जिल्ह्यामध्ये व कोल्हापूरमधील शाहुवाडी, गडहिंग्लज इत्यादी तालुक्यांमध्ये जांभा जमीन आढळून येते. सह्याद्रीच्या माथ्यावरील ही जमीन अग्निजन्य खडकांची आहे. जास्त पावसामुळे बरीचशी द्रव्ये उतारावरून आणि जमीनी पाझरून जमिनी नाहीशा होतात त्यामुळे जमिनीमध्ये क्षारांचे प्रमाणे अल्प असते. शेतीच्या दृष्टीने ही निकृष्ट प्रकारची जमीन आहे.

३) भाबर मृदा - सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील काजवी नदी ते तेरेखोल नदीपर्यंत गाळाच्या संचयनातून नदीच्या खोऱ्यांमध्ये खाडीमध्ये ही जमीन आढळते. या

जमिनीमध्ये वाळू मिश्रित लहान रेती असते त्यामुळे पाणीधारक बऱ्यापैकी असते या जमिनीत भात, नारळ, आंबा, फणस, काजू, सुपारी इत्यादी पिके घेतली जातात.

नैसर्गिक वनस्पती

भारतीय वन राज्य अहवालात (आयएसएफआर) २०१९ मध्ये सांगितले गेले आहे की महाराष्ट्र वनक्षेत्र ५०,७७७.६ चौ.कि.मी. होते. जे राज्याच्या भौगोलिक क्षेत्राच्या (जीए) लाख चौरस किलोमीटर क्षेत्राच्या १६% आहे. मागील आयएसएफआर २०१७ नुसार त्याचे वनक्षेत्र ५०,६८२ चौरस किमी होते.

नैसर्गिक वनस्पती मानवाला मिळालेली देणगी आहे. वनस्पतीवरती जीवसृष्टी अवलंबून महाराष्ट्रात २१ टक्के भागावरती वनस्पतीचे आच्छादन आढळते. नैसर्गिक या अनेक घटकांवरती आधारित तापमान व पर्जन्य या गोष्टी मूलभूत आहेत. भूपृष्ठरचनेचासुद्धा वनस्पती आच्छादनावरती प्रभाव पडत असतो. आम्ही आयोजित केलेल्या सहलीच्या विभागामध्ये पुढील वनस्पती प्रकार आढळतात.

१. सदाहरित जंगले - ही जंगले साधारणतः १४०० मी. उंचीच्या प्रदेशामध्ये व ३५० ते ६०० सें.मी. वार्षिक पर्जन्य मिळणाऱ्या रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या भागामध्ये आढळतात. याची वैशिष्ट्ये म्हणजे ती सलग नसून तुरळक स्वरूपात आढळतात. नैसर्गिकदृष्टीनेसुद्धा ही वने महत्वाची आहेत.
२. निमसदाहरित वने - २०० ते ३५० सेंमी पर्यंत पाऊस पडणाऱ्या सदाहरित जंगलाच्या खालच्या बाजूस रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग व कोल्हापूरच्या पश्चिम भागामध्ये आढळतात. या जंगलामधील उंच वृक्ष पानझाडेचे असतात. मध्यम आकाराची झाडे सदाहरित असतात. यामध्ये बेहडा, जांभूळ, अंजन इ. वृक्ष आढळतात.
३. शुष्क प्रदेशातील काटेरी वने ५० सेमी पर्जन्य असणाऱ्या प्रदेशामध्ये या प्रकारची जंगले कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्यातील काही भागात आढळतात. यामध्ये मध्यम उंचीचे वृक्ष, झुडपे, काटेरी वने आढळतात. झुडपाची उंची कमी, मुळे खोल व फांद्यावर काटे ही वैशिष्ट्ये आहेत. बोर, खैर, चिंच, निवडूंग, कोरफड, शिंदी इ. वनस्पती आढळतात. सांगली जिल्ह्यातील जत तालुक्यामध्ये या प्रकारची जंगले पाहण्यास मिळतात.

पिके / कृषी उत्पादने

महाराष्ट्राच्या उत्पादनामध्ये कृषी उत्पादनाचा वाटा महत्वपूर्ण आहे. ८०% लोक शेतीवर अवलंबून आहेत. महाराष्ट्रातील शेती पर्जन्य वितरणाशी निगडीत आहे. १९६० नंतर खर्चा अर्थाने महाराष्ट्रात शेती विकासाला सुरवात झाली आजसुद्धा पारंपारिक शेती पहावयास मिळते. सहलीच्या निमित्ताने भेटी दिलेल्या विभागातील शेतीची परिस्थिती विशद करित असताना शेतीच्या दृष्टीने कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्याचा दक्षिण - पश्चिम भाग हा अत्यंत समृद्ध दिसतो. या परिसरामध्ये पंचगंगा आणि तिच्या उपनद्या कोल्हापूरमधील भोगावती, कोसारी, वारणा, या नदीचे विभाग आणि सांगलीमधील कृष्णा, येरळा, वारणा या नदीखोऱ्याचा प्रदेश येतो. जलसिंचनाच्या दृष्टीने हा भाग अत्यंत विकसीत झालेला दिसतो. कोल्हापूर, सांगली जिल्ह्यामध्ये सहकारच्या माध्यमातून कृषी आधारित विविध उद्योगांची स्थापना करण्यात आली आहे. या विभागामध्ये सहकारी तत्वावर उपसा जलसिंचन प्रकल्प राबविण्यात आले आहेत. त्यामुळे येथील बरेच क्षेत्र ओलिताखाली आले आहे. कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्यात राधानगरी प्रकल्प, कळमवाडी, चांदोली यासारखी मोठी धरणे बांधण्यात आली असून त्यामधून जलसिंचनाचा विकास झालेला दिसून येतो. सांगली जिल्ह्यात ऊस हे प्रमुख पिक घेतले जाते. याचबरोबर भुईमुग, सोयाबीन, करडई तर अन्नधान्याच्या पिकांमध्ये कोल्हापूरमध्ये तांदूळ हे प्रमुख पिक तर ज्वारी, गहू, बाजरी इ. अन्य पिके घेतली जातात. कोल्हापूर परिसर भागात रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्यामध्ये काजू, आंबा लागवड मोठ्या प्रमाणात झालेली आढळते. कोल्हापूर, साताराच्या दक्षिण भागात पायरया पायरयांची शेती केलेली दिसून येते.

उद्योग धंदे

औद्योगिकरण आजच्या तसेच पुढील पिढीचा विकास घडविण्यास सहाय्यभूत ठरते. मानवी भांडवलाची गुंतवणूक असणे, स्पर्धात्मकता वाढविणे आणि प्रोत्साहन देणे या सारख्या उचित धोरणांची आखणी केल्याने औद्योगिक विकास सातत्यपूर्ण राखण्यास मदत होते. राज्यात औष्णिक विकासासाठी अनुकूल वातावरण निर्मिती करण्याच्या दृष्टीने शासन सतत विविध उपाययोजना अंमलात आणत आहे आणि यामुळे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थेत राज्य औद्योगिक केंद्र म्हणून कार्यरत राहिल. राज्याने केलेल्या या उपाययोजना मुळे राज्य हे नेहमीच देशी व परदेशी गुंतवणूकदारांचे प्रथम पसंतीचे राज्य राहिले आहे.

महाराष्ट्र हे कृषिप्रधान राज्य असल्यामुळे औद्योगिक विकास बराच झालेला आहे. उद्योगांना शेतीइतकेच महत्व दिले जाते म्हणून महाराष्ट्रातील एकूण औद्योगिक उत्पादनपैकी २०% उत्पन्न महाराष्ट्रात होते.

अभ्यास सहलीच्या निमित्ताने आम्ही भेटी दिलेल्या जिल्ह्यांमध्ये प्रामुख्याने मत्स्य उद्योग व पर्यटन उद्योग या दोन उद्योगांचा विकास झालेला आढळतो. सांगली जिल्ह्यात माधवनगर, वाळवा, शिराळा, कवठेमहांकाळ, जत, आटपाडी, नागेवाडी इ. ठिकाणी एकूण ११ साखर कारखाने असून पैकी कवठेमहांकाळ, जत, आटपाडी हे कायमस्वरूपी दुष्काळी तालुके आहेत. वाहतूक सोयी, मजुरांचा पुरवठा सहकारी तत्वांचा अवलंब यामुळे या ठिकाणी साखर उद्योगांचा विकास झालेला आहे.

सांगली, कोल्हापूर, मिरज, पलुस इ. तालुक्यातल्या काही ठिकाणी महाराष्ट्र विकास औद्योगिक मंडळामार्फत औद्योगिक क्षेत्र विकसित करण्यात आले असून या उद्योगांमध्ये एम.आय.डी.सी. क्षेत्राचीही भर पडलेली दिसून येते. कोल्हापूरमध्ये शिरोली फॉन्ड्री व्यवसायासाठी प्रसिध्द असून कोल्हापूरमध्ये हा व्यवसाय मोठ्या प्रमाणात चालतो. या प्रमुख उद्योगाव्यतिरिक्त संबंधित असणारे दुय्यम स्वरूपाचे उद्योगदेखील येथे प्रस्थापित झालेले आहेत.

सिंधुदुर्गमध्ये आंबा, काजू उत्पादनाशी निगडीत आंब्याचा रस हवाबंद डब्यात पॅक करणे, लोणची तयार करणे, काजूवर आधारित व्यवसायाची येथे पहावयास मिळतात. राजापूरच्या परिसरामध्ये जंगलातील खैरापासून व हिरड्यापासून कात तयार करण्याचा व्यवसाय करण्यात येतो तसेच मासेमारीसाठी होड्या तयार करण्याचा व्यवसायही तेथे मोठ्या प्रमाणात आहे.

सहलीतील प्रमुख ठिकाणे

राधानगरी

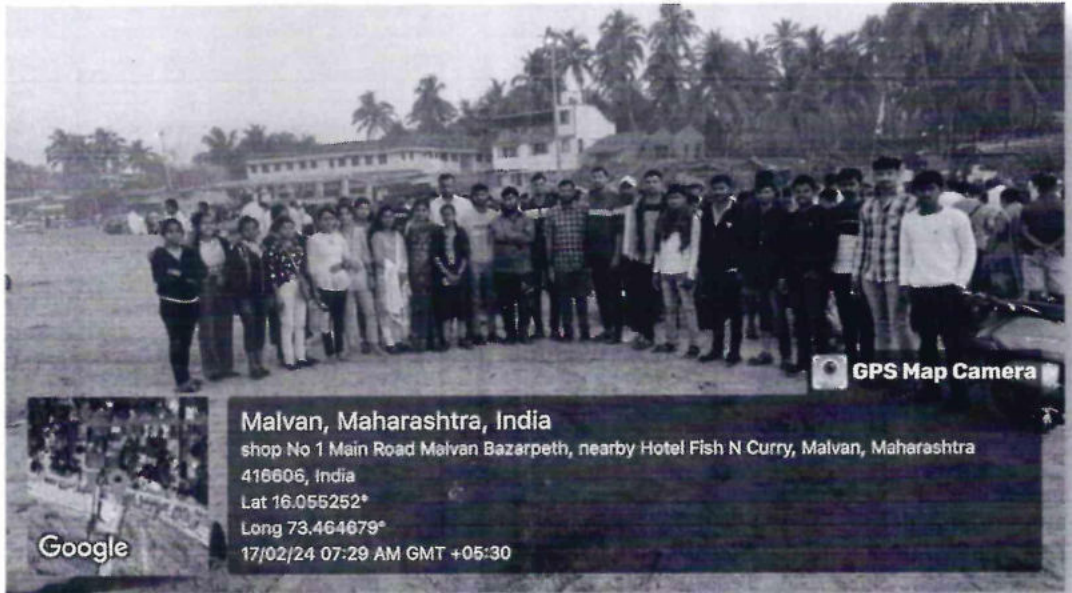
राधानगरी धरण कोल्हापूर जिल्ह्यातील एक धरण आहे. हे धरण भोगावती नदीवर बांधण्यात आले असून त्याचा उपयोग शेतीच्या पाणी पुरवठ्यासाठी व वीज निर्मितीसाठी होतो.

राजर्षी शाहू महाराजांनी शंभर वर्षांपूर्वी सिंचनाचे महत्व ओळखून त्या कामाला सर्वाधिक प्राधान्य दिले. विहिर, तलाव, छोटे बंधारे अशा अनेक योजनांचा धडाका लावला. राधानगरी धरण म्हणजे या प्रयत्नांच्या मालिकेतील मुकुटमणी आहे. एका छोट्या संस्थानाच्या बचतीमधून इ.स. १९०७ मध्ये शाहू महाराजांनी राधानगरी या धरणाच्या महत्वाकांक्षी प्रकल्पासाठी धरणाची योजना पुढे आणली. ९ फेब्रुवारी १९०८ ला गाव नव्याने वसवून त्या गावाचे नाव राधानगरी ठेवण्यात आले. १९०९ मध्ये धरणाचे प्रत्यक्ष बांधकाम सुरु झाले. १९१८ पर्यंत धरणाचे बांधकाम ४० फुटांपर्यंत पूर्ण झाले. पुढे निधीच्या कमतरतेमुळे प्रकल्प पूर्ण होण्यास १९५७ साल उजाडले. पण तत्पूर्वी पाणी साठवणे सुरु झाले होते. महाराष्ट्रातील एक अतिशय भक्कम धरण म्हणून राधानगरी ओळखले जाते.

राधानगरी धरणाचे बांधकाम हे पूर्णपणे दगदी बांधकाम असून त्याची उंची सुमारे ३८.४१ मीटर इतकी आहे. तसेच धरणाची लांबी १०३७ मीटर इतकी आहे. राधानगरी धरणास स्वयंचलित दरवाजे असून, सेकंदाला २८३ घनमीटर इतका विसर्ग होतो. राधानगरी धरणाची २३६८ लक्ष घनमीटर इतकी पाणी साठविण्याची क्षमता आहे.

मालवण

मालवण हे महाराष्ट्रातल्या सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील एक महत्वाचे शहर आहे. सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या मालवण ह्या प्रमुख तालुक्याचे ते ठिकाण आहे. मालवण महाराष्ट्राचे आराध्य दैवत छत्रपती शिवाजी महाराजांचे शहर आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी मालवणच्या अरबी समुद्रात असणाऱ्या कुरटे बेटावर सिंधुदुर्ग किल्ला बांधला. मालवण तालुका हा सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील सर्वात प्रसिध्द व श्रीमंत तालुका आहे. सिंधुदुर्ग जिल्हा हा जेव्हा पर्यटन म्हणून घोषित झाला त्यात मालवण तालुक्याचे ६० टक्के योगदान होते. मालवण हे ९९.७३ हेक्टर क्षेत्राचे गाव असून २०११ च्या जनगणनेनुसार ह्या गावात २९ कुटुंबे व एकूण १०९ लोकसंख्या आहे. यामध्ये ४८ पुरुष व ६१ स्त्रिया आहेत.



तारकली

तारकली हे भारताच्या महाराष्ट्र राज्यातील सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील मालवण तालुक्यातील एक गाव आहे. हे दक्षिण महाराष्ट्रातील समुद्रकिनारा आणि दुर्गम ठिकाण आहे. काही वर्षांपूर्वी तारकली समुद्रकिनारा कोकण विभागातील राणी बीच म्हणून घोषित करण्यात आला आहे. दर महिन्याला हजारो पर्यटक जलक्रिडा उपक्रमांचा आनंद लुटण्यासाठी या ठिकाणी भेट देत आहेत. तारकलीतील सर्व जलक्रिडा उपक्रम आंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मानकांनुसार आणि आधुनिक सुरक्षा उपकरणांसह व्यवसायिक प्रशिक्षक (डायव्ह मास्टर) यांच्या मार्गदर्शनाखाली सुरु आहेत. अनेक स्कुबा ड्रायव्हिंग ऑपरेटर त्सुनामी बेट, देवबाग जवळ हा उपक्रम चालवितात.



तारकली येथील स्थानिक लोक त्यांच्या घराचे नुतनीकरण करतात आणि बेड आणि ब्रेकफास्ट योजनेत रुपांतर करतात. यापैकी काही सरकारी एजन्सी महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडळ म्हणून ओळखल्या जातात. तारकली येथे महाराष्ट्र पर्यटन विकास महामंडळाचे स्कुबा ड्रायव्हिंग प्रशिक्षण केंद्र आहे.

तारकली येथे स्कुबा ड्रायव्हिंगचे विविध अभ्यासक्रमही चालवले जातात. तारकलीमध्ये राहण्यासाठी विविध पर्याय उपलब्ध आहेत.

तारकली हे मालवण्याच्या दक्षिणेस ८ कि.मी. (०.५ मैल) आणि मुंबईपासुन ५४६ कि.मी. (३९९ मैल) आणि पुण्यापासुन ४१० कि.मी. अंतरावर भारताच्या पश्चिम किनारपट्टीवर, कली नदी आणि अरबी समुद्राच्या संगमावर आहे.



सिंधुदुर्ग

सिंधुदुर्ग हा महाराष्ट्राच्या सिंधुदुर्ग जिल्ह्यातील अरबी समुद्रात छत्रपती शिवाजी महाराजांनी बांधलेला जलदुर्ग आहे. नोव्हेंबर २५ इ.स.१९६४ रोजी किल्ल्याच्या बांधकामाला सुरवात झाली. भारत सरकारने या किल्याला दिनांक २१ जुन इ.स.२०१० रोजी महाराष्ट्रातील राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक म्हणुन घोषित करण्यात आले आहे.

शिवाजी महाराजांच्या आरमारात या किल्ल्याला फार महत्व होते. किल्ल्याचे क्षेत्र कुरटे बेटावर ४८ एकरावर पसरलेले आहे. तटबंदीची लांबी साधारण तीन किलोमीटर आहे. बुरुजांची संख्या ५२ असुन ४५ दगडी जिने आहेत. ह्या किल्ल्यावर शिवाजी महाराजांच्या काळातील गोड्या पाण्याच्या दगडी विहीरी आहेत. त्यांची नावे दुध विहिर, साखर विहीर व दही विहीर अशी आहेत. या किल्ल्याच्या तटबंदीच्या भिंतीमध्ये छत्रपती शिवाजी महाराजांनी त्या काळी तीस ते चाळीस शौचालयाची निर्मिती केली आहे. या किल्ल्यामध्ये शिवाजी महाराजांचे शंकराच्या रुपातील एक मंदिर आहे. हे मंदिर इ.स.१६९५ मध्ये शिवाजी महाराजांचे पुत्र छत्रपती राजाराम महाराज यांनी बांधली.

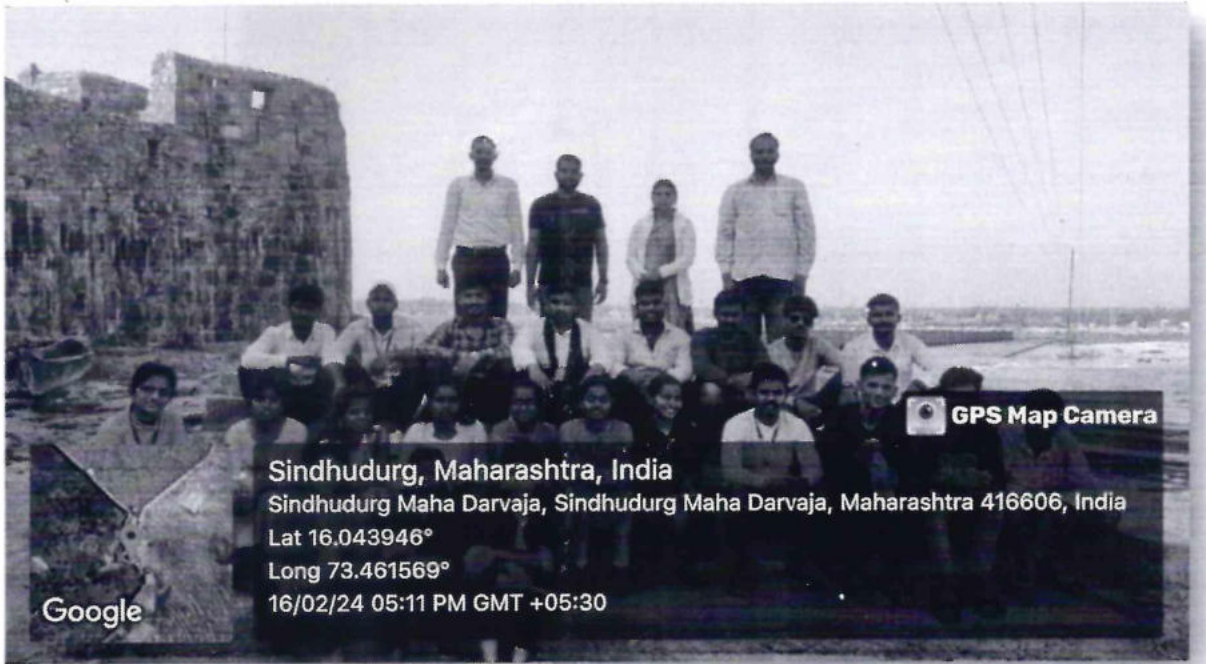
छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या आरमारी दलाचे आद्यस्थान मालवण येथील जंजिरा म्हणजे हा सिंधुदुर्ग किल्ला होय. महाराजांकडे ३६२ किल्ले होते. या सर्व किल्ल्यांच्या पुर्वस - विजापुर, दक्षिणेस - हुबळी, पश्चिमेस - अरबी समुद्र, उत्तरेस - खानदेश-वऱ्हाड या देशापर्यंतचा विस्तार होता. भुईकोट आणि डोंबरी किल्ल्यांच्या बरोबरीने सागरी मार्गावरील शत्रुंची स्वारी परतुन लावण्यासाठी जलदुर्गाची निर्मिती महत्वाची आहे. हे ओळखुन शिवाजी महाराजांनी सागरी किल्ले निर्माण केले. चांगल्या, भक्कम आणि सुरक्षित स्थळांचा शोध घेऊन समुद्रकिनाऱ्याची पाहणी झाली. इ.स.१६६४ साली मालवण जवळील कुरटे नावाचे

काळा कभिन्न खडक असलेले बेट किल्ल्यासाठी निवडले. महाराजांच्या हस्ते किल्ल्यांच्या तटांची पायाभरणी झाली. आज मोच्याचा दगड या नावाने ही जागा प्रसिध्द आहे. एका खडकावर गणेशमुर्ती, एकीकडे सुर्याकृती आणि दुसरीकडे चंद्राकृती कोरून त्याजागी महारांनी पूजा केली.

असे म्हणतात की, किल्ला बांधण्यासाठी एक कोटी होन खर्ची पडले. उभारणीसाठी तीन वर्षांचा कालावधी लागला. ज्या चार कोळी लोकांनी सिंधुदुर्ग बांधण्यासाठी योग्य स्थळ शोधले, त्यांना गावे इनामे देण्यात आली. ऐतिहासिक सौंदर्य लाभलेला सिंधुदुर्ग हा किल्ला ज्या कुरटे खडकावर तीन शतके उभा आहे, तो शुध्द काळाकभिन्न खडक मालवण पासुन सुमारे अर्धा मैल समुद्रात आहे. या खडकावर समुद्र मार्गांनी व्यापलेले क्षेत्र सुमारे ४८ एकर आहे. त्यांचा तट २ मैल इतका आहे. तटांची उंची ३० फुट असुन रुंदी १२ फुट आहे. तटास ठिकठिकाणी भक्कम असे एकंदर २२ बुरुज आहेत. बुरुजाभोवती धारदार खडक आहे. पश्चिमेस आणि दक्षिणेस अथांग सागर पसरला आहे. पश्चिमेकडे आणि दक्षिणेकडे तटाच्या पायात ५०० खंडी शिसे घातले असुन या तटाच्या बांधणीस ८० हजार होन खर्ची पडले. सिंधुदुर्ग या किल्ल्यावर शिवराजयांच्या उजव्या हाताचे व डाव्या पायाचे ठसे उमटले आहेत.

सिंधुदुर्गाचे प्रवेशद्वार पुर्वेस आहे. या जागी प्रवेशद्वार आहे हे लक्षात येत नाही. पाण्यातुन मनुष्य तटाजवळ उतरला की उत्तराभिमुख एक खिंड दिसते. या खिंडीतुन आत गेले की गडाचा दरवाजा लागतो. हा दरवाजा भक्कम अशा उंबराच्या फळ्यांपासुन केला आहे. उंबराचे लाकुड दिर्घकाळ टिकते. त्याला सागाच्या लाकडाची जोड दिली आहे. आत गेल्यानंतर मारुतीचे छोटेखानी मंदिर आहे. तेथुनच बुरुजावर जाण्यासाठी मार्ग आहे. बुरुजावर गेल्यानंतर आजुबाजुच्या १५ मैलाचा प्रदेश सहज दिसतो. पश्चिमेकडे जरीमरीचे देऊळ लागते. आजही महाराजांची अन्यत्र कुठल्याही किल्ल्यावर न दिसणारी बैठी

प्रतिमा फक्त येथे दिसते. सिंधुदुर्ग किल्ल्याचे प्रमुख वैशिष्ट्य म्हणजे या किल्ल्यात आजही दर बारा वर्षांनी रामेश्वराची पालखी शिवराजेश्वर येथे येते. इंग्रजांनी हा किल्ला ताब्यात घेतल्यानंतर काही प्रमाणात तो उध्वस्त करून टाकला. किल्ल्यांच्या बांधणीसाठी वापरण्यात आलेला चुना आजही दिसतो. मराठ्यांचा भगवा ध्वज आणि त्यांचा ध्वजस्तंभ २२८ फुट उंच होता. त्यामुळे समुद्रातुन दुरवर तो ध्वज सहज दृष्टीसपडत होता. ध्वजाला पाहुन मच्छिमार खडकापासुन लांब असत. हा भगवा ध्वज इ.स. १८१२ पर्यंत फडकत होता.



गडावर ठिकठिकाणी तोफा ठेवण्याच्या जागा आहेत. बंदुका रोखण्यासाठी तटाला भोके ठेवली आहेत. सैनिकांसाठी पायखाने आहेत. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी ३०० वर्षांपासुन सार्वजनिक स्वच्छतेचा संदेश यातुन दाखविला आहे. हे विशेष होय. कोकणातील सिंधुदुर्ग किल्ल्याची उभारणी हा छत्रपती शिवाजी महाराजांच्या दृष्टीने अंत्यत महत्वाची मानली जाते. सिंधुदुर्ग जिल्ह्याचा स्मृतिमय इतिहास म्हणजे हा किल्ला आहे. असंख्य मावळ्यांच्या साक्षीने आणि परिश्रमाने समुद्रात हा किल्ला उभा केला तो आजही पर्यटकांना विशेष आकर्षित करतो.

सिंधुदुर्ग किल्ला मालवणपासुन सुमारे अर्धा मैल समुद्रात आहे. १९६१ साली तत्कालिन मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांनी तटाची दुरुस्ती केली.

मुख्य म्हणजे या किल्ल्याच्या परिसरात गोड्या पाण्याच्या तीन विहीरी आहेत. त्यांची नांवे दुधबाव, दहीबाव, साखरबाव अशी आहेत. या विहीरींचे पाणी चवीला अंत्यत गोड लागते. किल्ल्याच्या बाहेर खारे पाणी आणि आत गोडे पाणी हा निसर्गाचा चमत्कारच मानला पाहिजे. यामुळे किल्ल्यावर राहणे सुलभ झाले आहे. पाण्याचा अतिरिक्त साठा करण्यासाठी एक कोरडा तलाव बांधण्यात आला होता. सध्या यातील वापर पावसाळ्यात पिकवला जाणारा भाजीपाला व कपडे धुण्यासाठी होतो.



कुणकेश्वर

कुणकेश्वर हे ठिकाण देवगडच्या जवळ असून फार सुंदर समुद्रकिनारा लाभलेलं, कुणकेश्वराच्या मंदिराजवळ हा परिसर आहे. स्वच्छ, कमी वर्दळ असणारा हा किनारा आहे. कोकणचा आणि समुद्राचा मनसोक्त आनंद या ठिकाणी घेता येतो. खाण्यासाठी कुणकेश्वरचे उकडीचे मोदक चविष्ठ आहे. देवगडला उत्तम माशाचे जेवण मिळते. माफक दरात कोकण या ठिकाणी अनुभवता येतो.



कुणकेश्वर हे भारतातील महाराष्ट्राच्या कोकण प्रांतातील सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात असलेल्या देवगड तालुक्यातील समुद्रकिनारी वसलेले एक गाव आहे ते देवगड गावाच्या दक्षिणेस २० किलोमीटर आहे. कुणकेश्वर हे एक तीर्थक्षेत्र व पर्यटन स्थळ आहे. तसेच हे गाव हापूस आंब्यासाठी प्रसिध्द आहे. कुणकेश्वर गावातील एका

डोंगरात जांभ्या दगडात एक गुहा आहे. या गुहेत शिवलिंग, नंदी, तसेच स्त्री-पुरुषांचे अनेक दगडी मुखवटे आहेत.

कुणकेश्वर येथे श्री देव कुणकेश्वर हे एक शिवमंदिर आहे. छत्रसपती शिवरायांनी स्वतः या मंदिराचा जीर्णोध्दार केला होता. कुणकेश्वरला दक्षिण कोकणची काशी म्हटले जाते. कुणकेश्वर मंदिराजवळ प्रसिध्द समुद्रकिनारा आहे. येथे दरवर्षी लाखोच्या संख्येने देशी व विदेशी पर्यटक भेट देतात. समुद्रातील जांभ्या दगडांवर सुमारे १०० शिवलिंगे कोरलेली आहेत. ओहटीच्या वेळी ही शिवलिंगे पाहायला मिळतात.

पावसाळ्यात येथे भरपूर प्रमाणात पाऊस पडतो आणि हवामान समशीतोष्ण राहते. हिवाळ्यात येथील हवामान थंड असते व सकाळी धुके पडते. उन्हाळ्यात हवामान उष्ण असते. पावसाळ्यात येथे भातशेती केली जाते.

विजयदुर्ग

विजयदुर्ग हा सिंधुदुर्ग जिल्ह्यात असलेला एक जलदुर्ग आहे. हा किल्ला मुंबईच्या दक्षिणेस सुमारे २२५ किलोमीटर व गोव्याच्या उत्तरेस १५० किलोमीटरवर आहे. सुमारे १७ एकर जागेत हा किल्ला पसरला आहे. या किल्ल्यास तीन तटबंदी आहेत. त्यास चिखलती तटबंदी असे म्हणतात. याच्या तीन बाजू पाण्याने घेरलेल्या आहेत. या किल्ल्यात दोन भुयारी मार्ग आहेत. एक किल्ल्याच्या पूर्वेकडे तर दुसरा पश्चिमेकडे.

विजयदुर्ग हा किल्ला ११ व्या शतकाच्या अखेरीस शिलाहार घराण्यातील राजा भोजने बांधला. पुढे तो बहामनी व नंतर आदिलशाहीच्या ताब्यात होता. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी १६६४ च्या ऑक्टोबर-नोव्हेंबरमध्ये विजयदुर्ग किल्ला जिंकला. १६६४ ते १८१८ पर्यंत या किल्यावर मराठी अंमल होता. त्यानंतर हा किल्ला इंग्रजांनी ताब्यात घेतला.



विजयदुर्गला पूर्वेकडील जिब्रालटर असेही म्हणत कारण हा एक अजिंक्य किल्ला होता. ४० किलोमीटर लांब असलेली वाघोटन खाडी हे या किल्ल्याचे बलस्थान आहे. कारण मोठी जहाजे खाडीच्या उथळ पाण्यात येऊ शकत नसत

आणि मराठी आरमारातील छोटी जहाजे या खाडीत नांगरुन ठेवली जात, पण ती समुद्रावरुन दिसत नसत. या किल्ल्याला महाराष्ट्रातील राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक म्हणून दिनांक १३ डिसेंबर,इ.स. १९१६ या दिवशी घोषित करण्यात आलेले आहे.

हवामान : पावसाळ्यात येथे भरपूर प्रमाणात पाऊस पडतो आणि हवामान समशीतोष्ण राहते. हिवाळ्यात येथील हवामान थंड असते व सकाळी धुके पडते. उन्हाळ्यात हवामान उष्ण असते. पावसाळ्यात येथे भातशेती केली जाते.

निष्कर्ष

आम्ही भेटी दिलेल्या ठिकाणचे आणि परिसराचे एक भूगोलाचे अभ्यासक म्हणून निरीक्षण केल्यानंतर

पुढील निष्कर्ष काढता येतील.

१. सांगली, कोल्हापूर, सिंधुदुर्ग या भागांचा प्राकृतिक परिस्थिती विषयी बोलत असताना असे म्हणता येईल की, सह्याद्री पर्वताचा जास्त उंचीचा विभाग आणि पठारी विभागामध्ये पूर्वेकडे असलेल्या सह्याद्री पर्वताच्या रांगा यांचा समावेश होतो. या विभागाचा समावेश जास्त पर्वतीय विभागामध्ये करता येईल व या विभागाची उंची ७०० ते ११०० मी. इतकी असून त्याखालोखाल सांगली आणि कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये पठारी भाग येतो.
२. सांगली आणि कोल्हापूर जिल्ह्यातील पठारी विभागामध्ये पूर्व दिशेने सरकलेल्या सह्याद्रीच्या रांगांची जलविभाजक भूमी साकारलेली असल्यामुळे पठारी भागावरील प्रमुख नद्यांची खोरी एकमेकांपासून विलग झालेली दिसतात. उदा. माण आणि कृष्णा नदीचे खोरे.
३. सांगली जिल्ह्यात कृष्णा, पंचगंगा, आणि त्यांच्या उपनद्या तसेच कोल्हापूरमधील दुधगंगा, वारणा, वेदगंगा, कोसारी, हरण्यकेशी या प्रमुख नदीप्रणाली आहेत. सिंधुदुर्गमध्ये काजवी आणि तेरेखोल या प्रमुख नदीप्रणाली आहेत. पैकी सिंधुदुर्ग मधील नद्या पश्चिमवाहिनी असून बाकीच्या सर्व नद्या पूर्ववाहिनी आहेत.
४. सांगली जिल्ह्याच्या पश्चिम भागाचे आणि कोल्हापूरचे हवामान साधारणतः समशितोष्ण असून सांगली जिल्ह्याच्या पूर्व भागाचे हवामान उष्ण व कोरडे आहे. तर सिंधुदुर्ग, येथील हवामान उष्ण व दमट प्रकारामध्ये मोडते.

५. कोल्हापूर व सांगली जिल्ह्याचा भाग खंडातर्गत असल्यामुळे याठिकाणी तापमान कक्षा अधिक तर सिंधुदुर्ग, रत्नागिरीच्या भागाला समुद्रसानिध्य लाभले असल्याने येथे तापमान कक्षा कमी आढळते.
६. सांगली जिल्ह्याच्या पूर्व भाग, कोल्हापूर जिल्ह्यातील हातकणंगले व शिरोळ या भागात सरासरी ५००मि.मि. पर्जन्य मिळते. सांगली जिल्ह्यातील शिराळा तालुका, कोल्हापूर जिल्ह्याच्या पश्चिमेकडील सर्व तालुके रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग जिल्ह्याच्या सह्याद्री पर्वतांचा पश्चिम उताराचा भाग या ठिकाणी ६०० ते ७५० मि.मि. इतके पर्जन्य वितरण आढळते. हा पाऊस मुख्यतः नेत्रळ्य मान्सून कालखंडात मिळतो.
७. आम्ही भेटी दिलेल्या परिसरात सह्याद्रीच्या उतारावरती सदाहरीत व निमसदाहरीत पुर्वेकडील पर्वत पायथ्यांच्या उतारावरती पानझाड वृक्षांची तर अतिपूर्वेकडच्या विभागात शुष्क, काटेरी वनस्पतींची जंगले आणि सिंधुदुर्ग, रत्नागिरी किनारी भागात खाड्याच्या परिसरात मॅग्नो प्रकारची पोफळीची वृक्ष आढळतात.
८. कोल्हापूर आणि सांगली जिल्ह्यातील नदीखोऱ्यांचे विभाग म्हणजे पश्चिम महाराष्ट्रातील शेती विकासाच्या दृष्टीने प्रगत अवस्थेमध्ये असणारा विभाग म्हणुन नावारुपाला आलेला आहे. याठिकाणी आधुनिक प्रकारची शेती केली जाते.
९. या विभागातील शेतीमधुन ऊस, तंबाखु, द्राक्षे, आंबा, काजू, बोर, डाळी, इत्यादी नगदी पिके सोयाबिन, भुईमुग ही तेलबियांची पिके तर ज्वारी, बाजरी, भात गहू इ.अन्नधान्याची पिके घेतली जातात.
१०. कोल्हापूरचे शाहु मार्केट गुळासाठी, सांगलीचे मार्केट हळद व मिरचीसाठी, तासगांव द्राक्ष बेदाण्यासाठी, तर देवगड, रत्नागिरी हापूस आंब्यासाठी प्रसिध्द असलेचे दिसुन येते.

११. नद्याखोऱ्यांच्या विभागामध्ये ँस उत्पादन जलसिंचनाच्या सहाय्याने केले जात असल्याने दक्षिण महाराष्ट्रात साखर कारखान्याची दाटी सांगली व कोल्हापूर जिल्ह्यामध्ये प्रस्थापित झालेली आढळते. याशिवाय रत्नागिरीमध्ये पडावे या ठिकाणीसुध्दा एक साखर कारखाना आहे. या विभागामध्ये कृषी आधारित उद्योगांचा विकास झालेला आहे. प्रामुख्याने साखर कारखाने आणि सुती वस्त्रद्योगांचा यामध्ये समावेश होतो. याचबरोबर दुग्धव्यवसायाच्या अनुषंगाने काही प्रकल्प उदा.वारणा, गोकुळ, चितळे डेअरी या विभागामध्ये कार्यान्वित आहेत तर काजू उत्पादनावर आधारित देवगड, रत्नागिरी परिसरात काही प्रकल्प सुरु आहेत.
१२. महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळातर्फे मिरज, सांगली, पलुस, शिरगांव, शिरोली इत्यादी ठिकाणी औद्योगिक क्षेत्रे विकसित करण्यात आली आहेत. यामध्ये कोल्हापूरचा फॉन्ड्री उद्योग विशेष महत्वाचा मानला जातो. तर इचलकरंजी हे ठिकाण दक्षिण महाराष्ट्राचे मॅचेस्टर म्हणुन ओळखले जाते.
१३. राधानगरी, सिंधुदुर्ग, कुणकेश्वर, विजयदुर्ग ही ठिकाणे महाराष्ट्रातील पर्यटन स्थळे म्हणुन विकसित होत आहेत.
१४. अपारंपारिक उर्जास्तत्रेतांपैकी वाऱ्याचा उपयोग करुन देवगड येथे असलेला वीजनिर्मिती प्रकल्प हा सह्याद्री पर्वतांच्या इतर भागातील योग्य ठिकाणी उभा करण्यासाठी आदर्शयुक्त प्रकल्प ठरलेला आहे.
१५. सागर किनाऱ्याच्या विभागामध्ये सिंधुदुर्ग व देवगड परिसरामध्ये मासेमारीची मत्स्यकेंद्रे विकसित झाली असून त्या माध्यमातून स्थानिक लोकांना व्यवसय व रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होत आहेत.

संदर्भ

- महाराष्ट्राचा भूगोल, प्रा.के.ए.खतीब, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, १९९७.
- पर्यटन भूगोल, प्रा.के.ए.खतीब, मेहता पब्लिकेशन हाऊस, २००६.
- महाराष्ट्राचा भूगोल, प्रा.टी.पी.पाटील, पिपळापुरे अँड के.पब्लिशर्स, १९९७.
- पर्यटन भूगोल, डॉ.विठ्ठल चारपुरे, पिपळापुरे अँड के.पब्लिशर्स, २००१.
- District Census Handbook Maharashtra Cansus of India, Sangli, Kolhapur, Ratnagiri.
- Gazetteer of Maharashtra, Sangli, Kolhapur, Ratnagiri, District.




Shikshan Prasarak Sanstha's

Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Economics

REPORT (2021-22)

Title	Educational Study Tour Directorate of Beekeeping, Mahabaleshwar
Date	29/05/2022
Organizer	Department of Economics
Beneficiary	Padmabhushan Vasantodada Patil, Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
No. of Student Participated	14
Participated teachers	Mr. K.L. Sakat (HOD, Economics)
Background	Focuses on gaining comprehensive insights into the beekeeping industry, including the cultivation and harvesting of honey and beeswax. It also emphasizes learning about specialized training programs like Madhuban Beekeeping Training to develop practical skills in apiary management and product processing for market distribution.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. Understanding the Beekeeping Business.2. To know about Madhuban Beekeeping Training.3. See honey, wax and produce.4. To understand honey and main product marketing.
Conclusion	Through understanding the intricacies of beekeeping, attending specialized training, and witnessing first-hand the production of honey and beeswax, one can gain valuable knowledge about both the operational aspects and marketing strategies essential for success in the beekeeping business.


HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.
Department of Economics**

Notice

Date: - 20/05/2022

All the Student of B.A. Economics are informed that Department of Economics Organized. an **“Directorate of Beekeeping, Mahabaleshwar”** on **29/05/2022** The student must present there 29th May 2022 at Main Gate PVP College by 06.00 am sharp. The student must wear College ID Card. This is the part of our Co-Curriculum.

Please **register our name up to 28th May 2022** to concern Coordinator Study Tour- Mr. K. L. Sakat (HOD Economics) Mob. 9404704922


HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.
Department of Economics

Date: 27/05/2022

To,
The principal,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Subject: Permission Request for Study Tour

Respected Sir,

I hope this letter finds you well. I am writing to formally request your permission for 25 students from B.A. Economics to participate in a study tour **organized by Department of Economics**. The purpose of this study tour is to enhance our understanding of Economics through practical exposure and experiential learning. We have planned visits to **Directorate of Beekeeping, Mahabaleshwar** to be visited where students will have the opportunity to Self-Employment, Self-Business to various sectors. This tour aligns closely with our academic curriculum and will provide invaluable educational benefits.

Departure Date: 29/05/2022

Return Date: 29/05/2022

Co- ordinating Teachers: **Mr. K. L. Sakat (HOD Department of Economics)**

Estimated Cost per Student: Rs.1000

We assure you that all necessary safety precautions will be taken throughout the tour, and students' safety and well-being are our top priority. We will be providing emergency contact numbers for all accompanying teachers, and all students will be under constant supervision. To facilitate this tour, we kindly request your approval and support. Your permission will allow us to proceed with the necessary arrangements and logistics without delay.

Thank you very much for considering this request. We believe this study tour will significantly contribute to our students' overall development and academic growth.

Permission granted

mudran
Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli.

Yours sincerely,

[Signature]
HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



Shikshan Prasarak Sansth's
PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA,
Kavathe Mahankal, Dist.- Sangli
Department of Economics
Educational Study Tour at Directorate of Beekeeping,
Mahabaleshwar
Attendance List

Sr. No.	Name of the Student	Class	Signature
1	Chavan Pratik Sunil	B.A.-III	P.S.Chavan
2	Dhole Swati Janardhan	B.A.-III	Dhole Swati
3	Kamble Urjita Suraj	B.A.-III	Urjita Kamble
4	Sankpal Rhutvij Rajendra	B.A.-III	Rhutvij Sankpal
5	Chavan Rekha Bhimrao	B.A.-III	Chavan R.B
6	Patole Kajal Sanjay	B.A.-III	Patole Kajal
7	Patole Sarika Pandurang	B.A.-III	P.S.P
8	Shinde Bhagyashri Govind	B.A.-III	Shinde Bhagyashri
9	Jadhav Varsharani Raghunath	B.A.-III	Jadhav R.
10	Bandgar Archana Balaso	B.A.-III	Bandgar Archana
11	Khan Suhana Aslam	B.A.-III	S.A.K
12	Salunkhe Ujwala Balasaheb	B.A.-III	Salunkhe Ujwala
13	Shinde Dhanashree Maruti	B.A.-III	S.D. Shinde
14	Khamgal Ashwini Keru	B.A.-III	Khamgal Ashwini



HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



Shikshan Prasarak Sansth's
PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA, KAVATHE MAHANKAL
Department of Economics
(2022-23)

Report

Title	Educational Study Tour at Punyaslok Ahilyadevi Sheep and Goat Development Area, Rajani
Day & Date:	Saturday, 01/04/2023
Organizer	Department of Economics,
Beneficiary:	Students of Department of Economics
No. of Student Participated	25
Co- Ordinator	Mr. K.L. Sakat (HOD, Economics)
Participated Teachers	Mr. C. B. Patil
Background	Department of Economics aimed to provide students with practical insights into the economic dimensions of livestock farming
Objective	<ol style="list-style-type: none">1) To understand the economic aspects of sheep and goat rearing.2) To explore the role of research centres in promoting sustainable livestock practices.3) To analyse the economic impact of sheep and goat farming on local communities.
Conclusion:	The educational study tour to the Sheep and Goat Rearing Development Centre provided students with valuable practical knowledge about the economic aspects of sheep and goat farming. It emphasized the role of research centers in promoting sustainable practices and fostering economic development in the livestock sector.


HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasatraodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Economics

Date: 20/03/2023

NOTICE

All the students of **Department of Economics** are hereby informed that, Departments have decided to organize **Educational Tour at Punyaslok Ahilyadevi Sheep and Goat Development Area, Rajani Campus during 1st April 2023**. The students, who are interested in this Educational Tour, please **register their names prior to 25th March 2023** to concern co-ordinator for further details.

Co-ordinators:

Mr. K. L. Sakat: 9404704922

HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Economics

Educational Study Tour Report (2022-23)

Destination: Punyaslok Ahilyadevi Sheep and Goat Development Area, Rajani

Tal- Kavathe Mahankal Dist- Sangli.

Date: 01/04/2023

Introduction

The educational study tour organized by the P. V. P. Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Department of Economics aimed to provide students with practical insights into the economic dimensions of livestock farming, focusing on the Sheep and Goat Rearing Development Area, Rajani. This centre serves as a hub for research, training, and development initiatives in the field of sheep and goat farming.

Objectives

1. To understand the economic aspects of sheep and goat rearing.
2. To explore the role of research centres in promoting sustainable livestock practices.
3. To analyse the economic impact of sheep and goat farming on local communities.

The Sheep and Goat Rearing Development Area

The livestock sector plays an important role in the state's economy; about 70% of population thrives on agriculture. Animal Husbandry is an inseparable component of agriculture sector.

Livestock rearing is central to rural livelihoods in a large part of the globe. In India according to Government reports, in the year 2008, the sector contributed about 5.3% of the total GDP and provided food, fibre, energy and medicine essential for human survival.

Sheep and goat rearing is the traditional occupation of economically weaker sections of society, particularly in rain shadow areas. These two species have been a major source of economic sustenance and financial cushioning, especially for an economically weaker section of society.

Nearly 40% of our population belongs to economically poor and therefore programmes involving the development of these small ruminants will directly benefit this population. Comparatively smaller body size and their adaptability to a wide range of agroclimatic conditions have rendered them suitable for weaker sections.



Sheep and goat rearing

Approximately 1 lakh families are depending upon sheep-rearing business. Sheep rearing is done in dry climatic districts such as Pune, Satara, Solapur, Sangli, Kolhapur, Ahmednagar, Nasik, Dhule, Jalgaon, Aurangabad, Jalna, Beed, Latur, Nanded., Osmanabad, Buldhana, Chandrapur, etc. On goat rearing, approximately 48 lakh families are engaged. Both the business is carried out by weaker sections of the society.

Meat Production

Goats \ Sheep constitute a very important species of livestock in India, mainly on account of their short generation intervals, higher rates of prolificacy, and the ease with which the goats as also their products can be marketed. They are considered to be very important for their contribution to the development of rural zones and people. The local initiatives to promote quality labels and innovative products for cheeses, meat and fibres could help goats in keeping a role for sustainable development in an eco-friendly environment all over the world. However, the future of the goat and sheep industry as a significant economic activity will also be very dependent on the standards of living in the countries where there is a market for the goat products.

As per Statistical Report of Dept. of Animal Husbandry, Maharashtra State for the year 2008 – 2009, Sheep and goat meat production is about 34.52 % of total meat production in the state of which 11.34 % is formed sheep and 23.18 % is from goats. Estimated average meat production per sheep and goat is 11 kg.

Migratory Aspects

In Maharashtra sheep & goat rearing occupation is done mainly by Dhangar community. The average size of each sheep flock is 25 to 30 Nos. The Dhangar remain in their village from June to October of every year. During this period they depend on rain-fed crops like Bajara, Jawar, Maize, Sunflower etc. on scanty rainfall. The grass cover available on grazing land and on roadsides, riverbeds suffice up to September end and most of the ewes are conceived during this period. After harvesting the Kharif crops, the shaperds start migrating from Pune, Satara, Sangli districts towards Kokan area where sufficient grazing and water is available as also Kharif crop residues. Sheep flocks from Solapur districts migrate towards Marathwada Region in search of fodder and water. Flocks from Aurangabad, Jalna migrate towards forest areas of Dhule and Jalgaon districts. This migration continues up to the May end, after which flocks return to their native villages.



Wool Production

A. Shearing of Wool:

The Sheep of the state grow a coarse type of wool on their bodies. The sheep are shorn twice during a year. The first shearing is done during June & July. The second shearing is done after six months, of the first shearing.

B. Wool production:

Average wool production is 587 gms. The estimated wool production for the state during 2006-2007 was about 1667 M.T.

C. Utilization:

The wool is short staple & rough. Wool is generally used locally for production of Ghongadies (Kamblies) & Jen (Namdas), Barrack Blankets, which are required for military-paramilitary forces. Approximately 20% wool is used locally & 80% wool is purchased by the mill owners of northern states such as Haryana, Punjab for production of barrack blankets.

Amongst all these markets Lonand, Phaltan is important & well-organized markets. These are under the control of Agricultural Produce Marketing Committee. And Wool Marketing through auction sale takes place at these places during wool shearing seasons. In the State at a Lonand market maximum quantity of wool is auctioned annually. At other marketplaces mentioned above wool, marketing takes place during weekly bazaar days. The wool from Mahmud, Sangola of Solapur district and Parali & Dharur area of Beed district fetches more price as a quality of wool from these areas is superior to that produced in other regions of the State.

Conclusion

The educational study tour to the Sheep and Goat Rearing Development Centre provided students with valuable practical knowledge about the economic aspects of sheep and goat farming. It emphasized the role of research centres in promoting sustainable practices and fostering economic development in the livestock sector.

Acknowledgments

We extend our gratitude to the Principal of the College for giving permission and staff, researchers, and farmers at the Sheep and Goat Rearing Development Area, Rajani for their hospitality, knowledge sharing, and support during the educational study tour.

HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.
Department of Economics
List of Students Participating in the Tour



Sr. No.	Name of Student	Mobile No.	Village	Class
1	Koli Aruna Dattatray	9421450883	Ranjani	B.A. III
2	Desai Jyoti Mohan	8857990560	Dhalgaon	B.A. III
3	Patil Vaibhav Vitthal	9011167154	Borgaon	B.A. III
4	Sadamate Sakshi Shantaram	7387664637	Deshing	B.A. III
5	Patole Santosh Ramdas	9075219948	Karoli (T)	B.A. III
6	Pawar Mayuri Bharat	9511968215	Dorli	B.A. III
7	Gaikwad Shamal Sanjay	8421662586	Dafalapur	B.A. III
8	Dhadas Sagar Ramchandra	9545752810	Karoli (T)	B.A. III
9	Hajare Payal Balkrishna	8421850950	Karoli (T)	B.A. III
10	Shinde Nikita Shahaji	9322173191	Shelkewadi	B.A. III
11	Imade Vitthal Balaso	9075819841	Rampurwadi	B.A. III
12	Jagatap Dhanaraj Gorakh	9766197193	Karoli (T)	B.A. III
13	Mulla Arbaj Allabaksh	7741923518	Malangaon	B.A. III
14	Shinde Pratiksha Vasant	9359284575	Kokale	B.A. III
15	Chavan Pratiksha Gulabrao	8390866787	Dhalewadi	B.A. III
16	Desai Pooja Arun	9545824109	Karoli (T)	B.A. III
17	Jagtap Shahaji Ramchandra	9657821164	Deshing	B.A. III
18	Bhosale Siddhi Ashok	9579471495	Ranjani	B.A. III
19	Mohite Nagesh Mohan	8767765603	Rayewadi	B.A. III
20	Mohite Shivam Balaso	9881602762	Rayewadi	B.A. III
21	Phalake Janhavi Adhik	8854360323	Wayafale	B.A. III
22	Pawar Sneha Jagannath	9529349044	Kuchi	B.A. III
23	Sathe Karina Sambhaji	9325118665	Kuchi	B.A. III
24	Patil Rutuja Tatyaso	9356231882	Karoli (T)	B.A. III
25	Pawar Trupti Shahaji	7499689495	K.M.	B.A. III

mna
PRINCIPAL
 Padmabhushan Vasantraodada Patil
 Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasatraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.



DEPARTMENT OF ECONOMICS

REPORT

Date: 11/02/2024

Title	“Study Tour- Konkan / Malvan- A Fish Market, Cashew Factory”
Duration	06/02/2024 to 08/02/2024
Organizer	Department of Economics, P.V.P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Faculty	Mr. K.L.Sakat, Dr. S.P.Solage
Co-ordinator	Mrs. K. L. Sakat (HOD Department of Economics)
No. of Students	25
Background	To equip commerce students with a deep understanding of different geographical business, cultural appreciation, and environmental conservation. Encourage students to actively engage with their surroundings, ask questions, and foster a spirit of curiosity and learning.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. To acquaint students with some basic concepts responsible tourism2. To understand of the different types of business, market classified by cultural appreciation etc.3. To learn about products and markets, customer relationship.4. To learn about cashew making factory, shop outlet etc.
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. To gain some basic knowledge of local Market, entrepreneurship development.2. To learn about various channels of Business and Market.3. To provide hands-on experience in using Cashew factory.4. To learn latest trends in marketing the regional products.
Conclusion	The Courses aim to equip commerce students with a holistic understanding of learning experience of entrepreneurship development skill, learn about Marine life of Malvan, fish market, Cultural immersion in Malvan, highlighting the historical significance, architecture, and strategic importance of the fort, responsible tourism there unique style of business and marketing of products.

HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasatraodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal**

Department of Economics

Notice

Date: - 02/02/2024

All the Student of BA. Economics are informed that Department of Economics Organized. an **“Study Tour- Konkan / Malvan- A Fish Market, Cashew Factory”** on **06/02/2024 to 08/02/2024**. The student must present there 6th February 2024 at Main Gate PVP College by 06.00 am sharp. The student must wear College uniform, College ID Card Covered Shoe and report pen and Notebook. This is the part of Mini Project of our Curriculum.

Please **register their names prior to 5th February 2024** to concern Co-Ordinator Study Tour- Mr. K. L. Sakat (HOD Economics) Mob. 9404704922

HEAD,
Department of Economics
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.
Department of Economics

Date: 05/02/2024

To,
The principal,
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Subject: Permission Request for Study Tour

Respected Sir,

I hope this letter finds you well. I am writing to formally request your permission for 25 students from B.A. Economics to participate in a study tour **organized by Department of Economics**. The purpose of this study tour is to enhance our understanding of Economics through practical exposure and experiential learning. We have planned visits to **Konkan / Malvan- A Fish Market, Cashew Factory** to be Visited where students will have the opportunity to Self-Employment, Self-Business to various sector. This tour aligns closely with our academic curriculum and will provide invaluable educational benefits.

Departure Date: [06/02/2024]

Return Date: [07/02/2024]

Co- ordinating Teachers: **Mr. K. L. Sakat (HOD Department of Economics)**

Estimated Cost per Student: 1500 Rs.

We assure you that all necessary safety precautions will be taken throughout the tour, and students' safety and well-being are our top priority. We will be providing emergency contact numbers for all accompanying teachers, and all students will be under constant supervision. To facilitate this tour, we kindly request your approval and support. Your permission will allow us to proceed with the necessary arrangements and logistics without delay.

Thank you very much for considering this request. We believe this study tour will significantly contribute to our students' overall development and academic growth.

Permission granted

Mundari

-PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist- Sangli

Yours sincerely,

K. L. Sakat
HEAD,

Department of Economics
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.



DEPARTMENT OF ECONOMICS

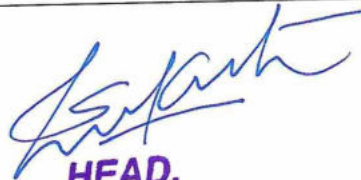
Attendance

“Study Tour- Konkan / Malvan- A Fish Market, Cashew Factory” Date: 06/02/2024

Sr. No.	Name	Class	Signature
1.	Yadav Santosh Duryodhan	T.Y.B.A	YSD
2.	More Arati Savanta	T.Y.B.A	Arati
3.	Patil Rahul Ganpati	T.Y.B.A	Rahul
4.	Deshmukh Vishal Yuvraj	T.Y.B.A	Vishal
5.	Kolekar Amit Avinash	T.Y.B.A	Amit
6.	Malame Rupali Gunda	T.Y.B.A	R.G. Malame
7.	Pawar Sanket Ashok	T.Y.B.A	Sanket
8.	Desai Pratiksha Narayan	T.Y.B.A	Desai
9.	Mulani Tohid Chandulal	T.Y.B.A	mtc
10.	* Daingade Varsha Dasharath	T.Y.B.A	Varsha
11.	*Phonde Monika Krushna	T.Y.B.A	Monika



12.	Malame Utkarsh Shivaji	T.Y.B.A	<u>U.S.M</u>
13.	Mali Onkar Sambhaji	T.Y.B.A	M.O.S.
14.	Bhosale Ranvir Bharat	T.Y.B.A	Bhosale.R.V.
15.	Rajput Nanndkumar Parashram	T.Y.B.A	Rajput..
16.	Chougule Kashiling Sadashiv	T.Y.B.A	K. Chougule
17.	Miraje Onkar Maruti	T.Y.B.A	Onkar
18.	Kavathekar Akash Bharat	T.Y.B.A	Akash
19.	Bansode Monika Nandkumar	S.Y.B.A	MNB
20.	Salunkhe Rohit Balaso	S.Y.B.A	Salunkhe R.B
21.	Sargar Santosh Shidu	S.Y.B.A	S.S
22.	Mulani Swaliya Shahabuddin	S.Y.B.A	M
23.	Patil Arati Sarjerao	S.Y.B.A	S.A.P
24.	Khot Vaishanavi Krushnadev	S.Y.B.A	Khot.V.
25.	Vavare Pratiksha Laxman	S.Y.B.A	Vavare.


HEAD,
Department of Economics.
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli

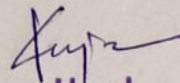


Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Psychology

STUDY TOUR REPORT (2018-19)

Title	Study Tour: Vijapur-Almatti-Kudal Sangam
Duration	25 th January, 2019
Organizer	Department of Psychology, P.V.P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Participants	Teachers: 03, Students: 09, Total: 12
Coordinator	Mr. Vinod Kamble
Background	<p>A psychology study tour typically involves a group of students traveling to various locations to gain hands-on experience and insights into different aspects of psychology. This experiential learning approach allows participants to broaden their perspectives, apply theoretical knowledge to practical situations, and interact with professionals in the field. The tours often incorporate a mix of academic learning, cultural exposure, and networking opportunities to provide a comprehensive educational experience.</p>
Objective	<p>The main aim to enhance participants understanding of psychological concepts by immersing them in real-world settings, such as clinics, research facilities, and cultural contexts.</p>
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. Students have some basic knowledge of different society, culture and diversity.2. Participants gain a deeper understanding of psychological theories and concepts through real-world applications, bridging the gap between theory and practice.3. Exposure to different cultures and societal contexts during the tour can foster cultural competence, helping participants appreciate how psychology is influenced by and contributes to diverse cultural settings.
Conclusion	<p>In conclusion, a psychology study tour offers a transformative experience, blending theoretical knowledge with real-world applications, fostering cultural awareness, and providing networking opportunities. Participants gain practical insights, enhance critical thinking skills, and develop a global perspective, contributing to their personal and professional growth in the field of psychology</p>


Head

Department Of Psychology
P.V.P. Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA

Kavathe Mahankal, Dist. – Sangli (Maharashtra) Pin – 416405

Principal: Dr. Ashok Babar
Website: www.pvpcollegekm.com

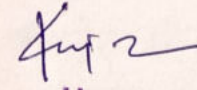
Phone No.: 02341-222014
E-mail: kmpvp@rediffmail.com

PVPMKM/

Date: 21/01/2019

नोटीस

मानसशास्त्र विषयाच्या सर्व विद्यार्थ्यांना सूचित करण्यात येते की, मानसशास्त्र विभागामार्फत एक दिवसीय शैक्षणिक सहल दिनांक 25/01/2019 रोजी विजापूर-अलमट्टी-कुडाळ संगम या ठिकाणी जाणार आहे तरी इच्छुक विद्यार्थ्यांनी आपली नावे प्रा. दिपक सूर्यवंशी यांचेकडे नोंद करावीत.



Head
Department Of Psychology
P.V.P. Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

प्रा. विनोद कांबळे
मानसशास्त्र विभाग
पी. व्ही. पी. महाविद्यालय
कवठे - महाकाव
दि. 24/01/2019



मा. प्राचार्य,
पी. व्ही. पी. महाविद्यालय,
कवठे - महाकाव

विषय - बी. ए. 3 मानसशास्त्र शैक्षणिक सहलीसाठी
परवानगी मिळणेबाबत

महोदय,

महाविद्यालयातील मानसशास्त्र विभागाची शैक्षणिक सहली
दि. 25/01/2019 रोजी विजापूर, अल्मोहा आणि कुडाळ संगम
या ठिकाणी जात आहे. सहलीमध्ये प्रा. विनोद कांबळे, प्रा. दिपक
सूर्यवंशी आणि प्रा. पूनम देशाई तसेच 09 विद्यार्थी जात आहेत.
सहली खाजगी वाहनाने जात आहे. तरी सहलीसाठी परवानगी
मिळवी ही नम्र विनंती.

आपला विश्वासू

सोबत - विद्यार्थी यादी.

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Psychology

STUDY TOUR (2018-19)

Participants List

Sr. No.	Name of the Teacher / Student	Class	Mobile Number
1	Mr. Vinod Kamble	--	9822917283
2	Mr. D. S. Suryavanshi	--	9890536012
3	Miss. P. P. Desai	--	8857876399
4	Dhere Kajal Malhari	B. A. III	8698171918
5	Mohite Vaishali Mohan	B. A. III	9112111059
6	Sabale Vidyashri Vijay	B. A. III	9673966231
7	Sagare Manisha Rajendra	B. A. III	9970132399
8	Jadhav Ankita Anandrao	B. A. III	9011330305
9	Chaudhary Pinkakumari Bhagavanaram	B. A. III	8329268100
10	Chavan Roma Chandrakant	B. A. III	7058754303
11	Mane Sandeep Sakharam	B. A. III	7057043236
12	Sabale Shubham Haridas	B. A. III	7218339585





Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
Department of Psychology
STUDY TOUR REPORT (2021-22)

Title	Study Tour: Panhala-Marleshwar-Ganpatipule
Duration	30 th April, 2022 to 01 st May, 2022
Organizer	Department of Psychology, P.V.P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Participants	Teacher: 01, Students: 08, Total: 09
Coordinator	Dr. Vinod Kamble
Background	<p>A psychology study tour typically involves a group of students traveling to various locations to gain hands-on experience and insights into different aspects of psychology. This experiential learning approach allows participants to broaden their perspectives, apply theoretical knowledge to practical situations, and interact with professionals in the field. The tours often incorporate a mix of academic learning, cultural exposure, and networking opportunities to provide a comprehensive educational experience.</p>
Objective	<p>The main aim to enhance participants understanding of psychological concepts by immersing them in real-world settings, such as clinics, research facilities, and cultural contexts.</p>
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. Students have some basic knowledge of different society, culture and diversity.2. Participants gain a deeper understanding of psychological theories and concepts through real-world applications, bridging the gap between theory and practice.3. Exposure to different cultures and societal contexts during the tour can foster cultural competence, helping participants appreciate how psychology is influenced by and contributes to diverse cultural settings.
Conclusion	<p>In conclusion, a psychology study tour offers a transformative experience, blending theoretical knowledge with real-world applications, fostering cultural awareness, and providing networking opportunities. Participants gain practical insights, enhance critical thinking skills, and develop a global perspective, contributing to their personal and professional growth in the field of psychology</p>

Head

Department Of Psychology
P.V.P. Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA

Kavathe Mahankal, Dist. – Sangli (Maharashtra) Pin – 416405

Acting Principal: Prof. Dr. M. K. Patil
Website: www.pvpcollegekm.com

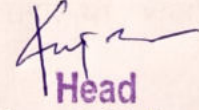
Phone No.: 02341-222014
E-mail: kmpvp@rediffmail.com

PVPMKM/

Date: 25/04/2022

नोटीस

मानसशास्त्र विषयाच्या सर्व विद्यार्थ्यांना सूचित करण्यात येते की, मानसशास्त्र विभागामार्फत दोन दिवसीय शैक्षणिक सहल दिनांक 30/04/2022 ते 01/05/2022 रोजी पन्हाळा-मार्लेश्वर-गणपतीपुळे या ठिकाणी जाणार आहे तरी इच्छुक विद्यार्थ्यांनी आपली नावे प्रा. डॉ. विनोद कांबळे यांचेकडे नोंद करावीत.



Head
Department Of Psychology
P.V.P. Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli



PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA
KAVATHE MAHANKAL, Dist. Sangli (Maharashtra) Pin- 416 405
Acting Principal Prof. (Dr.) M.K.Patil M.Sc., M.Phil., Ph.D. Mob. 9405649190
Phone- 02341-295220 Email : kmpvp@rediffmail.com Website : www.pvpkm.ac.in
Jr. College Index No. J 22.04.002

RefNo. PVPKM/ 2021-22/ 535

Date : 29/04/2022

प्रति,
डॉ. विनोद दिलीप कांबळे
सहाय्यक प्राध्यापक, मानसशास्त्र विभाग

विषय : शैक्षणिक सहलीस परवानगीबाबत.....

संदर्भ : आपला दि. २९/४/२०२२ रोजीचा अर्ज

आपले दि. २९/४/२०२२ रोजीच्या अर्जास अनुसरून कळविणेत येते की वरिष्ठ महाविद्यालयाच्या मानसशास्त्र विभागाकडील विद्यार्थ्यांच्या दि. ३०/४/२०२२ ते १/५/२०२२ या कालावधीत गणपतीपुळे-रत्नागिरी येथे जाणा-या शैक्षणिक सहलीस खालील अटी व शर्तीनुसार मान्यता देण्यात येत आहे.

१. सहलीकरीता मान्यताप्राप्त (Permitted) वाहनानेच प्रवास करावा.
२. सुरक्षा व अन्य आवश्यक मुद्यांसह विद्यार्थी/पालक यांचेकडून लेखी हमीपत्र घ्यावे.

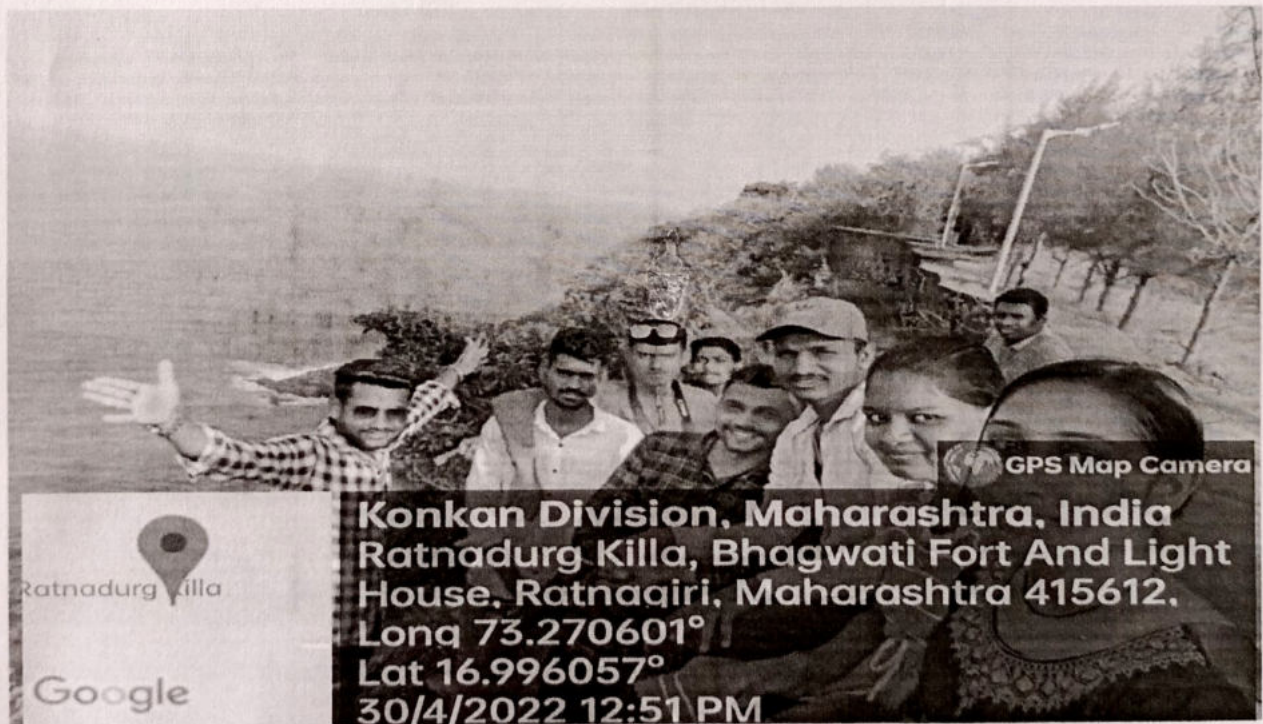
आपला,

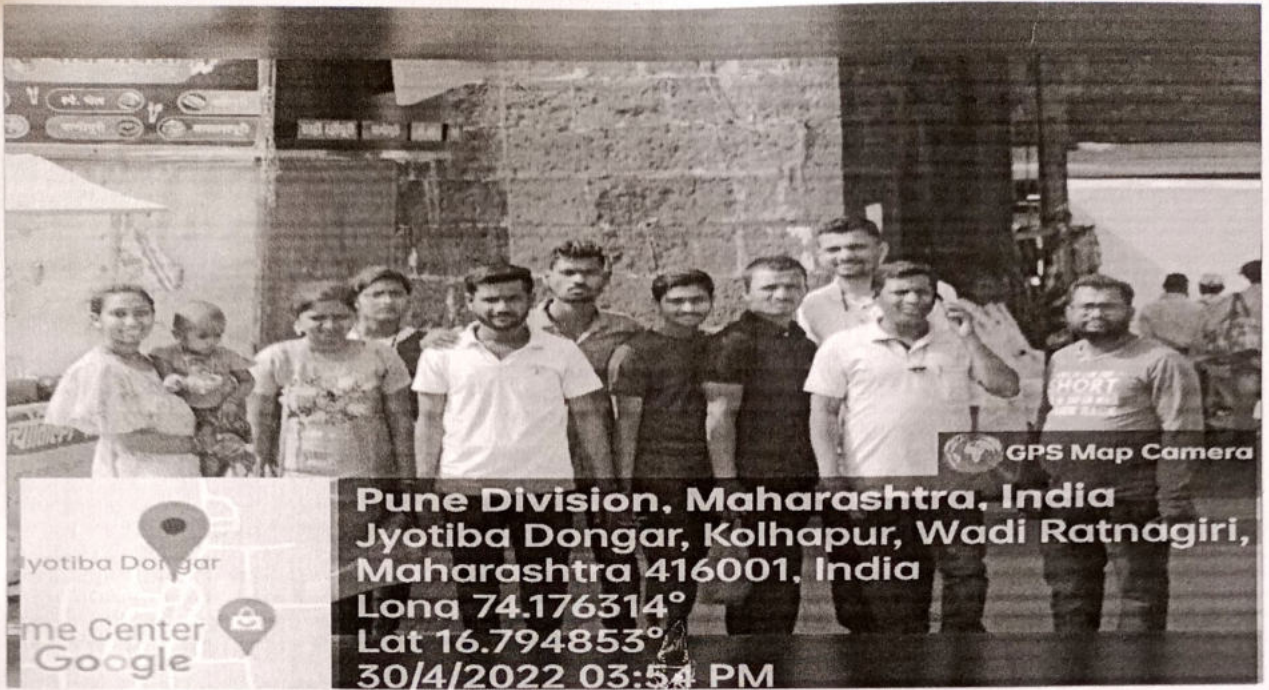
प्रभारी प्राचार्य

पद्मभूषण वसंतशवदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहाकाळ .जि .सांगली

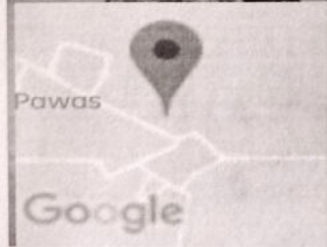
Department of Psychology

Study Tour 2021-22





Pune Division, Maharashtra, India
Jyotiba Dongar, Kolhapur, Wadi Ratnagiri,
Maharashtra 416001, India
Long 74.176314°
Lat 16.794853°
30/4/2022 03:54 PM



Konkan Division, Maharashtra, India
Pawas, Maharashtra 415616, India
Long 73.329604°
Lat 16.872677°
1/5/2022 10:56 PM



पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाळ,
जि. सांगली

मानसशास्त्र विभाग

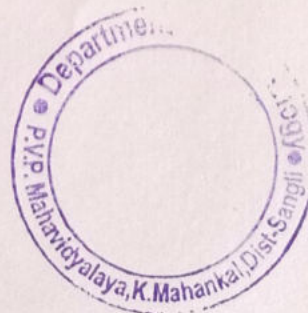
शैक्षणिक सहल अहवाल

बी.ए. मानसशास्त्र अभ्यासक्रमामध्ये सामाजिक मानसशास्त्र, आंतरसांस्कृतिक मानसशास्त्र हे विषय अंतर्भूत आहेत. विद्यार्थ्यांना व्यक्तींच्या व्यक्तिगत, सामाजिक आणि सांस्कृतिक वर्तनाची माहिती व्हावी आणि त्यांनी त्यांच्या जीवनामध्ये या माहितीचा उपयोग करावा हा उद्देश सदर विषय ठेवण्यामध्ये आहे. महाविद्यालयामध्ये सदर वर्तनाच्या पैलूंची माहिती सैद्धांतिक पद्धतीने दिली जाते. परंतु विद्यार्थ्यांना वेगळ्या भौगोलिक क्षेत्रातील व्यक्तींचे सामाजिक वर्तन आणि सांस्कृतिक भिन्नतेचा त्यांच्या वर्तनावर होणारा प्रभाव यांचा प्रत्यक्ष अभ्यास करता यावा यासाठी मानसशास्त्र विभागातील विद्यार्थ्यांसाठी शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करण्यात आले होते. सदर शैक्षणिक सहल दिनांक ३०/०४/२०२२ ते ०१/०५/२०२२ या कालावधीत मार्लेश्वर, पावस, गणपतीपुळे, रत्नागिरी या कोकण विभागातील ठिकाणी आयोजित करण्यात आली. या सहलीमध्ये मानसशास्त्र विभागातील एकूण १० विद्यार्थी-विद्यार्थिनी व १ शिक्षक यांनी सहभाग घेतला.

सहलीची उद्दिष्टे:

१. कोकण विभागातील लोकांचे सामाजिक वर्तन समजून घेणे.
२. कोकणी संस्कृतीचा लोकांच्या वर्तनावर होणारा प्रभाव अभ्यासणे.
३. कोकण विभाग आणि पश्चिम महाराष्ट्र विभागामधील लोकांची वर्तनाच्या विविध पैलूंवर तुलना करणे.

वरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेसाठी विद्यार्थ्यांनी कोकण विभागातील विविध ठिकाणी भेटी दिल्या. तेथील लोकांशी सुसंवाद साधला, त्यांच्या सोबत विविध विषयावर चर्चा केली. यामुळे तेथील सामाजिक रीती-रिवाज, परंपरा विद्यार्थ्यांना समजल्या. तसेच यामुळे त्यांच्या वर्तनावर पडलेला प्रभाव देखील समजला. विद्यार्थ्यांनी कोकणी संस्कृती जाणून घेतली. या संस्कृतीमधील विविध पैलू, त्यांचा व्यक्तींच्या वर्तनावर होणारा प्रभाव तसेच पश्चिम महाराष्ट्र आणि कोकण या भागात राहणाऱ्या लोकांच्या वर्तनातील भेद समजून घेतला.



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Psychology

STUDY TOUR (2021-22)

Participants List

Sr. No.	Name of the Teacher / Student	Class	Mobile Number
1	Dr. Vinod Kamble	--	9822917283
2	Chavan Rakesh Ramesh	B. A. III	9503779352
3	Bandgar Shivani Tukaram	B. A. III	8208795298
4	Mane Pradip Ramdas	B. A. III	9673633191
5	Kumbhar Mayuri Shashikant	B. A. III	9130377595
6	Shinde Mukund	B. A. III	8805239975
7	Desai Sourabh	B. A. II	7758066012
8	Shelake Nikhil	B. A. II	9561784617
9	Nikam Pratik	B. A. II	7028645015



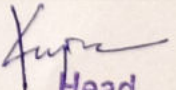


Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Psychology

STUDY TOUR REPORT (2022-23)

Title	Study Tour: Pavankhind-Ganpatipule-Sindhudurg
Duration	23 th March, 2023 to 25 th March, 2023
Organizer	Department of Psychology, P.V.P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Participants	Teachers: 03, Students: 16, Total: 19
Coordinator	Dr. Vinod Kamble
Background	<p>A psychology study tour typically involves a group of students traveling to various locations to gain hands-on experience and insights into different aspects of psychology. This experiential learning approach allows participants to broaden their perspectives, apply theoretical knowledge to practical situations, and interact with professionals in the field. The tours often incorporate a mix of academic learning, cultural exposure, and networking opportunities to provide a comprehensive educational experience.</p>
Objective	<p>The main aim to enhance participants understanding of psychological concepts by immersing them in real-world settings, such as clinics, research facilities, and cultural contexts.</p>
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. Students have some basic knowledge of different society, culture and diversity.2. Participants gain a deeper understanding of psychological theories and concepts through real-world applications, bridging the gap between theory and practice.3. Exposure to different cultures and societal contexts during the tour can foster cultural competence, helping participants appreciate how psychology is influenced by and contributes to diverse cultural settings.
Conclusion	<p>In conclusion, a psychology study tour offers a transformative experience, blending theoretical knowledge with real-world applications, fostering cultural awareness, and providing networking opportunities. Participants gain practical insights, enhance critical thinking skills, and develop a global perspective, contributing to their personal and professional growth in the field of psychology</p>


Head

Department Of Psychology
P.V.P. Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA

Kavathe Mahankal, Dist. – Sangli (Maharashtra) Pin – 416405

Acting Principal: Prof. Dr. M. K. Patil

Website: www.pvpcollegekm.com

Phone No.: 02341-222014

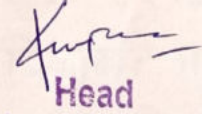
E-mail: kmpvp@rediffmail.com

PVPMKM/

Date: 17/03/2023

नोटीस

मानसशास्त्र विषयाच्या सर्व विद्यार्थ्यांना सूचित करण्यात येते की, मानसशास्त्र विभागामार्फत तीन दिवसीय शैक्षणिक सहल दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 रोजी पावनखिंड-गणपतीपुळे-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जाणार आहे तरी इच्छुक विद्यार्थ्यांनी आपली नावे प्रा. दिपक सूर्यवंशी यांचेकडे नोंद करावीत.



Head

Department Of Psychology

P.V.P. Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

मानसशास्त्र विभाग
पी. व्ही. पी. महाविद्यालय,
कवठे-महाराष्ट्र
दि. 21/03/2023

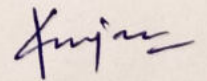
मा. प्राचार्य,
पी. व्ही. पी. महाविद्यालय,
कवठे-महाराष्ट्र

विषय - शैक्षणिक सहलीसाठी परवानगी
मिळणेबाबत.

महोदय,

महाविद्यालयातील मानसशास्त्र विभागाची शैक्षणिक
सहल दि. 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान
गंगापतीपुळे - रत्नागिरी - सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे.
सहलमध्ये प्रा. विनोद कांबळे, प्रा. दिपक सूर्यवंशी आणि
प्रा. पूनम देसाई तसेच 16 विद्यार्थी जात आहेत. सहल
खाजगी वाहनाने (Tempo Traveller - MH-10 CR 6253) जात
आहे. तरी सहलीसाठी परवानगी मिळावी ही नम्र विनंती.

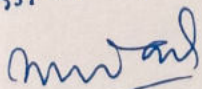
आपला विश्वासू,



(प्रा. विनोद कांबळे)

सोबत - विद्यार्थी यादी

Permission granted.

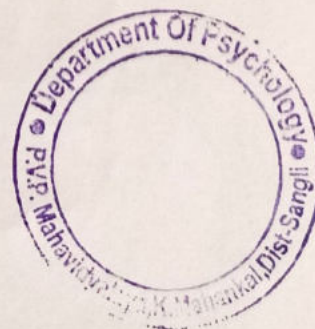


21/03/23
प्रकाश प्राचार्य

पद्मसुश्री वसंतसखाराम शशील महाविद्यालय
कवठे-महाराष्ट्र जि. सांगली.

विद्यार्थी यादी

विद्यार्थ्यांचे नाव	वर्ग
1) विश्वजीत आनंदा हंकारे	B.A.-III (Psy.)
2) आकांक्षा जिनेंद्र साबळे	— I —
3) पल्लवी परशुराम वाधमारे	— II —
4) सलोनी अधिकराव देमरे	— II —
5) खेजल सावंता मोने	— II —
6) घनाजी शहाजी फोंडे	— II —
7) महेश राजेंद्र पोळ	— II —
8) सोमनाथ रायलिंग मेनगुदले	— II —
9) अनिकेत श्रीकांत खोते	B.A.-III (Eco.)
10) समाधान प्रभाकर सातपुते	— I —
11) शहाजी रामचंद्र जगताप	— I —
12) आरती सावंता मोरे	B.A.-II
13) अनिकेत पांडुरंग शिर्के	— I —
14) सानिया महेश हातेकर	B.A.-I
15) प्रांजली अंकुश निकम	11 th Arts
16) कशिश वाळकृष्ण वाधमारे	— I —



Department of Psychology

Study Tour 2023

Vijaydurg Fort



GPS Map Camera

Vijaydurg

Google

Konkan Division, Maharashtra, India
Vijaydurg, Maharashtra, India
Long 73.335386°
Lat 16.551879°
25/3/2023 01:23 AM

Panhala Fort

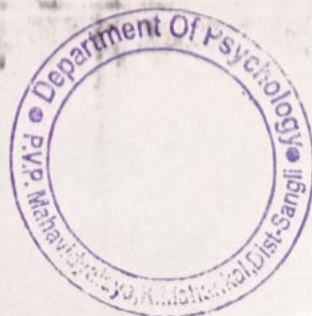


GPS Map Camera

Panhala

Google

Pune Division, Maharashtra, India
Panhala, Maharashtra, India
Long 74.11812°
Lat 16.810687°
23/3/2023 11:20 AM





GPS Map Camera
Konkan Division, Maharashtra, India
Ganpatipule, Maharashtra 415615, India
Long 73.272695°
Lat 17.148866°
24/3/2023 10:23 AM



GPS Map Camera
Konkan Division, Maharashtra, India
Vijaydurg, Maharashtra, India
Long 73.335386°
Lat 16.551879°
25/3/2023 01:26 AM



**Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal Dist. Sangli**

Department of Psychology

Study Tour Report: 2022-23 (शैक्षणिक सहल अहवाल)

बी. ए. मानसशास्त्र अभ्यासक्रमामध्ये सामाजिक मानसशास्त्र, आंतरसांस्कृतिक मानसशास्त्र हे विषय अंतर्भूत आहेत. विद्यार्थ्यांना व्यक्तींच्या व्यक्तिगत, सामाजिक आणि सांस्कृतिक वर्तनाची माहिती व्हावी आणि त्यांनी त्यांच्या जीवनामध्ये या माहितीचा उपयोग करावा हा उद्देश सदर विषय ठेवण्यामध्ये आहे. महाविद्यालयामध्ये सदर वर्तनाच्या पैलूंची माहिती सैद्धांतिक पद्धतीने दिली जाते. परंतु विद्यार्थ्यांना वेगळ्या भौगोलिक क्षेत्रातील व्यक्तींचे सामाजिक वर्तन आणि सांस्कृतिक भिन्नतेचा त्यांच्या वर्तनावर होणारा प्रभाव यांचा प्रत्यक्ष अभ्यास करता यावा यासाठी मानसशास्त्र विभागातील विद्यार्थ्यांसाठी शैक्षणिक सहलीचे आयोजन करण्यात आले होते. सदर शैक्षणिक सहल दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 या कालावधीत पावनखिंड, गणपतीपुळे, रत्नागिरी, विजयदुर्ग आणि सिंधुदुर्ग या कोकण विभागातील ठिकाणी आयोजित करण्यात आली. या सहलीमध्ये मानसशास्त्र विभागातील एकूण 16 विद्यार्थी-विद्यार्थिनी व 03 शिक्षक यांनी सहभाग घेतला.

सहलीची उद्दिष्टे:

1. कोकण विभागातील लोकांचे सामाजिक वर्तन समजून घेणे.
2. कोकणी संस्कृतीचा लोकांच्या वर्तनावर होणारा प्रभाव अभ्यासणे.
3. कोकण विभाग आणि पश्चिम महाराष्ट्र विभागामधील लोकांची वर्तनाच्या विविध पैलूंवर तुलना करणे.

वरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेसाठी विद्यार्थ्यांनी कोकण विभागातील विविध ठिकाणी भेटी दिल्या. तेथील लोकांशी सुसंवाद साधला, त्यांच्या सोबत विविध विषयावर चर्चा केली. यामुळे तेथील सामाजिक रीती-रिवाज, परंपरा विद्यार्थ्यांना समजल्या. तसेच यामुळे त्यांच्या वर्तनावर पडलेला प्रभाव देखील समजला. विद्यार्थ्यांनी कोकणी संस्कृती जाणून घेतली. या संस्कृतीमधील विविध पैलू, त्यांचा व्यक्तींच्या वर्तनावर होणारा प्रभाव तसेच पश्चिम महाराष्ट्र आणि कोकण या भागात राहणाऱ्या लोकांच्या वर्तनातील भेद समजून घेतला.



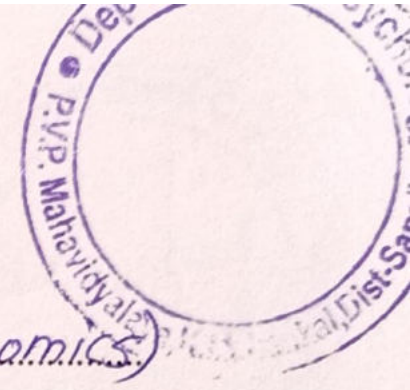
संमती पत्र

मी, जगताप शहाजी रामचंद्र वर्ग B.A. III (Economics)
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - शहाजी

विद्यार्थ्याचे नाव - जगताप शहाजी रामचंद्र

वर्ग - B.A. III (Economics)





संमती पत्र

मी, खोत अनिकेत शिर्कात वर्ग B.A. III Economics
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र
विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान
गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात
असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि
महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही -

विद्यार्थ्याचे नाव - अनिकेत खोत

वर्ग - B.A. III ,

संमती पत्र



मी, मोरे आरती सांवता वर्ग BA II

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महांकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - A.S.MORE

विद्यार्थ्याचे नाव - मोरे आरती

वर्ग - BA, II



संमती पत्र

मी, आकांक्षा जितेंद्र साबळे..... वर्ग BA III मानसशास्त्र-71

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही -

विद्यार्थ्याचे नाव - आकांक्षा जितेंद्र साबळे

वर्ग - BA III



संमती पत्र

मी, पुल्लवी परशराम वाघमारे वर्ग BA III मानसशास्त्र

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - P. P. Waghmare.

विद्यार्थ्याचे नाव - पुल्लवी परशराम वाघमारे

वर्ग - BA III

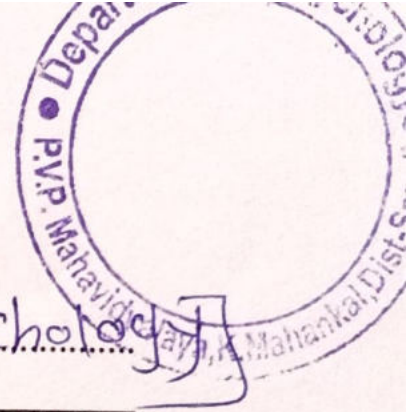
संमती पत्र

मी, पीळ महेश राजेंद्र वर्ग BA-III [Psychology]
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र
विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान
गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात
असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि
महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - [Signature]

विद्यार्थ्याचे नाव - पीळ महेश राजेंद्र

वर्ग - [Psychology] - BA-III





संमती पत्र

मी, सलोनी बाधीकराव हेमरे वर्ग B.A. III

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - Alhemore

विद्यार्थ्याचे नाव - सलोनी बाधीकराव हेमरे

वर्ग - B.A. III

संमती पत्र

मी, विश्वजीत झानंदा हंकोरे वर्ग T.Y. B.A

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - शिकार

विद्यार्थ्याचे नाव - विश्वजीत झानंदा हंकोरे

वर्ग - T.Y. B.A



संमती पत्र

मी, शानिया मेश हतेकर वर्ग FY - BA

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - Shatekar

विद्यार्थ्याचे नाव - शानिया मेश हतेकर

वर्ग - FY - BA

संमती पत्र



मी, प्रियांका सगरिव पाटिल वर्ग Sy-B.A

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - Patil

विद्यार्थ्याचे नाव - प्रियांका सगरिव पाटिल

वर्ग - Sy-B.A

संमती पत्र

मी, अनिकेत पांडुरंग शिर्के वर्ग B.A. II

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - Aniket

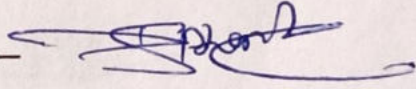
विद्यार्थ्याचे नाव - अनिकेत शिर्के

वर्ग - B.A. II



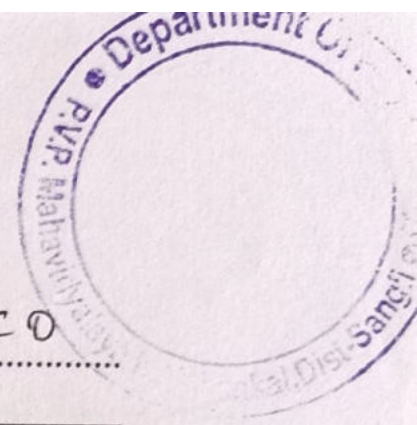
संमती पत्र

मी, खनाली शहाली फेडे वर्ग T.Y.B.A.
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र
विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान
गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात
असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि
महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - 
विद्यार्थ्याचे नाव - खनाली शहाली फेडे
वर्ग - T.Y.B.A.



संमती पत्र



मी, समाधान प्रभाकर सातपुते वर्ग TY.B-A.Eco
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र
विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान
गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात
असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि
महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - SSK

विद्यार्थ्याचे नाव - समाधान प्रभाकर सातपुते

वर्ग - TY BA Eco

संमती पत्र



मी, शोभनाथ राचलिंग म्हेनगुदले वर्ग B.A - III
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मी, मानसशास्त्र
विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान
गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात
असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि
महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - गोखले

विद्यार्थ्याचे नाव - शोभनाथ राचलिंग म्हेनगुदले.

वर्ग - B.A. III



संमती पत्र

मी, सेजल सावंता मजरे वर्ग BA III
पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय, कवठे महाकाळ मध्ये शिकत आहे. मानसशास्त्र विभागाच्या वतीने आयोजित शैक्षणिक सहलीसाठी दिनांक 23/03/2023 ते 25/03/2023 दरम्यान गणपतीपुळे-रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग या ठिकाणी जात आहे. सदर सहलीसाठी मी माझ्या जबाबदारीवर जात असून सहली दरम्यान कोणताही अनुचित प्रकार घडलेस त्यासाठी शिक्षक, महाविद्यालय आणि महाविद्यालयाशी संबंधित कोणीही व्यक्ती जबाबदार राहणार नाही म्हणून लिहून दिले संमती पत्र.

सही - Sejal Sawant

विद्यार्थ्याचे नाव - सेजल सावंता मजरे

वर्ग - BA III

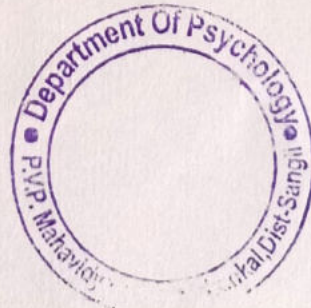
Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Psychology

STUDY TOUR (2022-23)

Participants List

Sr. No.	Name of the Teacher / Student	Class	Mobile Number
1	Dr. Vinod Kamble	--	9822917283
2	Mr. D. S. Suryavanshi	--	9890536012
3	Miss. P. P. Desai	--	8857876399
4	Sabale Akanksha Jitendra	B. A. III	7028495618
5	Mane Swejal Savanta	B. A. III	7666863368
6	Bhosale Aishwarya Arun	B. A. III	9373325148
7	Mengudle Somnath Rachling	B. A. III	9145114857
8	Dhemare Saloni Adhikrao	B. A. III	8010307721
9	Waghmare Pallavi Parashuram	B. A. III	9561935024
10	Hankare Vishwajit Ananda	B. A. III	9156410843
11	Pol Mahesh Rajendra	B. A. III	7058610697
12	Phonde Dhanaji Shahaji	B. A. III	8830912767
13	Khot Aniket Shrikant	B. A. III	9370541768
14	Satpute Samadhan Prabhakar	B. A. III	7020674256
15	Jagtap Shahaji Ramchandra	B. A. II	9657821164
16	Shirke Aniket Pandurang	B. A. II	9168467501
17	More Aarti Savanta	B. A. II	7517638933
18	Patil Priyanka Sadashiv	B. A. II	9036216874
19	Hatekar Saniya Mahesh	B. A. I	9359812309



**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankai**

DEPARTMENT OF ENGLISH

STUDY TOUR

- 1. Visit to Vidhan Bhavan Maharashtra
& TISS, Mumbai
(From 22/02/23 to 24/02/203)**
- 2. Industrial Visit to Infosys, Hinjewadi
Campus, Aurangabad, Daulatabad
Fort Veral Caves
(From 20/01/2024 to 22/01/2024)**

**Academic Year
2022-2023 & 2023-2024**

**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal**

**DEPARTMENT OF ENGLISH
&
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE**

Date: 02/02/2023


To,
The Principal,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, KavatheMahankal

Subject: Permission for Educational Excursion at Tata
Institute of Social Science


Respected Sir,

To enhance the research ability and acknowledge the research culture of Undergraduate students of our institution **Department of English & Department of Political Science** has decided to organize **Educational Excursion at Tata Institute of Social Science Mumbai Campus during 22nd February to 24 February, 2023**. For the aforesaid educational excursion earlier, we have contacted and received permission from TISS authority through e-mail.

For the said educational excursion Mr. Nitish Shinde, Department of English & Mr. Shrikant Phakade, Department of Political Science will be co-ordinating the entire Excursion. In addition, Miss. Rupali Waghmare, Department of English & Mr. Nishikant Waghmare, Department of Political Science assisting for same.


Mr. Kamble S. S.
Head
Department of English,
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe-Mahankal.




Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal

Date: 03/02/2023

NOTICE

All the students of **Department of English & Department of Political Science** are hereby informed that, both Departments have decided to organize **Educational Excursion at Tata Institute of Social Science Mumbai Campus during 22nd February to 24 February, 2023**. The students who are interested in this Educational Excursion, please **register their names prior to 10th February 2023** to concern co-ordinator for further details.


Co-ordinators:

Department of English
Nitish P. Shinde: 7887340400

Department of Political Science
Shrikant N. Phakade: 9763873900


Mr. Kamble S. S.

Head,
Department of English
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe-Mahankal.


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya KavatheMahankal

Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli



**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathemahankal**

**DEPARTMENT OF ENGLISH
&
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE**

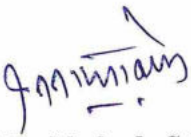



List of Students Department of English

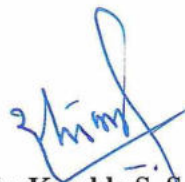
Sr. No.	Name of Student	Class
1	Miss. Sujata Kakaso Mote	B. A. I
2	Miss. Pratiksha Ramesh Chavan	B. A. I
3	Miss. Snehal Vijay Mali	B. A. I
4	Miss. Pajakta Adhikrao Dhole	B. A. I
5	Mr. Shilyug Rajendra Kamble	B.A. II
6	Mr. Abhishek Shrishal Koshti	B.A. II
7	Mr. Hasan Nabilal Tamboli	B.A. II
8	Miss. Sayali Sanjay Bhosale	B.A. III
9	Mr. Satyajeet Sureshrao Borade	B.A. III
10	Miss. Supriya Mohan Pawar	B.A. III
11	Miss. Vidya Dayanand Kamble	B.A. III


List of Students Department of Political Science

Sr. No.	Name of Student	Class
1	Miss. Priyanka Manohar Mulik	B.A. III
2	Miss. Dhanashri Nitin Chavan	B.A. III
3	Miss. Prerana Bajirao Jadhav	B.A. III
4	Mr. Sanket Sandip Irale	B.A. III
5	Mr. Avinash Rajesh Khot	B.A. III
6	Mr. Biru Vitthal Waghmode	B.A. III
7	Miss. Payal Jayawant Bhandare	B.A. III
8	Miss. Yashasri Suresh Mane	B.A. III
9	Miss. Akaksha Manik Patil	B. A. III
10	Miss. Vaishnavi Satish Patil	B.A. III


Mr. Phakade S. N.
Co-Ordinator


Mr. Shinde N. P.
Co-Ordinator


Mr. Kamble S. S.
Head
Head
Department of English,
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe-Mahankal,


Prof. (Dr.) M. K. Patil
Principal
Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathemahankal

Department of English

&

Department of Political Science

STUDENT LIST DEPARTMENT OF ENGLISH



Sr. No.	Name of Student	Class
1	Shilyug Kamble	B.A.-II
2	Abhishek Koshti	B.A.-II
3	Snehal Mali	B.A.-I
4	Pajakta Dhole	B.A.-I
5	Satyajeet Borade	B.A.-III
6	Pratiksha Chavan	B.A.-I
7	Supriya Pawar	B.A.-III
8	Vidya Kamble	B.A.-III
9	Sujata Mote	B.A.-I
10	Sayali Bhosale	B.A.-III
11	Hasan Tamboli	B.A.-II

STUDENT LIST DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Sr. No.	Name of Student	Class
1	Priyanka Mulik	B.A.-III
2	Dhanashri Chavan	B.A.-III
3	Prerana Jadhav	B.A.-III
4	Sanket Irale	B.A.-III
5	Avinash Khot	B.A.-III
6	Biru Waghmode	B.A.-III
7	Payal Bhandare	B.A.-III
8	Yashasri Mane	B.A.-III
9	Akaksha Patil	B.A.-III
10	Vaishanvi Patil	B.A.-III


Head
Department of English,
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe-Mahankal.


Acting Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli



PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA

KAVATHE MAHANKAL, Dist. Sangli (Maharashtra) Pin- 416 405

Acting Principal Prof. (Dr.) M.K.Patil M.Sc., M.Phil., Ph.D. Mob. 9405649190

Phone- 02341-295220 Email : kmpvp@rediffmail.com Website : www.pvpkm.org

Jr. College Index No. J 22.04.002

Ref No. PVPMKM/ 2022/23/1105

Date : 07/02/2023

प्रति,
मा. प्रधान सचिव
महाराष्ट्र विधान भवन,
मुंबई

विषय : विधीमंडळ भेटीस परवानगी मिळणेबाबत

महोदय,

उपरोक्त विषयास अनुसरून विधीमंडळ व तेथील निरनिराळ्या विभागातील कामकाजाविषयीची माहिती विद्यार्थ्यांना होणेसाठी आमचे महाविद्यालयातील राज्यशास्त्र व इंग्रजी विभागातील २८ विद्यार्थी व ४ शिक्षकांची विधीमंडळ अभ्यासविषयक एक दिवशीय अभ्यास भेट दि. २३/२/२०२३ रोजी नियोजित करण्याचा आमचा मानस आहे. तरी आम्हांस विधीमंडळ भेटीस परवानगी मिळावी, ही विनंती.

आह्मि विष्किस
प्रमारी प्राचार्य

पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय
कवठेमहाकाळ, सांगली.



eg. permission and details of campus visit

message

ad. Vasantao Dada Patil Mahavidyalaya KAVATHE MAHANKAL <kvt95.cl@unishivaji.ac.in>

Fri, Feb 3, 2023 at 1:01 P

x: prachi.todankar@tiss.edu

c: sheelar@tiss.edu

cc: bipinj@tiss.edu

Respected Mam,

Thank you very much for your reply and permission to visit your campus.

I hereby inform you that total number of 26 students and 4 faculty members will be visiting your campus on 22nd February 2023.

Thank you for your generous offer regarding lunch at your campus. We will be delighted to have lunch at your campus at our own bills.

Hereby I also like to inform you that for the aforesaid Educational Excursion Mr. Nitish Shinde, Assistant Professor, Department of English (npsshinde630@gmail.com) (7887340400) & Mr. Shikant Phakade, Assistant Professor, Department of Political Science (shrikantphakade50@gmail.com) (9763873900) are appointed as co-ordinator from our side.

As we are travelling more than 500km at night of 21/02/2023 please let us know about freshen up arrangements in the morning of 22/02/2023 (if you are able to provide in any hostel or anything that you can arrange please let us know about it.).



rediffmail

Mailbox of kmpvp

Subject: Letter from P.V.P. Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

From: PVP College Kavathe Mahankal<kmpvp@rediffmail.com> on Wed, 15 Feb 2023 13:48:12

To: "psec.legislature@maharashtra.gov.in"<psec.legislature@maharashtra.gov.in>

1 attachment(s) - Letter.pdf (73.54KB)

Sir

Please see attachment and do the needful.

From -
Acting Principal
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal,
Dist. Sangli



Subject: Report of Academic Visit

From: PVP College Kavathe Mahankal<kmpvp@rediffmail.com> on Wed, 08 Mar 2023 13:33:28

To: "pseclegislature"<psec.legislature@maharashtra.gov.in>

Cc: "mkpatilstats"<mkpatil.stats@gmail.com>,"kambleshivaji1666"<kambleshivaji1666@gmail.com>,"shrikantphakade50@gmail.com"<shrikantphakade50@gmail.com>,"npshinde630@gmail.com"<npshinde630@gmail.com>

1 attachment(s) - Report_of_Academic_Visit.pdf (1.14MB)

Sir

Please see attachment and do the needful.

From -
Acting Principal
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal,
Dist. Sangli



Academic Visit Report

message

Pad. Vasantao Dada Patil Mahavidyalaya KAVATHE MAHANKAL <kvt95.cl@unishivaji.ac.in>

Wed, Mar 8, 2023 at 1:37 P

To: bipinj@tiss.edu

Cc: sheelar@tiss.edu, prachi.todankar@tiss.edu


cc: "mkpatil.stats" <mkpatil.stats@gmail.com>, shrikantphakade50@gmail.com, "kambleshivaji1666@gmail.com"

kambleshivaji1666@gmail.com>, "npshinde630@gmail.com" <npshinde630@gmail.com>

Sir

Please see attachment and do the needful.

From
Acting Principal
P V Patil Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal
Dist. Sangli

 Academic Visit Report.pdf
64K





08/03/2023

ACADEMIC VISIT REPORT

Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal's Department of Political Science and Department of English paid an educational visit to Tata Institute of Social Science, Mumbai on Wednesday, 22/02/2023. During this visit to Tata Institute of Social Science, Mumbai's, School for Social Work Centre's Professor Dr. Biswaranjan Tripura interacted with the students by informing them about Tata Institute's various academic courses, projects, field projects and the institute's contribution through research on fundamental social issues.

Along with regular college curricula, the purpose of this visit is to introduce the research in the humanities department by broadening the student's social life. In addition, Assistant Registrar, Academic Section, Mrs. Sheela Rajendra, Program Co-ordinator Miss. Aditi Mishra and Prachi Todankar organized a field trip in various departments in the campus. There is no doubt that the students of the college will benefit from the educational visit. The college is grateful for your cooperation and valuable time for this visit.

Co-ordinator
Mr. Phakade S. N.

Co-ordinator
Mr. Shinde N. P.

Head
Mr. Kamble S. S.

Principal
Prof. (Dr.) M. K. Patil
Acting Principal

HEAD,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal,
Dist-Sangli.





08/03/2023

ACADEMIC VISIT REPORT

Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal's Department of Political Science and Department of English of paid an educational visit to Vidhan Bhavan Mumbai on Wednesday, 22/02/2023. The purpose of the visit is to make the students aware of the nature, structure, functioning and decision-making process of the two houses of the Panchayat Raj along with the regular academic curricula.

During the visit at Vidhan Bhawan, Principal Secretary Hon. Rajendra Bhagwat, Director, Nilesh Madane and Chamber Officer Minal Bhadekar gave detailed information about the nature, structure, functioning and decision-making process of both the Houses of Vidhan Sabha and Vidhan Parishad. There is no doubt that the students of the college will benefit from the educational visit. The college is grateful for your cooperation and valuable time for this visit.

Co-ordinator
Mr. Phakade S. N.

Co-ordinator
Mr. Shinde N. P.

Head
Mr. Kamble S. S.

Principal
Prof. (Dr.) M. K. Patil
Acting Principal

HEAD,
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli.






०८/०३/२०२३


शैक्षणिक भेट अहवाल

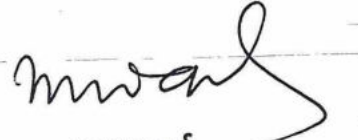
दिनांक, २२/०२/२०२३ रोजी पद्मभूषण वसंतदादा पाटील महाविद्यालय कवठेमहंकाळ येथील, राज्यशास्त्र आणि इंग्रजी अधिविभागातील विद्यार्थी आणि शिक्षकांनी विधानभवन मुंबई येथे शैक्षणिक भेट दिली. महाविद्यालयीन शिक्षणाबरोबरच विद्यार्थ्यांच्या सामाजिक आणि राजकीय कक्षा रुंदावल्या जावून एक गुणवत्ताधारक विद्यार्थी व संवेदनशील नागरिक म्हणून महाविद्यालयाच्या विद्यार्थ्यांना भारतीय पंचायतराज स्वरूप, रचना, कामकाज आणि दोन्ही सभागृहाची निर्णयप्रक्रिया ओळख व्हावी असा या भेटीचा उद्देश सफल झाल्याचे दिसून येते.

विधान भवन येथील भेटीदरम्यान प्रधान सचिव मा. राजेंद्र भागवत, संचालक, निलेश मदाने आणि कक्ष अधिकारी मिनल भडेकर यांनी विधान सभा आणि विधान परिषद यांचे स्वरूप, रचना, कामकाज आणि दोन्ही सभागृहाची निर्णयप्रक्रिया याबद्दल सविस्तर माहिती दिली. शैक्षणिक भेटीचा उपयोग महाविद्यालयाच्या विद्यार्थ्यांना होईल यात तिळमात्र शंका नाही. या भेटीसाठी आपले सहकार्य आणि अमूल्य वेळ मिळाला या बद्दल महाविद्यालय आपले ऋणी आहे.


भेट समन्वयक


भेट समन्वयक


अधिविभागाप्रमुख


मा. प्राचार्य
प्रभारी प्राचार्य

HEAD,
Padmabhushan Vasantodada P. V. Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal,
Dist.-Sangli. कवठेमहंकाळ.जि.सांगली



12th May, 2023

ACADEMIC VISIT REPORT

Padmabhushan Vasant Rao Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal's Department of Political Science and Department of English paid an educational visit to Tata Institute of Social Sciences, Mumbai on 22nd February, 2023 with 21 students and 4 faculty. The purpose of the visit was to make the students aware of the nature, structure, functioning and regular academic curricula.

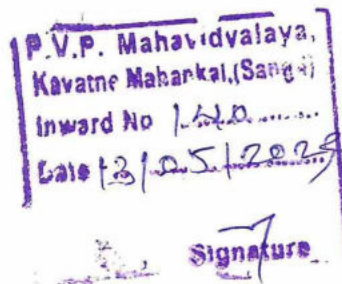
During the visit at Tata Institute of Social Sciences, Mumbai, Dr. Biswaranjan Tripura interacted and gave information about the nature, structure, functioning and process of the Academic Curricula of the Institute. Students will definitely benefit from this educational visit.



Prof. Bipin Jojo
Dean, School of Social Work

S.S. Kamble
GA
1315

Murari
1315



4 March 2023

सांगली परिसर

सांगली, रानिक

→ दृष्टिक्षेपात

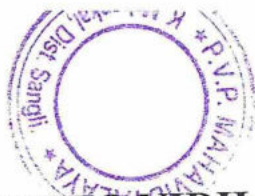


मुंबई: पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालयातील प्राध्यापक व विद्यार्थ्यांनी मुंबई येथे शैक्षणिक भेट दिली.

वसंतरावदादा महाविद्यालयाच्या विद्यार्थ्यांची विधानभवतला शैक्षणिक भेट

कवठे महाकाल पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालयातील राज्यस्तरीय आणि इंग्रजी अधिविभागातील विद्यार्थी आणि शिक्षकांनी विधानभवतला मुंबई आणि टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ सोशल सायन्स, मुंबई येथे शैक्षणिक भेट दिली. विधानभवतला येथील भेटीदरम्यान प्रधान सचिव राजेंद्र भागवत, निदेश मदाने आणि कक्ष अधिकारी मिनल भदेकर यांनी विधान सभा आणि विधान परिषद यांचे स्वरूप, रचना, कामकाज आणि दोन्ही सभागृहाची निर्णयप्रक्रिया याबद्दल सविस्तर माहिती दिली. तसेच टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ सोशल सायन्स, मुंबई येथील भेटी दरम्यान स्कूल फॉर टाटा इन्स्टिट्यूटच्या विविध शैक्षणिक कोर्सेस, प्रकल्प, अंतिक प्रकल्प आणि संस्थेने मूलभूत सामाजिक प्रश्नाबाबत संशोधनातून दिलेले योगदान याविषयी माहिती देऊन विद्यार्थ्यांशी सवाद साधला. भारतीय पंचायतराज आणि मानव्यविद्या शाखेतील संशोधन याची ओळख व्हावी असा या भेटीचा उद्देश होता. असे समन्वयक प्रा. श्रीकांत फाकडे आणि प्रा. नितीका शिंदे यांनी सांगितले. सहायक कक्ष अधिकारी सहिना मुजावर, बाबा वाघमारे, टाटा इन्स्टिट्यूटच्या व्यवस्थापक शालिनी भारत, प्राची तोडणकर यांनी साहाय्य केले.





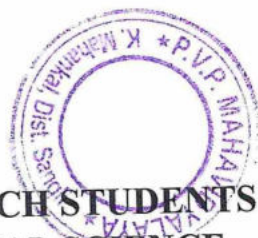
GLIMPSES OF VISIT TO VIDHAN BHAVAN



VISIT TO TATA INSTITUTE OF SOCIAL SCIENCE



Department of English
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal
Dist-Sangli.



INTERACTION WITH RESEARCH STUDENTS OF TATA INSTITUTE OF SOCIAL SCIENCE.



GPS Map Camera

Mumbai, Maharashtra, India

Hostel 4, TISS Old Campus, Deonar Farm Road, Eden Gardens, Anushakti Nagar, Mumbai, Maharashtra 400088, India

Lat 19.043486°

Long 72.911903°

22/02/23 04:49 PM GMT +05:30

Google

INFORMATIVE DOCUMENTARY ABOUT HISTORY OF TISS



GPS Map Camera

Mumbai, Maharashtra, India

Sir Dorabji Tata Memorial Library, Eden Gardens, Chembur, Mumbai, Maharashtra 400085, India

Lat 19.044343°

Long 72.912608°

22/02/23 03:10 PM GMT +05:30

Google

Department of English
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe-Mahankal
Dist-Sangli.

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
Department of Sociology
Activity Report



Title	Field Visit for the Department of Sociology "Veterinary Clinic Kavathe Mahankal"
Day & Date	25/02/2020
Organizer	Department of Sociology
Co-ordinator	Mrs Sapna Pawar
Objectives	<p>1. Understanding Animal Husbandry Practices: To familiarize students with the practices and principles of animal husbandry, including breeding, nutrition, and healthcare.</p> <p>2. Exploring Veterinary Care: To observe veterinary procedures, medical interventions, and the role of veterinarians in ensuring the health and well-being of animals.</p> <p>3. Sociological Implications: To analyze the social and cultural dimensions of human-animal relationships and the impact of animal husbandry practices on society.</p>
Outcomes	<p>A field visit to a veterinary clinic can yield several significant outcomes for sociology students, contributing to both their academic and personal development. Here are four major outcomes that students may experience:</p> <ol style="list-style-type: none">1. Understanding of Human-Animal Relationships2. Awareness of Societal Impact of Animal Healthcare:3. Exploration of Ethical Considerations in Animal Care:4. Analysis of Cultural and Societal Perceptions of Animals:
Conclusion	<p>The field visit to Veterinary Clinic Kavathe Mahankal offered students a unique perspective on the intricate relationship between humans and animals. The experience enhanced their understanding of the societal, economic, and cultural dimensions of animal husbandry, emphasizing the importance of responsible practices and veterinary care</p>


Mrs Sapna Pawar

Assistant Professor

Department of Sociology

HEAD

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.


Principal
PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Permission Letter

Date: 10/02/2020



To,

Principal

Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya Kavathe Mahankal.

Respected Sir,

Subject: Request for Permission to Organise Field Visit for the Department of Sociology

Respected Sir,

I trust this letter finds you well. I am writing to formally request your permission to organize a field visit for the Department of Sociology. The purpose of this field visit is to provide students with practical exposure and firsthand experience in understanding societal structures, cultural dynamics, and various socio-economic factors.

Field Visit Details:

-Date: ~~20~~²⁵/02/2020

-Location: Veterinary Clinic Kavathe Mahankal

We believe that this field visit will greatly contribute to the overall academic and personal development of our students. We kindly request your approval and support for this initiative. Your endorsement is crucial for the successful execution of this educational endeavour.

Thank you for your time and consideration. We look forward to receiving your positive response at your earliest convenience.

Sincerely,

Permission granted

Munawar


Mrs Sapna Pawar

Department of Sociology

HEAD

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.

NOTICE

Department of Sociology

Notice

(22/02/2020)

Subject: Field Visit for the Department of Sociology (25/02/2020)

This is to inform all students of the Department of Sociology is going to organise field visit. Hereby notice to students to participate in activity.

Field Visit Details:

-Date: 25/02/2020 -

-Location: Veterinary Clinic Kavathe Mahankal

Objective of the Field Visit:

- 1. Understanding Animal Husbandry Practices:** To familiarize students with the practices and principles of animal husbandry, including breeding, nutrition, and healthcare.
- 2. Exploring Veterinary Care:** To observe veterinary procedures, medical interventions, and the role of veterinarians in ensuring the health and well-being of animals.
- 3. Sociological Implications:** To analyze the social and cultural dimensions of human-animal relationships and the impact of animal husbandry practices on society.

Thank you.

Sincerely,


Mrs Sapna Pawar

Department of Sociology

HEAD

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidalaya,
Kavathe Mahankal.



01/03/2020

Introduction:

The Department of Sociology organized a field visit to Veterinary Clinic Kavathe Mahankal on 2/02/2020. The primary objective of this visit was to provide students with a practical understanding of animal husbandry, veterinary care, and the sociological implications of human-animal relationships.

Objective of the Field Visit:

- 1. Understanding Animal Husbandry Practices:** To familiarize students with the practices and principles of animal husbandry, including breeding, nutrition, and healthcare.
- 2. Exploring Veterinary Care:** To observe veterinary procedures, medical interventions, and the role of veterinarians in ensuring the health and well-being of animals.
- 3. Sociological Implications:** To analyze the social and cultural dimensions of human-animal relationships and the impact of animal husbandry practices on society.

Field Visit Details:

The field visit team, comprised of students from the department of sociology, departed from the college campus on 25/02/2020. Veterinary Clinic Kavathe Mahankal Upon reaching, we were welcomed by the veterinary staff, who provided valuable insights into the world of animal care and husbandry.

Observations:

1. Animal Husbandry Practices:

- Witnessed various aspects of animal husbandry, including breeding techniques, feeding practices, and the overall management of livestock.
- Explored the role of technology and modern methods in enhancing productivity and ensuring animal welfare.

2. Veterinary Care and Medical Interventions:

- Observed veterinary procedures, medical examinations, and treatments administered to animals.
- Engaged in discussions with veterinarians about the challenges they face, ethical considerations, and the importance of preventive healthcare.

3. Human-Animal Relationships:

- Explored the cultural and societal dimensions of human-animal relationships, including the role of animals in agriculture, economy, and traditional practices.
- Discussed the impact of urbanization and changing lifestyles on the way humans interact with animals.

4. Community Engagement:

- Interacted with local farmers, animal caretakers, and community members to understand their perspectives on the significance of animal husbandry in their livelihoods.
- Discussed the social and economic implications of veterinary services on rural communities.

Challenges Identified:

- 1. Access to Veterinary Services:** Limited access to veterinary care in certain rural areas, impacting the health of livestock and the livelihoods of farmers.
- 2. Awareness and Education:** Lack of awareness among some community members about modern animal husbandry practices and the importance of veterinary care.
- 3. Economic Constraints:** Financial constraints affecting the ability of some farmers to invest in proper animal husbandry practices and healthcare.

Recommendations:

- 1. Mobile Veterinary Clinics:** Implement mobile veterinary clinics to reach remote areas, providing essential healthcare services to livestock in need.
- 2. Community Outreach and Education:** Conduct awareness programs and workshops to educate farmers and community members about modern and sustainable animal husbandry practices.
- 3. Financial Support:** Explore avenues for financial support or subsidies to assist farmers in adopting improved animal husbandry practices and accessing veterinary services.

Conclusion:

The field visit to Veterinary Clinic Kavathe Mahankal offered students a unique perspective on the intricate relationship between humans and animals. The experience enhanced their understanding of the societal, economic, and cultural dimensions of animal husbandry, emphasizing the importance of responsible practices and veterinary care.

Acknowledgments:

We extend our gratitude to the staff at [Veterinary Clinic/Farm Name] for their warm hospitality and insightful discussions that enriched the learning experience for our students.


Mrs Sapna Pawar

Assistant Professor

Department of Sociology

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidalaya,
Kavathe Mahankal.

स्थळभेटीचे ठिकाण :-

तालुका लघु पशुवैद्यकीय सर्वचिकित्सालय, क.महाकाळ

भेट दिलेली विद्यार्थी संख्या :-

स्थळभेटीचा उद्देश :-

1. स्थानिक सामाजिक संस्थांची जाणीव जागृती निर्माण करणे
2. समाजशास्त्राच्या अभ्यासामध्ये स्थळभेटीचे महत्त्व जाणून घेणे.
3. समाजशास्त्राच्या माध्यमांतून पशुधन निर्मिती व त्यांचे जतन करणे.
4. महाराष्ट्र शासन - पशुसंवर्धन विभागातील महाराष्ट्र प्राणी रक्षण (सुधारणा) अधिनियम १९९५ ची माहिती करून देणे.
5. गोवंश हत्याबंदी कायदा दि. ४ मार्च २०१५ पासून लागू कायदा व या अधिनियमातील सर्व अपराध हे दखलपात्र व बेजमानती यांची माहिती घेणे.

भेट दिलेल्या स्थळाबाबत थोडक्यात माहिती.

तालुका लघु पशुवैद्यकीय सर्वचिकित्सालय, क. महाकाळ येथे सर्व विद्यार्थ्यांसोबत भेट दिली. पशुवैद्यकीय चिकित्सालयाचे सहाय्यक आयुक्त पशुसंवर्धन विभाग डॉ. पठाण सर यांनी जनावरांवर कुरापद्रव्यांने उपचार केले जातात, विविध पाळीव जनावरांची संख्यांची माहिती उपचार पद्रव्यांची माहिती दिली. त्याचबरोबर पशुधन विकास अधिकारी डॉ. सरोजा पाटील यांनीही जनावरांच्या विविध रोगांविषयीची माहिती दिली व त्यावरती कोणते प्रतिबंधक उपाय केले पाहिजेत याची माहिती दिली. अशाप्रकारे डॉ. ओंकार कुलकर्णी यांचे पशुधन विकास अधिकारी यांच्या उपस्थितीत विद्यार्थ्यांना मोलाचे मार्गदर्शन लाभले.



Date: 23/02/2020

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
ATTENDANCE SHEET

Name of Activity: Veterinary clinic visit

Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
1)	sandhya shashikant Gidde	B.A. I	S.S. Gidde
2)	Nilam Balu Hovale	B.A. I	Nilam
3)	Laxmi Shivaji Sarode	B.A. I	Laxmi Sarode
4)	Tejshini Ananda Hajare	B.A. I	Tejshini
5)	Lousari Satish Khadkase	B.A. I	L.S. Khadkase
6)	Sanjana Sadashiv Hipparkar	B.A. I	S.S. Hipparkar
7)	Pallavi Manuti Khot	B.A. I	P.M. Khot
8)	Swpnali laxman Karande	B.A. I	Swpnali
9)	Swati Shiradhar Khot	B.A. I	Swati Khot
10)	Sanika Sanjay Naik	B.A. I	Sanika
11)	Sanika Anandrao Patil	B.A. I	Sanika Patil
12)	Tanaki Janardan mane	B.A. I	Tanaki
13)	Riya Jagannath Wayadande	B.A. I	Riya
14)	Sonal Samra Anand	B.A. I	Sonal
15)	Vaibhav Mahadev shinde	B.A. I	Vaibhav
16)	Shivaji Tanaji Pandhase	B.A. I	Shivaji
17)	Sakshi Bira hubale	B.A. I	S.B. Hubale
18)	Bhakti Sanjay Karande	B.A. I	B.K. Karande
19)	Vaishnavi Keshav Koli	B.A. I	V.K. Koli
20)	Sakshi Bira hubale	B.A. I	S.B. Hubale
21)	Vaishnavi Keshav Koli	B.A. I	V.K. Koli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
Department of Sociology
Activity Report



Title	Field Visit for the Department of Sociology "Sugercane Workers"
Day & Date	10/01/2021
Organizer	Department of Sociology
Co-ordinator	Mrs Sapna Pawar
Objectives	<ol style="list-style-type: none">1. To observe the working conditions in sugarcane fields.2. To understand the socio-economic background of sugarcane workers.3. To assess the living conditions and access to basic amenities.
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. Health and Safety: The need for improved occupational health and safety measures for sugarcane workers.2. Education and Skill Development: Limited access to education and skills development opportunities for workers and their families.3. Basic Amenities: Inadequate housing conditions and the need for better access to clean water and sanitation facilities.
Conclusion	The field visit provided valuable insights into the challenges faced by sugarcane workers and their communities. The Department of Sociology aims to use this information to develop and implement initiatives that contribute to the well-being and empowerment of sugarcane workers in collaboration with relevant stakeholders. This visit gave students practical exposure and firsthand experience in understanding societal structures, cultural dynamics, and various socio-economic factors.


Mrs Sapna Pawar

Assistant Professor

Department of Sociology

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.


PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Permission Letter



To,

Principal

Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya Kavathe Mahankal.

Respected Sir,

Subject: Request for Permission to Organise Field Visit for the Department of Sociology

Respected Sir,

I trust this letter finds you well. I am writing to formally request your permission to organize a field visit for the Department of Sociology. The purpose of this field visit is to provide students with practical exposure and firsthand experience in understanding societal structures, cultural dynamics, and various socio-economic factors.

Field Visit Details:

-Date: 10/01/2021

-Location: Kiran Suryavanshi Farm, Zurewadi Village

We believe that this field visit will greatly contribute to the overall academic and personal development of our students. We kindly request your approval and support for this initiative. Your endorsement is crucial for the successful execution of this educational endeavour.

Thank you for your time and consideration. We look forward to receiving your positive response at your earliest convenience.

Permission granted.

Murad

Sincerely,

Pawa

Mrs Sapna Pawar

Department of Sociology
Department of Sociology
P. V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.

NOTICE

Department of Sociology

Notice

(05/01/2021)

Subject: Field Visit for the Department of Sociology

This is to inform all students of the Department of Sociology is going to organising field visit. Hereby notice to students to participate in activity.

-Field Visit Details:

-Date: 10/01/2021

-Location: Kiran Suryavanshi Farm, Zurewadi Village

The objective of the Field Visit:

1. To observe the working conditions in sugarcane fields.
2. To understand the socio-economic background of sugarcane workers.
3. To assess the living conditions and access to basic amenities.

Thank you.

Sincerely,


Mrs Sapna Pawar
HEAD
Department of Sociology
Department of Sociology
P. V. P. Mahavidalaya,
Kavathe Mahankal.

Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
Department of Sociology



Field Visit Report on Sugarcane Workers

15 January 2021

Location: Kiran Suryavanshi Farm, Zurevadi Village

Introduction:

The Department of Sociology conducted a field visit to study the living and working conditions of sugarcane workers on 10/01/2021. The purpose of this visit was to gain firsthand insights into the daily lives of these workers, understand the socio-economic challenges they face, and explore potential areas of intervention for improvement.

The objective of the Field Visit:

- 1. To observe the working conditions in sugarcane fields.**
- 2. To understand the socio-economic background of sugarcane workers.**
- 3. To assess the living conditions and access to basic amenities.**

Field Visit Details:

The field visit team, comprised of Mrs Sapna Pawar, departed from the college campus on 10 Jan 2021. Upon reaching the designated location, we were able to engage with sugarcane workers and community members to gather information through interviews, observations, and discussions.

Observations:

1. Working Conditions:

- The sugarcane fields presented challenging working conditions, with workers exposed to long hours of labour under the sun.
- Discussions with workers highlighted concerns related to occupational health and safety, including the use of protective gear and access to medical facilities.

2. Socio-economic Background:

- The majority of sugarcane workers belong to economically disadvantaged backgrounds, with limited access to education and healthcare.
- Many workers are part of migrant communities, moving from one location to another based on the sugarcane harvesting seasons.

3. Living Conditions:

- Housing facilities for sugarcane workers were basic and lacked essential amenities.
- Limited access to clean water and sanitation facilities was a notable challenge in the community.

Challenges Identified:

1. Health and Safety: The need for improved occupational health and safety measures for sugarcane workers.
2. Education and Skill Development: Limited access to education and skills development opportunities for workers and their families.
3. Basic Amenities: Inadequate housing conditions and the need for better access to clean water and sanitation facilities.

Recommendations:

1. Health and Safety Measures: Advocate for the implementation of proper health and safety measures in sugarcane fields, including the provision of protective gear and regular medical check-ups.
2. Educational Initiatives: Collaborate with local authorities and NGOs to develop educational programs for the children of sugarcane workers, focusing on increasing literacy rates and providing skill development opportunities.
3. Community Development: Work towards improving living conditions by advocating for better housing facilities and access to clean water and sanitation.

Conclusion:

The field visit provided valuable insights into the challenges faced by sugarcane workers and their communities. The Department of Sociology aims to use this information to develop and implement initiatives that contribute to the well-being and empowerment of sugarcane workers in collaboration with relevant stakeholders. This visit gave students

practical exposure and firsthand experience in understanding societal structures, cultural dynamics, and various socio-economic factors.

Acknowledgements:

We extend our gratitude to the sugarcane workers and the local community for their cooperation and openness during the field visit.


Mrs Sapna Pawar

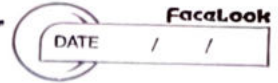
Assistant Professor

Department of Sociology

Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

HEAD
Department of Sociology
P. V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.

ऊसतोड कामगारांना भेट



स्थळमेटीचे ठिकाण :- सुर्यवंशी किरण शशिकांत
यांच्या शेतातील झालेल्या
ऊसतोड कामगारांना प्रत्यक्षरित्या भेट

भेट दिलेली विद्यार्थी संख्या :-

स्थळमेटीचे उद्देश :-

1. ऊसतोड कामगारांची गरिबी, सामाजिक पार्श्वभूमी, कामगार हक्क, वेतन, त्यांच्या शाह्याच्या गैरसोयी याबद्दल विद्यार्थ्यांमध्ये जाणीव जागृती निर्माण करणे.
2. ऊसतोडणीमुळे ऊस कामगारांच्या श्वसनसंस्थेवर परिणाम होतो. त्याचबरोबर त्यांना शारीरिक, मानसिक आणि भावनिक ताणतणावांतून जावे लागते याची जाणीव जागृती निर्माण करणे.

भेट दिलेल्या स्थळाची थोडक्यात माहिती

पी.व्ही.पी. महाविद्यालयातील समाजशास्त्र विभागातील सर्व विद्यार्थीसमवेत शिक्षकवर्ग कवठेमहाकाळ येथील शेतकरी रहिवासी किरण शशिकांत सुर्यवंशी यांच्या शेतामध्ये ऊसतोडणीसाठी झालेल्या ऊसतोडणी कामगारांना भेट दिली. भेट दिल्यानंतर त्यांची जीवन जगण्याची, काम करण्याच्या पद्धतीची माहिती मिळाली. ऊसतोड कामगारांप्रवोस्य होत. काम किंवा व्यवसायाच्या दृष्टिकोनातून पाहिले तर जसे की कोयत्याने ऊस तोडणे, त्याच्या मोळ्या वांधणे, त्या उचलून, वाहून मोळ्या वाहनात भरणे, वाहतूक करणे इ. ऊसतोड कामगारांच्या सामाजिक, आर्थिक, कौटुंबिक, शारीरिक, भावनिक, शैक्षणिक समस्या आतही आपणांस प्रत्यक्षरित्या पहावयास मिळतात हे ऊसतोड कामगारांना प्रत्यक्ष भेट दिल्यानंतर पहावयास मिळाल्या. त्यामुळे विद्यार्थ्यांमध्ये त्यांच्याबद्दल आदर तर वाढलाच पण योग्य ती जाणीव जागृतीही निर्माण झाली.



असतोड कामगारांना भेट



**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal**

**DEPARTMENT OF SOCIOLOGY
ATTENDANCE SHEET**

Name of Activity: Sugarcane workers meet.



Sr. No.	Name of Student	Class	Sign
1	Janaki Janardan mane	B.A-I	<u>JM</u>
	Priyanka Dhandwade	B.A.I	<u>PD</u>
	Gayatri Deshpre	BA-I	<u>GD</u>
4.	Bhakti Sanjay Karande	B-A-F.Y.	<u>BK</u>
5	swpnali laxman Kulkarni	B.A.I	<u>SK</u>
6	sanika sanjay Naik	B.A.I	<u>SN</u>
7	sanika Anandirao Patil	B.A.I	<u>SP</u>
8	Riya Jagannath Wajradande	B.A.I	<u>RJW</u>
9	sayali satish sardamate	B.A.F.Y	<u>SS</u>
10	vikrant sidy yamgar	B.A.FY	<u>VY</u>
11	Devendra Prabhakar mane	B.A.Fy	<u>DM</u>
12	Sangar APPASO Kulkarni	BA.F.Y	<u>SK</u>
13	sahil Patil Renu Phalake	B.A-I	<u>SR</u>
14	Saurabh Ramchandra Raste	B.A-I	<u>S.R.R</u>
15	Ajinkya sanjay jankar	B.A-I	<u>AJ</u>
	Indrajit Ajit Patil	B.A-I	<u>IP</u>
16	Paritosh waghmare	B-A-I	<u>P.S.W</u>
17	dinesh patil	B-A-I	<u>DP</u>
18	Saidhar Sapkal	B-A-I	<u>SS</u>
19	Aviraj Jagtap	B-A-FY	<u>AJ</u>
20	Raghavendra Tanetalwade	B-A-fy	<u>RT</u>
21	sohel Shammu mulla	B-A FY	<u>SM</u>

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal
Department of Sociology
Activity Report



Title	Field Visit for the Department of Sociology "Panchayat Samiti"
Day & Date	12/12/2021
Organizer	Department of Sociology
Co-ordinator	Mrs Sapna Pawar
Objectives	<ol style="list-style-type: none">1. Understanding Local Governance: To familiarize students with the structure and functioning of Panchayat Samiti as a local governing body.2. Community Engagement: To observe and engage with community members and local leaders to understand their concerns and the decision-making process.3. Applied Sociology: To bridge theoretical knowledge with practical insights by witnessing the application of sociological concepts in a real-world context.
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. Practical Application of Sociological Concepts: Students can apply theoretical concepts learned in the classroom to real-world situations. Observing the functioning of a village panchayat allows them to see how sociological principles manifest in community structures and dynamics.2. Understanding Local Governance: Gain a firsthand understanding of local governance structures, such as the role of a village panchayat, decision-making processes, and the distribution of responsibilities among elected representatives.3. Community Engagement and Interaction: Interact with community members to understand their perspectives, concerns, and aspirations. This engagement helps students develop empathy and a deeper appreciation for the social and cultural context of the community.4. Awareness of Local Issues: Identify and analyze local issues that are pertinent to the community, such as access to education, healthcare, infrastructure, and social services. This awareness fosters a sense of social responsibility among students.
Conclusion	The field visit to Panchayat Samiti Kavathe Mahankal provided students with invaluable insights into local governance and community dynamics. The experience enriched their understanding of sociological concepts in a real-world context and fostered a sense of civic responsibility.


Mrs Sapna Pawar

Assistant Professor

Department of Sociology

HEAD

Department of Sociology

P. V. P. Mahavidyalaya,

Kavathe Mahankal.


Principal

PRINCIPAL

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist-Sangli

Permission Letter



To,

Principal

Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya Kavathe Mahankal.

Respected Sir,

Subject: Request for Permission to Organise Field Visit for the Department of Sociology

Respected Sir,

I trust this letter finds you well. I am writing to formally request your permission to organize a field visit for the Department of Sociology. The purpose of this field visit is to provide students with practical exposure and firsthand experience in understanding societal structures, cultural dynamics, and various socio-economic factors.

Field Visit Details:

-Date: 12/12/2021

-Location: Panchayat Samiti

We believe that this field visit will greatly contribute to the overall academic and personal development of our students. We kindly request your approval and support for this initiative. Your endorsement is crucial for the successful execution of this educational endeavour.

Thank you for your time and consideration. We look forward to receiving your positive response at your earliest convenience.

permission granted.

Mundal

Sincerely,

Pawar
Mrs Sapna Pawar

Department of Sociology

HEAD
Department of Sociology
P. V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.



NOTICE

Department of Sociology

Notice

(05/12/2021)

Subject: Field Visit for the Department of Sociology (12//12/2021)

This is to inform all students of the Department of Sociology is going to organising field visit. Hereby notice to students to participate in activity.

-Field Visit Details:

-Date: 12/12/2021

-Location: Kiran Suryavanshi Farm, Zurewadi Village

The objective of the Field Visit:

- 1. Understanding Local Governance:** To familiarize students with the structure and functioning of Panchayat Samiti as a local governing body.
- 2. Community Engagement:** To observe and engage with community members and local leaders to understand their concerns and the decision-making process.
- 3. Applied Sociology:**** To bridge theoretical knowledge with practical insights by witnessing the application of sociological concepts in a real-world context.

Thank you.

Sincerely,


Mrs Sapna Pawar

Department of Sociology
HEAD

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidalaya,
Kavathe Mahankal.

Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Sociology

Field Visit Report on Panchayat Samiti Visit



12/12/2021

Introduction:

The Department of Sociology at [Your University/Institution Name] organized a field visit to [Panchayat Samiti Name] on [Field Visit Date]. The primary objective of the visit was to provide students with a practical understanding of grassroots governance, community development, and the functioning of Panchayati Raj institutions.

Objective of the Field Visit:

- 1. Understanding Local Governance:** To familiarize students with the structure and functioning of Panchayat Samiti as a local governing body.
- 2. Community Engagement:** To observe and engage with community members and local leaders to understand their concerns and the decision-making process.
- 3. Applied Sociology:** To bridge theoretical knowledge with practical insights by witnessing the application of sociological concepts in a real-world context.

Field Visit Details:

The field visit team, comprised of Third Year Students, departed from the college campus on 12/12/2021. Upon reaching Panchayat Samiti, Kavathe Mahankal, we were welcomed by Local Authorities, who graciously facilitated our interaction with the community and provided valuable insights into local governance.

Observations:

1. Panchayat Structure:

- The structure and hierarchy of the Panchayat Samiti were explored, emphasizing the roles and responsibilities of various office-bearers.
- Discussions with Panchayat members shed light on the decision-making process and the challenges they face in addressing community needs.

2. Community Interaction:

- Interactions with community members allowed students to gain perspectives on local issues, development initiatives, and the impact of Panchayati Raj on their lives.
- Students observed how grievances and concerns were brought to the attention of Panchayat leaders and the mechanisms in place for conflict resolution.

3. Development Projects:

- Students had the opportunity to visit ongoing development projects initiated by the Panchayat Samiti, such as infrastructure development, healthcare, and education initiatives.

- Discussions with project coordinators provided insights into the planning, execution, and challenges faced in implementing these projects.

Challenges Identified:

1. Resource Allocation: Limited resources and challenges in equitable distribution for community development projects.
2. Community Participation: Varied levels of community participation and awareness regarding Panchayat functions.
3. Infrastructure: Need for infrastructure improvement, particularly in remote areas within the Panchayat jurisdiction.

Recommendations:

1. **Community Awareness Programs:** Implement community awareness programs to educate residents about the functions and opportunities provided by the Panchayat Samiti.
2. **Resource Management:** Explore avenues for efficient resource allocation to address pressing community needs and enhance overall development.
3. **Infrastructure Development:** Advocate for increased funding and collaboration for infrastructure development projects in remote areas.

Conclusion:

The field visit to Panchayat Samiti Kavathe Mahankal provided students with invaluable insights into local governance and community dynamics. The experience enriched their understanding of sociological concepts in a real-world context and fostered a sense of civic responsibility.

Acknowledgments:

We extend our gratitude to [Panchayat Samiti Authorities/Leaders] and the local community for their warm welcome and cooperation during the field visit.


Mrs Sapna Pawar

Assistant Professor

Department of Sociology

HEAD

Department of Sociology
P. V. P. Mahavidalaya,
Kavathe Mahankal.

पंचायत समिती क.म. जि-सांगली





मा. विश्णार विश्णार अधिकारी, विश्वास साठवे सर



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal.

DEPARTMENT OF COMMERCE

Date: 04-03-2023

NOTICE

All the B.Com III students of P. V. P. college, Kavathe Mahankal are hereby informed that, Department of commerce is going to take B.com III students on **Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip / Industrial visit** as on Wednesday 15 March 2023 All the interested B.Com III students are informed to give their names for **Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip / Industrial visit**.

Date: 07/03/2023, Friday

Time: 08.00 am

Place: Department of Commerce

Dr.B.H.Mohite
Co-ordinator

Prof.(D.r.)M.K.Patil
Acting Principal

PRINCIPAL

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya K.Mahankal, Dist-Sangli



From,
Dr.B.H.Mohite
Department of Commerce
P. V. P. College, Kavathe Mahankal,
Dist. Sangli, Maharashtra 416405
Date: 01 /03/2023

To,
The Principal,
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

**Subject: Seeking a permission to take students for Gokul milk dairy
Kolhapur, Study Trip / Industrial visit**

Respected sir,

Department of Commerce of our college wishes to go for **Gokul milk dairy
Kolhapur, Study Trip / Industrial visit** as on Wednesday 15 March 2023. This Study
trip will be very beneficiary for students to gain knowledge on Dairy business, Dairy/
Milk related other business, equipment's used in Milk Dairy industry.

I request you to give permission for the **Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip
/ Industrial visit**

Thanking you.

Yours faithfully,



Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal.

Department of Commerce, Entrepreneur Development Cell & IQAC

Gokul milk dairy Kolhapur 2022-23

Study Trip Attendance sheet

S.No	Name of the Student	Signature
1	Punam Babar	Punam Babar
2	Priyanka Dodpice	Priyanka Dodpice
3	Ankita Doble	Ankita Doble
4	Aparna Jagtap	Aparna Jagtap
5	Snehal Suryanshi	Snehal Suryanshi
6	Pratiksha Patil	Pratiksha Patil
7	Pramila Kore	Pratiksha Patil
8	Sonali Deshmukh	Sonali Deshmukh
9	Akanksha Sapkal	Akanksha Sapkal
10	Monica Irale	Monica Irale
11	Gaytri Yamger	Gaytri Yamger
12	Sakshi Yamger	S. Yamger
13	Kajal Kadam	Kajal Kadam
14	Shital Chavan	Shital Chavan
15	Swapnali Kadam	Swapnali Kadam
16	Bhagyashri Kamble	Bhagyashri Kamble
17	Prathamesh Yadav	Prathamesh Yadav
18	Ajit Khot	Ajit Khot
19	Mayur Dehri	Mayur Dehri
20	Pandurang Jagtap	Pandurang Jagtap
21	Vitthal Kadam	Vitthal Kadam
22	Shrikant Jagtap	Shrikant Jagtap
23	Rishikesh Landge	Rishikesh Landge
24	Sudarshan Shinde	Sudarshan Shinde
25	Rohit Karale	Rohit Karale
26	Nikhil Ransingh	Nikhil Ransingh
27	Nagesh Mane	Nagesh Mane

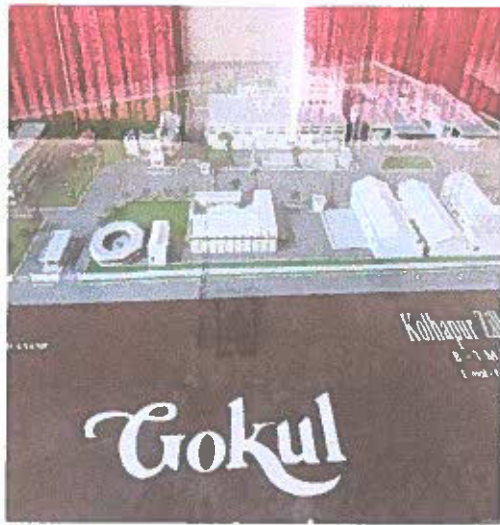
(Handwritten Signature)

PRINCIPAL

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya K.Mahankal, Dist-Sangli



Gokul milk dairy Kolhapur 2022-23 Study Trip Pictures.



mvans

PRINCIPAL

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya K.Mahankal, Dist-Sangli



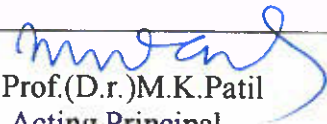
Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasanthaodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal.

Department of Commerce, Entrepreneur Development Cell & IQAC

Study Trip Activity Report

Title	Gokul milk dairy Kolhapur
Day & Date	Wednesday, 15/03/2023
Organizer	Department of Commerce
Chairperson	Prof Dr.M.K.Patil
Coordinator	Dr.B.H.Mohite, Mr.S.M.Shinde, Mr.A.M.Mane
No. of Students Present	27 students
Background	Department of Commerce has organised B.com students for a short study trip (visiting Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip / Industrial visit). Planning a study trip to an Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip / Industrial visit was a valuable educational experience for students interested in Dairy and dairy related industries. Gokul milk dairy industry showcase various aspects of milk dairy and related industries, including milk products and new variety of milk products, dairy industry equipment and technology demonstrations. The goal is to create a welcoming, conducive, knowledge gaining with regard to dairy and milk related business the students are interested in.
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To provide students with firsthand exposure to dairy industry, and milk related business.• To help students understand the new variety of milk products, dairy industry equipment and technology.• To raise awareness about sustainable and environmentally friendly farming practices and their importance in dairy industry.• To inspire students by showcasing successful dairy farming story of gokul dairy industry, business, motivating them to consider careers in dairy industry or related fields.
Conclusion	The study trip included 44 students and 4 faculty members visiting the Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip . It is not just a one-time event but an opportunity for participants to continue learning and making a positive impact in the field of dairy industry. The study trip of Gokul milk dairy Kolhapur, Study Trip serves as a bridge between the trip and the ongoing educational and professional journeys of the participants, reinforcing the value of the experience and its potential for long-term benefits. To motivate participants to continue exploring and learning about dairy industry and related fields beyond the trip.


Dr.B.H.Mohite
Co-ordinator


Prof.(D.r.)M.K.Patil
Acting Principal
PRINCIPAL

Padmabhushan Vasanthaodada Patil
Mahavidyalaya K.Mahankal, Dist-Sangli



From,
Dr.B.H.Mohite
Head Department of Commerce
P. V. P. College, Kavathe Mahankal,
Dist. Sangli, Maharashtra 416405
Date: 10 /08/2023

To,
The Principal,
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

Subject: Seeking a permission to take students for Krishi Pradrashan - Study Trip

Respected sir,

Department of Commerce of our college wishes to go for **Krishi Pradrashan Study Trip** as on Friday 18 August 2023. This Study trip will be very beneficiary for students to gain knowledge on Farming, farming related other business, farming equipment's or farming ancillary used in Modern farming.

I request you to give permission for the **Krishi Pradrashan Study Trip**.

Thanking you.


Dr. B. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli


Dr. B. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



**Padmabhushan Vasanttraodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.**

DEPARTMENT OF COMMERCE

Date: 14-08-2023

NOTICE

All the B.Com III students of P. V. P. college, Kavathe Mahankal are hereby informed that, Department of commerce is going to take B.com III students on **Krishi Pradrashan Study Trip** as on Friday 18 August 2023. All the interested B.Com students are informed to give their names for **Krishi Pradrashan Study Trip**.

Date: 18/08/2023, Friday

Time: 08.00 am

Dr.B.H.Mohite
Head


Dr. B. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

Prof.(D.r.)M.K.Patil
Principal


PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli



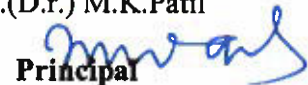
Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal,
Department of Commerce & Department of Economics
Entrepreneur Development Cell & IQAC
Krishi Pradrashan -2023
Study Trip Activity Report

Title	Krishi Pradrashan
Day & Date	Friday, 18/08/2023
Organizer	Department of Commerce & Department of Economics
Chairperson	Prof Dr.M.K.Patil
Coordinator	Dr.B.H.Mohite, Mr.S.M.Shinde, Mr.K.L.Sakat, Mr.R.R.Vasave,
No. of Students Present	44 students
Background	Department of Commerce & Department of Economics has jointly taken B.com and B.A economics students for a short study trip (visiting Krishi Pradrashan). Planning a study trip to an Krishi Pradrashan was a valuable educational experience for students interested in agriculture and related industries. Agricultural shows are events that showcase various aspects of agriculture and related industries, including seeds and fertilizer, new variety of plant, crop samplings were in exhibitions, farm equipment displays, agricultural technology demonstrations. The goal is to create a welcoming, conducive, knowledge gaining with regard to Agriculture and agri related business the students are interested in.
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To provide students with firsthand exposure to various agricultural practices, techniques, and technologies.• To help students understand the diversity of agriculture, including crop cultivation, livestock management, horticulture, and agribusiness• To raise awareness about sustainable and environmentally friendly farming practices and their importance in modern agriculture.• To inspire students by showcasing successful agricultural stories and entrepreneurs, motivating them to consider careers in agriculture or related fields
Conclusion	The study trip included 44 students and 4 faculty members visiting the Krishi Pradrashan. It is not just a one-time event but an opportunity for participants to continue learning and making a positive impact in the field of agriculture. The study trip of Krishi Pradrashan serves as a bridge between the trip and the ongoing educational and professional journeys of the participants, reinforcing the value of the experience and its potential for long-term benefits. To motivate participants to continue exploring and learning about agriculture and related fields beyond the trip.


Dr. B. H. Mohite

Dr. B. H. Mohite
Head Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

Prof.(D.r.) M.K.Patil


Principal

PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli



GPS Map Camera



Tasgaon, Maharashtra, India
Datt Temple Rd, Nimani, Vasumbe Phata, Tasgaon,
Maharashtra 416312, India
Lat 17.026145°
Long 74.605729°
18/08/23 10:42 AM GMT +05:30



GPS Map Camera



Tasgaon, Maharashtra, India
NH 160, Nimani, Vasumbe Phata, Tasgaon,
Maharashtra 416312, India
Lat 17.025781°
Long 74.605673°
18/08/23 10:49 AM GMT +05:30

[Handwritten signature]

Department of Commerce
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli

[Handwritten signature]

PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli



Google

Tasgaon, Maharashtra, India

Datt Temple Rd, Nimani, Vasumbe Phata, Tasgaon,
Maharashtra 416312, India

Lat 17.026134°

Long 74.605733°

18/08/23 10:42 AM GMT +05:30

GPS Map Camera



Google

Tasgaon, Maharashtra, India

2JG4+FM4, Nimani, Vasumbe Phata, Tasgaon,
Maharashtra 416312, India

Lat 17.02546°

Long 74.606072°

18/08/23 12:52 PM GMT +05:30

GPS Map Camera

Principals
PRINCIPAL

Padmahushan Vasantgadada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli



Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya Kavathe Mahankal.

Department Of Commerce

Tasgaon, Krushi Pradrashan Visit Student List

	Student Name	Class	Mobile No.	Signature
1	Shinde Sudarshan Netajirao	B.COM. III	95696762	Thobis
2	Yadav Prathamesh Chandrakant	B.COM. III		
3	Dhere Mayur Mahendra	B.COM. III	842182463	Mayur Dhere
4	Khot Ajit Hanumant	B.COM. III		
5	Mane Nagesh Jitendra	B.COM. III	9960842368	
6	Jagtap Shrikant Hanumant	B.COM. III	8080578183	Jagtap
7	Jagtap Pandurang Ramchandra	B.COM. III	7841830871	Jagtap
8	Karale Rohit Rajendra	B.COM. III	7058529368	
9	Kadam vitthal Shivaji	B.COM. III	8055483019	Kadam
10	Koth vaibhav dhondiram	B.COM. III		
11	Patil ruthvik gulab	B.COM. III		
12	Jagtap Pravin popat	B.COM. III	7498029971	Jagtap
13	Rakde Swapnil Sampat	B.COM. III	8459185456	
14	Nike Yashwant Babaso	B.COM. III	9322564973	
15	Mandale Shritej Balasore	B.COM. III	8146417413	Mandale
16	Dilmoshe Priyanka Machindra	B.COM. III	8857059355	P.M.D
17	Patil Priyanka Ashok	B.COM. III		
18	Babar Punam Prakash	B.COM. III	7798027692	Punam
19	Iarlye Monika Vasant	B.COM. III	7219420108	Iarlye
20	Chigare Renuka Ramachandran	B.COM. III	9322083324	Chigare
21	Pawer Gayatri Ganesh	B.COM. III	9823518651	Glawar
22	Patil Pragati Ramesh	B.COM. III	7083744194	Patil
23	Patil Shweta Shankar	B.COM. III		
24	Sindhi Ankita sarjarao	B.COM. III	7517734665	Asshinde
25	Yadav Pallavi Parshuram	B.COM. III		
26	Patil Nikita Bhagwan	B.COM. III		
27	Yadav Sahnika Uttam	B.COM. III		
28	Launde Shruti Pradeep	B.COM. III		
29	ingoli Sonika Santosh	B.COM. III		
30	Deshmukh Sonali Bharat	B.COM. III	779860192	Sonali

[Handwritten Signature]
HEAD

Department of Commerce
Padmabhushan Vasantraodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

[Handwritten Signature]
PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli



Department Of Commerce

Tasgaon, Krushi Pradrashan Visit Student List

	Student Name	Class	Mobile No.	Signature
31	Khadke Shweta Santosh	B.COM. III		<i>Shweta</i>
32	Patoli Sarika Sambhaji	B.COM. III		<i>Sarika</i>
33	Khadke bhagyashri Santosh	B.COM. III	8095127941	<i>Bhagyashri</i>
34	koshti shradha veerbhadra	B.COM. III		<i>Shradha</i>
35	Chavan Shital patangrao	B.COM. III	9359465187	<i>Shital</i>
36	Kadam Kajal Mohan	B.COM. III		<i>Kajal</i>
37	Kadam swapnali Sanjay	B.COM. III		<i>Swapnali</i>
38				
39				
40				
41				
42				
43				
44				
45				
46				
47				
48				
49				
50				
51				
52				
53				
54				
55				
56				
57				
58				
59				
60				

HEAD,
Department of ...
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

From,
Dr.B.H.Mohite
Head of Department of Commerce
P. V. P. College, Kavathe Mahankal,
Dist. Sangli, Maharashtra 416405
Date: 15th Jan.2024

To,

The Principal

Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal.

Subject :- Regarding Permission for Study Tour to Konkan/Malvan

Respected Sir,

The Department of Commerce intends to seek your permission for a study trip that is scheduled to take place from [06/02/2024] to [08/02/2024]. The trip Route/destination is [Kavathe Mahankal- Kolhapur-Konkan/ Malvan], and its purpose is to provide students with practical insights into Entrepreneurship skill development.


Dr. B. H. Mohite
Dr. B. H. Mohite
Head Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli
(Department of Commerce)




PRINCIPAL
Prof. (Dr.) M. K. Patil
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli
Principal

**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.**

DEPARTMENT OF COMMERCE

Date: 16-01-2024

NOTICE

All the B Com-III students of P. V. P. college, Kavathe Mahankal are hereby informed that Department of commerce is excited to inform you about an upcoming study tour that presents a unique learning opportunity. This tour aims to enhance your academic experience and broaden your understanding of the subject matter.

Details:

Date: [06/02/2024]

Route : [Kavathe Mahankal to Konkan/Malvan]

Departure Time: [05.00 am]

Meeting Point: [PVP College Kavathe Mahankal]

To participate, please:

Confirm your attendance by [25/01/2024].

Bring a valid ID and any required materials.

We look forward to your active participation in this enriching educational experience.



Dr. B. H. Mohite

Dr. B. H. Mohite
Head

Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



PRINCIPAL
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Prof. (Dr.) M.K. Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist-Sangli
Principal

**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.**



Department of commerce

Study Tour Student list 2024

S.No	Name of the Student	Phone no	Fees paid (1500)	Sign
1.	Jagtap Aparna	8788453690	Paid	
2.	Chavan Shital	9359465187	Paid	
3.	Kadam Swapnali	7558204427	Paid	
4.	Kadam Kajal	7387292004	Paid	
5.	Patil Sakshi	7588823272	Paid	
6.	Patil Pratiksha	9359258863	Paid	
7.	Deshmukh Divya	9359080901	Paid	
8.	Dhoble Ankita	9607091507	Paid	
9.	Babar Poonam	7798027692	Paid	
10.	Dhodhmise Ankita	8857059355	Paid	
11.	Ingole Shruti	8600326959	Paid	
12.	Irale Monika	7219420108	Paid	
13.	Koshti Shraddha	8080691557	Paid	
14.	Patole Sarika	9637674613	Paid	
15.	Khadke Bhagyashri	8095127941	Paid	
16.	Khadke Shweta	9226317574	Paid	
17.	Kore Pratiksha	9322008155	Paid	
18.	Dhudhal Namarata	8669043814	Paid	
19.	Dhanashri Subash	7483292245	Paid	
20.	Khot Ajit	9960560731	Paid	
21.	Dhere Mayur	8421824637	Paid	
22.	Yadav Prathmesh	8010315060	Paid	
23.	Shinde Sudarshan	9561961762	Paid	
24.	Landage Rushikesh	9322830781	Paid	
25.	Dhotare Karan	8669032327	Paid	
26.	Kadam Sarthak	9373303501	Paid	
27.	Ranshinge Nikhil	9075914421	Paid	
28.	Yamgar Samadhan	9356729950	Paid	
29.	Yadav Aditya	9699769252	Paid	
30.	Mirajakar Makrand	8856932647	Paid	
31.	Naik Yash	9322544973	Paid	
32.	Shinde Kumar	8999197955	Paid	
33.	Aatpadikar Aniket	9325781198	Paid	
34.	Jadhav Arjun	8080177820	Paid	
35.	Shinde Rohit	9119420580	Paid	
36.	Patil Prathamesh	8080310136	Paid	
37.	Phakade Swapnil	8459185456	Paid	
38.	Mane Nagesh	9960845368	Paid	
39.	Jagtap Shrikant	8080578183	Paid	
40.	Jagtap Pandurang	7841830871	Paid	

Dr. S. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil

41.	Jagtap Pravin	7498029971	Paid	
42.	Karale Rohit	7058529368	Paid	
43.				
44.				
45.				
46.				
47.				
48.				
49.				
50.				



Dr. B. H. Mohite
Head

Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Solapur

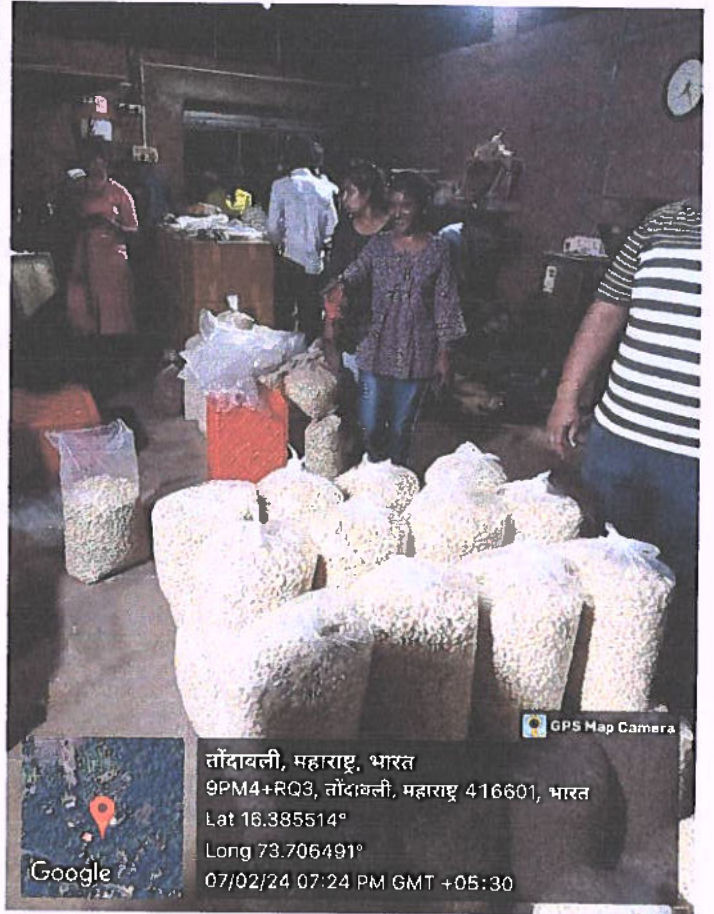
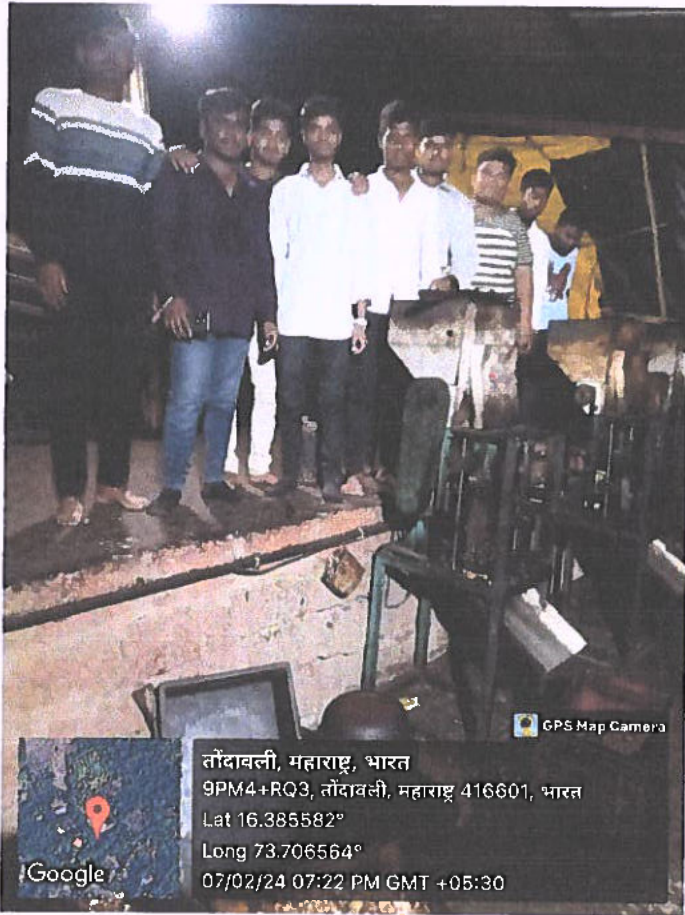






Dr. B. H. Mohite
Head

Department of Commerce
Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli




Dr. B. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantaoada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli

**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantaoada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.**

DEPARTMENT OF COMMERCE

Date: 10/02/2024

Title	"Study Tour- Konkan / Malvan- A Fish Market, Cashew Factory"
Duration	06/02/2024 to 08/02/2024
Organizer	Department of Commerce, P.V.P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal
Faculty	Dr. B.H.Mohite, Mrs. P.R.Mali, Mr. K.L.Sakat, Dr. S.P.Solage
Coordinator	Mrs. P.R.Mali
No. of Students	46
Background	To equip commerce students with a deep understanding of different geographical business, cultural appreciation, and environmental conservation. Encourage students to actively engage with their surroundings, ask questions, and foster a spirit of curiosity and learning.
Objective	<ol style="list-style-type: none">1. To acquaint students with some basic concepts responsible tourism2. To understand of the different types of business, market classified by cultural appreciation etc.3. To learn about products and markets, customer relationship.4. To learn about cashew making factory, shop outlet etc.
Outcomes	<ol style="list-style-type: none">1. To gain some basic knowledge of local Market, entrepreneurship development.2. To learn about various channels of Business and Market.3. To provide hands-on experience in using Cashew factory.4. To learn latest trends in marketing the regional products.
Conclusion	The Courses aim to equip commerce students with a holistic understanding of learning experience of entrepreneurship development skill, learn about Marine life of Malvan, fish market, Cultural immersion in Malvan, highlighting the historical significance, architecture, and strategic importance of the fort, responsible tourism there unique style of business and marketing of products.


Dr. B.H. Mohite
Dr. B. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantaoada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



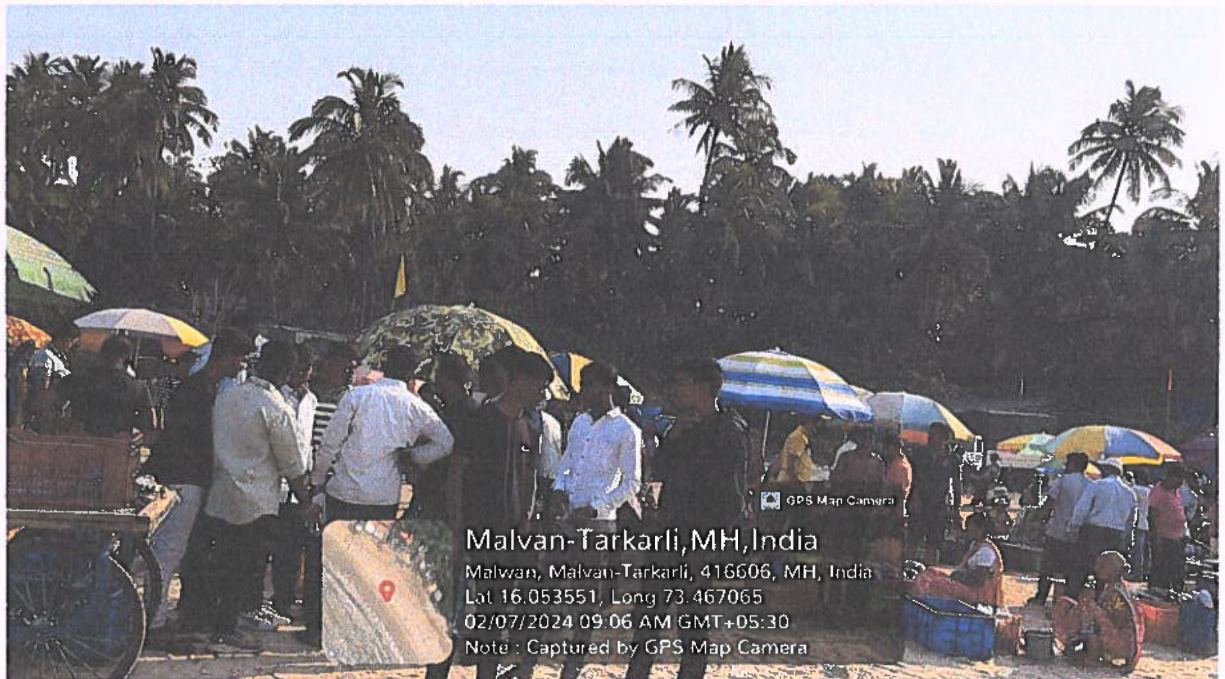
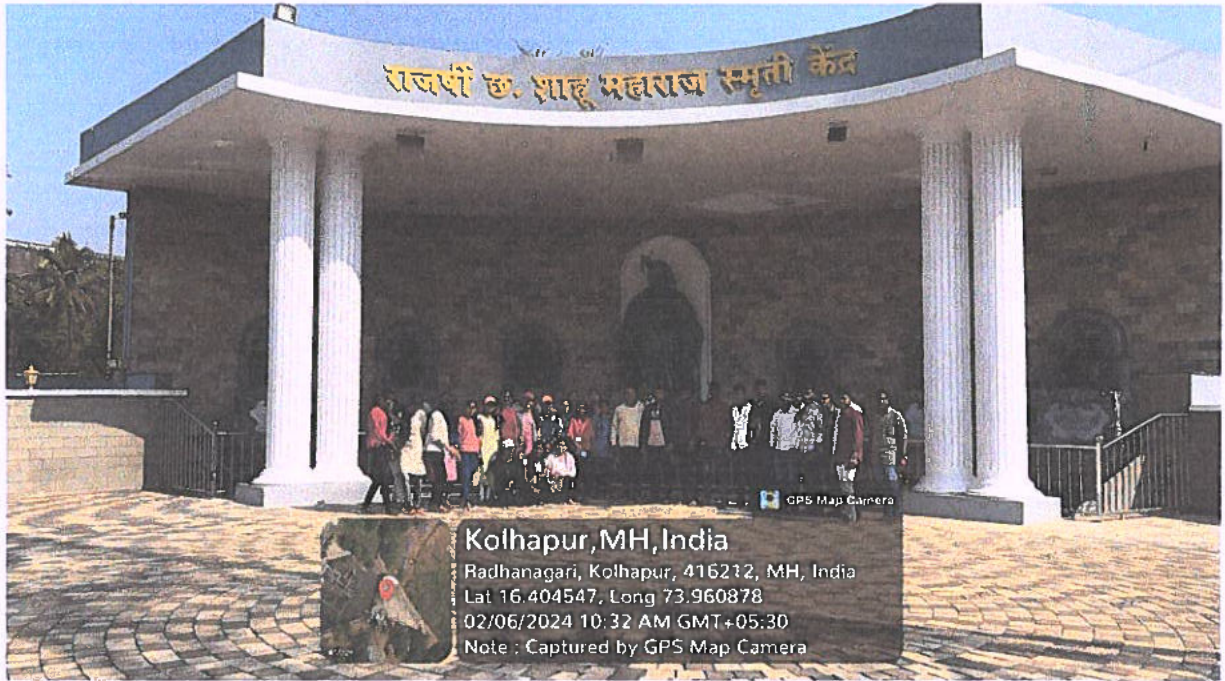

PRINCIPAL
Prof. (D.Y.) M.K. Patil
Padmabhushan Vasantaoada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist- Sangli



**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankar.**

DEPARTMENT OF COMMERCE

“Study Tour- Konkan / Malvan- A Fish Market, Cashew Factory”- Pictures




Dr. B. H. Monite
Head

Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankar, Dist: Sangli

From,
Dr B H Mohite
Department of Commerce
P. V. P. College, Kavathe Mahankal,
Dist. Sangli, Maharashtra 416405
Date: 05 /02/2024

To,
The Principal,
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

Subject: Seeking a permission to take students for Chitale Dairy, Study Trip / Industrial visit

Respected sir,

Department of Commerce of our college wishes to go for **Chitale Dairy Study Trip / Industrial visit** as on Saturday 24 February 2024. This Study trip will be very beneficiary for students to gain knowledge on Dairy business, Dairy/ Milk related other business, equipment's used in Milk Dairy industry.

I request you to give permission for the **Chitale Dairy Study Trip / Industrial visit**.

Thanking you.



**Yours faithfully,
Head**

Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal.

DEPARTMENT OF COMMERCE

Date: 12-02-2024

NOTICE

All the B.Com III students of P. V. P. college, Kavathe Mahankal are hereby informed that, Department of commerce is going to take B.com III students on **Chitale Dairy, Study Trip / Industrial visit** as on Saturday 24 February 2024 All the interested B.Com III students are informed to give their names for **Chitale Dairy Study Trip / Industrial visit**.


Date: 18/02/2024, Monday

Time: 08.00 am

Place: Department of Commerce


Dr. B. H. Mohite
Co-ordinator
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist: Sangli




PRINCIPAL,
Dr. M. K. Patil
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist-Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe-Mahankal.
Department of Commerce, Entrepreneur Development Cell & IQAC
Industrial Visit

Chitale Dairy 2023-24 Activity Report

Title	Chitale Dairy 2023-24
Day & Date	Saturday, 24/02/2024
Organizer	Department of Commerce
Chairperson	Prof Dr.M.K.Patil
Coordinator	Dr.B.H.Mohite, Mrs.P.R.Mali, Mr.S.M.Shinde, Mr.R.N.Vasave, Dr.S.L.Andelwar
No. of Students Present	96 students
Background	Department of Commerce has organised B.com students for a short study trip (visiting Chitale Dairy, Study Trip / Industrial visit). Planning a study trip to an Chitale Dairy milk dairy, Study Trip / Industrial visit was a valuable educational experience for students interested in Dairy and dairy related industries. Chitale milk dairy industry showcase various aspects of milk dairy and related industries, including milk products and new variety of milk products, dairy industry equipment and technology demonstrations. The goal is to create a welcoming, conducive, knowledge gaining with regard to dairy and milk related business the students are interested in.
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To provide students with firsthand exposure to dairy industry, and milk related business.• To help students understand the new variety of milk products, dairy industry equipment and technology.• To raise awareness about sustainable and environmentally friendly farming practices and their importance in dairy industry.• To inspire students by showcasing successful dairy farming story of gokul dairy industry, business, motivating them to consider careers in dairy industry or related fields.
Conclusion	The study trip included 96 students and 5 faculty members visiting the Chitale Dairy, Study Trip . It is not just a one-time event but an opportunity for participants to continue learning and making a positive impact in the field of dairy industry. The study trip of Chitale Dairy, Study Trip serves as a bridge between the trip and the ongoing educational and professional journeys of the participants, reinforcing the value of the experience and its potential for long-term benefits. To motivate participants to continue exploring and learning about dairy industry and related fields beyond the trip.



Dr. B. H. Mohite
Dr. B. H. Mohite
Head

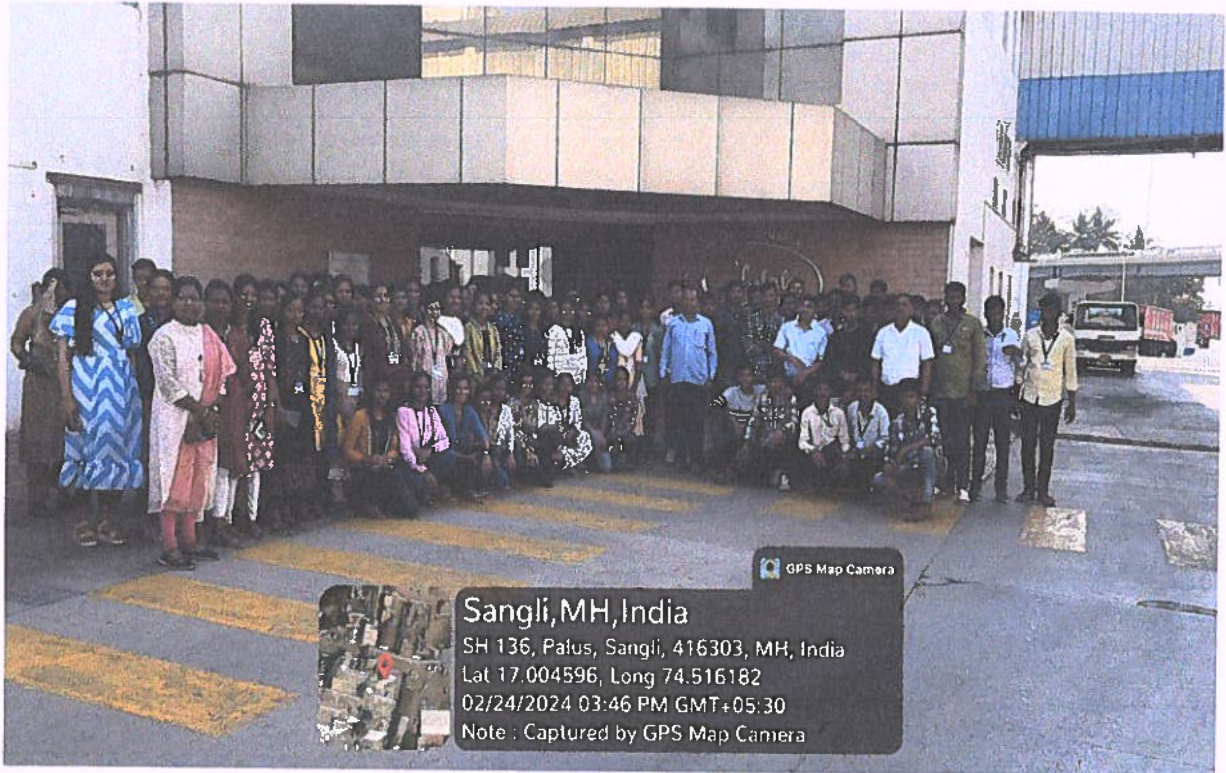
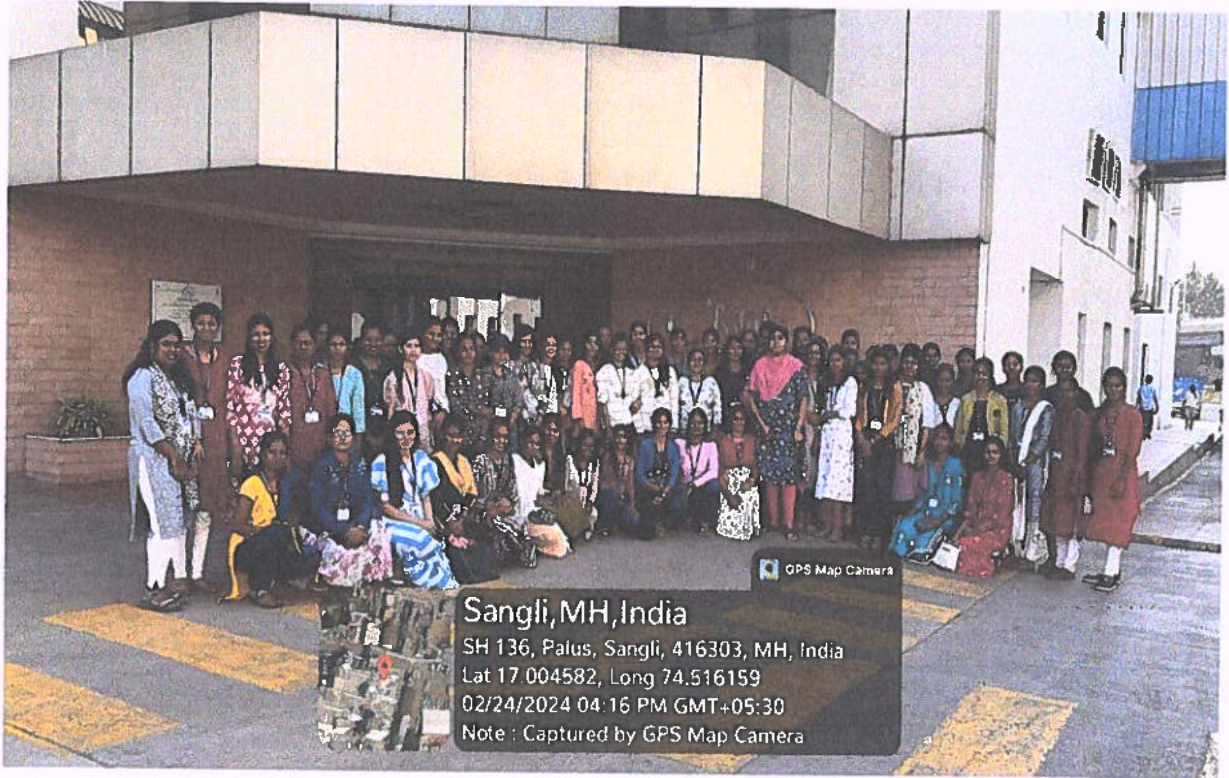
Department of Commerce
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli





PRINCIPAL
Prof. Dr. M. K. Patil
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal, Dist. Sangli

Chitale Dairy 2023-24 Study / Industrial Trip Pictures.




Dr. B. H. Mohite
Head
Department of Commerce
Shan Vasantraodada Patil
Kavathe Mahankal, Dist: Sangli



ShikshanPrasarakSanstha's

PadmabhushanVasatraodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal,

DEPARTMENT OF CHEMISTRY
(Academic Year 2022-23)

Activity Report

Title	One day Industrial Visit for the Departmental Students at SUYESH IRON AND STEEL PVT LTD,Kupwad Tal Miraj
Day & Date	Wednesday, 26/04/2023
Organizer	Department of Chemistry
Co-Coordinator	Mr. A. A. Kamble, Mr. T.P. Shinde
Background	Department of Chemistry Has Signed MoU with SUYESH IRON AND STEEL PVT LTD,Kupwad Tal Miraj.This MoU plays a crucial role in helping students for their betterment. Industrial visit plays important role in holistic development of students.
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To provide students an insight into the real working environment, workstations, plants.• To interact with highly trained and experienced personnel.• To provide the information about various instruments required for chemical analysis.• To study different units and their collaboration in industry.• To learn assembly lines, machines, systems• To provide information about modern instruments used in industry.
Conclusion	The Department has arranged one day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students, on 26 th April at 10:00. am. The major goal of the industrial visit was to provide on field training in industry working and management. 49 students and 3 Faculties of Chemistry Department visited SUYESH IRON AND STEEL PVT LTD,Kupwad Tal Miraj. Assistant Manager and staff provided information about Various departments (Production, QC, QA) in industry. He has also provided information about marketing policies involved in industry, discipline, work culture in industry

(Mr. S. V. Patil)

Head
Department of Chemistry
P. V. P. Mahavidyalaya,
K. Mahankal, Dist. Sangli



Prof. (Dr.) M. K. Patil

Acting Principal
Principal
Padmabhushan Vasatraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli



SUYESH IRON & STEELS PVT. LTD.

Mfg. of C. I. & S. G. Iron Graded Castings.



Plot No. C-62, M.I.D.C., MIRAJ - 416 410. (Maharashtra) India. CIN : U27106PN2007PTC129953
Ph. Off. : + 91 233 2644675, E-mail : suyeshiron@gmail.com Website : www.suyeshiron.com

DATE : 26/04/2023

CERTIFICATE

(TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN)

This is certified that the Department of Chemistry, P.V.P Mahavidyalaya, Kavthe Mahankal has visited to our Industry dated on 26th April 2023. Our best wishes to all students.

There are 49 students and 3 Faculties successfully visited to our Industry.

Department and Process -: Foundry and Machine Shop section

- | | |
|-------------------|--------------------------------|
| 1. Moulding, | 7. CNC And VMC Production Area |
| 2. Melting, | 8. Quality Control Department |
| 3. Spectro, | 9. Final Inspection Area |
| 4. Knock Out, | 10. Dispatch Area |
| 5. Shot Blasting, | |
| 6. Fettling | |

FOR SUYESH IRON AND STEELS PVT.LTD.

For Suyesh Iron & Steels Pvt. Ltd;


Authorised Signature



ShikshanPrasarakSanstha's

PadmabhushanVasatraodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal.

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

Academic Year 2022-23

Date: 24-04-2023

NOTICE

All the students in B.Sc. III are hereby informed that as per MOU with SUYESH IRON AND STEEL PVT LTD, Department has arranged one day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students, on 26th April 2023 at Suyesh Iron and Steel PVT LTD, Kupwad Miraj. at 10:00. am. To provide students an insight into the real working environment, workstations, plants, assembly lines, machines, systems, and interact with highly trained and experienced personnel. All the students are requested to ensure their name for this visit. Be present on time for visit.



Head

**Department Of Chemistry
P. V. P. Mahavidyalaya,
K. Mahankal, Dist-Sangli**


Date – 24/04/2023

To,
Principal,
P. V. P. Mahavidyalaya Kavathe Mahankal.

Sub. – Regarding Permission for industrial visit.

Respected sir,

Department of chemistry will be going to arrange the industrial visit to
“SuyashIron and Steel PVT Ltd.” For B.Sc. III students at 26/04/2023. Please
grant permission for the one day industrial visit.


Head
Department of Chemistry
P. V. P. Mahavidyalaya,
K. Mahankal, Dist-Sangli

- 1) List of the student.
- 2) Declaration of the students.

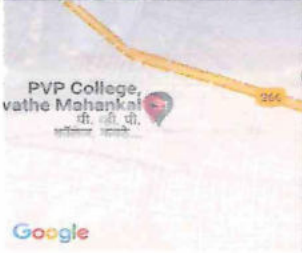
Declaration

We undersigned, students of B. Sc. III chemistry, declaring that we will follow all the rules and regulations of institute and instructions given by the teachers. Farther we also declare that we have taken the permission from our parents to participate in industrial visit to suyash iron and steel pvt Ltd at kupwad, miraj on 26/04/2023.

Sr. No.	Name of the student	Signature
1	Prathamesh Jagadish Mane	Mane P.I.
2	Vaibhav Sambhaji Koli	VSKoli
3	Sushant Sanjay Patil	Spatil
4	Shradha Dattatray Bhosale	SBBhosale
5	Chandrakala Balasaheb Patil	CBPatil
6	Aishwarya Popoat Salunkhe	Salunkhe
7	Amruta Bhupal Mali	ABMali
8	KomalAaravind Devkate	KDevkate
9	Nikita Nivrutti Sutar	Nikita
10	Nikita Balaso Kumbhar	NBKumbhar
11	Aishwarya Akaram Mali	AAMali
12	Vaishnavi Sahadev Mane	V.SMane
13	Aishwarya Dilip Gidde	ADGidde
14	Pooja Annaso Hajare	Pujahajare
15	Shweta Abaso Bhosale	SBhosale
16	Priyanka Bapuso Chougule	PBchougule
17	Gayatri Vilas Patil	G.V.Patil
18	Pranali Pravin Chavan	PPChavan
19	Monika Vilas Imade	M.V.Imde
20	Muskan Jamadar Mulla	MMulla
21	Akanksha Dinkar Jagtap	AJagtap
22	Pragati Pandit Shinde	Shinde
23	Tahir Gulab Attar	TAttar
24	Aditya Ramesh Khot	AKhot
25	Jankar Nikhil Balaso	JNB
26	Akshay Maruti Chavhan	A.M.Chavhan
27	Rohit Sanjay Gujale	Rajale
28	Rohit Vinod Patil	RVPatil
29	Sudhir Hanmant Patil	SHPatil

30	Sandip Sadashiv Jadhav	<u>Sadnav</u>
31	Manoj Vijay Bhat mane	<u>Bhatmane</u>
32	Amol Jaysing Hankare	<u>A. J. Hankare</u>
33	Tejas Dhairyashil Bhosale	<u>T. Bhosale</u>
34	Sunil Bandu Salunkhe	<u>S. Salunkhe</u>
35	Ruturaj Yuvraj Suryawanshi	<u>R. Suryawanshi</u>
36	Priyanka Prakash Hubale	<u>P. Hubale</u>
37	Rohini Bapurao Kashid	<u>R. Kashid</u>
38	Anagha Vitthal Kashid	<u>A. Kashid</u>
39	Shubham Suresh Waghmare	<u>S. Waghmare</u>
40	Aditya Sunil Patole	<u>A. Patole</u>
41	Sharad Chandrakant Patil	<u>S. Patil</u>
42	Sumit Vasnat Patil	<u>S. Patil</u>
43	Sachin Sopan Kumbhar	<u>S. Kumbhar</u>
44	Sanjay Govind Shingade	<u>S. G. Shingade</u>
45	Yuvaraj Vasant Gherade	<u>Y. Gherade</u>
46	Vikram Babaso Thombare	<u>V. Thombare</u>
47	Amol Balu Kalel	<u>A. Kalel</u>
48	Ajit Suresh Khandekar	<u>A. Khandekar</u>
49	Milind Khot	<u>M. Khot</u>

Sr. No.	Name of the faculty	Signature
1	Patil S. V.	<u>S. V. Patil</u>
2	Dr. Kore G. D.	
3	Kamble A. A.	<u>A. A. Kamble</u>



2V73+MR6, Kavathe Mahankal, Maharashtra 416405, India

Kavathe Mahankal

Maharashtra

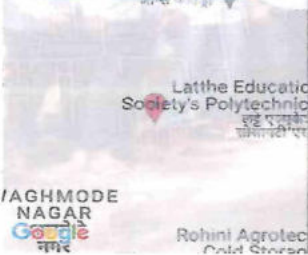
India

2023-04-26(Wed) 10:36(AM)



31°C

88°F



2023-04-26(Wed) 11:41(AM)



H - 14, Kupwad MIDC Rd, MIDC Kupwad, Sangli, Maharashtra 416436, India

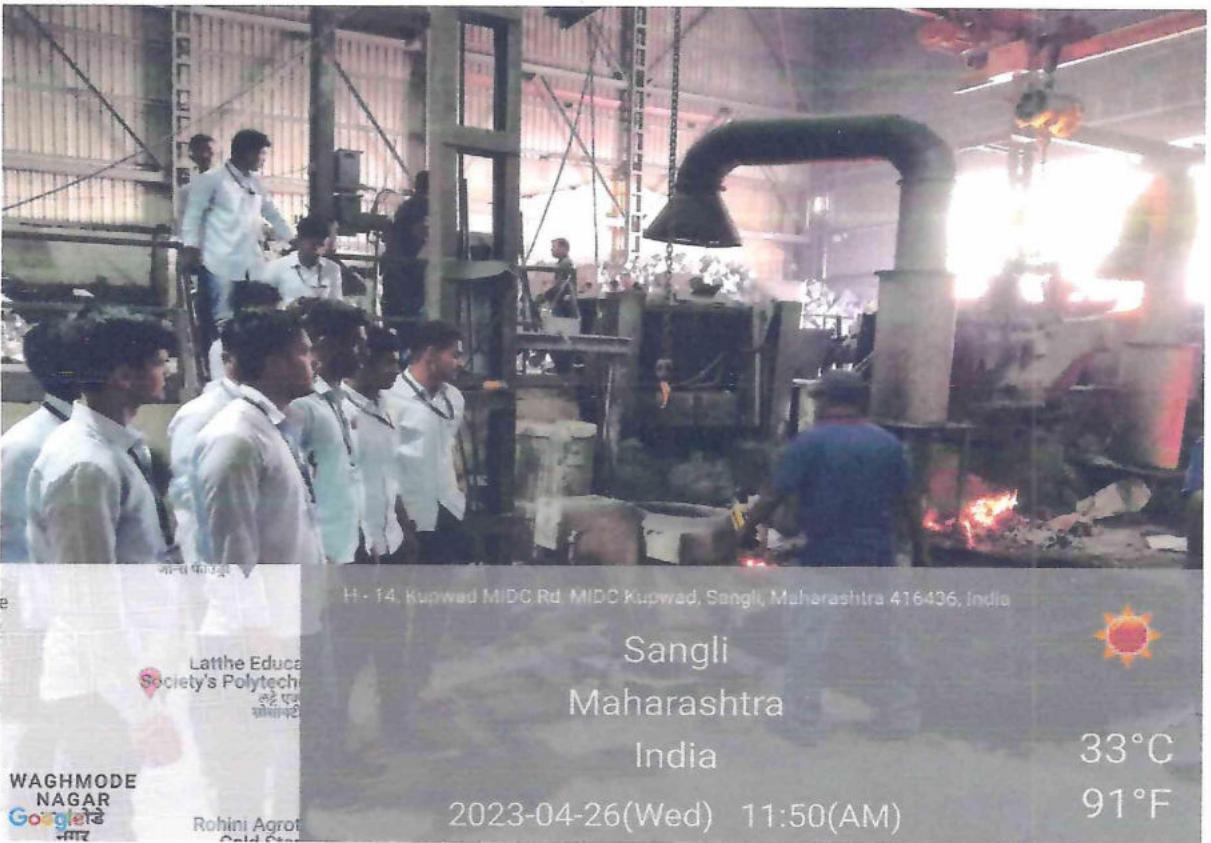
Sangli
Maharashtra
India

2023-04-26(Wed) 11:48(AM)

33°C
91°F

WAGHMODE NAGAR
Google Maps
Rohini Agro Gold Star

Latthe Education Society's Polytechnic
Sangli



H - 14, Kupwad MIDC Rd, MIDC Kupwad, Sangli, Maharashtra 416436, India

Sangli
Maharashtra
India

2023-04-26(Wed) 11:50(AM)

33°C
91°F

WAGHMODE NAGAR
Google Maps
Rohini Agro Gold Star

Latthe Education Society's Polytechnic
Sangli



H - 14, Kupwad MIDC Rd, MIDC Kupwad, Sangli, Maharashtra 416436, India

Sangli
Maharashtra
India

33°C
91°F

2023-04-26(Wed) 11:58(AM)

WAGHMODE NAGAR Google Maps Rohini Agrotec



VJ8H+JPR, Kupwad, Maharashtra 416436, India

Sangli
Maharashtra
India

35°C
95°F

2023-04-26(Wed) 01:22(PM)

WAGHMODE NAGAR Google Maps Rohini Agrotec

Shikshan Prasarak Sanstha's

Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal,

DEPARTMENT OF CHEMISTRY
Activity Report

Title	One day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students,
Day & Date	Friday, 13/10/2023
Organizer	Department of Chemistry
Co-Coordinator	Mr. A. A. Kamble, Mr. T.P. Shinde
Background	Departmental programs play a crucial role in helping students for their betterment. Industrial visit plays important role in holistic development of students.
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To provide students an insight into the real working environment, workstations, plants.• To interact with highly trained and experienced personnel.• To provide the information about various instruments required for chemical analysis.• To study different units and their collaboration in industry.• To learn assembly lines, machines, systems• To provide information about modern instruments used in industry.
Conclusion	The Department has arranged one day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students, on 13 th October at 10:00. am. The major goal of the program was to provide on field training in industry working and management. 25 students and 4 Faculties of Chemistry Department visited BAL Pharma Unit-5 Kavathe Mahankal. Assistant Manager Mr. Vikas Bhosale provided information about Various departments (Production, QC, QA) in industry. He has also provided information about chemical processes involved in industry, discipline, work culture in industry


Mr. S. V. Patil

Head




Prof. (Dr.) M. K. Patil

Principal
-PRINCIPAL
Padmabhushan Vasantraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist. Sangli

Application

From,
Head,
Department of Chemistry
P. V. P. College, KavatheMahankal,
Dist. Sangli, Maharashtra 416405
Date: 11/10/2023

To,
The Principal,
Padmabhushan Vasatraodada Patil Mahavidyalaya,
KavatheMahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

Subject: Seeking a permission to one Day Industrial Visit

Respected sir,

As per your guidelines we are going to arrange one day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students for their Holistic development and knowledge enrichment. This Industrial Visit will be of 1 day and will be arranged on during 13th October 2023. The Industrial Visit will be definitely very beneficiary for students.

I request you to give permission to above Industrial Visit of the Department.

Thanking you.

Permission granted.



PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasatraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Yours Sincerely



Head
Department Of Chemistry
P. V. P. Mahavidyalaya,
K. Mahankal, Dist-Sangli



PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA
KAVATHE MAHANKAL, Dist. Sangli (Maharashtra) Pin- 416 405
Principal Prof. (Dr.) M.K.Patil M.Sc., M.Phil., Ph.D.
Phone- 02341-295220 Email : kmpvp@rediffmail.com
Jr. College Index No. J 22.04.002

Mob. 9405649190
9421185277

Website : www.pvpkm.org

Date : 12/10/2023

RefNo. PVPMKM/ 2023-24 / 466

To,
The Manager,
BAL PHARMA UNIT 5,
THABADEWADI POST KVATHE MAHANKAL,
Kavathe Mahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

Subject: Seeking a permission to Industrial Visit

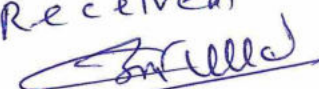
Respected sir,

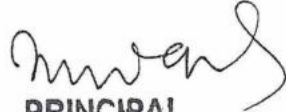
As per MOU with your esteemed institute, we wish to arrange one day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students for their Holistic development and knowledge enrichment. This Industrial Visit will be of 1 day and will be arranged on during 13th October 2023. The Industrial Visit will be definitely very beneficiary for our students.

I request you to give permission to above Industrial Visit of the Department.

Thanking you.

Yours Sincerely

Received

BAL PHARMA LTD.
At-THABADEWADI,
A/p.Tal.Kavathe Mahankal.
Dist.Sangli.Pin-416 405.


PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasantraodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Shikshan Prasarak Sanstha's


Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.

DEPARTMENT OF CHEMISTRY

Date: 10-10-2023

NOTICE

All the students in B.Sc. III are hereby informed that as per MOU with Bal Pharma institute, Department has arranged one day Industrial Visit for the B.Sc. III Chemistry Department Students, on 13th October at 10:00. am. To provide students an insight into the real working environment, workstations, plants, assembly lines, machines, systems, and interact with highly trained and experienced personnel. All the students are requested to ensure their name for this visit. Be present on time for visit.


Head
Department Of Chemistry
P. V. P. Mahavidyalaya,
K. Mahankal, Dist-Sangli



Bal Pharma Limited

Unit-V:
At: Thabadewadi
Post & Taluka: Kavathe Mahankal- 416 405
Dist.: Sangli, INDIA
Mob: 9422040544, 8669662544
Email: unit5@balpharma.com

Date: 13/10/2023

CERTIFICATE

(TO WHOMEVER SO EVER IT MAY CONCERN)

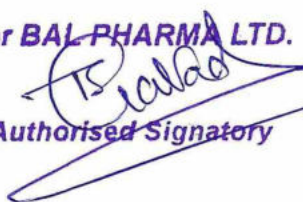
This is to certified that the department of Chemistry from Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathemahankal has visited our BAL PHARMA Unit-V facility on dated 13th October 2023. There are total 25 students and 4 faculties has visited to our facility.

Our best wishes to all students.....!

From,

BAL PHARMA LIMITED

For BAL PHARMA LTD.


Authorised Signatory



PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA
KAVATHE MAHANKAL, Dist. Sangli (Maharashtra) Pin- 416 405
Principal Prof. (Dr.) M.K.Patil M.Sc., M.Phil., Ph.D.
Phone- 02341-295220 Email : kmpvp@rediffmail.com
Jr. College Index No. J 22.04.002

Mob. 9405649190
9421185277

Website : www.pvpkm.org

Date : 14/10/2023

Ref No. PVPMKM/ 2023-24 / 467

To,
The Manager,
BAL PHARMA UNIT 5,
THABADEWADI POST KVATHE MAHANKAL,
Kavathe Mahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

Subject: Letter of appreciation

Respected sir,

Thank you for accepting our request and giving permission for industrial visit on 13th October 2023. Knowledge and information shared by your staff during the visit was very useful B.Sc. III Chemistry Department Students for their future endeavor. All the students appreciated and got benefited from your training.

Looking forward for your cooperation in future as well.

Received

BAL PHARMA LTD.
At-THABADEWADI,
A/p.Tal.Kavathe Mahankal.
Dist.Sangli.Pin-416 405.

Yours Sincerely

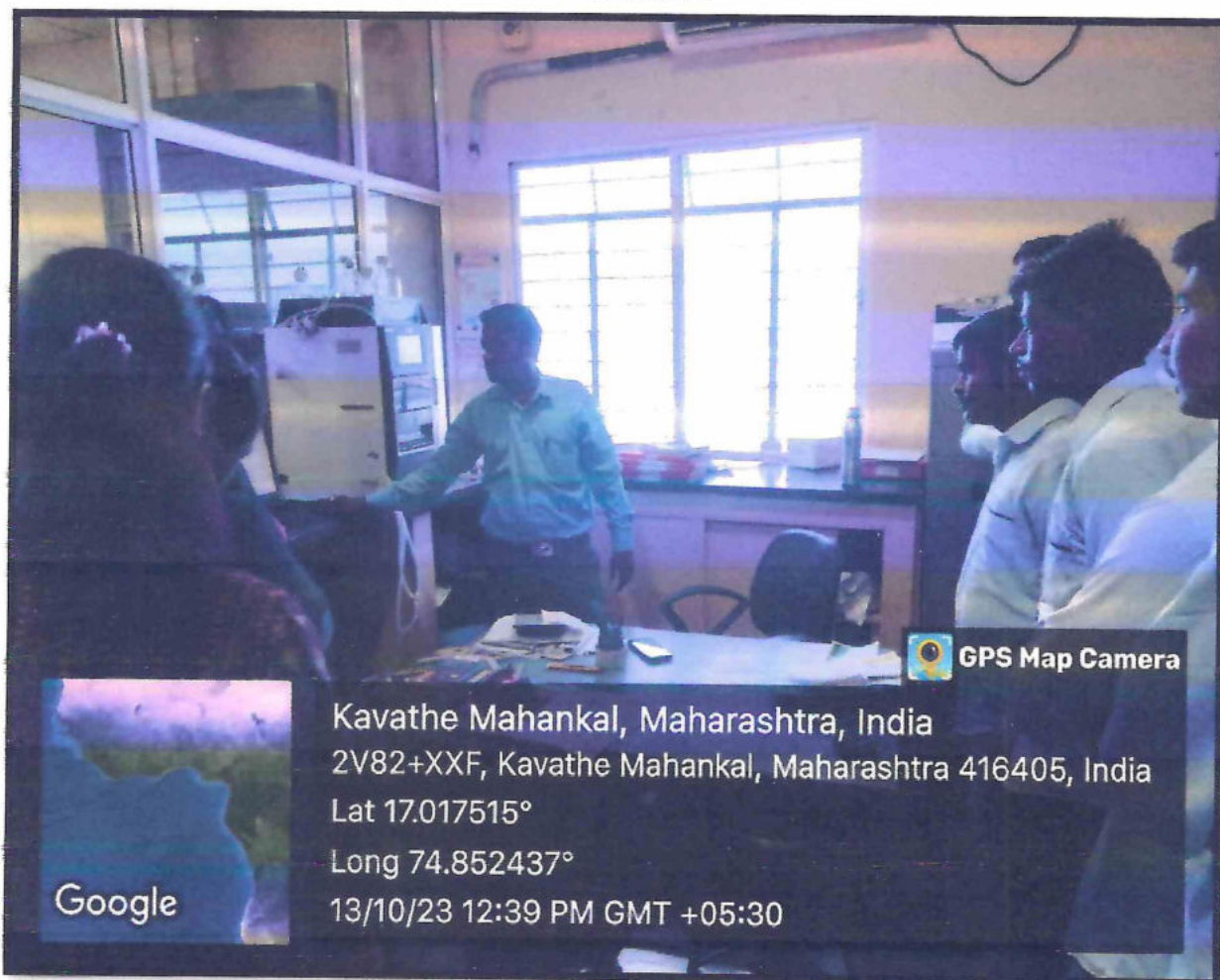
PRINCIPAL,
Padmabhushan Vasanttraodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli

ShikshanPrasarakSanstha's
PadmabhushanVasatraodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal

Department of Chemistry

Industrial Visit

Photos







PADMABHUSHAN VASANTRAODADA PATIL MAHAVIDYALAYA

KAVATHE MAHANKAL, Dist. Sangli (Maharashtra) Pin- 416 405

Principal Prof. (Dr.) M.K.Patil M.Sc., M.Phil., Ph.D.

Mob. 9405649190

Phone- 02341-295220 Email : kmpvp@rediffmail.com

9421185277

Jr. College Index No. J 22.04.002

Website : www.pvpkm.org

Ref No. PVPKM/ 2023-24 / 667

Date :

To,
The Manager,
BAL PHARMA UNIT 5,
THABADEWADI POST KVATHE MAHANKAL,
Kavathe Mahankal, Dist. Sangli,
Maharashtra 416405

Subject: Letter of appreciation

Respected sir,

Thank you for accepting our request and giving permission for industrial visit on 13th October 2023. Knowledge and information shared by your staff during the visit was very useful B.Sc. III Chemistry Department Students for their future endeavor. All the students appreciated and got benefited from your training.

Looking forward for your cooperation in future as well.

Yours Sincerely

PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli



Date:- 20/02/2024

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalay,
Kavathe Mahankal.
Department of Physics
Study Tour
Permission Letter

To,
The Principal,
P V. P. Mahavidyalaya,
Kavathe mahankal,
Dist – Sangli.

Subject :- Regarding permission for Study Tour.

Respected sir,

With reference to above subject, it is requested that the study tour of B. Sc. Part III (physics) is organised on 26 February 2024 at Koyana Dam, Koyana nagar, Karad (Maharashtra) . The said study tour is the part of syllabus. The study tour is a requested to be allowed.

Permission granted.

Mudal

20/2/2024
PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Yours,

Yohanna

Head

Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

**Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantraodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal**

DEPARTMENT OF PHYSICS

Student List

2023 - 24

Sr. No	Name	Mobile No.	Village	PRN No.
1	Patil Aditi Bajarang	9699304416	Shirdhon	2021019963 <i>ABR.LI</i>
2	Hiremath Shradhha Santosh	7757822003	Salgare	2021020565 <i>Hiremath</i>
3	Patil Anjali Dattatray	8669146414	Agalgaon	2021020011 <i>Anjali</i>
4	Patil Pranavika Shahaji	8600511065	Agalgaon	2021061058 <i>Patil</i>
5	Shinde Shradhha Vithhal	9325604368	Kokale	2021037136 <i>Shradhha</i>
6	Limkar Prajal Sudhir	9881411723	Dhagaon	2021055044 <i>Limkar</i>
7	Kharat Pranjali Laxman	9604468040	Jambhulwadi	2020070527 <i>Kharat</i>
8	Khot Shubhangi Raosaheb	8767370081	V. Wadi	2021020589 <i>Khot</i>
9	Kambale Kaveri Prakash	8080793677	Jath	2019011838 <i>Kambale</i>
10	Sutar Amit Raghunath	7219410539	Jakhapur	2021001630
11	Khamgal Rohit Keru	8766699510	Irali	2021020662 <i>Khamgal</i>
12	Yadav Om Sunil	8530546372	Irali	2021020673 <i>Yadav</i>
13	Bhosale Aditya Gulabrao	8167923004	K M	2021020514 <i>Bhosale</i>
14	Sutar Shivam Rajaram	9529605595	Kongnoli	2021020787

Prakash


Head

**Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli**

PHOTOGRAPHS:


STUDY TOUR 2023-24

DEPARTMENT OF PHYSICS



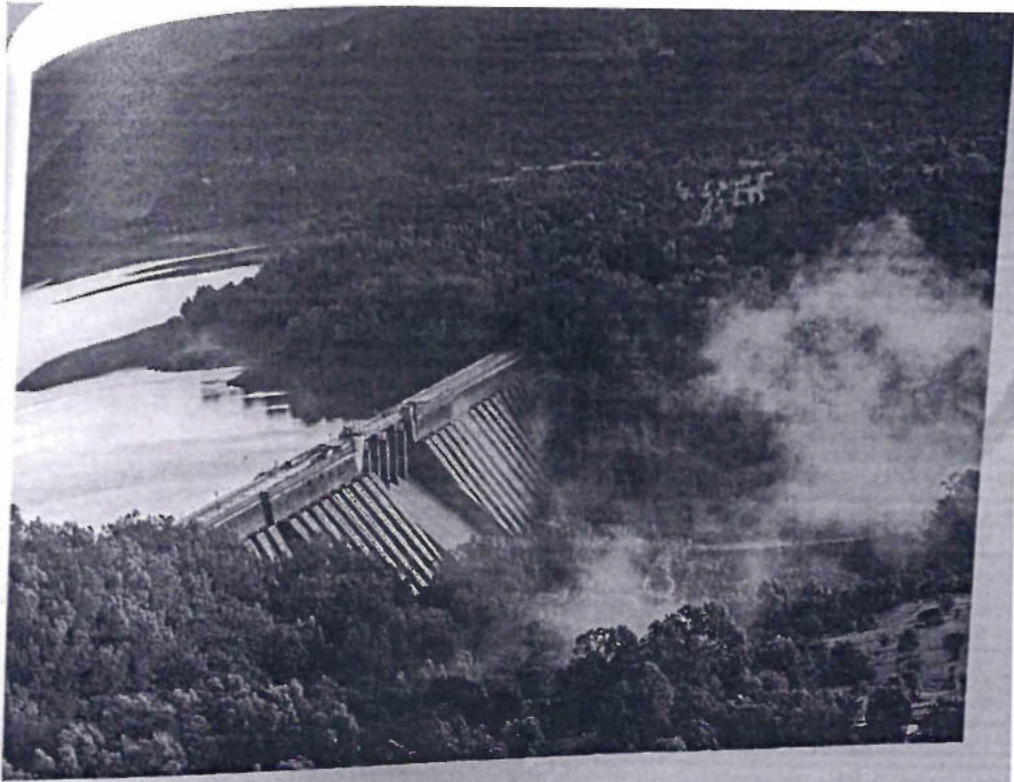
Google

Koyna dam, Koynanagar Maharashtra 416419, India
Long 73.744665
Lat 17.392976
26/2/2024 12:56 PM



Google

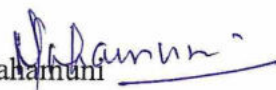
Koyna dam Koynanagar Maharashtra 416405, India
Long 73.744665°
Lat 17.392976°
26/2/2024 02:05 PM



‘Shikshan Prasarak Sanstha’s
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal

DEPARTMENT OF PHYSICS
Report of the Activity

Title	Study Tour
Date	28/02/2024
Organizer	Department of Physics The educational Tour of department of Physics for BSC III students has arranged on 26 th February 2024 at Koyana Dam, Satara.
Background	The Study tour was organized to visit a Koyana Dam aimed at providing students with practical exposure to scientific concepts and Hydro-electric power generation, water resource management and environmental impact and assessment. A study tour provides an opportunity for experiential learning, allowing students to learn in a hands-on environment and gain practical skills and knowledge. By participating in an educational tour, students gain first-hand exposure to different cultures, historical sites, and natural landscapes..
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To Provide students learning experience of construction, function and importance of dams in managing water resources.• To provide a platform for participants to discover new ideas ,gaining practical insites• To Educate students about dam safety measures, emergency protocol and risks of dams.
Conclusion	A study tour involves reflecting acquired knowledge ,evaluating the tours impact on participants and considering how the experience can be applied in academic settings .It include future recommendations for improvement and continued learning.

Mrs. P U Mahamuni 
Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

Date:- 03/05/2023

ShikshanPrasarakSanstha's
PadmabhushanVasatraodadaPatilMahavidyalay,
Kavathe Mahankal.
Department of Physics

Activity :- Study Tour

Permission Letter


To,
The Principal,
P V.P.Mahavidyalaya,
Kavathemahankal, Dist – Sangli.

Subject :-Regarding getting permission for educational trip

Respected sir,

With reference to above subject, it is requested that the educational trip of B.Sc.Part III(physics) class is organised on 10'th May 2023 at Shukracharya,Tal-Khanapur. The said educational trip is the part of syllabus of university examination. The said educational trip is a requested to the allowed.

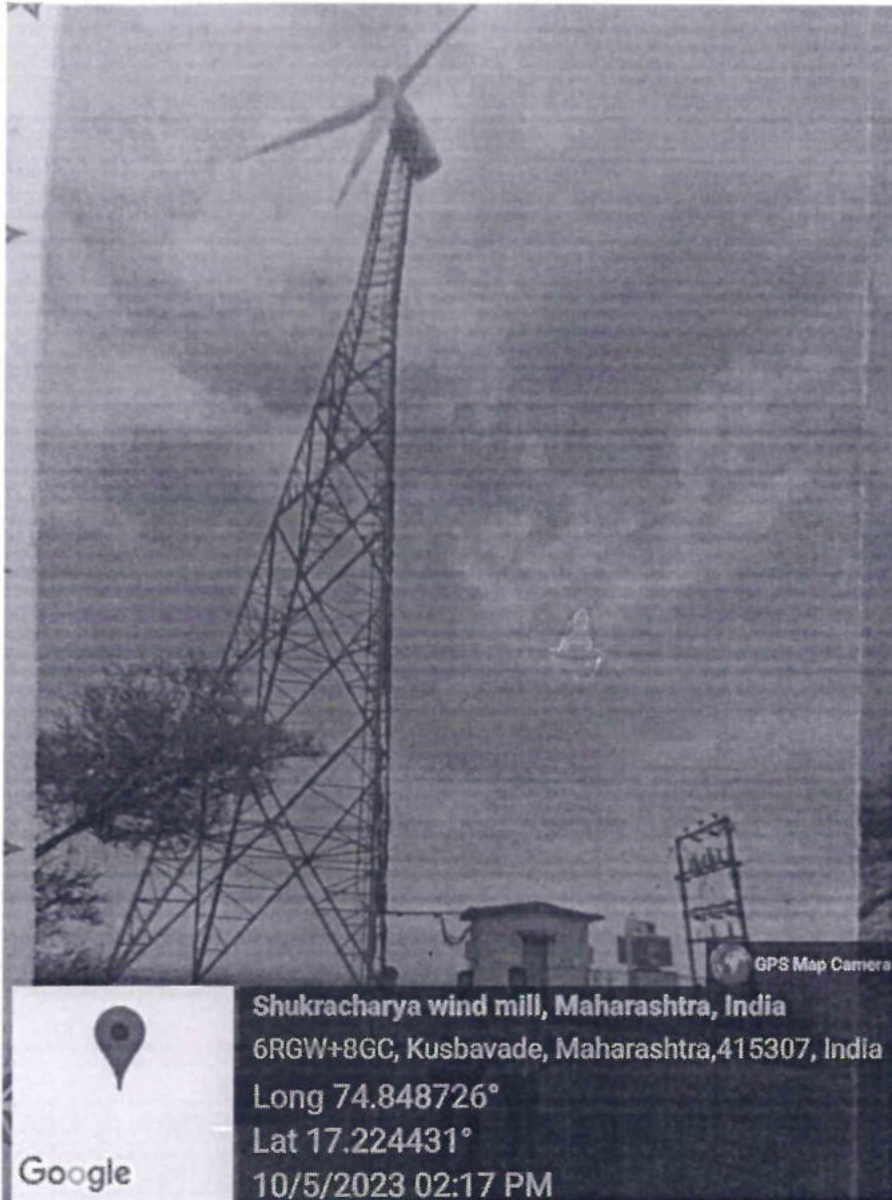
Yours,

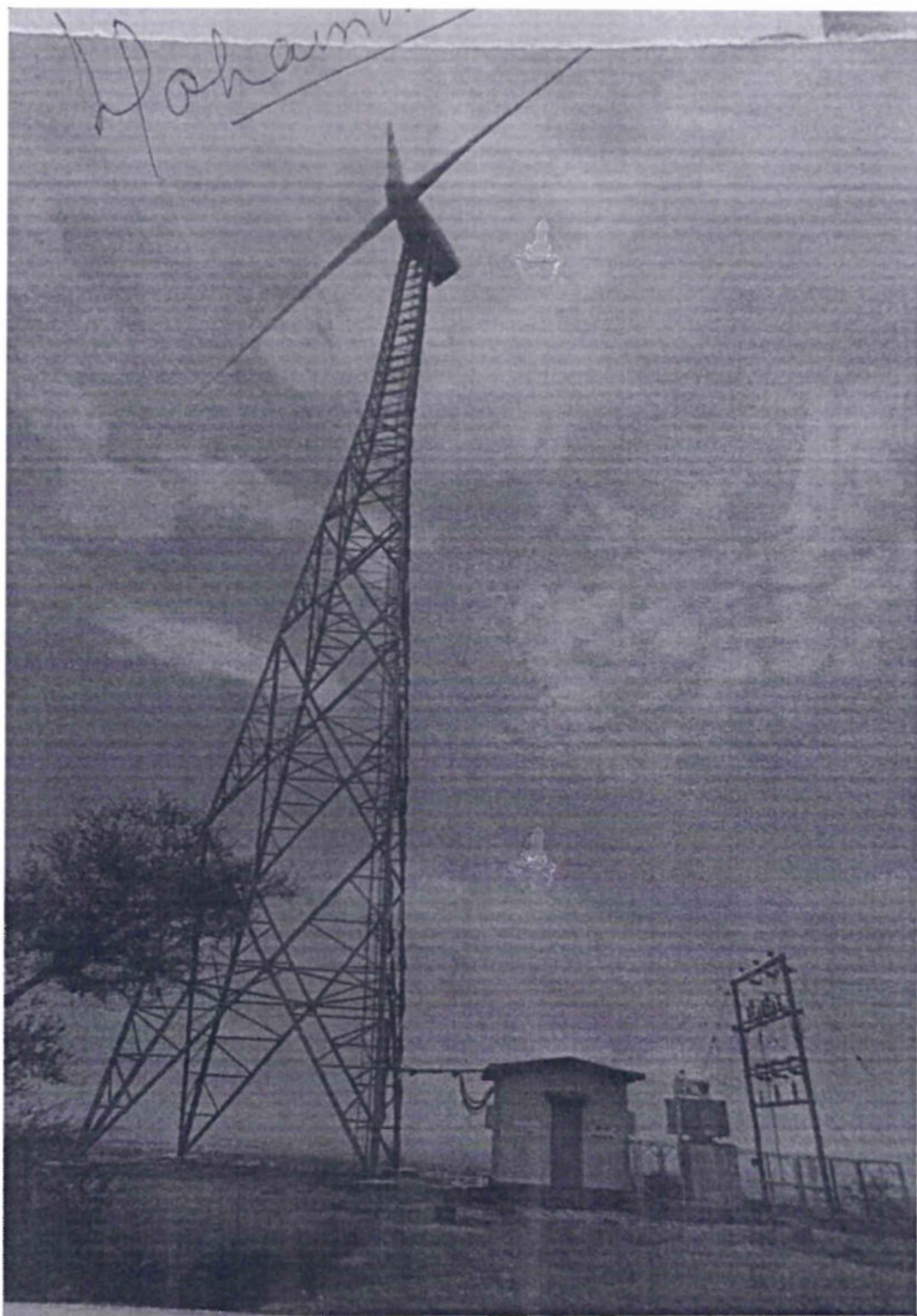

Head
Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

- **Student List.**

Sr No	Name of the Student	Mobile No.
1	Kashid Avinash Anil	9096217876
2	Patil Aditya Sahebrao	9730643542
3	Pawar Amarjeet Uttam	8446458488
4	Mali Sourabh Manohar	8432736565
5	Patil jayshri Audumbar	9421129021

- Photographs





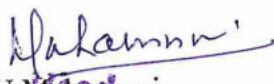
'Shikshan Prasarak Sanstha's

Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal

DEPARTMENT OF PHYSICS

Report of the Activity

Title	Study Tour
Date	12/05/2023
Organizer	Department of Physics The educational trip of department of Physics for BSC 3 students has arranged on 10'th May 2023 at wind form, Shukracharya, Tal.Kavathemahankal.
Background	A study tour provides an opportunity for experiential learning, allowing students to learn in a hands-on environment and gain practical skills and knowledge. By participating in an educational tour, students gain first-hand exposure to different cultures, historical sites, and natural landscapes..
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To encourage students to explore various aspects of new research.• To provide a platform for participants to discover new ideas ,gaining practical insites• To exchange of ideas among the participants and teachers.
Conclusion	A study tour involves reflecting acquired knowledge ,evaluating the tours impact on participants and considering how the experience can be applied in academic settings .It include future recommendations for improvement and continued learning.


Mrs. P U Mahanauni
Department Head Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

Date:- 20/05/2022

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal.
Department of Physics
Study Tour
Permission Letter

To,

The Principal,

P.V.P. Mahavidyalaya,

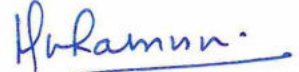
Kavathemahankal, Dist -Sangli

Subject:- Regarding permission for study tour.

Respected sir,

With reference to above subject, it is requested that the study tour of B.Sc.III (physics) is organised on 25th may 2022 at Ghatnandre Windfarm, Tal.Kavathe mahankal. The said study tour is the part of syllabus of university examination. Please allow for the activity.

Yours

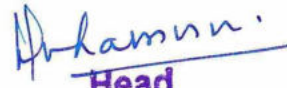


Head

Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

• Student List.

Sr No	Name of the Student	Mobile No.
1	Bidave Gaurav Shital	7498773860
2	Mane Renuka Raosaheb	9731214592
3	Mane Sakshi Bharat	9156336701
4	Patil Ankita Netaji	9321088570
5	Kolekar Pooja Shrimant	7822894862
6	Shelke Alok Suryakant	9284485104
7	Chavhan Sandeep Babasaheb	7420058086
8	Dudhal Vinayak Ramchandra	8080533161
9	Pawar Amol Balasaheb	9503937966
10	Phonde Suraj Mayappa	9373908701
11	Gonjare Prem Prakash	8600343435

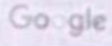


Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli


***Photographs**








  **Pune Division, Maharashtra, India**
Ghatnandre, Maharashtra 416311, India
Long 74.866795°
Lat 17.174411°
25/5/2022 01:28 PM

 GPS Map Camera



Date:- 26/05/2022

‘Shikshan Prasarak Sanstha’s
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal
DEPARTMENT OF PHYSICS
Study Tour
Report of the Activity

Title	Study Tour
Date	25/05/22
Organizer	Department of Physics
Background	A study tour provides an opportunity for experiential learning, allowing students to learn in a hands-on environment and gain practical skills and knowledge. By participating in an educational tour, students gain knowledge about environment and they are exposed to various issues about environment.
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To encourage students to explore various aspects energy forms.• To provide a platform for participants to discover new ideas about energy soueces.• To exchange of ideas among the participants and teachers.
Conclusion	A study tour involves reflection of acquired knowledge outside the classroom and considers how the experience can be applied in academic settings . It include future recommendations for improvement in use of non conventional energy sources.



Hohamun.
Mrs. P U Mahamuni

Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

Murthy
Prof.(Dr.) M.K.Patil

for **PRINCIPAL,**
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli

Date:- 01/02/2019

Shikshan Prasarak Sanstha's
Padmabhushan Vasantodada Patil Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal.
Department of Physics
Study Tour
Permission Letter


To,
The Principal,
P V.P.Mahavidyalaya,
Kavathemahankal,
Dist – Sangli.

Subject :- Regarding permission for Study Tour.

Respected sir,

With reference to above subject, it is requested that the study tour of B.Sc.Part III (physics) is organised on 05,06,07 February 2019 at Ahmadabad (Gujarat) . The said study tour is the part of syllabus of university examination. The study tour is a requested to be allowed.

Yours,


Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

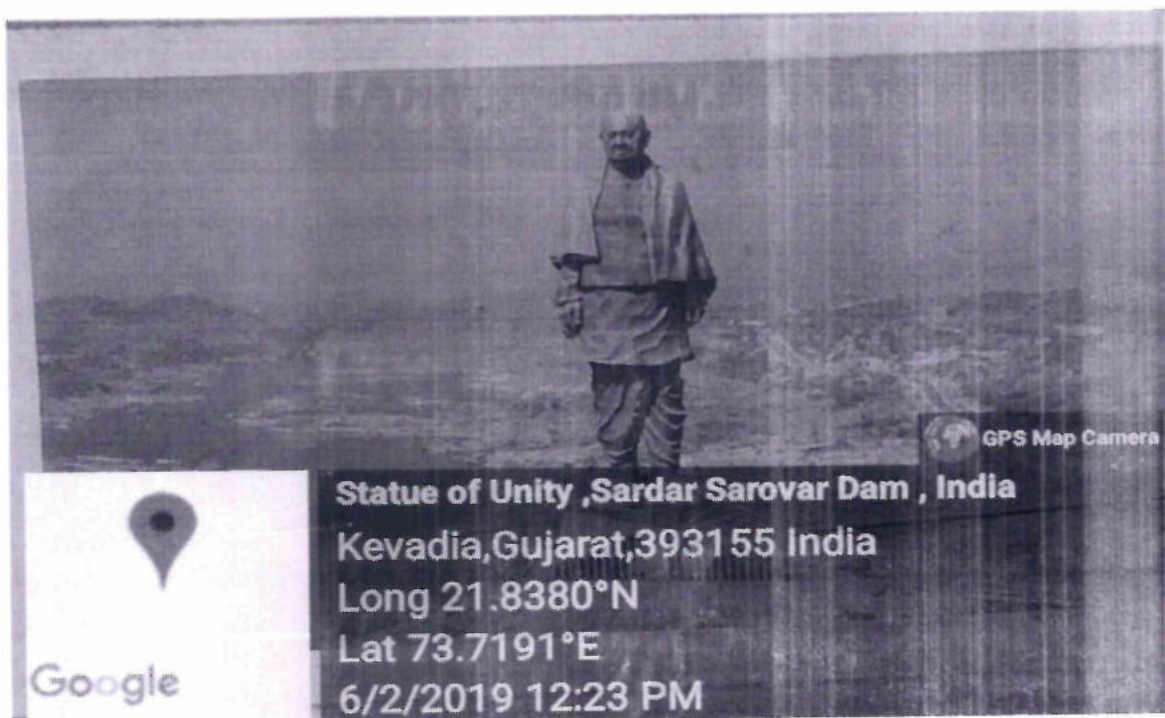
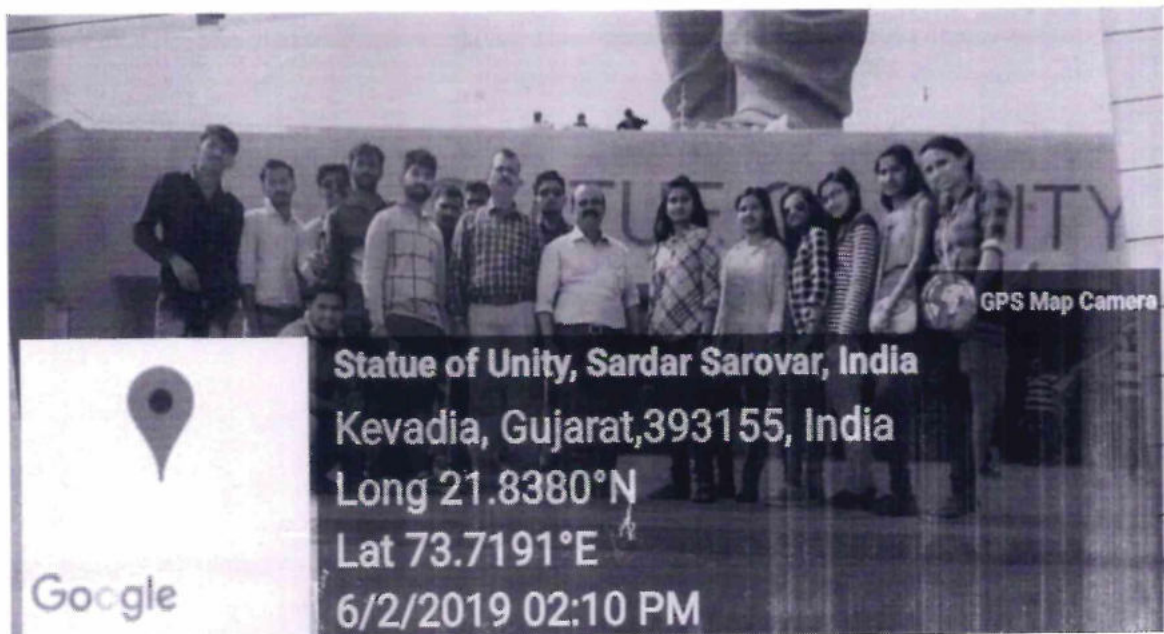
Student List

Sr. No	Name	Mobile No.	Village	PRN No.
1	Shinde Rohini P	7744989022	K M	2016028921
2	Suryawanshi Prajakta K	9503829301	Karoli(T)	2016028631
3	Shingade Pooja S	7387850323	Ankale	2016029011
4	Chavan Kiran M	8805885257	Karoli(T)	2016028659
5	Jadhav Ashwini A	9673977911	Agalgaon	2016028016
6	Bhandare Dhanashri G	9975341247	Kukatoli	2015015500495451
7	Ligade Smita B	8806985066	Borgaon	2015015500496311
8	Shinde Shital R	9673366992	Nagaj	2016028097
9	Kale Dhanashri R	7875782753	Chorocho	2016028086
10	Dhavale Navodit V	8999626086	Kongnoli	2016027937
11	Salunkhe Praffulla M	9130720828	Shelakewadi	2016029186
12	Patil Ganesh G	9552168487	Agalgaon	2015015500496021
13	Patil Akash K	7972223107	Agalgaon	2015015500494714
14	Bangar Pramod B	8600575481	Kuktoli	2016029209
15	Pawar Shital J	7387919688	Kuchi	2016029190
16	Mane Mayuri S	9420453915	A Dhulgaon	
17	Patil Tushar B	7391914913	Kuktoli	2016029196

H. Hamann

Head
Department of Physics
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli

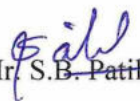
Photographs



Date:- 10/02/2019

‘Shikshan Prasarak Sanstha’s
Padmabhushan Vasantrodada Patil Mahavidyalaya, KavatheMahankal
DEPARTMENT OF PHYSICS
Report of the Activity

Title	Study Tour
Date	10/02/2019
Organizer	Department of Physics
Background	A study tour provides an opportunity for experiential learning, allowing students to learn in a hands-on environment and gain practical skills and knowledge. By participating in an educational tour, students gain first-hand exposure to different cultures, historical sites, and natural landscapes..
Objective	<ul style="list-style-type: none">• To encourage students to explore various aspects of new research.• To provide a platform for participants to discover new ideas ,gaining practical insites• To exchange of ideas among the participants and teachers.
Conclusion	A study tour involves reflecting acquired knowledge ,evaluating the tours impact on participants and considering how the experience can be applied in academic settings .It include future recommendations for improvement and continued learning.



Mr. S.B. Patil

Co ordinator


Mrs. P U Mahamuni

Head

Department of Physics
P.V.F. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal Dist-Sangli


Prof.(Dr.) M.K.Patil

for PRINCIPAL,
Principal
Padmabhushan Vasantrodada Patil
Mahavidyalaya, K.Mahankal, Dist-Sangli

वनस्पतिशास्त्र विभाग
जी. व्ही. पी. महाविद्यालय
कुवठे महानकाळ
दि. 14-01-2023





प्रति,
मा. प्राचार्यसो.
जी. व्ही. पी. महाविद्यालय
कुवठे महानकाळ

विषय - शैक्षणिक सहलीस परवानगी मिळोवावा.

महोदय

उपरोक्त विषयास अनुसरून महाविद्यालयातील वनस्पतिशास्त्र विभागान्वये B.Sc. III या वर्गाचे Botanical Excursion दाजोपूर वन्यजीव अभयारण्य, मालवण, देवबाग, अंबोली या ठिकाणी दि. 19-01-2023 ते 21-01-2023 रोजी आयोजित केली आहे. सदर सहली विद्यापीठीय परिषेचान्वय एक भाग आहे. तसे सहलीस परवानगी मिळावी ही नमू विनंती.

कळवे,

- 1) प्रा. जी. जी. पाटील 
- 2) डॉ. बी. टी. गांधव 
- 3) प्रा. एस. बी. पाटील 
- 4) प्रा. एस. एम. साबळे 

आपला विश्वासू



HEAD

Department of Botany
V.P. Mahavidyalaya
Kuvathe Mahankal

Sanctioned.
Mundal
15/1/2023

Excursion report: Radhanagri, Dajipur and Malvan

Sr. No.	Class of the plant	Botanical Name
1	Algae	Sargassum
		Dictyota
		Padayana
		Caulerpa
		Gelidium
		Gracellaria
		Ulva
		Laminaria
		Polysiponia
		2
Xylaria		
Capnodium		
Hexagonium		
Rhizisma		
Ganoderma		
3	Bryophytes	Riccia
		Anthoceros
		Cyathium
4	Pteridophytes	Pteris
		Blechnum
		Glycania
		Asplenium
		Aspidium
		Dhavalia
		Angiopteris
		Gymnopteris
		Chilanthus
		Lycopodium
		Pleopeltis
		Neprolepis
		Alsophillia
		Polybotrium
5	Angiosperms	<i>Dillenia indica</i> L.
		<i>Michelia champaca</i> L.
		<i>Cocculus hairsutus</i> Th
		<i>Argemone Mexicana</i> L.
		<i>Cleome viscosa</i> L.
		<i>Crateva adansonii</i> DC.
		<i>Casearia championii</i> Th.
		<i>Pittosporum dasycaulon</i> Miq.
<i>Polygala arvensis</i> W.		

Portulaca oleracea L.
Abutilon indicum L.
Grewia orbiculata Rott.

Linum mysurense He.
Tribulus terrestris L.
Oxalis corniculata L.
Impatiens acaulis Arn.

Aegle marmelos L.
Azadirachta indica. J.
Celastrus paniculatus W.

Ziziphus mauritiana L.
Cayratia trifolia L.

Cardiospermum helicacabum L.

Pongamia pinnata L.

Cassia mimosoides L.

Albizia lebbek L.

Kalanchoe pinnata L.

Myriophyllum oliganthum F.

Lagerstroemia reginae R.

Passiflora edulis S.

Coccinia grandis L.

Mollugo pentaphylla L.

Canthium angustifolium R.

Catunaregam spinosa T.

Carthamus lanatus L.

Wahlenbergia marginata DC.

Plumbago zeylanica L.

Olea dioica Roxb.

Carissa carandus L.

Bidaria khandalense J.

Brachystelma edulis C.

Buddleja asiatica L.

Centaurium meyeri D.

Heliotropium marifolium R.

Merremia hederacea H.

Cuscuta chinensis L.

Withania somnifera D.

Limnophila heterophylla B.

Lindernia nummularifolia W.

Mecardonia procumbens S.

Utricularia janarthanmii Y.

Utricularia naikii Y.

Epithema carnosum B.

Dolichandrone falcate S.

Sesum laciniatum K.
Supushpa scrobiculata S.
Clerodendrum serratum M.
Scutellaria discolor W.
Plantago eross W.
Boerhavia erecta L.
Achyranthes sesilis L.
Persicaria glabra G.
Cladopus hookerianus C.
Aristolochia indica L.
Peperomia pellucida K.
Dendrophthoe falcate E.
Viscum capitellatum Smith
Santalum album L
Balanophora abbreviate Bl.
Croton bonplandianus B.
Euphorbia geniculate O.
Pouzolzia integrifolia D.
Vallisneria spiralis L.
Burmannia pusilla Th.
Luisia zeylanica L.
Costus speciosus J.E. S
Zingiber purpureum R.
Tacca leontopetaloides O. K
Chlorophytum borivilianum S.
Eichhornia crassipes S.
Cyanotis tuberosa J.A & J. H.
Typha angustifolia L.
Arisaema sahyadricum Y.
Eriocaulon cuspidatum D.
Eriocaulon lanceolatum M.
Eriocaulon stellulatum K.
Eriocaulon tuberiferum K.
Eriocaulon species
Cyperus difformis L.
Schoenoplectus articulates P.
Alloteropsis cimicina S.
Chloris virgata Sw.
Cymbopogon gidarba H.
Digitaria abludens V.
Echinochloa colona L.
Hubbardia heptaneuron Bor
Microchloa indica P.B
Mnesithea granularis K.

Study Tour 2022-23

प्रा. व्ही. व्ही. कोष्टी
विभाग प्रमुख, संख्याशास्त्र विभाग
पी.व्ही.पी. महाविद्यालय कवठेमहांकाळ.
दि. १ एप्रिल २०२३

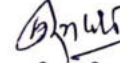
मा.प्राचार्यसो,
पी.व्ही.पी. महाविद्यालय कवठे महांकाळ
जि. सांगली.

विषय : शैक्षणिक सहलीस परवानगी मिळणेबाबत ..

महोदय,

वरील विषयास अनुसरून बी. एस्सी. भाग १/२/३ (संख्याशास्त्र) विद्यार्थ्यांची शैक्षणिक सहल दि. ०३/०४/२०२३ व ०४/०४/२०२३ रोजी कोल्हापूर, सिंधुदुर्ग, मालवण, विजयदुर्ग, रत्नागिरी आणि गणपतीपुळे येथे आयोजित केली आहे. सदर सहलीस परवानगी मिळावी, हि विनंती.

आपला विश्वासू,



प्रा. व्ही. व्ही. कोष्टी

सोबत: विद्यार्थी यादी.

Head
Department of Statistics
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist.-Sangli.

Department Of Statistics
Study Tour 2022-2023
Students and Teachers List

Sr. No.	Students Name	Gender	Age	Class	Birth date	Mobile no.
1	Manish Mahavir Kakade	Male	21	TY B.Sc.	09-10-2002	7385892700
2	Vikrant Anandrao Desai	Male	21	TY B.Sc.	19-10-2002	9503629601
3	Vikas Pradip Pawar	Male	21	TY B.Sc.	08-11-2002	9637895661
4	Someshwar Ramesh Borkar	Male	21	TY B.Sc.	31-03-2002	9067443923
5	Aniket Mangesh Ghubade	Male	21	TY B.Sc.	28-07-2002	9209333524
6	Dayanand Ramchandra Hipparkar	Male	21	TY B.Sc.	21-12-2002	7744985869
7	Shakil Sardar Nadaf	Male	21	TY B.Sc.	20-11-2001	9022674645
8	Suraj Dinakar Babar	Male	21	TY B.Sc.	19-10-2002	8956915766
9	Sairaj Nandkumar Patil	Male	21	TY B.Sc.	09-11-2002	7774070145
10	Tejas Tatyasaheb Sathe	Male	21	TY B.Sc.	22-07-2002	8605528079
11	Aniket Avinash Patil	Male	19	SY B.Sc.	24-06-2004	8055466479
12	Dhanashree Sanjay Bhosale	Female	21	TY B.Sc.	26-06-2002	8767125025
13	Anjum Maula Mulla	Female	21	TY B.Sc.	11-02-2003	7387492627
14	Rutuja Sunil Deshmukh	Female	21	TY B.Sc.	31-12-2002	9028298740
15	Prajwal Shivaji Patil	Female	21	TY B.Sc.	27-12-2002	9730563594
16	Pooja Balkrishna Kadam	Female	21	TY B.Sc.	01-07-2003	9359083517
17	Tanaya Dhananjay Purohit	Female	21	TY B.Sc.	20-11-2003	9146714260
18	Dipali Uddhav Londhe	Female	21	TY B.Sc.	22-04-2002	9325564565
19	Komal Arvind Devkate	Female	21	TY B.Sc.	02-02-2002	8806544042
20	Yashodha Nathaji Chougule	Female	20	SY B.Sc.	02-03-2002	9322241090
21	Rohini Mukesh Latthe	Female	20	SY B.Sc.	29-12-2002	9156347804
22	Sushmita Abaso Bhosale	Female	20	SY B.Sc.	22-07-2003	9021930821
23	Priyanka Balu Mali	Female	21	SY B.Sc.	07-12-2002	9370760506
24	Akshata Balaso Patil	Female	20	SY B.Sc.	02-01-2004	9359245147
25	Arti Tanaji Jadhav	Female	20	SY B.Sc.	03-12-2003	8329518966
26	Pratiksha Anandrao Patil	Female	20	SY B.Sc.	05-04-2003	8208691533
27	Ashwini Pandurang Shinde	Female	21	SY B.Sc.	29-07-2002	9730651218
28	Pratiksha Ajayraj Suryavanshi	Female	20	SY B.Sc.	05-06-2003	9309014020
29	Shraddha Vitthal Shinde	Female	20	SY B.Sc.	16-04-2003	9325604368
30	Shailaja Dilip Shinde	Female	20	SY B.Sc.	08-05-2003	9970659307
31	Pradip Devendra Pawar	Male	21	SY B.Sc.	16-02-2003	9021706016
32	Shraddha Santosh Hiremath	Female	20	SY B.Sc.	30-7-2003	7757822003
33	Pranali Keshav Jagatap	Female	21	TY. B.Sc.	14-05-2002	7387203490
34						
35						
36						
37						
38						
39						
40						

Teachers Name

Sr. No.	Teachers Name	Gender	Mobile No.
1	Mr. V. V. Koshti	Male	9423829117
2	Mr. S. V. Patil	Male	9422214358
3	Miss. P. M. Patil	Female	7768877791
4	Mr. G. D. Satpute	Male	9975736168


Acting Principal
Padmabhushan Vasantnada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal Dist. Sangli

SHIKSHAN PRASARAK SANSTHA'S
P.V.P.MAHAVIDYALAYA KAVATHE MAHANKAL
DEPARTMENT OF STATISTICS
STUDY TOUR REPORT

Name of Student:

3th- 4 April, 2023.

ROLL NO.:

The department of Statistics has organized the study tour to Mahalaxmi Temple, Kolhapur-Gaganbawda-Sindhudurg-Malwan-Kunkeshwar-Vijaydurg-Ratnagiri-Ganpatipule. During this study tour the students of B. Sc. III (18), B. Sc. II (13) and four teachers Mr. V. V. Koshti, Mr. S.V. Patil, Miss. P.M. Patil and Mr. G. D. Satpute were participated. The purpose of trip is to get some scientific/statistical information about the forts Sindhudurg and Vijaydurg.

On Monday morning we depart from P.V.P. Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal at 5.00 am. First we visited to Mahalaxmi Temple; Kolhapur at 8:00 am. Then we reach to Gaganbawda, Gaganbawda offers you most scenic views of mighty mountain ranges of Western Ghats. There we got information about our Western biodiversity and flora & fauna forest etc. Then we left Gaganbawda at 11.30 pm. We had taken lunch in between 12:00 to 12.45 p.m. and we reached Sindhudurg around 4.00 p.m.

Then we visited Sindhudurg fort and take some information about it. Sindhudurg island-fort was built by Shivaji Maharaj, the 17th century ruler of Maratha Empire. Its main objective was to counter the rising influence of foreign (English, Dutch, French and Portuguese) merchants and to curb the rise of Siddhis of Janjira. Construction was supervised by Hiroji Indulkar in 1664. Built over a period of three years (1664-1667), the sea fort is spread over 48 acres, with a two-mile (3 Km) long rampart, and walls that are 30 feet (9.1 m) high and 12 feet (3.7 m) thick. We left Sindhudurg at 6:00 pm and we went to the Rock garden, Malwan and enjoyed the sunset. We left garden at 7:30 and then depart to our stay in Malwan.

Next day morning at 6:00 am we left from stay and reached to Kunkeshwar temple. We exited the temple and left for Vijaydurg. We reached Vijaydurg at 11:00 am and took all the fort information from guide. On Vijaydurg fort, Sir J Norman Lankier, a British Scientist was observing a solar eclipse from Vijaydurg fort on 18th august 1868. It was during his observation that the Helium Gas was discovered on Sun in the form of a yellow flame. He named this as Helios which was later named as Helium. It is said that this particular point on the fort is the most nearest point from the Sun, and hence very hot. After visiting Vijaydurg fort we left for Ratnagiri. In the midway we take lunch and we reached to Ratnagiri Aquarium and Museum. There have some rare and beautiful specimens of fishes we can observe. Then we left Ratnagiri and reached to Ganpatipule at 5:00 pm. we visit auspicious Ganesh temple. There we made our shopping also and some time spend on beach then departs to Kavathe Mahankal. We arrive at P.V.P. Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal at around 4.00 am.

At the end of trip we understood that the subjects History, Geography, Science are interrelated with each other and we have to study each subject. In this way our study tour was fruitful in respect of knowledge and enjoyment.

Student Signature

Tour in charge

Miss. P.M. Patil
Mr. G. D. Satpute

V.V. Koshti
Head,

Department of Statistics

Head

Department of Statistics
P.V.P. Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal, Dist.-Sangli.

S. V. Patil
Head,

Department of Chemistry

Dr. प्रभाती पाटील
पद्मश्री प्राचार्य
पद्मश्री वसुदेवराव पाटील महाविद्यालय
कवठेमहानकाल जि. सांगली.

संमतीपत्र

दिनांक:- 1/04/2023

प्रति,

मा. प्राचार्यसो,

पद्म. भूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय,

कवठेमहांकाळ, सांगली, महाराष्ट्र,

मी. मुकेश पंडित लठठे राहणार - कुर्गे

तालुका- क.स. जिल्हा - सांगली

माझा पाल्य चि/कु शेहिणी मुकेश लठठे , ही BSc-II या

वर्गात आपल्या महाविद्यालयात शिकत आहे. महाविद्यालयाची शैक्षणिक सहल सोमवार,

दिनांक :- 03/04/2023 ते मंगळवार, दिनांक:- 04/04/2023 दरम्यान कवठेमहांकाळ -

कोल्हापूर - राधानगरी अभयारण्य - मालवण - रत्नागिरी - गणपतीपुळे इत्यादी. ठिकाणी 2 दिवस

व 1 रात्र मुक्कामी जात आहे. त्या सहलीसाठी माझा पाल्य जाऊ इच्छितो. तरी त्या सहलीस

जाण्यास मी स्वखुशीने व संपूर्ण जबाबदारीने परवानगी देत आहे.

सहलीपूर्वी व सहलीनंतर पाल्याची महाविद्यालय पर्यंत ने आण करण्याची जबाबदारी माझी राहिल.

स्वाक्षरी mpetw

पालकांचे नाव मुकेश पंडित लठठे

मोबाईल नंबर 9765927495

Photos:



पी.व्ही.पी.महाविद्यालयाची शैक्षणिक सहल



प्रा.विजय कोठी
कवठेमहाकाळ-अभ्यास व संशोधन यासाठी विशिष्ट स्थळांचा केलेला प्रवास म्हणजे शैक्षणिक सहल (अभ्यास दौरा). आधुनिक शिक्षण पद्धतीमध्ये शैक्षणिक सहलींना खूप महत्व असून सहलीने केवळ दृष्टिकोनच विस्तृत होत नाही तर ज्ञानवृद्धी देखील होते. याच हेतूने पद्मभूषण वसंतरावदादा पाटील महाविद्यालय कवठे महाकाळ जि. सांगली च्या संख्याशास्त्र विभागाने बी. एस.सी. च्या विद्यार्थ्यांच्या अभ्यास सहलीचे नियोजन केले होते. सांख्यिकी विभागाने दि. ३ व ४ एप्रिल रोजी महालक्ष्मीमंदिर, कोल्हापूर-गगनबावडा-सिंधुदुर्ग-मालवण-कुणकेश्वर-विजयदुर्ग-रत्नागिरी-गणपतीपुळे अशी शैक्षणिक सहल आयोजित केली होती. या अभ्यास दौऱ्यात बी. एस.सी. भाग तीनचे १८, बी. एस.सी. भाग दोनचे १३, बी. एस.सी. भाग एक चे १ आणि

चार शिक्षक श्री. व्ही. व्ही. कोठी, श्री.एस.व्ही. पाटील, श्रीम. पी.एम. पाटील आणि श्री.जी.डी. सातपुते सहभागी झाले होते. सिंधुदुर्ग आणि विजयदुर्ग किल्ल्यांबद्दल काही वैज्ञानिक/सांख्यिकीय माहिती मिळवणे हा सहलीचा उद्देश होता. यावेळी विद्यार्थ्यांनी महालक्ष्मी मंदिर पाहिले तसेच गगनबावडा मार्गे पश्चिम घाटातील बलाढ्य पर्वतराजीचे निसर्गरम्य दृश्य पाहताना जैवविविधता आणि वनस्पती आणि प्राणी जंगल इत्यादींची माहिती मिळवली. त्यानंतर संध्याकाळी ४.०० च्या सुमारास सिंधुदुर्गात पोहोचल्यानंतर किल्ल्याला भेट देऊन त्याबद्दल थोडी माहिती घेतली. सिंधुदुर्ग बेट-किल्ला १७ व्या शतकातील मराठा साम्राज्याचे शासक श्री छत्रपती शिवाजी महाराज यांनी बांधला होता. परकीय (इंग्रजी, डच, फ्रेंच आणि पोर्तुगीज) व्यापाऱ्यांच्या वाढत्या प्रभावाचा मुकाबला करणे आणि जंजिऱ्यातील सिद्धीचा उदय

रोखणे हा किल्ला बांधण्याचा मुख्य उद्देश होता. हिरोजी इंदुलकर यांनी १६६४ मध्ये बांधकामाचे पर्यवेक्षण केले होते. तीन वर्षांच्या कालावधीत (१६६४-१६६७) बांधलेला, सागरी किल्ला सुमारे ४८ एकरांवर पसरलेला आहे. किल्ल्याला दोन मैल (३ कि.मी.) लांबीची तटबंदी असून भिंतीची ऊंची ३० फूट (९.१ मीटर) व जाडी १२ फूट (३.७ मीटर) आहे. सिंधुदुर्गातून संध्याकाळी ६.०० वाजता निघाल्यानंतर रॉक गार्डन, मालवण येथे सूर्यास्ताचा आनंद घेतला. साडेसात वाजता बाग सोडली आणि मग जेवणानंतर मुक्काम केला. दुसऱ्या दिवशी सकाळी ६.०० वाजता सहल सुरू झाली आणि मालवण हून कुणकेश्वर मंदिरात पोहोचली. तेथून निघाल्यानंतर सकाळी ११.०० वाजता विजयदुर्गला पोहोचली आणि गार्ड कडून गडाची इत्यंभूत माहिती घेतली. विजयदुर्ग किल्ल्यावर, ब्रिटिश शास्त्रज्ञ सर



जे. नॉर्मन लॅकियर यांनी १८ ऑगस्ट १८६८ रोजी विजयदुर्ग किल्ल्यावरून सूर्यग्रहण पाहत असताना त्यांच्या निरीक्षण दरम्यान सूर्यावर पिवळ्या ज्वालाच्या रूपात हेलियम वायूचा शोध लागला. त्याला हेलिअस असे नाव दिले ज्याचे नंतर हेलियम असे नामकरण करण्यात आले. असे म्हटले जाते की किल्ल्यावरील हा विशिष्ट बिंदू सूर्यापासून सर्वात जवळचा बिंदू आहे आणि म्हणून खूप ऊष्ण आहे. विजयदुर्ग किल्ला पाहून रत्नागिरीमध्ये मत्स्यालय आणि संग्रहालयात पोहोचली. माशांचे वऱ्ही जुर्मळ आणि सुंदर नमुने विद्यार्थ्यांनी पाहिले. त्यानंतर रत्नागिरीहून निघून संध्याकाळी ५:३० वाजता

गणपतीपुळ्याला सहल पोहोचली. तेथे पवित्र गणेश मंदिराला भेट, खरेदी आणि काही वेळ समुद्रकिनारी घालवल्यानंतर कवठेमहाकाळला परत निघाली. सहलीच्या शेवटी विद्यार्थ्यांना समजले की इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदी विषय एकमेकांशी निगडित आहेत आणि त्यांना प्रत्येक विषयाचा अभ्यास करावा लागेल. अशा प्रकारे शैक्षणिक सहल (अभ्यास दौरा) ज्ञान आणि आनंदाच्या बाबतीत फलदायी ठरला. सहलीच्या नियोजनासाठी संस्थेचे अध्यक्ष बाळासाहेब शिंदे, सचिव सुदर्शन शिंदे, प्राचार्य प्रा. (डॉ.) एम. के. पाटील यांचे सहकार्य आणि मार्गदर्शन लाभले.

Amudal

PRINCIPAL,

Padmabhushan Vasantraoada Patil
Mahavidyalaya, K. Mahankal, Dist-Sangli

Exam No :-

EXCURSION REPORT ZOOLOGY

Visit to :-

Jakhapur Tank

DATE : 01/01/2020



Exam no. -

Exam no -

Excursion Report

Zoology

Visit to – Jakhapur Tank

Date : 1st Jan 2020



Roll No. :-

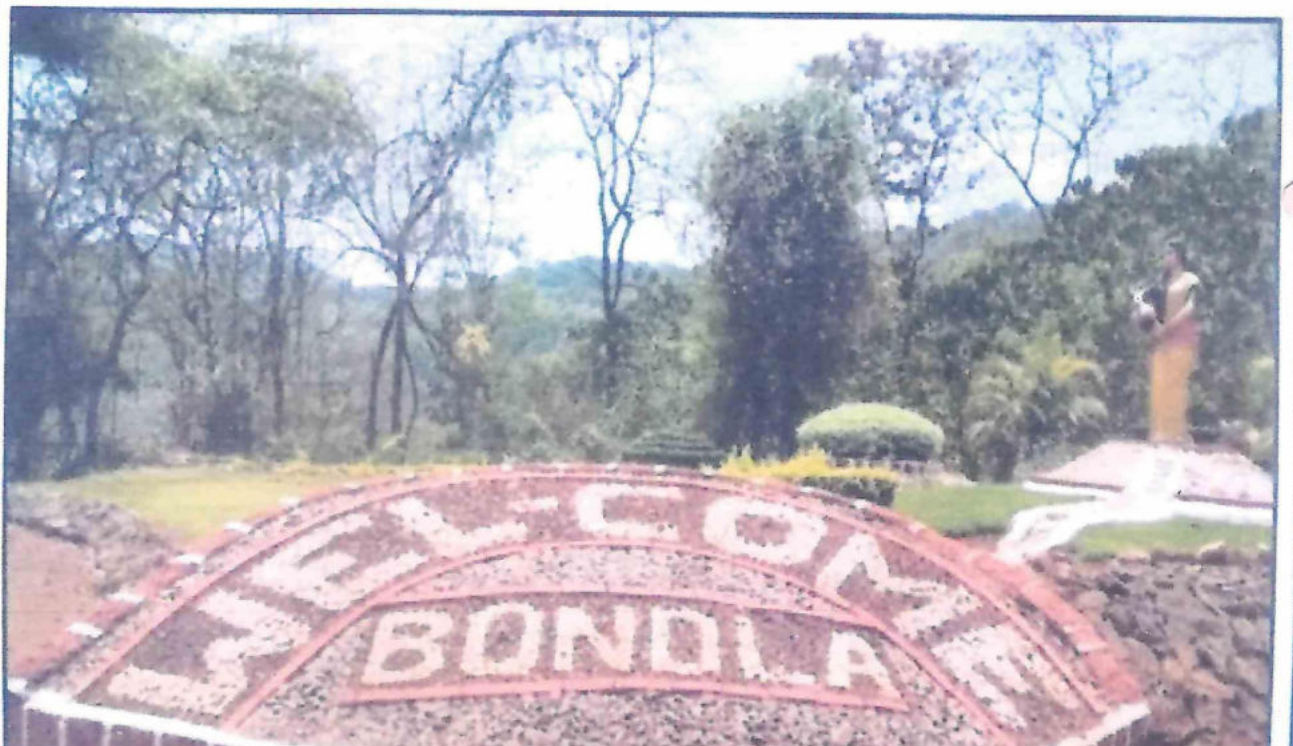
Exam No :-

ZOOLOGICAL EXCURSION

Visit to :-

- Bondla Wildlife Sanctuary
- Malwan Ajara
 Amboli
- Devbag Tambdi Surta
- Sindhudurg TarKarli
 Kunkeshwar

Date :- 15 Jan 2020 to 18 Jan 2020



Roll No:

Exam No: 32773

P.V.P. Mahavidyalaya, Kavathe Mahankal

Department of Zoology

Visit to : Sheep and goat farm, Ranjani.

Session:2021-22

Date : 6th July 2021



Roll No. :-

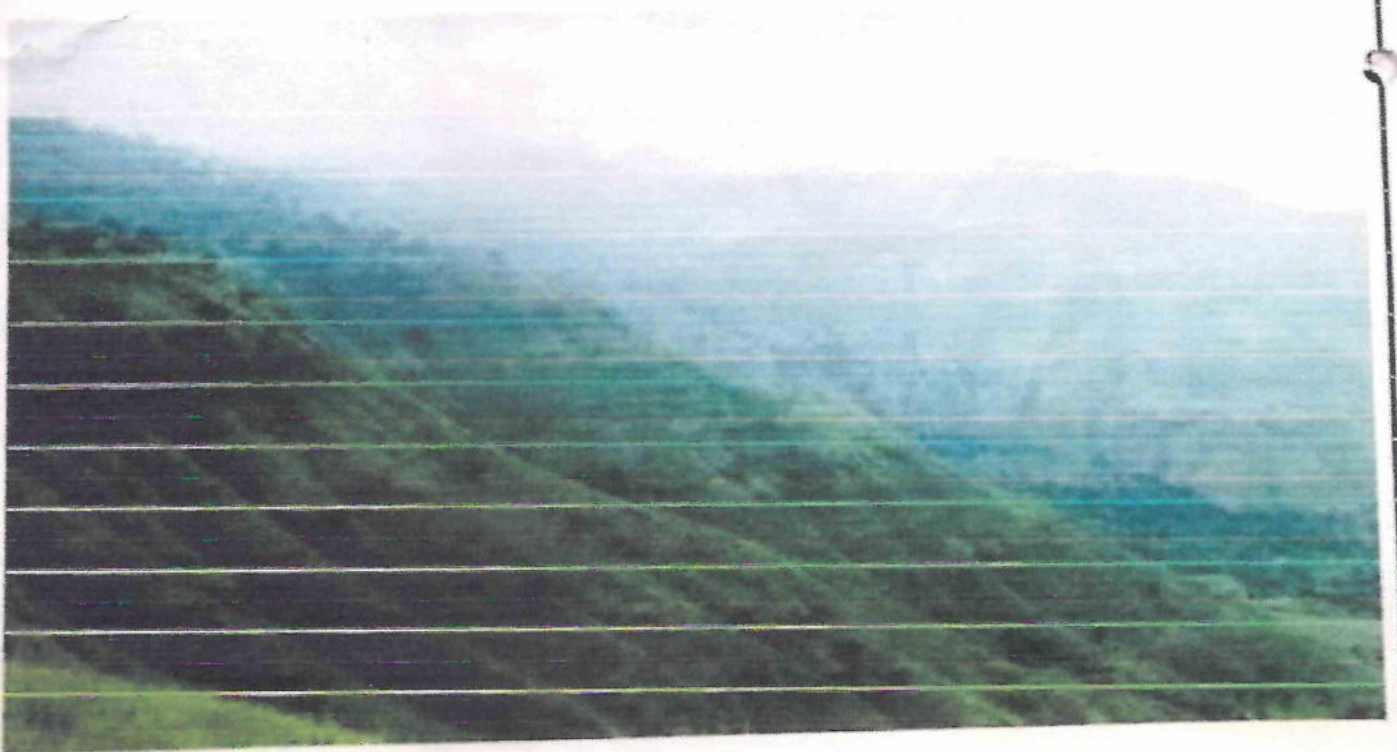
Exam No :-

ZOOLOGICAL EXCURSION

Visit to :-

Dandoba Hills

Date :- 10 July 2021



Roll No. :-

Exam No :-

ZOOLOGICAL EXCURSION

Class : B. Sc. III (2020-2021)

**Study of Arthropods
in *Agalgon &* Surrounding Area**

Date :- 20 July 2021



ROLL NO. 7090

ZOOLOGICAL EXCURSION

VIST TO -

RAYWADI TANK AND BIODIVERSITY

DATE – 1 JULY 2021



Roll No.

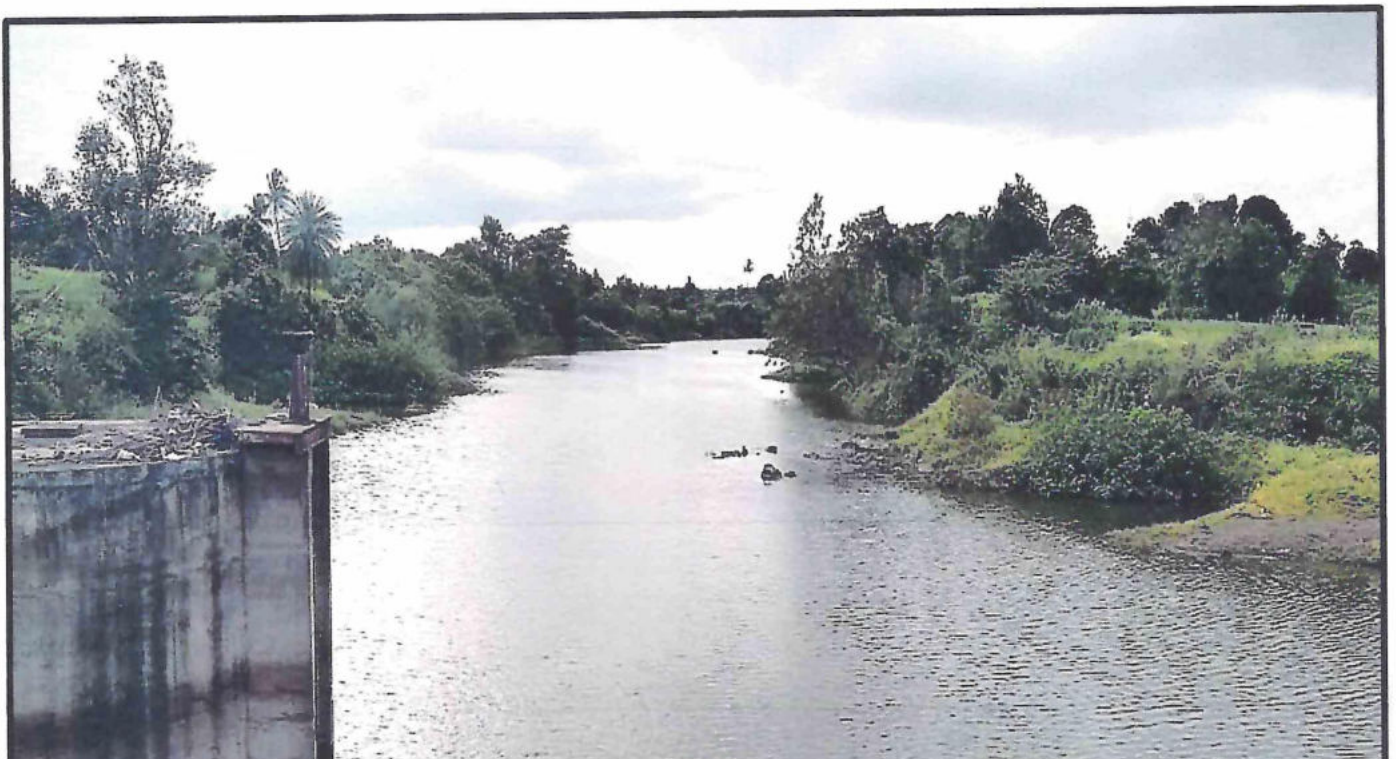
Exam No. 7048

ZOOLOGICAL EXCURSION

VISIT :-

AGRANI RIVER,
GHAVAN

DATE : 20-8-21



B.Sc. III - 2021-22

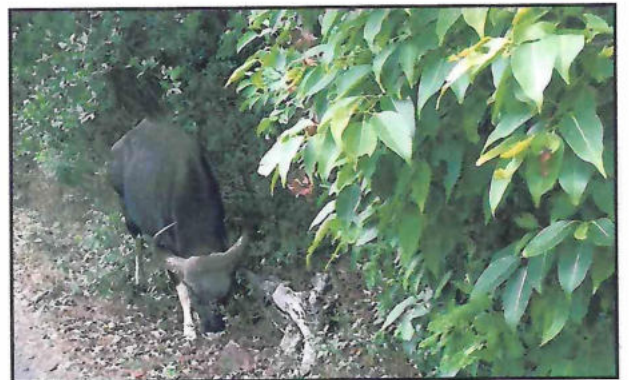
Exam No:- 29327

EXCURSION

Dept. Of Zoology
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal
B.Sc - III

Visit To — Panchgani (Biodiversity Park)
Mahabaleshwar
Tapola (Vasota)
Pratapgad
Ratnagiri, Ganpatipule
Amba Ghat

Date :- 09-05-2022 To 12-05-2022



Exam No:-

EXCURSION

Dept. Of Zoology
P.V.P. Mahavidyalaya
Kavathe Mahankal
B.Sc - III

Visit To — Panchgani (Biodiversity Park)
Mahabaleshwar
Tapola (Vasota)
Pratapgad
Ratnagiri, Ganpatipule
Amba Ghat

Date :- 09-05-2022 To 12-05-2022



ZOOLOGICAL EXCURSION

B.Sc - III
Visit To
Dandoba Hill Forest

Date :- 15 JAN 2022



Exam No:- 17078

EXCURSION

Department Of Zoology

B.Sc – II

**Biodiversity From
P.V.P Mahavidyalaya,
Kavathe Mahankal**

Date :- 21 May 2022



Exam No. :-37133

ZOOLOGY EXCURSION

Visit to -

Radhanagari

Dajipur

Malvan

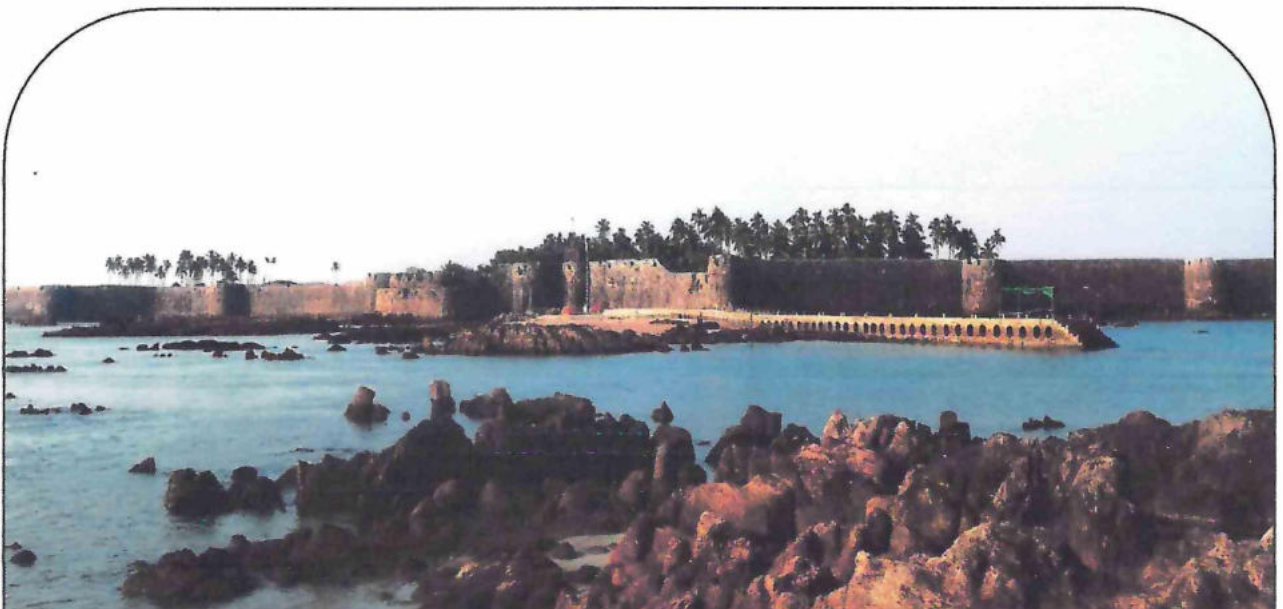
Sindhudurg

Savantwadi

Amboli

Hiranikeshi

Date : 10th Nov. to 12th Nov. 2022



Exam No -

Roll No - 155

EXCURSION REPORT

ZOOLOGY

Visit to - Jakhapur Tank

Date - 18 / 01 / 2023



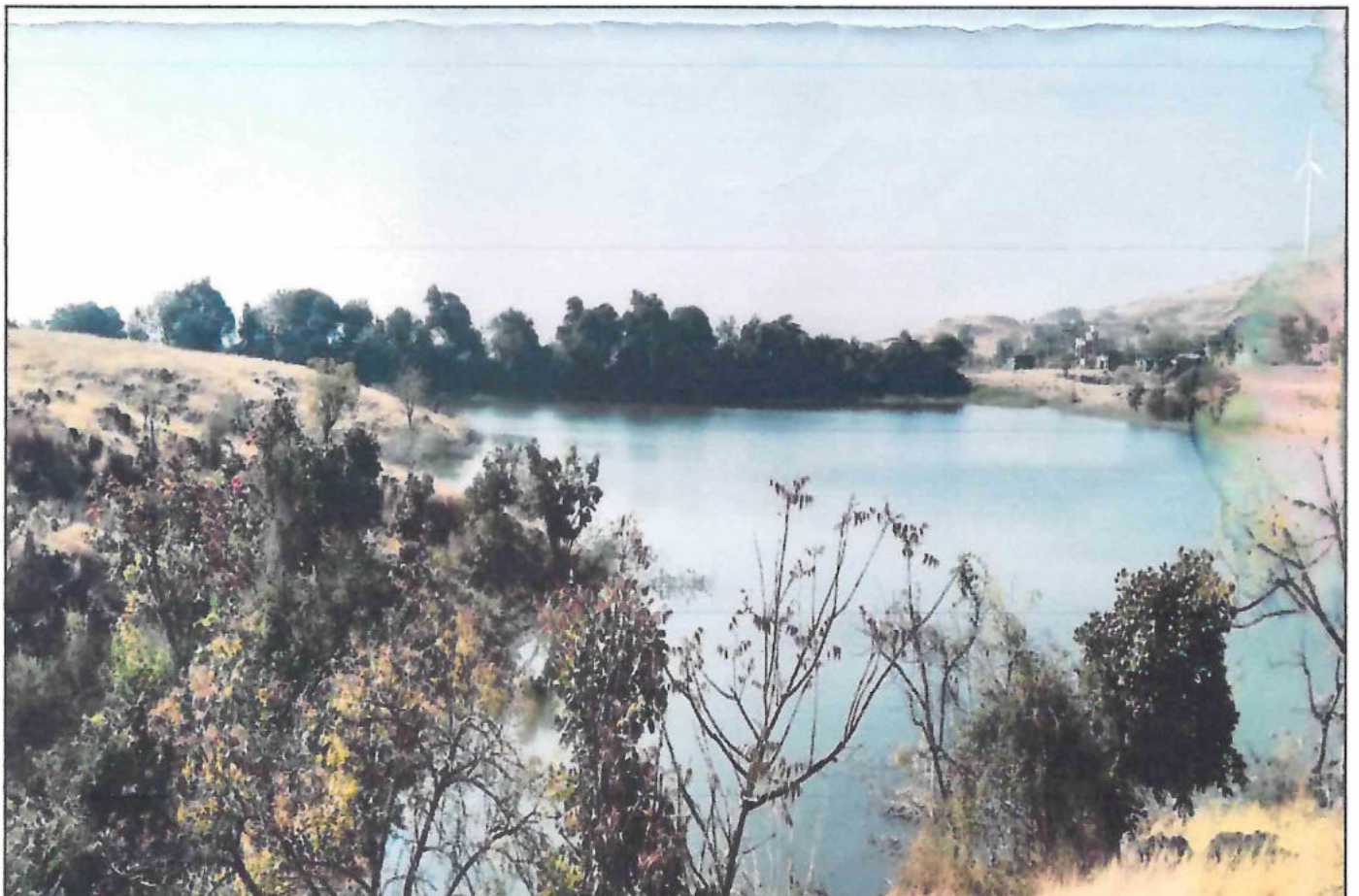
Exam No: 37130

Excursion Report

Zoology

Visit to : Jakhapur Tank

Date : 18 / 1 / 2023



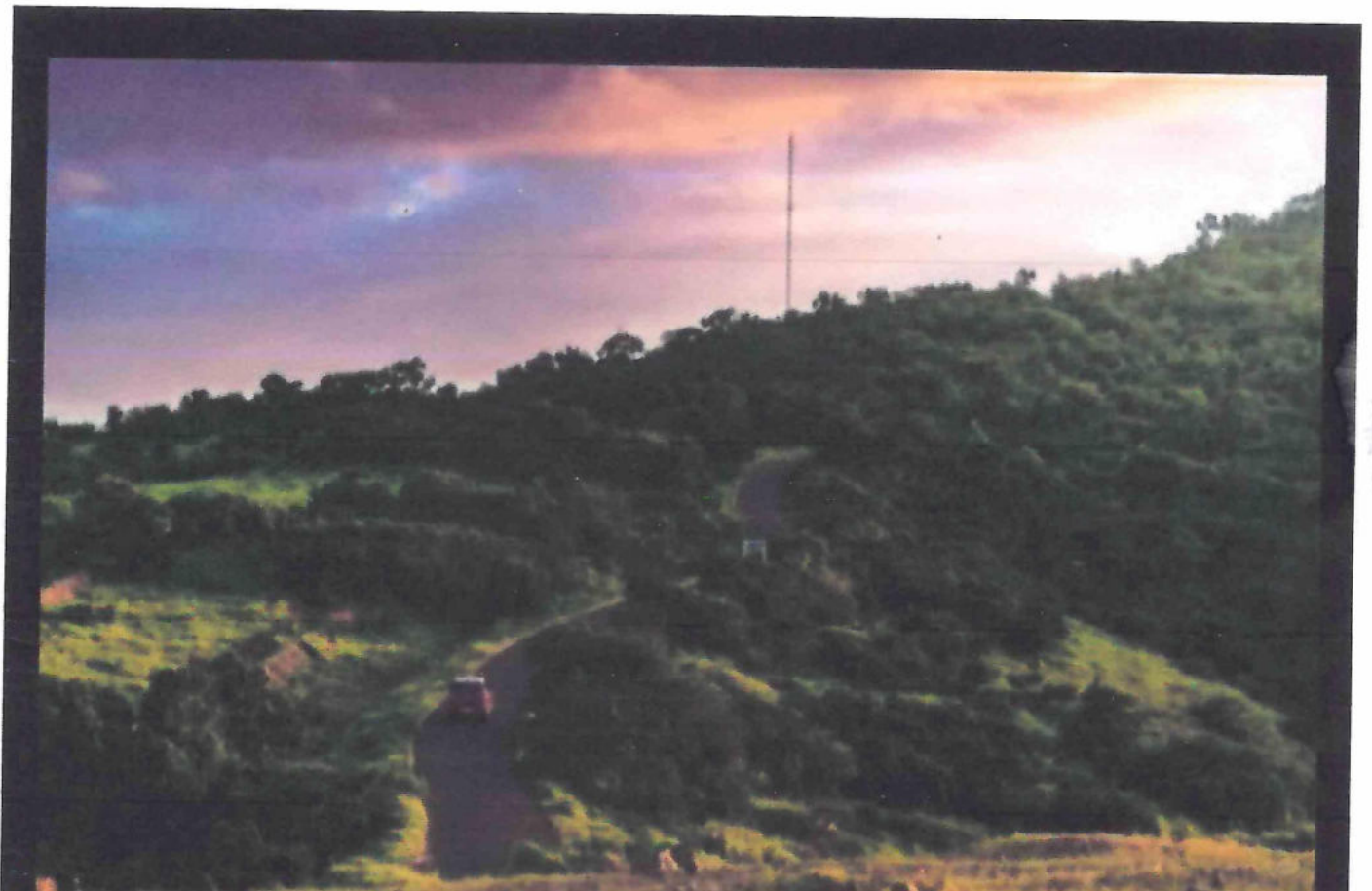
Exam No: 37131

Excursion Report

Zoology

Visit to : Dandoba Hills

Date : 25/01/2023



ZOOLOGY

EXCURSION

Visit to -

Radhanagari

Dajipur

Malvan

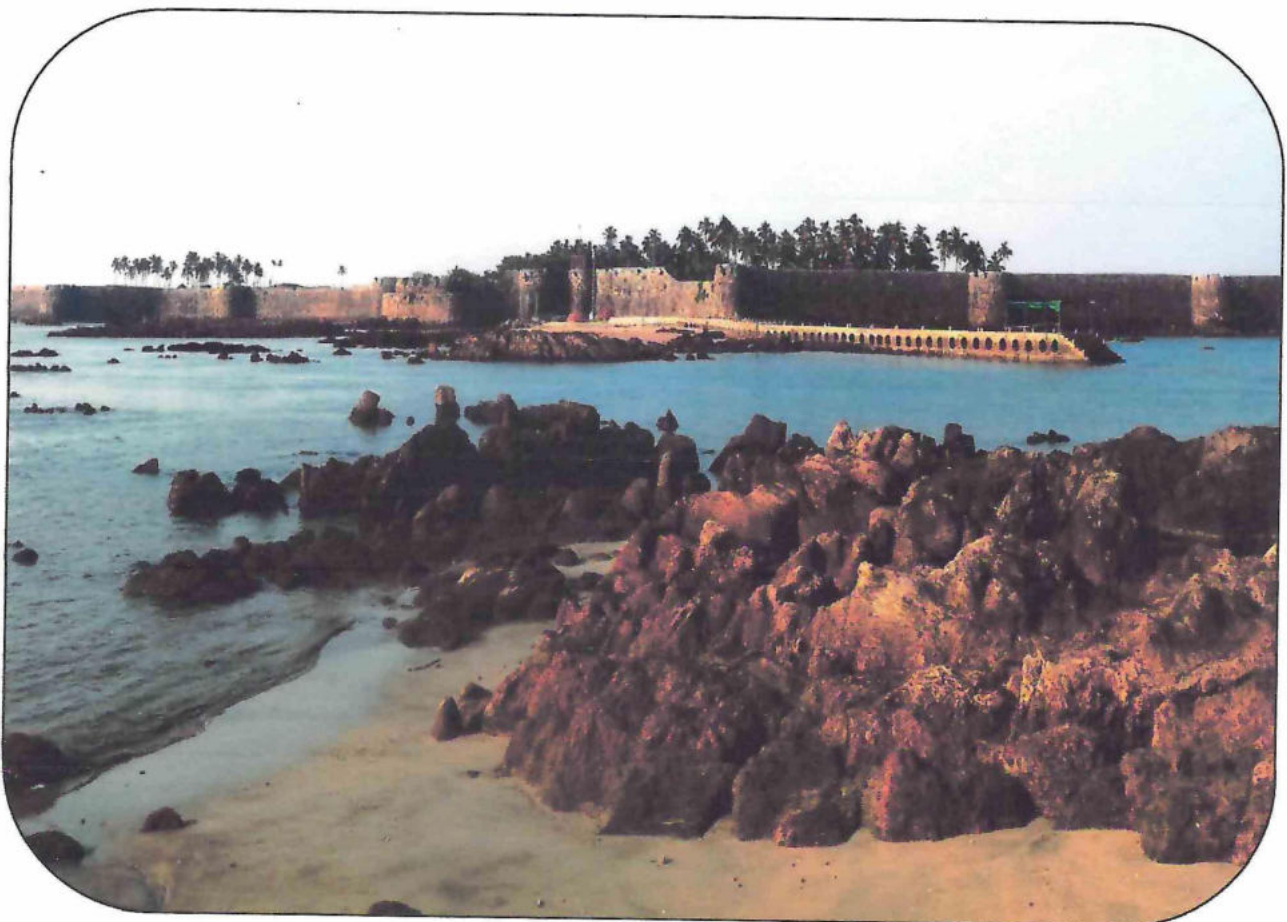
Sindhudurg

Savantwadi

Amboli

Hiranikeshi

Date : 10th Nov. to 12th Nov. 2022



Exam No :- 25730

Excursion Report Zoology

Visit to :-

Jakhapur Tank

Date :- 18-01-2023



Exam No - 40207

Roll No -

EXCURSION REPORT

ZOOLOGY

Visit to - Jakhapur Tank

Date - 29 / 02 / 2028



B. Sc. II
2024

Exam No.: 16289

ZOOLOGY

EXCURSION

Visit to
Radhanagari
Dajipur
Malvan
Sindhudurg
Savantwadi
Amboli

Date :- 22nd Jan. to 24th Jan. 2024



shutterstock.com · 2362627089

2023-24.

PRN No-2021020640

Exam No.: 40200

Major Excursion Report Zoology

Visit to: "Yashwantrao Chavan
Sagarshwar Wildlife Sanctuary"

Date of Visit: 26th Feb, 2024



Exam No.- 40196

PRN No. 2021020695

Major Excursion Report

Department of Zoology

Visit To

Dandoba Hills Forest

Date of Visit: 29 February 2024

